

द डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल

ऐन फ्रैंक

Hindi Edition

द डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल

ऐन फ़्रैंक

अनुवाद: नीलम भट्ट

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

परिचय

नीदरलैंड में एक लड़की को उसके जन्मदिन पर एक डायरी उपहार में मिलती है। दो दिन बाद वह डायरी लिखना शुरु करती है। वह डायरी किसी किशोरी की आम सी डायरी हो सकती थी, लेकिन वह 1942 का जून का महीना था। एडॉल्फ़ हिटलर यूरोप के यहूदियों के ख़िलाफ़ एक आक्रामक अभियान शुरु कर चुका था। उसकी सेना पहले ही यूरोप के काफ़ी बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर चुकी थी, ऑस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड, एक के बाद एक सभी देश हार रहे थे।

जब जर्मन सेना नीदरलैंड पहुँची, तो यह नन्ही यहूदी लड़की अपने पिता ऑटो फ्रैंक, माँ एडिथ, बहन मारगोट और तीन सदस्यों के एक अन्य परिवार के साथ ऐम्स्टर्डम की उस इमारत के ऊपरी हिस्से में किताबों की अलमारी के पीछे मौजूद जगह में छिपने चली गई, जहाँ उसके पिता काम करते थे। दो साल तक वह वहीं छिपी रही और फिर किसी के द्वारा उनके ठिकाने की सूचना दिए जाने के बाद उन सबको जर्मन सैनिक एक बंदी शिविर में ले जाया गया, जहाँ टाइफ़स से उसकी मौत हो गई। अगर वह उस बीमारी से बच जाती, तो दो हफ़्ते बाद बाक़ी लोगों के साथ ब्रिटिश टुकड़ियों द्वारा आज़ाद करा ली जाती। ऐन फ्रैंक पंद्रह साल की थी, जब 1945 के शुरुआती मार्च में बेर्गन-बेल्सन के उस बंदी शिविर में उसकी मौत हुई, एक विकृत उन्मादी विचारधारा ने समय से पहले उसकी ज़िंदगी की लौ को बुझा दिया।

जून 1929 में जन्मी ऐन फ्रैंक की ज़िंदगी शायद गुमनाम ही रहती, अगर उसके पिता 1947 में उसकी डायरी प्रकाशित न करते। वह एक ऐसी सरकारी फ़ाइल में एक संख्या, एक बेचेहरा आँकड़ा बनकर रह जाती, जिसमें दूसरे विश्व युद्ध के इंसानी पहलू को दर्ज किया जाना था। लेकिन नियति शायद ऐसा नहीं चाहती थी। उसने 1942 की गर्मियों में अपनी डायरी लिखनी शुरु कर दी थी, लेकिन उसका इरादा छिपे हुए यहूदी के तौर पर अपने अनुभव दर्ज करना कतई नहीं था।

ऐन की डायरी उसके लिए अपने आप को बहुत ईमानदारी और साफ़ दिल से अभिव्यक्त

करने की जगह थी। उसने निस्संकोच सब कुछ लिखा, कुछ भी नहीं छिपाया और डायरी के पन्नों पर ख़ुद को खोलकर रख दिया। मार्च 1944 में ऐन ने लंदन में निर्वासित डच सरकार के एक सदस्य का रेडियो प्रसारण सुना, जिसने जर्मन शासन के अंतर्गत डच लोगों के दमन के अनुभवों का सार्वजनिक अभिलेख तैयार करने की बात की थी। उसमें लोगों से अपने सभी पत्रों, डायरियों, पत्रिकाओं और तसवीरों को बचाए रखने की बात की गई थी, क्योंकि इस परियोजना के लिए वे अनमोल साबित हो सकते थे। उससे प्रेरित होकर ऐन ने इस इरादे से अपनी डायरी का संपादन करना शुरू किया कि युद्ध की समाप्ति के बाद उसे वह प्रकाशित होने के लिए दे सके। वह दो साल तक इस दिशा में लेखन करके आगे बढ़ती रही और उसने वह सब लिखा, जो उसने देखा व जिसका अनुभव किया।

आज ऐन फ़्रैंक की डायरी उन सबसे अहम दस्तावेज़ों में से है, जो हिटलर के पागलपन के बावजूद बचे रह गए। आधिकारिक अभिलेखों व राजनीतिक भाषणों से अलग केवल पीड़ित व बचे हुए लोगों की आवाज़ों के ज़रिये ही ऐतिहासिक त्रासदियों से मानवीय कथा का ताना-बाना बुना जा सकता है और ऐन की डायरी यही करती है। लिखना शुरू करने के समय वह तेरह साल की थी। उसे कुछ भी साबित नहीं करना था, उसका कोई गुप्त लक्ष्य नहीं था, उसे किसी क़िस्म का कोई प्रचार नहीं करना था। उसने बस लिखा, क्योंकि वह लिखना चाहती थी। उसने बहुत मासूमियत और सच्चाई से लिखा, जो सिर्फ़ बच्चों में हो सकती है, लेकिन जो कुछ उसने लिखा, वह उतना मासूम नहीं था, जितनी कि वह ख़ुद थी।

होलोकोस्ट यानी यहूदियों के सामूहिक संहार को लेकर हुए विवादों व विचार-विमर्श के बीच ऐन की डायरी पीड़ित के पक्ष से आने वाले बहुत सतर्कतापूर्वक तैयार किए गए और सारगर्भित दस्तावेज़ों में से एक है और यह उस संहार का प्रतीकात्मक विषय बन चुका है। बच्चे अपने अकादमिक पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में इस डायरी के संक्षिप्त संस्करणों को पढ़ते हैं, ताकि वे यह जान सकें कि 1940 के दशक के भयावह समय में उनकी ही उम्र की एक लड़की ने क्या कुछ सहा था।

शिक्षाविद और इतिहासकार इस डायरी का इस्तेमाल ऐतिहासिक सत्य के प्रामाणिक स्रोत के रूप में करते हैं। इस डायरी के बारे में डच पत्रकार व इतिहासकार यान रोमेन ने 1946 में कहा था कि हालाँकि यह 'एक बच्चे की आवाज़ में सामने आई है,' फिर भी यह 'फ़ासीवाद के समूचे भयावह स्वरुप की अभिव्यक्ति है, जो न्यूरेमबर्ग के सभी साक्ष्यों से कहीं अधिक है।'

ऐन की आवाज़ महाद्वीपों व पीढ़ियों के पार पहुँची है। उसकी डायरी ने होलोकोस्ट के पीड़ितों को गुमनाम होने से बचाए रखा है। उसने अपने जैसे बाक़ी लोगों को एक चेहरा और एक ज़िंदगी दी है। उसने उस यंत्रणा में जीने वाले लोगों व उसके बाद आने वाले हमारे जैसे लोगों के लिए उसे वास्तविक बनाया है। कहा जाता है कि तकलीफ़ें झेलने वाले लोगों के ज़हन में बना ज़ख़्म उसे बंद कर देने से ठीक नहीं होता। उस घाव की याद को बनाए रखकर,

उसे याद करके व साझा करके ही लोगों को सही मायने में उस तकलीफ़ से छुटकारा मिलता है। द *डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल* को कितनी ही बार पढ़ा जाए व उस पर चर्चा की जाए, वह संवाद और ऐतिहासिक वाद-विवाद को प्रेरित कर इस मुक्ति को नज़दीक लाती है।



12 जून, 1942

मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हें सब कुछ बता पाऊँगी, क्योंकि मैं अब तक किसी पर इतना भरोसा नहीं कर पाई हूँ और मुझे पूरी आशा है कि तुम मेरे लिए राहत और सहारे का ज़रिया बनोगी।

रविवार, 14 जून, 1942

मैं उस पल से शुरु करूँगी, जब तुम मुझे मिली, जब मैंने तुम्हें मेज़ पर अपने जन्मदिन के बाक़ी तोहफ़ों के साथ रखा देखा। (तुम्हें ख़रीदने के लिए मैं साथ गई थी, लेकिन उसे नहीं माना जाएगा।)

शुक्रवार, 12 जून को सुबह छह बजे मेरी नींद खुल गई, उसमें हैरत की कोई बात नहीं, क्योंकि उस दिन मेरा जन्मदिन था। लेकिन मुझे उस समय उठने की अनुमति नहीं है, इसलिए मुझे अपनी उत्सुकता को पौने सात बजे तक दबाए रखना पड़ा। जब मुझसे और ज़्यादा इंतज़ार नहीं हुआ, तो मैं भोजन कक्ष में चली गई, जहाँ मोर्च (बिल्ली) ने मेरी टाँगों से लिपटकर मेरा स्वागत किया।

सात बजे के थोड़ी देर बाद मैं डैडी और मम्मी के पास गई, फिर बैठक में अपने उपहारों को खोलने के लिए गई, तुम्हें मैंने सबसे पहले देखा, तुम शायद मेरे सबसे अच्छे तोहफ़ों में से थी। फिर मैंने गुलाब, पियोनी का गुच्छा और गमले में लगा एक पौधा देखा। डैडी और मम्मी से मुझे एक नीला ब्लाउज़ मिला, एक गेम, अंगूर के रस की बोतल, उसका स्वाद मुझे वाइन जैसा लगा (वाइन भी तो अंगूर से ही बनाई जाती है), एक पहेली, कोल्ड क्रीम का जार, 2.50 गिल्डर्स और दो किताबों के लिए गिफ़्ट टोकन। मुझे एक और किताब मिली, *कैमेरा ऑबस्क्यूरा* (मारगोट के पास यह किताब पहले से है, इसलिए मैंने उसके बदले कुछ और ले लिया), घर में बने बिस्किट (जिन्हें मैंने बनाया, अब मैं बिस्किट बनाने में काफ़ी माहिर जो हो गई हूँ), बहुत सी मिठाइयाँ और माँ से एक स्ट्रॉबेरी टार्ट। उसी समय जर्मनी से एक चिट्ठी आई, ज़ाहिर है कि वह एक संयोग ही था।

हनेली मुझे लेने आई और हम दोनों स्कूल गए। भोजन अवकाश के दौरान मैंने अपने अध्यापकों व साथियों को बिस्किट दिए और फिर हम अपनी पढ़ाई में लग गए। मैं पाँच बजे तक घर नहीं गई, क्योंकि मैं अपनी कक्षा के बाक़ी बच्चों के साथ जिम जो चली गई थी। (मुझे उसमें हिस्सा लेने की इजाज़त नहीं थी, क्योंकि उसमें मेरे कंधे व कूल्हे अपनी जगह से सरक जाते हैं।) मेरा जन्मदिन था, इसलिए मैंने तय किया कि मेरे साथी कौन सा खेल खेलेंगे और

मैंने उनके लिए वॉलीबॉल चुना। उसके बाद सब मेरे चारों ओर घूमकर नाचे और 'हैप्पी बर्थडे' गाना गया। जब मैं घर पहुँची, तो सने लेडरमान वहाँ पहले से मौजूद थी। इल्स वागनर, हनेली गॉस्लार और जैकलिन फ़ॉन मार्सन जिम के बाद मेरे साथ घर आए, क्योंकि हम सभी एक ही क्लास में पढ़ते हैं। हनेली और सने मेरी दो सबसे अच्छी दोस्त हुआ करती थीं। हमें साथ जाते हुए देखकर लोग कहते, 'वो जा रही हैं, ऐन, हाने और सने।' जैकलिन मार्सन से मेरी मुलाकात यहूदी स्कूल जाने पर हुई और अब वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त है। इल्स, हनेली की सबसे अच्छी दोस्त है और हाने दूसरे स्कूल जाती है, जहाँ उसकी सहेलियाँ हैं।

उन्होंने मुझे ख़ूबसूरत किताब दी, *डच सागाज़ ऐंड लेजेंड्स*, लेकिन उन्होंने ग़लती से मुझे दूसरा खंड दे दिया, इसलिए मैंने बाक़ी दो किताबों के बदले पहला खंड ले लिया। हेलेन आंटी मेरे लिए एक पहेली लाईं, प्यारी स्टेफ़नी आंटी ने जड़ाऊ पिन और लेनी आंटी ने मुझे एक बहुत ज़बरदस्त किताब दी: *डेज़ी गोज़ टु द माउन्टेन्स*।

सुबह बाथटब में लेटे हुए मैं सोच रही थी कि कितना मज़ा आता, अगर मेरे पास रिन टिन टिन जैसा कुत्ता होता। मैं भी रिन टिन टिन कहकर ही पुकारती, उसे स्कूल ले जाती, जहाँ पर वह केयरटेकर के कमरे में रहता या मौसम अच्छा रहने पर वह साइकिल स्टैंड पर रहता।

सोमवार, 15 जून, 1942

रविवार दोपहर को मेरे जन्मदिन की दावत हुई। *रिन टिन टिन* फ़िल्म मेरे सहपाठियों को बहुत पसंद आई। मुझे दो जड़ाऊ पिन, एक बुकमार्क और दो किताबें मिलीं।

मैं शुरुआत अपने स्कूल व अपनी क्लास के बारे में कुछ कहकर करूँगी, लेकिन उससे पहले बाक़ी बच्चों के बारे में कुछ बताऊँगी।

बेट्टी ब्लूमंडाल ग़रीब दिखती है और मुझे लगता है कि वह है भी। वेस्ट ऐम्स्टर्डम की किसी अनजानी सी गली में रहती है और हममें से कोई भी नहीं जानता कि वह है कहाँ। वह पढ़ाई में अच्छी है, लेकिन वह इसलिए कि वह बहुत मेहनत करती है, न कि इसलिए कि वह होशियार है। वह ख़ामोश रहती है।

जैकलिन फ़ॉन मार्सन को शायद मेरी सबसे अच्छी सहेली माना जाता है, लेकिन मेरी कभी कोई असली दोस्त नहीं रही। पहले मुझे लगा कि जैक होगी, लेकिन मैं ग़लत थी।

डी क्यू* बहुत घबराई रहती है और हमेशा कुछ न कुछ भूल जाती है, इसलिए शिक्षक उसे सज़ा के तौर पर अतिरिक्त होमवर्क देते रहते हैं। वह बहुत दयालु है, ख़ासकर जी ज़ेड के लिए।

ई एस बहुत बोलती है, जो कि अच्छी बात नहीं है। उसे जब भी कुछ पूछना होता है, वह आपके बाल छूती है या फिर आपके बटनों के साथ खेलने लगती है। लोग कहते हैं, वह मुझे पसंद नहीं करती, लेकिन मुझे उसकी परवाह नहीं है, क्योंकि मैं भी उसे नापसंद करती हूँ।

हेनी मेट्स अच्छी,ख़ुशमिज़ाज लड़की है, बस वह बहुत ऊँची आवाज़ में बात करती है और

जब भी हम बाहर खेलते हैं, तो बहुत बचकाना बर्ताव करती है। बदक़िस्मती से हेनी की एक दोस्त है, बेपी और गंदी व भद्दी होने के कारण वह हेनी के लिए सही नहीं है।

जे आर के बारे में पूरी एक किताब लिख सकती हूँ। जे घिनौनी, डरपोक, घमंडी, दोहरी बातें करने वाली लड़की है, जो ख़ुद को बहुत बड़ा समझती है। उसने जैक पर जैसे जादू सा कर रखा है, जो बहुत शर्म की बात है। जे बहुत जल्दी बुरा मान जाती है और ज़रा सी बात पर रोने लगती है और उस पर वह बहुत दिखावा भी करती है। मिस जे को हमेशा सही होना होता है। वह बहुत अमीर है और उसकी अलमारी इतनी प्यारी पोशाकों से भरी है, जो कि उसके हिसाब से बड़ी हैं। उसे लगता है कि वह बहुत आकर्षक है, लेकिन वह है नहीं। जे और मैं एक-दूसरे को फूटी आँख नहीं भाते।

इल्स वागनर अच्छी हँसमुख लड़की है, लेकिन वह बहुत तुनकमिज़ाज है और किसी न किसी चीज़ को लेकर कराहती-कलपती रहती है। इल्स मुझे बहुत पसंद करती है। वह बहुत होशियार, लेकिन सुस्त भी है।

हनेली गॉसलर या लाइज़, जैसा कि उसे स्कूल में पुकारा जाता है, थोड़ी अजीब सी है। वह आमतौर पर शर्मीली है, घर में मुँहफट, लेकिन बाक़ी लोगों के साथ वह संकोच करती है। उसे जो कुछ कहो, वह अपनी माँ को जाकर बता देती है। लेकिन वह जो सोचती है, वही कहती है और पिछले कुछ समय से मुझे वह अच्छी लगने लगी है।

नैनी फ़ॉन प्राग-सिगार छोटी, मज़ाकिया और अक्लमंद है। मेरे ख़याल से वह अच्छी है। वह काफ़ी चतुर है। इसके अलावा नैनी के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता।

मेरे ख़याल से एफ़िया द यॉन्ग ज़बरदस्त है। वह सिर्फ़ बारह साल की है, लेकिन वह किसी लेडी जैसी है। वह मुझे बच्चा समझती है। वह सबकी मदद करती है और मुझे वह पसंद है।

जी ज़ेड हमारी क्लास की सबसे प्यारी लड़की है। उसका चेहरा अच्छा है, लेकिन थोड़ी बेवकूफ़ है। मुझे लगता है कि उसे क्लास में एक साल और रोका जाएगा, लेकिन मैंने उसे बताया नहीं है।

जी ज़ेड की बग़ल में हम बारह लड़कियों में से आख़िरी यानी मैं बैठती हूँ।

लड़कों के बारे में काफ़ी कुछ कहा जा सकता है, या फिर शायद कुछ ख़ास नहीं।

मॉरिस कोस्टर मेरे प्रशंसकों में से एक है, लेकिन वह बहुत खिझाता है।

सैली स्प्रिंगर गंदे दिमाग़ वाला है और अफ़वाह तो यह है कि वह सब कुछ कर चुका है। फिर भी मुझे वह ज़बरदस्त लगता है, क्योंकि वह बहुत मज़ाकिया है।

एमिल बोनविट जी ज़ेड को पसंद करता है, लेकिन उसे परवाह नहीं। वह बहुत उबाऊ है।

रॉब कोहन को कभी मुझसे भी प्यार था, लेकिन मुझे वह अब फूटी आँख नहीं भाता। वह घिनौना, दोहरे चरित्र वाला, झूठा और पिनपिना ढोंगी लड़का है, जो ख़ुद को बहुत महान

समझता है।

मार्क्स फ़ॉन ड वेल्डे मेडेम्ब्लिक के किसान का बेटा है, मारगोट के मुताबिक़ वह भला लड़का है।

हरमन कूपमैन भी जोपी द बियर की तरह गंदे दिमाग़ वाला है, जो लड़कियों के पीछे लगने वाला चालू लड़का है।

लियो ब्लोम, जोपी द बियर का सबसे अच्छा दोस्त है, लेकिन बियर के गंदे दिमाग़ ने उसे भी बिगाड़ दिया है।

ऐल्बर्ट ड मिस्क्टिा मॉन्टेसरी स्कूल का है और उसने एक साल में दो कक्षाएँ पास की हैं। वह सचमुच होशियार है।

लियो श्लेगर भी उसी स्कूल से है, लेकिन वह उतना चतुर नहीं है।

रु स्टॉपलमॉन अल्मेलो का रहने वाला एक ठिगना, नासमझ सा लड़का है, जो साल के बीच में दूसरे स्कूल से आया है।

सी एन वही सब करता है, जो उसे नहीं करना चाहिए।

ज़ाक कॉकरनॉट हमारे पीछे सी की बग़ल में बैठता है और (जी और मैं) उस पर ख़ूब हँसते हैं।

हैरी शाप हमारी क्लास का सबसे भला लड़का है। वह अच्छा है।

वेर्नर जोसफ़ भी अच्छा है, लेकिन पिछले कुछ समय में हुए बदलाव से वह बहुत ख़ामोश हो गया है, इसलिए वह उबाऊ लगता है।

सैम सोलोमन शहर के अशांत इलाके से आने वाला सख़्त क़िस्म का लड़का है। वह बिगड़ैल है। (प्रशंसिका!)

एपी रीम काफ़ी दकियानूसी है, लेकिन वह भी बिगड़ैल है।

शनिवार, 20 जून, 1942

मेरे जैसे किसी इंसान के लिए डायरी लिखना सचमुच अजीब सा अनुभव है। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि मैंने इससे पहले कभी कुछ नहीं लिखा, बल्कि इसलिए भी कि मुझे लगता है कि बाद में शायद मुझे और न ही किसी और को तेरह साल की लड़की के ख़यालों में कोई दिलचस्पी होगी। वैसे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मेरा लिखने का मन है और मुझे अपने दिल से बातों के बोझ को कम करना है।

'काग़ज़ में लोगों से ज़्यादा धीरज होता है।' यह कहावत मुझे उन दिनों याद आई, जब मैं थोड़ी उदास थी और हाथों में ठोड़ी थामे हुए, ऊबती हुई, बेचैन थी और सोच रही थी कि बाहर

जाऊँ या घर में रहूँ। आख़िरकार मैं वहीं अपनी सोच में डूबी बैठी रही। हाँ, काग़ज़ में ज़्यादा धीरज होता है और चूँकि मैं नहीं चाहती कि 'डायरी' कहे जाने वाली इस नोटबुक को कोई पढ़े और तब तक इसे लिखती रहूँ जब तक कि मेरे पास कोई सचमुच की दोस्त नहीं आ जाती, तो शायद इससे कोई फ़र्क़ भी नहीं पड़ता।

अब मैं फिर से उसी मुद्दे पर आ गई हूँ, जिसने मुझे डायरी लिखने को प्रेरित किया है: मेरी कोई दोस्त नहीं है।

मैं इस बात को अधिक स्पष्टता से रखती हूँ, वैसे कोई भी इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि तेरह साल की कोई लड़की इस दुनिया में बिलकुल अकेली है। और मैं हूँ भी नहीं। मेरे पास प्यार करने वाले माता-पिता हैं और सोलह साल की एक बड़ी बहन है, इसके अलावा लगभग तीस लोग हैं, जिन्हें मैं दोस्त कहती हूँ। मेरे आसपास प्रशंसकों का जमघट है, जो अपनी नज़रें मुझसे नहीं हटा सकते और जो कभी-कभार क्लासरूम में मुझे देखने के लिए जेब में रखे टूटे आईने का सहारा लेते हैं। मेरे पास एक परिवार हैं, प्यार करने वाली आंटियाँ हैं और अच्छा-ख़ासा घर है। ऊपरी तौर पर देखने पर लगता है कि मेरे पास सब कुछ है, सिवाय एक सच्ची दोस्त के। जब कभी मैं दोस्तों के साथ होती हूँ, तो बस मैं मज़े करना चाहती हूँ। मैं उनसे रोज़मर्रा की आम बातों के सिवाय कोई और बात नहीं कर पाती। हम एक-दूसरे के ज़्यादा नज़दीक आते नहीं लगते और वही समस्या है। शायद यह मेरी ग़लती है कि हम एक-दूसरे पर उतना भरोसा नहीं कर पाते। अब जो है, यही है और बदक़िस्मती से कुछ भी बदलने नहीं वाला है। इसलिए मैंने डायरी लिखना शुरु किया है।

मेरी कल्पना में लंबे समय से एक दोस्त की छवि बनी हुई है, मैं अधिकतर लोगों की तरह डायरी में बस आँकड़े ही नहीं लिखना चाहती, बल्कि मैं चाहती हूँ कि वह मेरी दोस्त बने, इसीलिए मैं अब तुम्हें *किटी* कहकर पुकारूँगी।

अगर मैं अभी से शुरु हो जाऊँ, तो किटी से कही गई बातों को क्योंकि कोई नहीं समझेगा, इसलिए बेहतर है कि मैं अपनी ज़िंदगी के बारे में कुछ बताऊँ, हालाँकि वैसा करना मुझे अच्छा नहीं लगता।

मेरे पिता जितना प्यारा इंसान मैंने कभी नहीं देखा। उन्होंने 36 साल की उम्र में मेरी माँ से शादी की, जो उस समय 25 साल की थीं। मेरी बहन मारगोट का जन्म जर्मनी के फ्रैंकफ़र्ट अम माइन में हुआ। मेरा जन्म 12 जून 1929 को हुआ। मैं चार साल की उम्र तक फ्रैंकफ़र्ट में रही। हम यहूदी हैं, इसलिए मेरे पिता 1933 में हॉलैंड चले गए, जब वे जैम बनाने में इस्तेमाल होने वाले उत्पाद बनाने वाली डच ओपेक्ता कंपनी में मैनेजिंग डायरेक्टर बने। मेरी माँ एडिथ हॉलेंडर फ्रैंक सितंबर में उनके साथ हॉलैंड गई, जबकि मुझे व मारगोट को हमारी नानी के पास आशेन भेज दिया गया। मारगोट दिसंबर में हॉलैंड गई और मैं फ़रवरी में, जब मुझे मेज़ पर मारगोट के जन्मदिन के उपहार के रूप में रख दिया गया था।

मैं वहाँ सीधे मॉन्टेसरी नर्सरी स्कूल में गई और छह साल की उम्र तक वहीं रही, तब मैं पहली कक्षा में पहुँच गई थी। छठी कक्षा में मिसेज़ कूपरूस मेरी टीचर थीं। साल के आख़िर में विदा लेते हुए हम दोनों की आँखें नम थीं, मेरा दाख़िला यहूदी स्कूल में हो गया था, जहाँ मारगोट भी जाती थी।

हमारी ज़िंदगी में काफ़ी बेचैनी थी, क्योंकि जर्मनी में रहने वाले हमारे रिश्तेदार हिटलर के यहूदी विरोधी कानूनों के कारण परेशानी में थे। 1938 के सामूहिक नरसंहार के बाद मेरे दो मामा जर्मनी से भाग गए और उन्होंने नॉर्थ अमेरिका में शरण ले ली। मेरी बूढ़ी नानी हमारे साथ आकर रहने लगीं। उस समय वे 73 साल की थीं।

मई 1940 के बाद अच्छा समय कभी-कभार ही रहा: पहले युद्ध हुआ, फिर आत्मसमर्पण और उसके बाद जर्मन आ गए, तभी से यहूदियों के लिए परेशानी शुरु हो गई। यहूदी विरोधी कानूनों के कारण हमारी आज़ादी पर कड़ी रोक-टोक लग गई। यहूदियों को पीला सितारा लगाना होता था; यहूदियों को साइकिलों पर चलना होता था; यहूदियों को ट्राम पर चढ़ने की मनाही थी; यहूदी कार में नहीं बैठ सकते थे, चाहे वे उनकी अपनी क्यों न हों; यहूदियों को 3 बजे से 5 बजे के बीच अपनी ख़रीदारी करनी होती थी; यहूदियों को सिर्फ़ यहूदी सैलूनों में जाना होता था; यहूदियों को रात 8 बजे से सुबह 6 बजे तक सड़कों पर चलने की मनाही थी; यहूदी थिएटर नहीं जा सकते थे या किसी अन्य मनोरंजन की जगहों पर नहीं सकते थे; यहूदियों को स्विमिंग पूल, टेनिस कोर्ट्स, हॉकी के मैदानों या अन्य खेलों के मैदानों का इस्तेमाल करने की मनाही थी; यहूदी नौकायन नहीं कर सकते थे; यहूदी सार्वजनिक तौर पर किसी खेल गतिविधि में भाग नहीं ले सकते थे; यहूदियों को अपने व अपने दोस्तों के बगीचों में रात 8 बजे के बाद बैठने की मनाही थी; यहूदी ईसाइयों के घर नहीं जा सकते थे; यहूदियों को सिर्फ़ यहूदी स्कूल जाना होता था, आदि। आप यह नहीं कर सकते, वह नहीं कर सकते, लेकिन ज़िंदगी चलती रही। जैक मुझसे हमेशा कहती, 'मेरी कुछ भी करने की हिम्मत नहीं होती, क्योंकि मुझे डर लगता है कि कहीं उस पर पाबंदी न हो।'

1941 की गर्मियों में मेरी नानी बीमार पड़ गईं, उनका ऑपरेशन करवाना पड़ा, इसलिए मेरा जन्मदिन नहीं मनाया गया। 1940 की गर्मियों में भी मेरे जन्मदिन पर कुछ ख़ास नहीं हुआ, क्योंकि तभी हॉलैंड में लड़ाई ख़त्म हुई थी। जनवरी 1942 में नानी की मौत हो गई। कोई नहीं जानता कि मैं उनके बारे में कितना सोचती हूँ और अब भी उन्हें प्यार करती हूँ। 1942 में आए इस जन्मदिन पर हमने बाक़ी जन्मदिनों की कमी पूरी करनी चाही और बाक़ी मोमबत्तियों के साथ नानी माँ की मोमबत्ती भी जलाई गई।

हम चारों अब भी मज़े में हैं और अब मैं फिर से आज के दिन 20 जून, 1942 पर वापस आती हूँ और अपनी डायरी से औपचारिक निवेदन करती हूँ।

शनिवार, 20 जून, 1942

प्यारी किटी!

तो मैं सीधे शुरू हो जाती हूँ; अभी ख़ामोशी है। मम्मी-पापा बाहर गए हैं और मारगोट अपनी दोस्त ट्रीज़ के घर अपनी बाक़ी दोस्तों के साथ पिंग-पॉन्ग खेलने गई है। पिछले कुछ समय से मैं भी काफ़ी पिंग-पॉन्ग खेलने लगी हूँ। इतना ज़्यादा कि हम पाँच लड़कियों ने एक क्लब बना लिया है। उसका नाम है, 'लिट्ल डिपर माइनस टू।' यह वाकई बेवकूफ़ों जैसा नाम है, लेकिन यह एक ग़लती की वजह से पड़ा। हम अपने क्लब को ख़ास नाम देना चाहते थे और चूँकि हम पाँच थे, इसलिए हमें लिट्ल डिपर नाम का ख़याल आया। हमें लगा कि उसमें पाँच तारे होते हैं, लेकिन हम ग़लत थे। बिग डिपर (सप्तऋषि) की तरह उसमें भी सात तारे हैं, बस 'माइनस टू' इसकी वजह से ही हुआ। इल्स वागनर के पास पिंग-पॉन्ग सेट है और उसके माँ-बाप हमें अपने बड़े से भोजन कक्ष में खेलने देते हैं। हम पाँचों को ही आईसक्रीम पसंद है, ख़ासकर गर्मियों में और पिंग-पॉन्ग खेलते हुए गर्मी लगती है, इसलिए हमारा खेल अक्सर सबसे नज़दीकी आईसक्रीम पार्लर में जाकर ख़त्म होता है, जो यहूदियों को आईसक्रीम बेचते हैं: ओएसिस या डेल्फ़ी। काफ़ी समय से हमने पैसे के लिए अपने बटुओं या जेबों को टटोलना छोड़ दिया है। ओएसिस में अधिकतर समय इतनी भीड़ रहती है कि हमें अपनी जान-पहचान का कोई लड़का या कोई प्रशंसक मिल ही जाता है, जो हमें इतनी आईसक्रीम दिला देता है कि पूरे हफ़्ते के लिए काफ़ी होती है।

आपको इतनी छोटी उम्र में मेरे मुँह से प्रशंसकों की बात सुनकर शायद थोड़ी हैरानी हो रही होगी। बदक़िस्मती से या फिर कुछ भी कहो, यह बुराई हमारे स्कूल में बहुत फैली हुई है। जैसे ही कोई लड़का पूछता है कि क्या वह मेरे साथ-साथ साइकिल पर घर चल सकता है और हम बात करने लगते हैं तो दस में से नौ बार मुझे पक्के तौर पर पता होता है कि वह मुझ पर मोहित हो जाएगा और मुझे एक पल के लिए भी अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने देगा। उसका उत्साह आख़िरकार ठंडा पड़ जाता है, ख़ासकर तब जब मैं उसकी जुनून भरी नज़रों को अनदेखा करते हुए अपने रास्ते चलते रहती हूँ। अगर बात यहाँ तक पहुँच जाती है कि वे 'पिता की अनुमति' लेने की बात करने लगते हैं, तो मैं अपनी साइकिल थोड़ा मोड़ लेती हूँ, मेरा बस्ता गिर जाता है और लड़के को अपनी साइकिल से उतरकर उसे उठाकर मुझे देना पड़ता है, तो तब तक मैं बातचीत का विषय बदल देती हूँ। ये तो सबसे मासूम क़िस्म के होते हैं। हाँ, कुछ ऐसे भी होते हैं, जो आपको हवाई चुंबन देते हैं, या आपकी बाँह थामना चाहते हैं, लेकिन वे ग़लत दरवाज़े पर दस्तक दे रहे होते हैं। मैं अपनी साइकिल से उतर जाती हूँ और या तो आगे उनका साथ नहीं चाहती या फिर ऐसे दिखाती कि जैसे मेरा अपमान हुआ हो और उन्हें साफ़-साफ़ अकेले घर जाने को कह देती।

तो यह हुई न बात! अब हमारी दोस्ती की बुनियाद पड़ गई है। अब कल मिलेंगे।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 21 जून, 1942

प्यारी किटी,

हमारी पूरी क्लास काँप रही है। इसकी वजह आने वाली बैठक है, जिसमें शिक्षक यह फ़ैसला करेंगे कि कौन अगली क्लास में जाएगा और किसे रोक लिया जाएगा। आधी क्लास शर्तें लगा रही है। मैं और जी ज़ेड हमारे पीछे बैठने वाले सी एन और जैक कॉकरनॉट पर ज़ोरों से हँस रहे हैं, क्योंकि उन्होंने छुट्टियों की अपनी पूरी बचत शर्त में लगा दी है। सुबह से शाम तक बस यही सब सुनाई देता है, 'तुम पास हो जाओगे,' 'नहीं, मैं नहीं,' 'हाँ, तुम हो जाओगे,' 'नहीं, मैं नहीं।' यहाँ तक कि जी की याचनाभरी दृष्टि और मेरी नाराज़गी भरी बातें भी उन्हें शांत नहीं कर सकतीं। अगर मुझसे पूछो, तो इतने सारे बेवकूफ़ हैं कि लगभग एक-चौथाई क्लास को तो पीछे ही रखा जाना चाहिए, लेकिन शिक्षक ऐसे प्राणी हैं, जिनके बारे में अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। शायद इस बार उनका यह स्वभाव सही दिशा में अप्रत्याशित हो।

मुझे अपनी सहेलियों और अपनी उतनी फ़िक्र नहीं है। हम सब कामयाब होंगे सिर्फ़ गणित को लेकर मुझे उतना विश्वास नहीं है। ख़ैर, हम सब इंतज़ार ही कर सकते हैं। तब तक हम एक-दूसरे को हिम्मत न हारने की बात कहते रहते हैं।

मेरी सभी शिक्षकों से अच्छी पटती है। वे नौ हैं, सात पुरुष और दो महिलाएँ। गणित पढ़ाने वाले बूढ़े मि. कीसिंग काफ़ी लंबे समय तक मुझे चिढ़े रहे, क्योंकि मैं बहुत बात करती थी। कई चेतावनियों के बाद उन्होंने मुझे घर के लिए अतिरिक्त काम दिया। 'बातूनी' विषय पर मुझे निबंध लिखना था। बातूनी पर आप क्या लिख सकते हैं? मैंने फ़ैसला किया कि उस पर मैं बाद में सोचूँगी। मैंने अपनी नोटबुक में विषय लिखा, उसे अपने बस्ते में रखा और चुप रहने की कोशिश की।

उस शाम को अपना सारा काम ख़त्म करने के बाद मेरा ध्यान निबंध वाले नोट पर गया। मैं अपने फ़ाउंटेन पेन के सिरे को चबाते हुए उस विषय के बारे में सोचने लगी। शब्दों के बीच जगह छोड़ते हुए बेमतलब की बातें तो कोई भी लिख सकता था, लेकिन तरकीब तो यह थी बातचीत करने की ज़रूरत को साबित करने के लिए कुछ ठोस तर्क रखे जाएँ। मैंने बहुत सोचा, सोचती रही और फिर मुझे एक विचार आया। मि. कीसिंग के दिए विषय पर मैंने तीन पन्ने लिखे और संतुष्ट हो गई। मेरा तर्क था कि बात करना महिलाओं का गुण है और मैं पूरी कोशिश करूँगी कि उसे क़ाबू में रख सकूँ, लेकिन मैं कभी उस आदत से छुटकारा नहीं पा सकूँगी, क्योंकि मेरी माँ भी अगर ज़्यादा नहीं, तो मेरे जितनी बातें तो करती हैं और माँ-बाप से मिले गुणों को लेकर आप

ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते।

मेरे तर्कों पर मि. कीसिंग दिल खोलकर हँसे, लेकिन जब मैंने अगले पाठ की बात की तो उन्होंने मुझे दूसरा निबंध दे दिया। इस बार का विषय था, 'कभी न सुधरनेवाली बातूनी।' मैंने वह निबंध उन्हें दे दिया और फिर दो पाठों तक मि. कीसिंग को कोई शिकायत नहीं थी। लेकिन तीसरे पाठ के दौरान उनका धीरज जवाब दे गया। "ऐन फ्रैंक, क्लास में बात करने के लिए अब 'मिस बातूनी की शेख़ियाँ' पर निबंध लिखो।"

पूरी क्लास ठहाकों से गूँज उठी। मुझे भी हँसना पड़ा, हालाँकि मैं बातूनी विषय पर अपनी सारी चतुराई का इस्तेमाल कर चुकी थी। अब कुछ और सोचने का समय आ गया था, कुछ मौलिक। मेरी दोस्त सने कविता करने में अच्छी है, उसने मेरी मदद की पेशकश की और कहा कि शुरु से आख़िर तक हम पद्य में निबंध लिखेंगे। मैं ख़ुशी से उछल पड़ी। बेतुका विषय देकर कीसिंग मेरी टाँग खींचने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन मैं ठीक उससे उलट करना चाहती थी। मैंने अपनी कविता पूरी की और वह बहुत सुंदर थी! वह एक माँ बतख़, पिता और उनके तीन बच्चों की के बारे में थी, जिन्हें पिता ने काट-काटकर इसलिए मार डाला क्योंकि वे बहुत शोर मचाते थे। ख़ुशक़िस्मती से कीसिंग ने उसे सही मायने में लिया। उन्होंने कविता पूरी क्लास को पढ़कर सुनाई, उसमें अपनी टिप्पणियाँ जोड़ी और बाक़ी कक्षाओं में भी उसे पढ़ा। अब मुझे बात करने की अनुमति है और मुझे कोई अतिरिक्त होमवर्क भी नहीं दिया जाता। अब ठीक उलट आजकल कीसिंग चुटकुले सुनाते हैं।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 24 जून, 1942

प्यारी किटी,

तपते हुए दिन हैं। हर कोई इस गर्मी में हाँफ रहा है और मुझे हर जगह पैदल जाना है। अब मुझे लग रहा है कि ट्राम कितनी आरामदेह होती है, लेकिन हम यहूदियों को अब इस सुविधा के इस्तेमाल की इजाज़त नहीं है, हमारे लिए हमारे दो पैर ही काफ़ी हैं। कल भोजन अवकाश के दौरान मुझे यान ल्यूकनश्ट्राट में दाँत के डॉक्टर के पास जाना था। वह स्टाट्समिरट्यूनन के हमारे स्कूल से बहुत दूर है। दोपहर में मैं अपने डेस्क पर सो ही गई थी। ख़ुशक़िस्मती से लोग ख़ुद ही आपको कुछ पीने को दे देते हैं। डॉक्टर की असिस्टेंट बहुत दयालु हैं।

अब हमारे पास सिर्फ़ नाव का साधन ही बचा है। योजेफ़ इज़रेलकाडे का नाविक हमारे कहने पर हमें पार ले गया। डच लोगों का इसमें क्या कसूर है कि हम यहूदियों का वक़्त इतना बुरा चल रहा है।

काश, मुझे स्कूल न जाना होता! ईस्टर की छुट्टियों के दौरान मेरी साइकिल चोरी हो गई

और मेरे पिता ने माँ की साइकिल कुछ ईसाई दोस्तों को सँभालकर रखने के लिए दे दी। शुक्र है कि गर्मी की छुट्टियाँ आने वाली हैं, एक हफ़्ते के बाद हमारी मुसीबत दूर हो जाएगी।

कल सुबह कुछ अप्रत्याशित हुआ। जब मैं साइकिल रैक के पास से गुज़र रही थी, तो मैंने किसी को अपना नाम पुकारते सुना। पीछे मुड़ने पर मैंने देखा कि वहाँ वही शालीन लड़का खड़ा था, जिसे मैं अपनी दोस्त विल्मा के यहाँ मिली थी। वह विल्मा का रिश्ते का भाई था। मुझे लगता था कि विल्मा अच्छी थी, जो कि वह है भी, लेकिन वह हमेशा लड़कों की बात करती रहती है और वह थोड़ा उबाऊ हो जाता है। वह मेरी तरफ़ बढ़ा, थोड़ा शर्माते हुए और अपना नाम हलो ज़िल्बरबर्ग बताते हुए अपना परिचय दिया। मैं थोड़ी हैरान थी और नहीं जानती थी कि वह क्या चाहता था, लेकिन मुझे वह जानने में देर नहीं लगी। उसने मुझसे पूछा कि क्या वह मेरे साथ स्कूल चल सकता है। 'बिलकुल, अगर तुम भी उसी रास्ते पर जा रहे हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगी,' मैंने कहा। हम दोनों साथ चल पड़े। हलो सोलह साल का है और हर तरह की मज़ेदार कहानियाँ सुनाने में माहिर है।

आज सुबह भी वह मेरा इंतज़ार कर रहा था और मुझे उम्मीद है कि अब से वह इंतज़ार करता मिलेगा।

ऐन

बुधवार, 1 जुलाई, 1942

प्यारी किटी,

ईमानदारी से कहूँ, तो आज से पहले मुझे तुम्हें लिखने का वक़्त ही नहीं मिला। बृहस्पतिवार को मैं पूरा दिन दोस्तों के साथ रही, शुक्रवार को भी हम लोग साथ रहे और आज तक यही सब चलता रहा।

पिछले हफ़्ते मैं और हलो एक-दूसरे को अच्छी तरह जान पाए और उसने मुझे ज़िंदगी के बारे में काफ़ी कुछ बताया। वह गेल्ज़किरशेन का है और अपने दादा-दादी के साथ रहता है। उसके माता-पिता बेल्जियम में हैं, लेकिन वह उनके पास नहीं जा सकता। हलो की उर्ज़ूला नाम की एक गर्लफ्रेंड हुआ करती थी। मैं भी उसे जानती हूँ। वह बहुत प्यारी और बहुत नीरस भी है। जबसे वह मुझे मिला है, वह जान गया है कि वह उर्ज़ूला से बोर होता जा रहा है। तो मैं एक तरह से जोश बढ़ाने का काम कर रही हूँ। वाक़ई आप नहीं जान पाते कि आप किस काम में अच्छे हैं!

शनिवार रात को जैक यहीं थी। रविवार दोपहर वह हनेली के यहाँ रही और मैं बहुत बोर हुई।

हलो को शाम को आना था, लेकिन उसने लगभग छह बजे फ़ोन किया। मैंने फ़ोन उठाया तो उसने कहा, 'मैं हेल्मुथ ज़िल्बरबर्ग बोल रहा हूँ। क्या मैं ऐन से बात कर सकता हूँ?'

'अरे, हलो। मैं ऐन बोल रही हूँ।'

'हलो, ऐन। कैसी हो?'

'अच्छी हूँ, शुक्रिया।'

'मैं बस यही कहना चाहता था कि मुझे माफ़ करना मैं आज रात नहीं आ पाऊँगा, हालाँकि मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। अगर मैं दस मिनट में आकर तुम्हें ले जाऊँ, तो ठीक रहेगा?'

'हाँ, ठीक है। बाय!'

'ठीक है, मैं अभी आता हूँ। बाय-बाय!'

फ़ोन रखकर मैंने तेज़ी से कपड़े बदले और बाल सँवारे। मैं इतनी घबराई थी कि उसे देखने के लिए खिड़की से झाँकने लगी। आख़िरकार वह दिखाई दिया। चमत्कार यह था कि मैं सीढ़ियों की तरफ़ नहीं भागी, बल्कि दरवाज़े की घंटी बजने तक चुपचाप इंतज़ार करती रही। मैंने नीचे जाकर दरवाज़ा खोला और वह सीधे मुद्दे पर आ गया।

'ऐन, मेरी दादी को लगता है कि उम्र के लिहाज़ से तुम मुझसे बहुत छोटी हो और मुझे तुमसे नियमित रूप से नहीं मिलना चाहिए। वे कहती हैं कि मुझे लोवेनबाख़ के यहाँ जाना चाहिए, लेकिन शायद तुम जानती हो कि मैं अब उज़ूला के साथ नहीं घूमता।'

'नहीं, मैं नहीं जानती। क्या हुआ? क्या तुम दोनों के बीच कोई झगड़ा हुआ है?'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैंने उज़ूला से कह दिया कि हम एक-दूसरे के लायक़ नहीं हैं और इसलिए बेहतर होगा कि हम साथ न घूमे-फिरें, लेकिन वह मेरे घर आ सकती है और उम्मीद है कि उसके घर में भी मेरा स्वागत होगा। दरअसल, मुझे लगा कि उज़ूला किसी और लड़के के साथ घूमती है और मैंने उसके साथ वैसा ही बर्ताव किया, जैसा कि वह कर रही थी। लेकिन वह सच नहीं था। फिर मेरे चाचा ने कहा कि मुझे उससे माफ़ी माँगनी चाहिए, लेकिन मुझे वैसा करना ठीक नहीं लगा और इसीलिए मैंने उससे रिश्ता तोड़ दिया। लेकिन वह सिर्फ़ एक कारण था।

'अब मेरी दादी चाहती हैं कि मैं तुमसे नहीं, उज़ूला से मिलूँ, लेकिन मैं उनसे सहमत नहीं हूँ और मैं वैसा नहीं करूँगा। कई बार बूढ़े लोगों के विचार बहुत ही दक़ियानूसी होते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मुझे उनके मुताबिक़ चलना चाहिए। मुझे अपने दादा-दादी की ज़रूरत है, लेकिन कुछ मायनों में उन्हें भी मेरी ज़रूरत है। आज के बाद से मैं बुधवार शाम को ख़ाली रहूँगा। मेरे दादा-दादी मुझे लकड़ी पर नक्काशी का काम सीखने के लिए भेजना चाहते हैं, लेकिन मैं ज़ियोनवादियों के क्लब में जाना चाहता हूँ। मेरे दादा-दादी नहीं चाहते कि मैं वहाँ जाऊँ, क्योंकि वे ज़ियोन विरोधी हैं। मैं कट्टर ज़ियोनवादी नहीं हूँ, लेकिन मेरी दिलचस्पी उसमें है। वैसे वहाँ भी काफ़ी गड़बड़ हो गई है, इसलिए मैं क्लब छोड़ने की सोच रहा हूँ। अगले बुधवार मेरी अख़िरी बैठक होगी। इसका मतलब है कि मैं तुमसे बुधवार शाम, रविवार दोपहर,

शनिवार शाम, रविवार दोपहर और बाक़ी दिन भी मिल सकता हूँ।'

'लेकिन अगर तुम्हारे दादा-दादी नहीं चाहते, तो तुम्हें उनसे छिपकर नहीं मिलना चाहिए?'

'प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज़ है।'

तभी हम ब्लैंकवूर्त बुकस्टोर के पास से गुज़रे और वहाँ पर पीटर शिफ़ दो और लड़कों के साथ खड़ा था, बहुत लंबे समय के बाद पहली बार उसने मुझे हैलो कहा और उससे मुझे बहत अच्छा लगा।

सोमवार शाम को हलो मेरे माता-पिता से मिलने आया। मैं केक और कुछ मिठाइयाँ लाई थी, हमने चाय व बिस्किट लिए, लेकिन न तो हलो और न ही मुझे अपनी कुर्सियों पर बैठना पसंद आ रहा था। हम टहलने के लिए निकले, लेकिन वापस लौटते-लौटते आठ बजकर दस मिनट हो चुके थे। पापा बहुत गुस्से में थे। उन्होंने कहा कि घर समय पर न आना बहुत ग़लत बात है। मुझे उनसे वादा करना पड़ा कि आगे से मैं आठ बजने में दस मिनट पहले ही घर पहुँच जाऊँगी। मुझे शनिवार को हलो ने बुलाया था।

विल्मा ने मुझे बताया कि एक रात हलो उसके घर था, तो उसने उससे पूछा, 'तुम्हें उज़ूल पसंद है या ऐन?'

उसने कहा, 'इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं।'

लेकिन बाहर निकलते हुए (बाक़ी शाम उन्होंने कोई बात नहीं की) उसने कहा, 'मुझे ऐन ज़्यादा अच्छी लगती है, लेकिन किसी को मत बताना। बाय!' और वह तेज़ी से बाहर निकल गया।

हलो की हर बात, उसकी हरकतों से लगता है कि वह मेरे प्यार में है और मुझे यह बात अच्छी लगती है। मारगोट कहती है कि वह भला है। मुझे भी ऐसा ही लगता है, लेकिन वह उससे कहीं ज़्यादा है। माँ भी उसकी तारीफ़ करते नहीं थकती, 'ख़ूबसूरत लड़का। शालीन और विनम्र।' मुझे ख़ुशी है कि सब उसे पसंद करते हैं। मेरी सहेलियों को छोड़कर। उसे लगता है कि वे बहुत बचकानी हैं और वह सही भी है। जैक अब भी उसका नाम लेकर मुझे चिढ़ाती है, लेकिन मुझे उससे प्यार नहीं है। सचमुच नहीं। लड़कों से दोस्ती में कोई बुराई नहीं। किसी को भी आपत्ति नहीं है।

माँ मुझसे हमेशा पूछती है कि मैं बड़ी होने पर किससे शादी करूँगी, लेकिन मैं शर्त लगा सकती हूँ कि वे कभी अंदाज़ा नहीं लगा पाएँगी कि वह पीटर है, क्योंकि मैं पलक झपकाए बिना उन्हें उसके ख़िलाफ़ अपनी राय दे चुकी हूँ। मैं पीटर को इतना प्यार करती हूँ, जैसा मैंने किसी को भी नहीं किया और मैं ख़ुद से कहती हूँ कि वह मेरे लिए अपनी भावनाएँ छिपाने के लिए बाक़ी लड़कियों के साथ घूमता है। शायद उसे लगता है कि मैं और हलो एक-दूसरे से प्यार करते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। वह बस एक दोस्त है या फिर जैसा कि माँ कहती है, वह शादी करने का इच्छुक लड़का।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 5 जुलाई, 1942

प्यारी किटी,

यहूदी थिएटर में शुक्रवार को परीक्षा परिणाम घोषित किए गए। मेरा रिपोर्ट कार्ड बहुत बुरा नहीं था। मुझे बीजगणित में एक डी और एक सी माइनस मिला और बाक़ी सबमें बी मिला, दो में बी प्लस और दो में बी माइनस मिला। मेरे माता-पिता ख़ुश हैं, लेकिन ग्रेड्स के मामले में वे बाक़ी माँ-बाप जैसे नहीं हैं। वे कभी परिणामों की चिंता नहीं करते, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। जब तक मैं सेहतमंद हूँ, ख़ुश हूँ और ज़्यादा शरारत नहीं करती, वे संतुष्ट रहते हैं। अगर ये तीन चीज़ें ठीक हों, तो बाक़ी सब कुछ अपने आप ठीक रहेगा।

मैं ठीक उलट हूँ। मैं बुरी विद्यार्थी नहीं बनना चाहती। मुझे यहूदी स्कूल में कुछ शर्तों पर लिया गया था। मुझे मॉन्टेसरी स्कूल में रहना था, लेकिन जब यहूदी बच्चों के लिए यहूदी स्कूलों में जाना ज़रूरी हो गया, तो काफ़ी मिन्नतें करने के बाद मि. एल्टे मुझे और लाइज़ गॉसलर को स्कूल में लेने के लिए तैयार हो गए। लाइज़ भी इस साल पास हो गई है, हालाँकि उसे ज्यामिति की परीक्षा फिर से देनी होगी।

बेचारी लाइज़। उसके लिए घर पर पढ़ाई करना आसान नहीं है; उसकी दो साल की छोटी बिगड़ैल बहन उसके कमरे में हर समय खेलती रहती है। अगर उसकी बात न मानो, वह चिल्लाने लगती है और अगर लाइज़ उसका ध्यान न रखे, तो मिसेज़ गॉसलर चीख़ने लगती हैं। इसलिए लाइज़ को अपना होमवर्क करने में बहुत मुश्किल होती है और जब तक यह सब चलता रहेगा, अतिरिक्त ट्यूशन से उसे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला है। उसका घर देखने लायक़ जगह है। मिसेज़ गॉसलर के माँ-बाप पड़ोस में रहते हैं, लेकिन उनके साथ ही खाना खाते हैं। वहाँ एक नौकरानी है, एक बच्ची, अपने ख़यालों में खोए और वहाँ मौजूद न रहने वाले मि. गॉसलर और हमेशा घबराई हुई व चिड़चिड़ी मिसेज़ गॉसलर हैं, जो फिर से माँ बनने वाली हैं। इस हलचल के बीच अनाड़ी लाइज़ कहीं खो जाती है।

मेरी बहन मारगोट का भी परीक्षाफल मिला है।

हमेशा की तरह उसका प्रदर्शन शानदार रहा है। अगर हमारे यहाँ ख़ास तरह डिग्री भी होती, तो वह उसमें भी अव्वल आती, वह बहुत होशियार है।

पापा आजकल ज़्यादातर घर में रहते हैं। उनके लिए दफ़्तर में करने को कुछ ख़ास नहीं है; यह एहसास बहुत बुरा है कि किसी को आपकी ज़रूरत नहीं। मि. क्लेमन ने ओपेक्टा को अपने हाथ में ले लिया है और मि. कुगलर ने मसालों व उनसे जुड़े विकल्पों की गीज़ ऐंड कंपनी का अधिग्रहण कर लिया है, जिसकी स्थापना 1941 में हुई थी।

कुछ दिन पहले हम अपने घर के नज़दीक चौराहे पर चहलक़दमी कर रहे थे कि पापा ने कहीं छिपकर रहने के बारे में बात शुरू की। उन्होंने कहा कि बाक़ी दुनिया से कटकर रहना हमारे लिए बहुत मुश्किल होगा। मैंने उनसे पूछा कि वे उस बात को तब क्यों उठा रहे थे।

उनका जवाब था, 'देखो, ऐन, तुम जानती हो कि एक साल से ज़्यादा समय से हम अपने कपड़े, खाने-पीने की चीज़ें और फ़र्नीचर बाक़ी लोगों को भेजते रहे हैं। हम नहीं चाहते कि हमारे सामान पर जर्मन कब्ज़ा कर लें। न ही हम ख़ुद उनके शिकंजे में फँसना चाहते हैं। इसलिए हम अपनी मर्ज़ी से निकलेंगे, न कि किसी के द्वारा निकाले जाने का इंतज़ार करेंगे।'

'लेकिन कब, पापा?' वे इतने गंभीर लग रहे थे कि मुझे डर लगा।

'तुम फ़िक्र मत करो। हम सब चीज़ों का ध्यान रखेंगे। तुम तब तक अपनी बेफ़िक्री के दिनों का मज़ा लो।'

बस वही बात थी। काश, ये गंभीर शब्द जहाँ तक मुमकिन हो सके, सही साबित न हों!

दरवाज़े की घंटी बज रही है। हलो आ गया है, अब रुकने का वक़्त है।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 8 जुलाई, 1942

प्यारी किटी,

लग रहा है कि रविवार सुबह के बाद से कई साल गुज़र गए हैं। इस दौरान इतना कुछ हो गया है कि लगता है कि जैसे अचानक पूरी दुनिया ही उलट गई है। लेकिन जैसा कि तुम देख सकती हो, किटी, मैं अब भी ज़िंदा हूँ और पापा कहते हैं कि यही बात मायने रखती है। मैं ज़िंदा तो हूँ? लेकिन यह मत पूछो कि कहाँ और कैसे। शायद तुम्हें आज मेरी कही कोई बात समझ नहीं आ रही, इसलिए मैं रविवार दोपहर की घटना से बात शुरू करती हूँ।

तीन बजे (हलो जा चुका था और उसे बाद में आना था) दरवाज़े की घंटी बजी। मैं बालकनी में धूप में बैठकर किताब पढ़ रही थी, इसलिए मैंने घंटी नहीं सुनी। थोड़ी देर बाद रसोईघर के दरवाज़े पर परेशान मारगोट दिखी। 'पापा को एसएस से नोटिस मिला है,' वह फुसफसाई। 'माँ मि. फ़ॉन डान से मिलने गई हैं।' (मि. फ़ॉन डान पापा के बिज़नेस व्यावसायिक साझेदार हैं और अच्छे दोस्त भी।)

मैं सन्न रह गई। नोटिस का मतलब हर कोई जानता है। यातना शिविर और सुनसान कोठरियों के नज़ारे मेरे दिमाग़ में घूमने लगे। हम कैसे अपने पिता को वैसी हालत में जाने दे सकते हैं? 'वे नहीं जा रहे हैं, बिलकुल नहीं,' बैठक में माँ का इंतज़ार करते हुए मारगोट ने कहा। माँ मि. फ़ॉन डान से यह पूछने गई हैं कि क्या हम कल छिपने की जगह पर जा सकते हैं। फ़ॉन डान परिवार भी हमारे साथ जा रहा है। कुल मिलाकर हम सात लोग होंगे ख़ामोशी है। हम कुछ

नहीं बोल पा रहे। यहाँ के घटनाक्रम से पूरी तरह अनजान यहूदी अस्पताल में किसी को देखने गए पापा का ख़याल, माँ का लंबा इंतज़ार, गर्मी, अनिश्चय - इन सबसे हम बिलकुल ख़ामोश हो गए हैं।

अचानक फिर से दरवाज़े की घंटी बजी। 'हलो होगा,' मैंने कहा।

'दरवाज़ा मत खोलना!' मारगोट ने मुझे रोकते हुए कहा। लेकिन वह ज़रूरी नहीं था, क्योंकि हमने मि. फ़ॉन डान को हलो से बात करते हुए सुन लिया था और फिर वे दोनों अंदर आए और दरवाज़ा बंद कर दिया। हर बार घंटी बजने पर मारगोट या मुझे नीचे जाकर देखना होता था कि कहीं पापा तो नहीं, हम किसी और को अंदर नहीं आने देते थे। मारगोट और मुझे कमरे से बाहर भेज दिया गया, क्योंकि मि. फ़ॉन डान माँ से अकेले में बात करना चाहते थे।

जब मैं और मारगोट हमारे बेडरूम में बैठे थे, तो मारगोट ने मुझे बताया कि कॉल अप नोटिस पापा के लिए नहीं, बल्कि उसके लिए था। इस दूसरे झटके से मैं रोने लगी। मारगोट सोलह साल की है, शायद वे उसकी उम्र की लड़कियों को अकेले अपने बलबूते भेजना चाहते थे। लेकिन शुक्र है कि उसे नहीं जाना होगा; ख़ुद माँ ने ऐसा कहा था, यानी यही वजह थी कि पापा ने मुझसे छिपने के बारे में बात की थी। छिपना... हम कहाँ छिपेंगे? शहर में? देहात में? किसी घर में? किसी झोपड़ी में? कब, कहाँ, कैसे...? मुझे ये सवाल पूछने की इजाज़त नहीं थी, लेकिन वे तब भी मेरे दिमाग़ में घूम रहे थे।

मारगोट और मैंने अपनी सबसे अहम चीज़ों को एक झोले में रखना शुरू किया। सबसे पहले मैंने इस डायरी को रखा और फिर कलर्स, रूमाल, स्कूल की किताबें, कंघी और कुछ पुरानी चिट्ठियाँ रखी। छिपने की बात में डूबे हुए मैंने थैले में अजीबोग़रीब चीज़ें रखी। मैं माफ़ी चाहती हूँ। यादें मेरे लिए कपड़ों से ज़्यादा मायने रखती हैं।

पापा आख़िरकार क़रीब पाँच बजे घर पहुँचे और हमने मि. क्लेमन को यह पूछने के लिए फ़ोन किया कि क्या वे शाम को आ सकते हैं। मि. फ़ॉन डान मीप को लेने चले गए। मीप आई और अगले दिन आने का वादा करके अपने साथ एक थैले में जूते, कपड़े, जैकेट्स, अंतर्वस्त्र और जुराबें भरकर ले गईं। उसके बाद हमारे घर में शांति छा गई; किसी का भी खाने का मन नहीं कर रहा था। अब भी गर्मी थी और सब कुछ बहुत अजीब लग रहा था।

हमने अपना ऊपर का कमरा मि. गल्डश्मिट को किराए पर दे दिया था, वे तीस साल की उम्र के तलाक़शुदा आदमी थे, उस शाम शायद उनके पास कुछ करने को नहीं था, इसलिए हमारे बहुत विनम्र इशारों के बावजूद वे दस बजे तक हमारे आसपास ही मँडराते रहे।

मीप और यान गीज़ ग्यारह बजे आए। मीप पापा की कंपनी में 1933 से काम करती रही थीं, इसलिए वे और उनके पति हमारे अच्छे दोस्त बन गए थे। एक बार फिर जूते-जुराब, किताबें और अंतर्वस्त्र मीप के थैले और यान की गहरी जेबों में समा गए। साढ़े ग्यारह बजे वे भी ग़ायब हो गए।

मैं थक गई थी और यह जानते हुए भी कि वह मेरे बिस्तर पर मेरी आख़िरी रात थी, मैं तुरंत सो गई और सुबह साढ़े पाँच बजे माँ के पुकारने पर ही उठी। ख़ुशक़िस्मती से दिन रविवार की तरह गर्म नहीं था; दिन भर बारिश होती रही। हम चारों ने इतने कपड़े पहने हुए थे कि लग रहा था कि हम रात किसी रेफ़्रिजरेटर में गुज़ारने वाले थे, हमने अपने साथ ज़्यादा से ज़्यादा कपड़े ले जाने के लिए वैसा किया था। हमारे जैसे हालात में फँसा कोई भी यहूदी घर से सूटकेस में भरकर कपड़े ले जाने की जुर्रत नहीं कर सकता था। मैंने दो बनियानें, तीन पैंट्स, एक ड्रेस और उसके ऊपर एक स्कर्ट, एक जैकेट, एक रेनकोट पहन रखा था, फिर भारी जूतों के अंदर दो जोड़े मोज़े थे, एक टोपी, एक स्कार्फ़ और काफ़ी कुछ था। घर से निकलने से पहले ही मेरा दम घुटने लगा था, लेकिन किसी ने भी यह पूछने की ज़हमत नहीं की कि मुझे कैसा महसूस हो रहा था।

मारगोट ने अपने स्कूल के बस्ते में अपनी किताबें भरी, अपनी साइकिल लेने गई और मीप के पीछे-पीछे किसी अनजानी जगह पर चली गई। कुछ भी हो, मैंने यही सोचा था, क्योंकि मुझे अब भी नहीं पता कि हमारे छिपने की जगह कहाँ थी।

साढ़े सात बजे हमने भी घर छोड़ दिया; मोर्तें ही अकेली ऐसी प्राणी थी, जिसे मैंने अलविदा कहा। एक नोट के मुताबिक हम मि. गल्डश्मिट के यहाँ गए थे, बिल्ली को पड़ोसियों के पास ले जाना था, जो उसे पनाह देते।

बिखरे हुए बिस्तर, मेज़ पर नाश्ते की चीज़ें, रसोई में बिल्ली के लिए मांस का टुकड़ा - इन सबसे यही लगा कि हमने जल्दबाज़ी में घर छोड़ा है। लेकिन हमें दिखाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। हम बस वहाँ से निकलना चाहते थे, वहाँ से निकलकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचना चाहते थे। कुछ और मायने भी नहीं रखता था।

बाक़ी कल।

तुम्हारी, ऐन

गुरुवार, 9 जुलाई, 1942

प्रिय किटी,

तो हम वहाँ पहुँच गए, पापा, माँ और मैं, बारिश में चलते हुए, हम सबके पास एक बड़ा व एक छोटा थैला था, जिनमें कई तरह की चीज़ें ठूँस-ठूँसकर भरी थी। उस सुबह अपने काम पर जाते हुए लोग हमें सहानुभूति भरी नज़रों से देख रहे थे; उनके चेहरे देखकर अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि उन्हें बुरा लग रहा था कि वे हमें किसी तरह की सवारी की पेशकश नहीं कर सकते थे, साफ़ तौर पर दिखने वाला पीला सितारा ख़ुद ही सब कुछ कह रहा था।

आगे बढ़ने के साथ-साथ पापा और माँ ने धीरे-धीरे उजागर किया कि योजना क्या है। कई महीनों से हम जहाँ तक मुमकिन हो, अपना अधिकांश फ़र्नीचर व सामान निकालते रहे थे। हम

इस बात पर राज़ी थे कि 16 जुलाई को छिपने के लिए जाएँगे। मारगोट के कॉल अप नोटिस के कारण योजना को दस दिन आगे करना पड़ा, जिसका मतलब था कि हमें कम व्यवस्थित कमरों से काम चलाना था।

छिपने की जगह पापा के दफ़्तर की इमारत में थी। किसी बाहरी इंसान के लिए उसे समझना मुश्किल होगा, इसलिए मैं समझाती हूँ। पापा के दफ़्तर में बहुत ज़्यादा लोग काम नहीं करते, सिर्फ़ मि. कुगलर, मि. क्लेमन, मीप और 23 साल की एक टाइपिस्ट बेप वुश्कल हैं, जिन्हें हमारे आने के बारे में बताया गया था। बेप के पिता मि. वुश्कल दो सहायकों के साथ गोदाम में काम करते हैं, सहायकों को कुछ नहीं बताया गया।

इमारत का वर्णन इस प्रकार है। भूतल पर मौजूद विशाल गोदाम का इस्तेमाल काम करने और सामान रखने के लिए किया जाता है और उसे कई हिस्सों में बाँटा गया है, जैसे कि माल रखने की जगह और मसाले पीसने की जगह, जहाँ दालचीनी, लौंग और काली मिर्च की जगह इस्तेमाल होने वाली चीज़ों को पीसा जाता है।

गोदाम के दरवाज़े की बग़ल में एक और बाहरी दरवाज़ा है, दफ़्तर में घुसने का एक और प्रवेशद्वार। दफ़्तर के दरवाज़े के ठीक अंदर दूसरा दरवाज़ा है और उसके बाद सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियों के ऊपर एक और दरवाज़ा है, जिसकी खिड़की पर काले अक्षरों में ऑफ़िस लिखा है। यह सामने का बड़ा सा ऑफ़िस है — बहुत विशाल, रोशन और भरा-पूरा। दिन में बेप, मीप और मि. क्लेमन वहाँ काम करते हैं। तिजोरी, अलमारी और स्टेशनरी की बड़ी सी अलमारी वाले आले को पार करके आप एक छोटे, अँधेरे, घुटन भरे पीछे के ऑफ़िस में पहुँचते हैं। पहले यह मि. कुगलर और मि. फ़ॉन डान का साझा कमरा था, लेकिन अब यहाँ पर केवल मि. कुगलर ही काम करते हैं। मि. कुगलर के दफ़्तर में गलियारे से भी पहुँचा जा सकता है, लेकिन तभी जब आप काँच के दरवाज़े से उसमें घुसें, जिसे अंदर से खोला जा सकता है, लेकिन बाहर से आसानी से नहीं खोला जा सकता। अगर आप मि. कुगलर के दफ़्तर से कोयले के स्टोर से होकर लंबे, सँकरे गलियारे से निकलें और चार सीढ़ियाँ चढ़ें, तो आप ख़ुद को एक प्राइवेट ऑफ़िस में पाएँगे, जो पूरी इमारत की सबसे देखने लायक़ जगह है। बढ़िया महोगनी फ़र्नीचर, कालीन से ढँका फ़र्श, ख़ूबसूरत लैम्प, सब कुछ बेहतरीन है। उसके बग़ल में बड़ा सा रसोईघर है, जिसमें दो वॉटर हीटर और दो गैस रिंग्स हैं, उसके बाद शौचालय है। वह पहली मंज़िल है।

नीचे के गलियारे से लकड़ी की सीढ़ियों से दूसरी मंज़िल पर पहुँचा जा सकता है। सीढ़ियों में सबसे ऊपर एक प्लेटफ़ार्म है, जिसके दोनों तरफ़ दरवाज़े हैं। बाईं ओर का दरवाज़ा आपको घर के अगले हिस्से में मौजूद मसाले रखने की जगह, परछत्ती और अटारी तक ले जाता है। घर के सामने के हिस्से से एक डच शैली की सीधी खड़ी सीढ़ियाँ गली में खुलने वाले दरवाज़े तक जाती हैं।

प्लेटफ़ार्म के दाईं ओर का दरवाज़ा घर के पिछले हिस्से में मौजूद गुप्त जगह तक ले जाता

है। किसी को भी शक नहीं होगा कि सादे धूसर से दरवाज़े के पीछे इतने सारे कमरे होंगे दरवाज़े से बस एक क़दम बढ़ाते ही आप अंदर पहुँच जाते हैं। आपके ठीक सामने सीधी खड़ी सीढ़ियाँ हैं। बाईं ओर एक सँकरा गलियारा है, जो एक कमरे में खुलता है, जो फ़्रैंक परिवार की बैठक और सोने का कमरा है। उसके बग़ल में एक छोटा कमरा है, जो परिवार की दो लड़कियों का शयन व अध्ययन कक्ष है। सीढ़ियों के दाईं तरफ़ एक बिना खिड़की वाला बाथरूम है, जिसमें सिर्फ़ एक सिंक है। किनारे के दरवाज़े से शौचालय तक जा सकते हैं और दूसरे से मेरे व मारगोट के कमरे में। अगर आप सीढ़ियों से ऊपर जाते हैं और सबसे ऊपर का दरवाज़ा खोलते हैं, तो इस पुराने से घर में एक बड़ा सा, रोशन कमरा देखकर हैरान रह जाएँगे। इसमें एक गैस कुकर (यह कभी मि. कुगलर की प्रयोगशाला हुआ करता था) और एक सिंक है। यह मि. और मिसेज़ फ़ॉन डान का रसोईघर और शयनकक्ष होगा, इसके अलावा यह हम सबके लिए सामान्य बैठक, भोजनकक्ष और अध्ययनकक्ष होगा। किनारे पर मौजूद छोटा सा कमरा पीटर फ़ॉन डान का सोने का कमरा होगा। ठीक इमारत के अगले हिस्से की तरह यहाँ पर भी एक अटारी और परछत्ती है। तो तुम अब समझ गई। मैंने अपनी प्यारी सी जगह के बारे में तुम्हें बता दिया है।

तुम्हारी ऐन

शुक्रवार, 10 जुलाई, 1942

प्यारी किटी,

शायद मैंने अपने घर का विस्तृत विवरण देकर तुम्हें उबा दिया होगा, लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं कहाँ आ पहुँची हूँ; कैसे पहुँची, इसका अंदाज़ा तुम्हें बाद में होगा।

लेकिन पहले मैं अपनी कहानी जारी रखती हूँ, क्योंकि तुम जानती हो कि मेरी बात अभी ख़त्म नहीं हुई है। 263 प्रिंसग्राख़्त पहुँचते ही मीप हमें तेज़ी से लंबे से गलियारे से होते हुए लकड़ी की सीढ़ियों पर से ऊपर की मंज़िल पर मौजूद उपभवन तक ले गई। उन्होंने निकलते हुए दरवाज़ा बंद किया और हमें वहाँ अकेला छोड़ दिया। मारगोट पहले ही अपनी साइकिल से वहाँ पहुँच चुकी थी और हमारा इंतज़ार कर रही थी।

हमारी बैठक और बाक़ी सभी कमरों में इतना सामान भरा पड़ा था कि मैं उसके बारे में बयाँ नहीं कर सकती। पिछले कुछ महीनों में जो भी गत्ते के डिब्बे दफ़्तर में भेजे गए थे, फ़र्श पर और बिस्तर पर उनका ढेर लगा था। छोटे कमरे में फ़र्श से लेकर छत तक चादरों का ढेर लगा था। अगर हमें उस रात करीने से लगे बिस्तर पर सोना था, तो हमें तुरंत काम पर लगकर उस बेतरतीबी को ठीक करना था। माँ और मारगोट तो हाथ तक नहीं हिला पाईं। वे थकी-हारी अपने ख़ाली गद्दे पर ऐसे ही सो गईं। लेकिन परिवार के दो सफ़ाईपसंद लोग, पापा और मैं, तुरंत काम में जुट गए।

दिन भर हम डिब्बे खोलते रहे, अलमारियों में सामान भरते रहे, सारे सामान को तब तक करीने से लगाते रहे, जब तक कि हम थक कर अपने साफ़ बिस्तर पर नहीं पड़ गए। दिन भर हमने एक बार भी गर्मागर्म खाना नहीं खाया, लेकिन हमें परवाह नहीं थी। माँ और मारगोट बहुत थकी हुई और परेशान थीं, जबकि मैं और पापा बहुत व्यस्त थे।

मंगलवार की सुबह हमने रात को छोड़े हुए काम से शुरुआत की। बेप और मीप हमारे राशन कूपन लेकर ख़रीदारी करने गईं, पापा ने ब्लैकआउट स्क्रीन यानी कमरे अँधेरा रखने वाली जाली पर काम किया। हमने रसोईघर के फ़र्श की सफ़ाई की और एक बार फिर हम सुबह से लेकर रात तक काम में व्यस्त रहे। बुधवार तक मुझे अपनी ज़िंदगी में आए इतने बड़े बदलाव के बारे में सोचने का मौक़ा तक नहीं मिला। इस गुप्त जगह में आने के बाद पहली बार मुझे वक़्त मिला कि मैं तुम्हें उसके बारे में सब कुछ बताऊँ और यह समझूँ कि मेरे साथ क्या हुआ था और क्या कुछ आगे होने वाला था।

तुम्हारी ऐन

शनिवार, 11 जुलाई, 1942

प्यारी किटी,

माँ, पापा और मारगोट अब भी वेस्टरटोरेन घड़ी के घंटे के आदी नहीं हुए हैं, जो हर पंद्रह मिनट में बजते हैं। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं है, मुझे वह शुरू से ही पसंद थी; उसकी आवाज़ ख़ासकर रात को बहुत आश्वस्त करने वाली लगती है। बेशक तुम यह जानना चाहती हो कि छिपकर रहने को लेकर मैं क्या सोचती हूँ। मैं इतना ही कह सकती हूँ कि अब तक मैं ख़ुद ठीक से नहीं जान पाई हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी इस घर में सहज महसूस कर सकूँगी, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मुझे इससे नफ़रत है। यह किसी अजीब सी जगह में छुट्टी बिताने की तरह है। छिपकर जीने को देखने का यह अजीब तरीक़ा है, लेकिन हालात ऐसे ही हैं। यह छिपने की आदर्श जगह है। यह नम और असंतुलित हो सकती है, लेकिन शायद पूरे ऐम्स्टर्डम में छिपने की इससे ज़्यादा आरामदेह जगह नहीं हो सकती। नहीं, पूरे हॉलैंड में नहीं हो सकती।

अब तक सूनी दीवारों वाला हमारा बेडरूम बहुत ख़ाली सा था। शुक्र है पापा का, जो पहले से ही यहाँ मेरा पूरा पोस्टकार्ड और फ़िल्मी सितारों का संग्रह ले आए और ब्रश व गोंद की वजह से मैं दीवारों पर तसवीरें लगा सकी। अब यह ख़ुशनुमा लगता है। फ़ॉन डान परिवार के आने पर हम अटारी पर मौजूद लकड़ी से अलमारियाँ और कई तरह की चीज़ें बना सकेंगे।

मारगोट और माँ काफ़ी हद तक सँभल चुकी हैं। कल माँ की तबियत इतनी ठीक थी कि उन्होंने पहली बार मटर का सूप बनाया, लेकिन वे नीचे बातचीत में इतनी मशगूल हो गईं कि उसे बिलकुल भूल गईं। मटर सूखकर काले हो गए और बहुत खुरचने पर भी पैन से अलग नहीं

हुए।

बीती रात हम चारों ने नीचे की मंज़िल पर प्राइवेट ऑफ़िस में जाकर वायरलेस पर इंग्लैंड को सुना। मैं इतनी डर गई थी कि कहीं कोई सुन न ले कि मैंने पापा से विनती की कि वे मुझे ऊपर ले जाएँ। मेरी बेचैनी को माँ समझ गईं और वे मेरे साथ आईं। कोई भी काम करते हुए हमें डर लगता है कि कहीं कोई पड़ोसी हमारी बात न सुन ले या हमें देख न ले। पहले ही दिन हमने पर्दे सिले। वैसे उन्हें पर्दे कहना मुश्किल है, क्योंकि वे और कुछ नहीं अलग-अलग आकार, क्वालिटी व डिज़ाइन के कपड़ों के टुकड़े हैं, जिन्हें पापा और मैंने अनगढ़ तरीक़े से एक साथ जोड़कर सिला है। कला के इन नमूनों को खिड़कियों पर टाँग दिया गया, जहाँ वे हमारे छिपने तक रहेंगे।

हमारे दाईं ओर की इमारत केग कंपनी की एक शाखा है, जो ज़ानदाम की है और हमारे बाईं ओर एक फ़र्नीचर वर्कशॉप है। वहाँ काम करने वाले लोग हालाँकि काम के बाद वहाँ नहीं होते हैं, लेकिन हमारी किसी भी तरह की आवाज़ दीवारों के पार पहुँच सकती है। हमने मारगोट को रात को खाँसने से मना किया है, जबकि उसे काफ़ी जुकाम है, हम उसे बड़ी मात्रा में कोडीन दे रहे हैं।

मैं फ़ॉन डान परिवार की राह देख रही हूँ, वे मंगलवार को आने वाले हैं। उनके आने से ज़्यादा मज़ा आएगा और इतनी ख़ामोशी भी नहीं रहेगी। पता है, यही ख़ामोशी शाम व रात को मुझे घबराहट से भर देती है और मैं अपने किसी मददगार को यहाँ सोने देने के लिए कुछ भी कर सकती हूँ।

यहाँ उतना बुरा भी नहीं है, क्योंकि हम अपना खाना बना सकते हैं और डैडी के ऑफ़िस में रेडियो सुन सकते हैं। मि. क्लेमन, मीप और बेप वुश्कल ने हमारी बहुत मदद की है। हम अब तक काफ़ी रूबार्ब, स्ट्रॉबेरी और चेरी संरक्षित कर चुके हैं, इसलिए फ़िलहाल तो मुझे नहीं लगता कि हम ऊब जाएँगे। हमारे पास पढ़ने के लिए भी काफ़ी कुछ है और हम बहुत सारे गेम्स भी ख़रीदने वाले हैं। हाँ, हम कभी खिड़की से बाहर नहीं देख सकते या बाहर नहीं जा सकते। हमें शांत रहना पड़ता है, ताकि नीचे के लोग हमें न सुन सकें।

कल तो हमें बहुत काम था। हमें दो क्रेट्स चेरी के बीज निकालने थे, ताकि उन्हें मि. कुगलर के लिए संरक्षित कर सकें। ख़ाली क्रेट्स से हम किताबों के आले बनाएँगे।

कोई मुझे पुकार रहा है।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 12 जुलाई, 1942

एक महीना पहले मेरे जन्मदिन के कारण उन सबका बर्ताव मेरे साथ बहुत अच्छा था और अब

हर दिन मुझे लगता है कि मैं माँ और मारगोट से दूर होती जा रही हूँ। आज मैंने बहुत मेहनत की और उन्होंने मेरी तारीफ़ भी की, लेकिन पाँच मिनट बाद ही उन्होंने मीन-मेख निकालना शुरू कर दिया।

तुम आसानी से देख सकती हो कि वे मुझसे अलग तरह का बर्ताव करते हैं और मारगोट से अलग। जैसे मारगोट ने वैक्यूम क्लीनर तोड़ दिया और उसकी वजह से दिन भर हमें लाइट के बिना रहना पड़ा। माँ ने कहा, 'मारगोट, पता चल रहा है कि तुम्हें काम करने की आदत नहीं है; वरना तुम्हें पता होता था कि प्लग को झटके से नहीं खींचना चाहिए।' मारगोट ने जवाब में कुछ कहा और बस कहानी ख़त्म हो गई।

लेकिन आज दोपहर जब मैं माँ की ख़रीदारी की सूची पर कुछ लिखना चाहती थी, क्योंकि उनकी लिखाई पढ़ना मुश्किल है, तो उन्होंने मुझे ऐसा नहीं करने दिया। उन्होंने मुझे फिर से डाँटा और फिर पूरा परिवार उसमें शामिल हो गया।

उनके साथ मेरा मेल नहीं बैठता और पिछले कुछ हफ़्तों में मैंने यह बहुत साफ़ तौर पर महसूस किया है। वे सब मिलकर भावुक हो जाते हैं, लेकिन मैं अपने आप में भावुक होना पसंद करूँगी। वे हमेशा कहते हैं कि हम चारों का साथ होना कितना अच्छा है और हम कैसे मिलकर रहते हैं, वे एक पल को भी यह नहीं सोचते कि मुझे वैसा महसूस नहीं होता।

सिर्फ़ डैडी ही हैं, जो कभी-कभी मुझे समझते हैं, हालाँकि वे अक्सर माँ या मारगोट का पक्ष लेते हैं। उनकी एक और बात मुझे पसंद नहीं कि वे बाहर के लोगों के सामने मेरे बारे में बात करें, उन्हें बताएँ कि मैं कैसे रोई या फिर मैं कितनी अच्छी तरह बर्ताव कर रही हूँ। यह बुरी बात है। और कई बार वे मोर्ते की बात करते हैं, जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। मोर्ते मेरी कमज़ोरी है। मैं हर पल उसे याद करती हूँ और कोई नहीं जानता कि मैं उसे कितना याद करती हूँ, जब भी मैं उसे याद करती हूँ, तो मेरी आँखें भर आती हैं। मोर्ते इतनी प्यारी है और मैं उसे इतना प्यार करती हूँ कि मैं सपना देखती हूँ कि वह हमारे पास वापस आ जाएगी।

मेरे बहुत से सपने हैं, लेकिन सच्चाई यही है कि हमें लड़ाई के ख़त्म होने तक यहीं रहना होगा। हम कभी बाहर नहीं जा सकते, और हमारे पास मीप, उनके पति यान, बेप वुश्कल, मि. वुश्कल, मि. कुगलर, मि. क्लेमन और मिसेज़ क्लेमन ही आ सकते हैं, हालाँकि मिसेज़ क्लेमन यहाँ नहीं आईं, क्योंकि उन्हें लगता है कि यहाँ आना बहुत ख़तरनाक है।

शुक्रवार, 14 अगस्त, 1942

प्यारी किटी,

मैं पूरे एक महीने तुमसे दूर रही, लेकिन इस दौरान ऐसा कुछ नहीं हुआ, जिस पर रोज़ कुछ बताया जाए। फ़ॉन डान परिवार 13 जुलाई को पहुँचा। हमें लगा कि वे चौदह को आएँगे, लेकिन तेरह से सोलह के बीच जर्मन लगातार नोटिस भेज रहे थे, जिनसे बहुत बेचैनी फैल रही

थी, इसलिए उन्होंने एक दिन देर करने के बजाय एक दिन पहले आने का फ़ैसला किया।

पीटर फ़ॉन डान सुबह साढ़े नौ बजे (जब हम नाश्ता कर रहे थे) पहुँचा। सोलह का पीटर एक शर्मीला, अनाड़ी लड़का है, जिसकी संगत ज़्यादा मायने नहीं रखती। मि. और मिसेज़ डान आधे घंटे बाद आए। हमें यह देखकर बहुत कौतुक हुआ कि मिसेज़ फ़ॉन डान एक हैटबॉक्स में बड़ा सा चेम्बर पॉट यानी मूत्रपात्र लेकर आई थीं। 'इसके बिना मुझे अपने घर जैसा नहीं लगता,' उन्होंने कहा और वह पहली चीज़ थी, जिसे दीवान के नीचे स्थायी जगह मिली थी। मि. फ़ॉन चेम्बर पॉट के बजाय सिमटने वाली टी टेबल दबाए हुए थे।

पहले दिन हम सबने साथ खाना खाया और तीन दिन बाद हमें लगा कि जैसे हम सातों एक बड़ा सा परिवार बन गए थे। ज़ाहिर था कि फ़ॉन डान के पास उस हफ़्ते के बारे में बताने के लिए काफ़ी कुछ था, जब हम सभ्यता से दूर थे। हमारी दिलचस्पी ख़ासतौर पर इस बात में थी कि हमारे मकान और मि. गल्डश्मिट का क्या हुआ।

मि. फ़ॉन डान ने बताया: 'सोमवार की सुबह नौ बजे मि. गल्डश्मिट ने फ़ोन करके मुझे अपने पास बुलाया। मैं सीधे वहाँ गया और परेशान गल्डश्मिट से मुलाक़ात हुई। उन्होंने मुझे फ़्रैंक परिवार द्वारा छोड़ा गया एक नोट दिखाया। निर्देश के अनुसार वे कार को पड़ोसियों के पास ले जाने वाले थे, जो मेरे हिसाब से सही विचार था। उन्हें डर था कि घर की तलाशी ली जा सकती थी, इसलिए हम सभी कमरों में गए, यहाँ-वहाँ सफ़ाई की और मेज़ से नाश्ते की चीज़ों को हटा दिया। अचानक मुझे मिसेज़ फ़्रैंक के डेस्क पर एक नोटपैड दिखाई दिया, जिस पर मासत्रिख़्त का पता लिखा था। हालाँकि मैं जानता था कि मिसेज़ फ़्रैंक ने उसे जानबूझकर छोड़ा था, फिर भी मैंने हैरान और डरे होने का दिखावा किया और मि. गल्डश्मिट से उस फँसाने वाले काग़ज़ के टुकड़े को जला देने की प्रार्थना की। मैंने क़सम खाई कि मुझे आपके ग़ायब होने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन उस नोट से मुझे एक ख़याल आया। मैंने कहा, "मि. गल्डश्मिट, मैं जानता हूँ कि उस पते का क्या मतलब है। क़रीब छह महीने पहले एक बड़ा अफ़सर दफ़्तर में आया था। लगता था कि मि. फ़्रैंक और वह साथ पले-बढ़े थे। उसने ज़रूरत पड़ने पर मि. फ़्रैंक की मदद करने का वादा किया था। जहाँ तक मुझे याद है, वह मासत्रिख़्त में था। लगता है कि उस अफ़सर ने अपना वादा पूरा किया है और किसी तरह से बेल्जियम पार कर स्विट्ज़रलैंड तक पहुँचने में उनकी मदद करने की योजना बना रहा है। फ़्रैंक परिवार के बारे में पूछताछ करने वाले उनके दोस्तों को यह बात बताने में कोई हर्ज़ नहीं है। आपको बस मासत्रिख़्त का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है।" उसके बाद मैं चला गया। आपके अधिकतर मित्रों को यही कहानी बताई गई है, क्योंकि बाद में कई लोगों से मैंने यह बात सुनी।'

हमें वह बात बहुत मज़ाकिया लगी, लेकिन हमें तब बहुत ज़्यादा हँसी आई, जब मि. फ़ॉन डान ने हमें बताया कि कुछ लोगों की कल्पनाशक्ति ज़बरदस्त होती है। उदाहरण के लिए, हमारे इलाके में रहने वाले एक परिवार का दावा था कि उन्होंने हम चारों को सुबह साइकिल पर

जाते देखा, जबकि एक महिला इस बात को लेकर आश्वस्त थी कि हमें आधी रात को किसी फ़ौजी गाड़ी में ले जाया गया था।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 21 अगस्त, 1942

प्यारी किटी,

अब हमारी गुप्त जगह वाक़ई बहुत गुप्त बन गई है। छिपी हुई साइकिलों की तलाश में कई घरों की तलाश हो रही है, इसलिए मि. कुगलर ने सोचा कि बेहतर होगा कि हमारी छिपने की जगह के प्रवेशद्वार पर किताबों की एक अलमारी बना दी जाए। यह कब्ज़ों पर हिलती है और दरवाज़े की तरह खुलती है। मि. वुश्कल ने लकड़ी का काम किया। (मि. वुश्कल को बताया गया है कि हम सातों यहाँ छिपे हुए हैं और वे काफ़ी मददगार रहे हैं।)

अब हमें नीचे जाते हुए सिर झुकाना होता है और फिर छलाँग लगानी होती है। शुरुआती तीन दिनों में तो निचली चौखट पर सिर लगने से हम सभी के सिर पर गूमड़ निकल आए थे। पीटर ने फिर एक तौलिए में लकड़ी की छीलन भरकर उसे चौखट पर लगा दिया। देखते हैं कि उससे मदद मिलती है या नहीं!

आजकल मैं स्कूल का काम ज़्यादा नहीं करती। मैंने सितंबर तक ख़ुद को छुट्टी दे दी है। पापा मुझे पढ़ाना शुरू करना चाहते हैं, लेकिन हमें उससे पहले किताबें ख़रीदनी होंगी।

हमारी ज़िंदगी में कुछ ख़ास नहीं बदला है। पीटर के बाल आज धुले, लेकिन उसमें कुछ भी ख़ास नहीं है। मैं और मि. फ़ॉन डान हमेशा एक-दूसरे से असहमत रहते हैं। मम्मी मुझे छोटे बच्चे जैसा समझती है, जो मुझे कतई पसंद नहीं। बाक़ी लोगों के लिए हालात बेहतर हैं। मुझे नहीं लगता कि पीटर पहले से अच्छा हुआ है। वह बेकार लड़का है, जो दिन भर बिस्तर पर लेटा रहता है और सिर्फ़ थोड़ा-बहुत लकड़ी का काम करने के लिए उठता है और फिर से झपकी लेने चला जाता है। वह बहुत बेढंगा है!

आज सुबह मम्मी ने अपनी एक बेकार सी सीख दी। हमारे विचार एक-दूसरे से बिलकुल उलट हैं। पापा बहुत अच्छे हैं, वे मुझ पर नाराज़ होते हैं, लेकिन उनकी नाराज़गी पाँच मिनट से ज़्यादा नहीं रहती।

बाहर दिन ख़ूबसूरत है, अच्छा और गर्म, लेकिन उसके बावजूद ऐसा मौसम हम अटारी पर बिस्तर में पड़े रहकर गुज़ार देते हैं।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 2 सितंबर, 1942

प्यारी किटी,

मि. और मिसेज़ फ़ॉन डान में भयानक झगड़ा हुआ। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा, क्योंकि मम्मी-डैडी एक-दूसरे पर इस तरह से चिल्लाने की बात सोच भी नहीं सकते। उनका झगड़ा इतनी मामूली सी बात पर था कि जिस पर कुछ भी कहने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन हर किसी का अपना नज़रिया है। ओह हाँ, प्रत्येक का अपना।

पीटर के लिए यह वाक़ई बहुत मुश्किल है, जो कि बीच में फँस जाता है, लेकिन अब उसे कोई गंभीरता से नहीं लेता, क्योंकि वह बहुत संवेदनशील और आलसी है। कल वह ख़ुद ही बहुत परेशान था, क्योंकि उसकी जीभ गुलाबी के बजाय नीली हो गई थी। यह अनोखी बात जितनी तेज़ी से हुई थी, उतनी ही तेज़ी से ग़ायब भी हो गई। आज वह गर्दन पर मोटा स्कार्फ़ डालकर घूम रहा है, क्योंकि वह अकड़ गई है। महाशय कमर-दर्द की शिकायत भी करते रहे हैं। उसके दिल, गुर्दों व फेफड़ों में भी दुःख-तकलीफ़ है। वह पूरी तरह रोगभ्रमी यानी रोगों के वहम से पीड़ित (यही सही शब्द है, है न?) है!

माँ और मिसेज़ फ़ॉन डान में पट नहीं रही है। टकराव की काफ़ी वजहें हैं। एक छोटा सा उदाहरण तुम्हें देती हूँ। मिसेज़ फ़ॉन डान ने हमारी सामूहिक अलमारी में से अपनी तीन चादरों को छोड़कर बाक़ी सभी चादरें हटा ली हैं। उन्हें लगता है कि माँ की चादरें दोनों परिवारों के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं। उन्हें जब पता चलेगा कि माँ ने भी वैसा ही किया है, तो उन्हें बहुत झटका लगेगा।

इसके अलावा मिसेज़ फ़ॉन डी इस बात को लेकर चिढ़ी हुई हैं कि हम चीनी मिट्टी के उनके बर्तनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। वे अब भी यह जानने की कोशिश में हैं कि हमने अपनी प्लेट्स का क्या किया; वे उनकी कल्पना से ज़्यादा नज़दीक हैं, क्योंकि उन्हें अटारी में ओपेक्टा की विज्ञापन सामग्री के पीछे गत्ते के डिब्बों में पैक किया गया था। जब तक हम छिपे हुए हैं, तब तक प्लेट्स तो उनकी पहुँच से दूर रहेंगी। चूँकि मैं हमेशा हादसों में शामिल होती हूँ, तो ऐसा ही हुआ! कल मैंने मिसेज़ फ़ॉन डी का सूप का एक प्याला तोड़ दिया।

वे गुस्से में बोलीं, 'ओह! क्या थोड़ी सावधानी नहीं बरत सकती? वह आख़िरी था।'

ग़ौरतलब यह है किटी कि दोनों महिलाएँ (पुरुषों पर टिप्पणी की जुर्रत नहीं कर सकती, वे अपमानित महसूस करेंगे) बहुत ख़राब डच बोलती हैं। अगर तुम उनकी गड़बड़ कोशिशों को सुन लो, तो हँसते-हँसते लोटपोट हो जाओगी। हमने उनकी ग़लतियाँ निकालना छोड़ दिया है, क्योंकि उससे कोई फ़ायदा भी नहीं होने वाला है। जब भी मैं माँ या मिसेज़ फ़ॉन डान की बात लिखूँगी, तो सही डच लिखूँगी, न कि उनकी नक़ल करूँगी।

पिछले हफ़्ते हमारे एकरसता वाली दिनचर्या में थोड़ी हलचल हुई। यह पीटर और उसके

पास औरतों के बारे में मौजूद एक किताब से हुई। मैं तुम्हें बता दूँ कि मारगोट और पीटर को मि. क्लेमन द्वारा दी गई सभी किताबें पढ़ने की इजाज़त है। लेकिन वयस्क लोग इस ख़ास किताब को अपने पास रखना पसंद करते थे। उससे पीटर की उत्सुकता बढ़ गई। आख़िर उसमें छिपाने लायक़ ऐसा क्या था? जब उसकी माँ नीचे बात करने में मशगूल थी, तो उसने चुपके से किताब उठाई और उसे लेकर ऊपर चला गया। दो दिन तक सब कुछ ठीक रहा। मिसेज़ फ़ॉन डान उसकी करतूत के बारे में जानती थीं, लेकिन चुप रहीं और यह बात तब सामने आई, जब मि. फ़ॉन डान को उसका पता चला। वे आगबबूला हो गए, उससे किताब छीन ली और मान लिया कि बात वहीं ख़त्म हो गई होगी। लेकिन उन्हें अपने बेटे की उत्सुकता का ध्यान नहीं था। पीटर पर अपने पिता की इस कार्रवाई का कोई असर नहीं पड़ा, बल्कि वह उस बेहद दिलचस्प किताब के बचे हुए पन्ने पढ़ने की तरकीब लगाने में जुट गया।

इस बीच मिसेज़ फ़ॉन डान ने माँ की राय माँगी। माँ को नहीं लगता कि वह किताब मारगोट के लिए सही है, लेकिन उन्हें बाक़ी अधिकतर किताबें पढ़ने की इजाज़त देने में कोई बुराई नहीं लगी।

'देखिए, मिसेज़ फ़ॉन डान। मारगोट व पीटर में बहुत अंतर है। सबसे पहले तो मारगोट एक लड़की है और लड़कों के मुक़ाबले लड़कियाँ हमेशा ज़्यादा परिपक्व होती हैं। दूसरे, वह पहले ही काफ़ी गंभीर किताबें पढ़ चुकी है और उन किताबों की तलाश में नहीं रहती, जो अब निषिद्ध नहीं रही। तीसरे, एक बेहतरीन स्कूल में चार साल पढ़ने के कारण मारगोट काफ़ी समझदार व बौद्धिक रूप से विकसित है।'

मिसेज़ फ़ॉन डान उनसे सहमत थीं, लेकिन उन्हें लगा कि बड़ों के लिए लिखी गई किताबों को बच्चों को पढ़ने देना सैद्धांतिक रूप से ग़लत था।

इस दौरान पीटर ने किसी ऐसे सही समय के बारे में सोच लिया था, जब उसमें या किताब में किसी की दिलचस्पी न हो। शाम साढ़े सात बजे जब पूरा परिवार निजी दफ़्तर में वायरलेस सुन रहा था, तब उसने अपना ख़ज़ाना उठाया और फिर से ऊपर चला गया। उसे साढ़े आठ बजे तक वापस आ जाना चाहिए था, लेकिन वह किताब में इतना खो गया था कि उसे वक़्त का पता ही नहीं चला और वह सीढ़ियों से नीचे उतर ही रहा था कि उसके पिता कमरे में पहुँचे। उसके बाद का दृश्य हैरान करने वाला नहीं था: एक थप्पड़, ज़ोर की चोट और रस्साकशी के बाद किताब मेज़ पर थी और पीटर वापस ऊपर।

खाना खाने के समय हालात इस तरह थे। पीटर ऊपर ही रहा। उसके बारे में किसी ने भी नहीं सोचा; उसे खाना खाए बिना सोना था। हम खाना खाते रहे, बातचीत करते रहे, तभी हमें अचानक सीटी की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। हमने अपने काँटे-छुरी नीचे रखे और एक-दूसरे को देखा, हमारे मुरझाए हुए चेहरों पर दहशत साफ़ तौर पर दिख रही थी।

फिर हमें चिमनी से पीटर की आवाज़ सुनाई दी: 'मैं नीचे नहीं आऊँगा!'

तेज़ी से उठते हुए मि. फ़ॉन डान का नैपकिन फ़र्श पर गिर गया और वे गुस्से में चिल्लाए, 'अब बहुत हो गया!'

पापा ने किसी आशंका को देखते हुए उनकी बाँह पकड़ ली और दोनों ऊपर चले गए। काफ़ी जद्दोजहद और डाँट-फटकार के बाद पीटर अपने कमरे में गया और दरवाज़ा बंद कर लिया, हम लोग खाना खाते रहे।

मिसेज़ फ़ॉन डान डबलरोटी का एक टुकड़ा अपने प्यारे बेटे के लिए रखना चाहती थीं, लेकिन मि. फ़ॉन डी अड़े हुए थे। 'अगर उसने अभी माफ़ी नहीं माँगी, उसे ऊपर ही सोना पड़ेगा।'

हमने यह कहते हुए विरोध किया कि सज़ा के तौर पर खाने के बिना सोना ही काफ़ी है। अगर पीटर को ठंड लग गई तो? हम डॉक्टर को भी नहीं बुला पाएँगे।

पीटर ने माफ़ी नहीं माँगी और वापस अटारी पर चला गया। मि. फ़ॉन डान ने उसे अकेला छोड़ना ठीक समझा, हालाँकि उन्होंने सुबह गौर किया कि पीटर के बिस्तर पर कोई सोया था। सात बजे पीटर वापस चला गया, लेकिन पापा द्वारा नर्मी से बात करने के बाद वह नीचे आ गया। तीन दिन तक उदास दिखने और अड़ियल ख़ामोशी के बाद सब कुछ सामान्य हो गया।

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 21 सितंबर, 1942

प्यारी किटी,

आज मैं यहाँ की सामान्य बातें तुम्हें बताऊँगी। मेरे बिस्तर के ऊपर एक लैम्प लगा दिया गया है, ताकि भविष्य में गोलियों की आवाज़ सुनकर मैं तार खींचकर उसे ऑन कर सकूँ। मैं अभी इसका इस्तेमाल नहीं कर सकती, क्योंकि हम आजकल दिन-रात अपनी खिड़की थोड़ी खुली रखते हैं।

फ़ॉन डान परिवार के पुरुष सदस्यों ने एक अलमारी बनाई है। अब तक यह शानदार अलमारी पीटर के कमरे में रही थी, लेकिन ताज़ा हवा के लिए इसे बाहर लगा दिया गया। इसकी जगह पर एक आला लगा दिया गया। मैंने पीटर को उसके नीचे अपनी मेज़ लगाने, एक अच्छा सा गलीचा रखने और अपनी अलमारी रखने को कहा। उससे उसका कमरा थोड़ा आरामदेह बन जाता, हालाँकि मैं तो वहाँ पर सोना पसंद नहीं करती।

मिसेज़ फ़ॉन डान को झेलना मुश्किल है। मैं जब ऊपर होती हूँ, तो मुझे मेरी लगातार बातचीत के लिए डाँट पड़ती रहती है। मैं तो बस शब्दों को मुँह से निकलने देती हूँ! मोहतरमा ने बर्तन धोने से बचने की एक तरकीब निकाली है। अगर किसी बर्तन में ज़रा सा भी खाना रह जाता है, तो वे उसे किसी काँच के किसी बर्तन में रखने के बजाय वहीं सड़ने देती हैं। फिर जब दोपहर में मारगोट बर्तन धो रही होती है, तो वे कहती हैं, 'अरे, बेचारी मारगोट, तुम्हें कितना

काम करना होता है!'

किसी न किसी हफ़्ते मि. क्लेमन मेरी उम्र की लड़कियों के लिए लिखी गई कुछ किताबें ले आते हैं। *यूप ते होयुल* शृंखला लेकर मैं बहुत उत्साहित हूँ। मैंने सिसी फ़ॉन मार्क्सवेल्ड की सभी किताबों का मज़ा लिया है। मैंने जैनिएस्ट समर को चार बार पढ़ा है और बेतुके हालात पर अब भी मुझे हँसी आती है।

पापा और मैं फ़िलहाल अपने वंशवृक्ष पर काम कर रहे हैं और वे आगे बढ़ते हुए मुझे हर व्यक्ति के बारे में बताते जाते हैं।

मैंने अपना स्कूल का काम शुरू कर दिया है। मैं फ्रेंच में बहुत मेहनत कर रही हूँ और हर रोज़ पाँच अनियमित क्रियाओं को रटती हूँ। लेकिन स्कूल में सीखी हुई अधिकांश चीज़ों को मैं भूल चुकी हूँ।

पीटर ने अंग्रेज़ी की पढ़ाई बहुत अनिच्छा से शुरू की। कुछ स्कूली किताबें अभी आई हैं और मैं घर से बहुत सी अभ्यास-पुस्तिकाएँ, पेंसिल, रबर और लेबल ले आई थी। पिम (हम पापा को प्यार से यही बुलाते हैं) चाहते हैं कि मैं डच में उनकी मदद करूँ। मैं उन्हें पढ़ाना चाहती हूँ, बशर्ते वे फ्रेंच और अन्य विषयों की पढ़ाई में मेरी मदद करें। लेकिन वे तो बहुत ही अविश्वसनीय ग़लतियाँ करते हैं!

मैं कभी-कभी लंदन से होने वाले डच प्रसारण को सुनती हूँ। प्रिंस बर्नार्ड ने हाल ही में घोषणा की कि राजकुमारी जूलियाना जनवरी में बच्चे को जन्म देने वाली हैं, जो कि बहुत बढ़िया ख़बर है। यहाँ कोई नहीं समझता कि मैं शाही परिवार में इतनी दिलचस्पी क्यों लेती हूँ!

कुछ समय पहले मैं चर्चा का विषय थी और हम सबने फ़ैसला किया कि मैं मूर्ख थी। नतीजतन, मैंने अगले ही दिन से ख़ुद को स्कूल की पढ़ाई में झोंक दिया, क्योंकि मैं बिलकुल भी नहीं चाहती कि चौदह या पंद्रह साल की उम्र में मैं पहली कक्षा में रहूँ। इस बात पर भी चर्चा हुई कि मुझे शायद ही कुछ पढ़ने की अनुमति मिलती है। माँ आजकल *जेंटलमेन, वाइव्स ऐंड सर्वेंट्स* पढ़ रही हैं और ज़ाहिर है कि मुझे उसे पढ़ने की इजाज़त नहीं है (हालाँकि मारगोट को है!)। पहले मुझे अपनी प्रतिभाशाली बहन की तरह बौद्धिक रूप से अधिक विकसित होना होगा। फिर दर्शन, मनोविज्ञान और शरीरविज्ञान (मैंने तुरंत शब्दकोश में इन भारी-भरकम शब्दों को खोजा!) को लेकर मेरी अज्ञानता पर बातचीत हुई। सच है कि मुझे इन विषयों की कोई जानकारी नहीं है। लेकिन हो सकता है कि मैं अगले साल तक कुछ सीख लूँ!

मैं इस चौंकाने वाले परिणाम तक पहुँची हूँ कि मेरे पास सर्दियों में पहनने के लिए पूरी बाँह की सिर्फ़ एक पोशाक है और तीन कार्डिगन्स हैं। पापा ने मुझे एक सफ़ेद जम्पर बुनने की अनुमति दे दी है; ऊन बहुत अच्छी नहीं है, लेकिन वह गर्म तो होगी और वही ज़रूरी भी है। हमारे कुछ कपड़े दोस्तों के यहाँ छूटे थे, लेकिन बदक़िस्मती से लड़ाई के बाद ही वे हमें मिल सकते हैं, बशर्ते वे तब भी वहाँ हों।

मिसेज़ फ़ॉन डान के बारे में मैंने कुछ लिखना ख़त्म ही किया था कि वे कमरे में आ गईं। उनकी आहट सुनते ही मैंने डायरी बंद कर दी।

'ऐन, मैं ज़रा सा भी नहीं देख सकती?'

'नहीं, मिसेज़ फ़ॉन डान।'

'आख़िरी पन्ना भी नहीं?'

'नहीं, आख़िरी पन्ना भी नहीं, मिसेज़ फ़ॉन डान।'

मेरी तो जान ही निकलने वाली थी, क्योंकि उसे पन्ने पर तो मैंने उनके बारे में कुछ लिखा था, जो अच्छा नहीं था।

हर रोज़ कुछ न कुछ होता रहता है, लेकिन मैं बहुत थक गई हूँ और लिखने में आलस आ रहा है।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 25 सितंबर, 1942

प्यारी किटी,

पापा के एक दोस्त हैं, 75 के आसपास के मि. ड्रेअर, जो बीमार, ग़रीब और सुनने में नाकाम। उनके साथ पूँछ की तरह लगी रहती हैं उनकी 27 साल छोटी पत्नी, जो उनके जैसी ग़रीब हैं, उनकी बाँहें व टाँगें असली व नक़ली कंगनों व अँगूठियों से भरी रहती हैं, जो कि उनके अच्छे दिनों की निशानी हैं। मि. ड्रेअर हमेशा से ही पापा के लिए सिरदर्द रहे हैं और पापा संतों की तरह जिस धीरज से वे उनसे पेश आते हैं, मैं हमेशा से उसकी कायल रही हूँ। जब हम अपने घर पर रहते थे, तो माँ उनसे रिसीवार के सामने एक ग्रामोफ़ोन लगाने को कहती थीं, जो हर तीन मिनट में दोहराए, 'जी, मि. ड्रेअर' और 'नहीं, मि. ड्रेअर,' क्योंकि बूढ़े सज्जन को पापा के लंबे जवाबों का एक भी शब्द समझ नहीं आता था।

आज मि. ड्रेअर ने ऑफ़िस में फ़ोन किया और मि. कुगलर को मिलने आने को कहा। मि. कुगलर की इच्छा नहीं थी और उन्होंने मीप को भेजने की बात कही, लेकिन मीप ने भी मुलाक़ात रद्द कर दी। मिसेज़ ड्रेअर ने तीन बार दफ़्तर में फ़ोन किया, लेकिन उन्हें बताया गया कि मीप दिन भर बाहर रहने वाली थी, तो मीप को बेप की आवाज़ की नक़ल करनी पड़ी। नीचे दफ़्तर में और ऊपर के हिस्से में भी चुहलबाज़ी का माहौल था। हर बार फ़ोन की घंटी बजने पर बेप कहती हैं, 'ड्रेअर हैं!' और मीप को हँसना पड़ता है, ताकि लाइन के दूसरी ओर मौजूद लोगों को खिलखिलाने की आवाज़ सुनाई दे। क्या तुम कल्पना नहीं कर सकती? यह पूरी दुनिया का सबसे बेहतरीन दफ़्तर होगा। बॉस और ऑफ़िस गर्ल्स ख़ूब मज़े करते हैं!

कभी किसी शाम मैं फ़ॉन डान परिवार के साथ बातचीत करने जाती हूँ। हम 'मॉथबॉल बिस्किट्स' (उन्हें उस अलमारी में रखा गया था, जहाँ नेफ़्थलीन बॉल्स थीं) खाते हैं और मज़े करते हैं। हाल ही में पीटर के बारे में बात हुई। मैंने कहा कि वह अक्सर मेरे गालों पर थपकी देता है, जो मुझे बिलकुल पसंद नहीं। उन्होंने बिलकुल बड़े लोगों के अंदाज़ में मुझे पूछा कि क्या कभी मैं पीटर को भाई की तरह प्यार करना सीखूँगी, क्योंकि वह मुझे बहन की तरह चाहता है। 'अरे नहीं!' मैंने कहा, लेकिन मैं सोच रही थी, 'ओह, छी!' ज़रा कल्पना करो! मैंने यह भी कहा कि वह थोड़ा रूखा है, क्योंकि वह शर्मीला है। जिन लड़कों को लड़कियों के साथ रहनेकी आदत नहीं होती, वे वैसे ही होते हैं।

मैं यह ज़रूर कहूँगी कि अनेक्सकमेटी (पुरुषों वाला भाग) बहुत रचनात्मक है। ज़रा सुनो कि ओपेक्टा कंपनी के सेल्स रिप्रेज़ेंटेटिव मि. ब्रोक्स को संदेश देने की उनकी क्या योजना है, उनके पास हमारा कुछ सामान चुपके से छिपाया गया है। वे दक्षिणी ज़ीलैंड में एक दुकान के मालिक के लिए एक चिट्ठी टाइप करेंगे, जो अप्रत्यक्ष रूप से ओपेक्टा का एक ग्राहक है और उसे एक फ़ॉर्म भरकर पता लिखे लिफ़ाफ़े में वापस भेजने को कहेंगे। पापा उस लिफ़ाफ़े पर ख़ुद पता लिखेंगे। चिट्ठी के ज़ीलैंड से एक बार लौटने पर फ़ॉर्म को हटा दिया जाएगा और पापा के ज़िंदा होने का संदेश हाथ से लिखा जाएगा और उसे लिफ़ाफ़े में डाल दिया जाएगा। इस तरह मि. ब्रोक्स बिना संदेह जगाए पत्र पढ़ सकते हैं। उन्होंने ज़ीलैंड का इलाक़ा इसलिए चुना, क्योंकि वह बेल्जियम (पत्र को सीमा के पार आसानी से भेजा जा सकता है) के पास है और क्योंकि स्पेशल परमिट के बिना किसी को भी वहाँ जाने की अनुमति नहीं है। मि. ब्रोक्स जैसे सामान्य सेल्समैन को कभी भी परमिट नहीं मिल सकता।

कल पापा ने एक और कारनामा किया। नींद में वे बिस्तर से गिर पड़े। उनके पैर इतने ठंडे थे कि मैंने उन्हें जुराब दिए। पाँच मिनट बाद उन्होंने जुराब को फ़र्श पर फेंक दिया। फिर उन्होंने कंबल को सिर तक खींच लिया, क्योंकि रोशनी से उन्हें परेशानी हो रही थी। लैम्प बंद कर दिया गया और फिर उन्होंने डरते-डरते अपना सिर बाहर निकाला। वह सब बहुत मज़ेदार था। हम बात कर रहे थे कि कैसे पीटर कहता है कि मारगोट 'बिज़ी बी' है। अचानक कहीं गहराई से पापा की आवाज़ सुनाई दी: 'तुम्हारा मतलब है, बिज़ी बॉडी (जो हमेशा व्यस्त रहे)।'

समय बीतने के साथ मूशी बिल्ली मेरे साथ अच्छी तरह रहने लगी है, लेकिन फिर भी मुझे उससे थोड़ा डर लगता है।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 27 सितंबर, 1942

प्यारी किटी,

माँ और मेरे बीच आज तथाकथित 'चर्चा' हुई, लेकिन सबसे खिझाने वाली बात यह थी कि मेरे आँसू निकल गए। मैं कुछ नहीं कर सकती। पापा मेरे साथ हमेशा अच्छी तरह पेश आते हैं और वे मुझे बेहतर समझते हैं। ऐसे पलों में मैं माँ को नहीं झेल सकती। यह साफ़ है कि मैं उनके लिए अजनबी हूँ; वे इतना भी नहीं जानती कि सामान्य चीज़ों को लेकर मेरी क्या राय है।

हम नौकरानियों के बारे में बात कर रहे थे और यह बात कि उन्हें 'घरेलू सहायिका' कहा जाना चाहिए। माँ का कहना था कि लड़ाई ख़त्म हो जाने पर वे वही कहलाना पसंद करेंगी। मैंने उस बात को वैसे नहीं देखा। फिर उन्होंने कहा कि मैं 'बाद में' के बारे में अक्सर बोलती हूँ और मैं किसी लेडी की तरह बर्ताव करती हूँ, जबकि मैं हूँ नहीं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ख़याली पुलाव पकाना इतनी बुरी बात है, अगर उसे बहुत गंभीरता से न लिया जाए। ख़ैर, पापा अक्सर मेरे बचाव के लिए आ जाते हैं। उनके बिना तो मैं शायद यहाँ नहीं टिक पाती।

मारगोट से भी मेरी ज़्यादा नहीं पटती। हालाँकि हमारे परिवार में वह सब नहीं होता, जो ऊपर चलता है, फिर भी मुझे यह उतना ख़ुशनुमा नहीं लगता। मारगोट और माँ के व्यक्तित्व मुझे इतने अजनबी लगते हैं। मैं अपनी सहेलियों को अपनी माँ से बेहतर समझती हूँ। क्या यह शर्म की बात नहीं है?

मिसेज़ फ़ॉन डान हज़ारवीं बार नाराज़ हो रही हैं। वे बहुत बदमिज़ाज हैं और लगातार अपने ज़्यादा से ज़्यादा सामान को निकालकर बंद कर रही हैं। यह बहुत बुरी बात है कि माँ फ़ॉन डान की इन हरकतों का सही जवाब नहीं दे पाती।

फ़ॉन डान जैसे कुछ लोगों को न सिर्फ़ अपने बच्चों की परवरिश करने में ख़ुशी मिलती है, बल्कि इस काम में दूसरों की मदद करने में भी। मारगोट को इसकी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह सहज रूप से अच्छी, दयालु, चतुर और पूरी तरह से संपूर्ण, लेकिन शायद दोनों के बदले मैं काफ़ी शरारती हूँ। हमारे यहाँ का वातावरण फ़ॉन डान परिवार की झिड़कियों और मेरे गुस्ताख़ जवाबों से भरा है। मम्मी-पापा हमेशा बहुत ज़बरदस्त तरीक़े से मेरा बचाव करते हैं। उनके बिना मैं अपने सामान्य संतुलन के साथ फिर से मोर्चा नहीं सँभाल पाती। वे मुझे कम बात करने, अपने काम से काम रखने और ज़्यादा विनम्र बने रहने के लिए कहते रहते हैं, लेकिन शायद मुझे नाकाम ही होना है। अगर पापा इतने धीरज वाले नहीं होते, तो मैं अपने माँ-बाप की सामान्य सी आशाओं पर खरा उतरने की उम्मीद कब की छोड़ चुकी होती।

अगर मैं नापसंद आने वाली सब्ज़ी कम लूँ और उसके बजाय आलू खाऊँ तो फ़ॉन डान परिवार, ख़ासकर मिसेज़ फ़ॉन डान यह कहते नहीं चूकती कि मैं कितनी बिगड़ी हुई हूँ। वे कहती हैं, 'अरे ऐन, और सब्ज़ियाँ लो।'

'नहीं, शुक्रिया, मैडम,' मेरा जवाब होता है। 'आलू काफ़ी हैं।'

'सब्ज़ियाँ तुम्हारे लिए अच्छी हैं; तुम्हारी माँ भी कहती हैं। थोड़ी और लो,' वे तब तक अड़ी रहती हैं जब तक कि पापा बीच में पड़कर मेरी पसंद-नापसंद के अधिकार की बात न कर लें।

फिर मिसेज़ फ़ॉन डान आगबबूला हो जाती हैं: 'तुम्हें हमारे घर में होना चाहिए था, जहाँ बच्चों की वैसे ही परवरिश होती है, जैसी कि होनी चाहिए। मैं इसे सही पालन-पोषण नहीं कहती। ऐन बहुत बिगड़ी हुई है। मैं कभी ऐसा नहीं होने देती। अगर यह मेरी बेटी होती तो...'

उनकी बात हमेशा ऐसे ही शुरु और ख़त्म होती है: 'अगर ऐन मेरी बेटी होती तो...' शुक्र है कि मैं उनकी बेटी नहीं हूँ।

बच्चों के पालन-पोषण की बात पर जाएँ, तो कल मिसेज़ फ़ॉन डी का छोटा सा भाषण पूरा होने पर ख़ामोशी छा गई थी। पापा ने जवाब दिया, 'मेरे ख़याल से ऐन की परवरिश बहुत अच्छी हुई है। कम से कम उसने आपके लगातार चलते भाषणों पर चुप रहना सीख लिया है। जहाँ तक सब्ज़ियों का सवाल है, तो देखिए कि कौन उसे यह उपदेश दे रहा है।'

मिसेज़ फ़ॉन डान को मुँह की खानी पड़ी। यहाँ पापा का इशारा ख़ुद मैडम की तरफ़ था, क्योंकि वे शाम को कोई भी फली या किसी भी तरह की गोभी बर्दाश्त नहीं होती, क्योंकि उससे उन्हें गैस होती है। मैं भी यही कह सकती हूँ। कितनी बेवकूफ़ी की बात है, है न? ख़ैर, उम्मीद करते हैं कि वे मुझसे बात करना बंद कर दें।

यह देखना बहुत मज़ेदार होता है कि मिसेज़ फ़ॉन डान कितनी जल्दी तमतमा जाती हैं, मैं ऐसा नहीं करती और इससे मन ही मन उन्हें बहुत चिढ़ होती है।

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 28 सितंबर 1942

प्यारी किटी,

मुझे कल लिखना बंद करना पड़ा, हालाँकि बातें बहुत थीं। मैं तुम्हें अपनी एक और मुठभेड़ के बारे में बताने को बेताब हूँ, लेकिन उसे बताने से पहले मैं यह कहना चाहती हूँ: मुझे यह अजीब लगता है कि बड़े लोग अक्सर इतनी आसानी से छोटी-छोटी बातों पर लड़ लेते हैं। अब तक मैं सोचती थी कि छोटी-छोटी बातों पर बच्चे झगड़ा करते हैं और फिर उससे आगे बढ़ जाते हैं। कभी-कभार 'असली' लड़ाई की कोई वजह ज़रूर होती है, लेकिन यहाँ जिस तरह की बातें कही जाती हैं, वे बस कहासुनी होती हैं। मुझे भी अब इस बात का आदी हो जाना चाहिए कि इस तरह की तकरार अब रोज़मर्रा की बात है, लेकिन मैं नहीं हूँ और तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि मैं लगभग हर बातचीत का विषय हूँ। (वे 'झगड़े' के बजाय उन्हें 'बातचीत' कहते हैं, लेकिन जर्मन लोगों को उनके बीच का अंतर नहीं पता!) वे हर चीज़ की आलोचना करते हैं और मेरा मतलब है कि मेरे बारे में हर चीज़ की: मेरे बर्ताव, मेरे व्यक्तित्व, मेरी आदतों, मेरी हर चीज़ की, सिर से पैर तक, मेरी हर बात गपशप व चर्चा का विषय होती है। मुझ पर कठोर शब्दों और चीख़-चिल्लाहटों की बौछार की जाती है। हालाँकि मुझे अब तक इसकी आदत

बिलकुल नहीं पड़ी है। मुझसे उम्मीद की जाती है कि मैं मुस्कराकर सब कुछ झेल लूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती! इन अपमानों को चुपचाप झेलने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मैं उन्हें दिखा दूँगी कि मैं कल की पैदा हुई छोकरी नहीं हूँ। उन्हें अच्छी तरह देखना-समझना होगा और अपने मुँह बंद रखने होंगे, जब मैं उन्हें बताऊँगी कि उन्हें मेरे शिष्टाचार के बजाय अपनी आदतों पर ध्यान देना चाहिए। वे आख़िर वैसा बर्ताव कैसे कर सकते हैं! वे बहुत बर्बर हैं। ऐसी अशिष्टता और मूर्खता (मिसेज़ फ़ॉन डान) पर मैं हर बार हैरान रह जाती हूँ। जैसे ही मैं इसकी आदी हो जाऊँगी और उसमें ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा, मैं उनके ही अंदाज़ में जवाब दूँगी और उन्हें अपना सुर बदलना पड़ेगा! क्या मैं अशिष्ट, ज़िद्दी, अकड़ू, आक्रामक, मूर्ख, आलसी, वगैरह-वगैरह हूँ, जैसा कि फ़ॉन डान परिवार का कहना है? नहीं, बिलकुल नहीं। मैं जानती हूँ कि मुझमें भी कमियाँ व कमज़ोरियाँ हैं, लेकिन वे उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं! काश, तुम जान पाती किटी कि मुझे कितना ग़ुस्सा आता है, जब वे मुझे डाँटते और मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। वह दिन दूर नहीं जब मेरे सब्र का बाँध टूट जाएगा।

बस, अब बहुत हुआ। मैंने अपने झगड़ों से तुम्हें काफ़ी उबा दिया है, लेकिन फिर भी मैं रात के खाने के समय हुई एक बेहद दिलचस्प बातचीत बताने से ख़ुद को नहीं रोक पा रही हूँ।

हम पिम के अत्यधिक संकोची होने पर बात कर रहे थे। उनकी विनम्रता जानी-पहचानी बात है, जिस पर मूर्ख से मूर्ख इंसान भी सवाल नहीं उठा सकता। अचानक हर बातचीत में कूद पड़ने की आदत वाली मिसेज़ फ़ॉन डान ने टिप्पणी की, 'मैं भी बहुत विनम्र और संकोची हूँ, अपने पति से कहीं ज़्यादा!'

क्या तुमने कभी इससे ज़्यादा अजीब बात सुनी है? उनकी बात ही साफ़ तौर पर बताती है कि उन्हें विनम्र तो हरगिज़ नहीं कहा जा सकता!

मि. फ़ॉन डान को लगा कि 'पति से कहीं ज़्यादा' वाली बात पर उन्हें जवाब देना चाहिए और उन्होंने बहुत शांतिपूर्वक कहा, 'विनम्र और संकोची होने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। मेरा तजुर्बा है कि आक्रामक होने से आप काफ़ी आगे पहुँचते हैं!' फिर मेरी तरफ़ मुड़ते हुए उन्होंने कहा, 'नरम और संकोची मत बनना, ऐन। उससे तुम कहीं नहीं पहुँच पाओगी।'

माँ उनके दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत थीं। लेकिन जैसी कि मिसेज़ फ़ॉन डान की आदत थी, उन्हें कुछ तो कहना था ही। इस बार हालाँकि मुझसे सीधे बात करने के बजाय उन्होंने मेरे माता-पिता से कहा, 'ज़िंदगी को लेकर आपका नज़रिया कुछ अजीब ही होगा, तभी आप ऐन से ऐसा कह सकते हैं। मेरे बचपन में हालात अलग थे। आपके आधुनिक घर को छोड़ दें, तो शायद ही उनमें कुछ ख़ास बदलाव आया होगा!'

यह बच्चों की परवरिश को लेकर माँ के आधुनिक तौर-तरीक़ों पर सीधा निशाना था, जिनका बचाव वे कई बार कर चुकी थीं। मिसेज़ फ़ॉन डान इतनी नाराज़ थीं कि उनका चेहरा लाल हो गया। जो लोग बहुत जल्दी आवेग में आ जाते हैं, वे उसे महसूस करते हुए और भी

आंदोलित हो जाते हैं और अपने विरोधी के सामने जल्दी हार जाते हैं।

शांत माँ अब जल्द से जल्द बात को ख़तम कर देना चाहती थीं, एक पल कुछ सोचने के लिए रुकीं और जवाब दिया, 'मिसेज़ फ़ॉन डान, मैं इस बात से सहमत हूँ कि इंसान को बहुत ज़्यादा विनम्र नहीं होना चाहिए। मेरे पति, मारगोट और पीटर ज़रूरत से ज़्यादा विनम्र हैं। आपके पति, ऐन और मैं हालाँकि उनके बिलकुल उलट नहीं हैं, फिर भी हम किसी को ख़ुद को परेशान नहीं करने देते।'

मिसेज़ फ़ॉन डान: 'ओह, लेकिन मिसेज़ फ़्रैंक, मैं आपका मतलब नहीं समझ पा रही हूँ! मैं तो अति विनम्र और संकोची हूँ। आप कैसे कह सकती हैं कि मैंआक्रामक हूँ?'

माँ: 'मैंने ऐसा तो नहीं कहा, लेकिन आपको कोई संकोची भी नहीं कह सकता।'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'मैं जानना चाहती हूँ कि मैं कैसे आक्रामक हूँ! अगर मैं अपना ध्यान न रखूँ, तो कोई और नहीं रखेगा, जल्दी ही मैं भूखी मर जाऊँगी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपके पति जितनी विनम्र और संकोची नहीं हूँ।'

माँ के पास इस अजीबोग़रीब तर्क पर हँसने के सिवा कोई और चारा नहीं था, जिससे मिसेज़ फ़ॉन डान चिढ़ गइंर्। वे बहुत अच्छी बहस करने वाली नहीं हैं, वे जर्मन व डच को मिलाकर तब तक बोलती रहीं, जब तक कि वे अपने शब्दों में ख़ुद ही इतना उलझ गईं कि कुर्सी से उठने लगीं और वे कमरे से निकलना चाहती थीं कि तभी उनकी नज़र मुझ पर पड़ गई। तुम्हें उन्हें देखना चाहिए था! जिस पल उन्होंने मेरी तरफ़ देखा, मैं करुणा व विडंबना में अपना सिर हिला रही थी। मैं वैसा जानबूझकर नहीं कर रही थी, लेकिन मैं उनकी बात को इतने ध्यान से सुन रही थी कि मेरी प्रतिक्रिया पूरी तरह से अनायास थी। मिसेज़ फ़ॉन डी मुड़ी और मुझे कड़ी फटकार लगाई। वे इतनी कठोरता से घटिया व भद्दी बातें कर रही थीं, जैसे कि मोटी, लाल चेहरे वाली कोई मछली बेचने वाली कोई महिला ही कर सकती है। उन्हें देखना बहुत मज़ेदार था। अगर मैं तसवीर बना सकती, तो उनकी उस समय की तसवीर बनाती। वे मुझे बहुत हास्यास्पद लगीं, वे अस्तव्यस्त थीं! मैंने एक चीज़ सीखी: आप किसी इंसान को झगड़े के बाद ही सही मायने में जान पाते हैं। तभी आप उनके असली चरित्र को जान पाते हैं!

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 29 सितंबर, 1942

प्रिय किटी,

जब आप छिपे होते हैं, तो आपके साथ अजीब सी बातें होती हैं! ज़रा कल्पना करो। चूँकि हमारे पास ग़ुसलखाना नहीं हैं, इसलिए हम लोग टिन के टब में नहाते हैं। गर्म पानी सिर्फ़ दफ़्तर (मेरा मतलब है कि नीचे की पूरी मंज़िल पर) में होता है, इसलिए हम सातों बारी-बारी से इस

मौक़े का फ़ायदा उठाते हैं। अब हम सब एक जैसे नहीं हैं और सबकी अपनी-अपनी सीमाएँ हैं, इसलिए परिवार के हर सदस्य ने अपनी सफ़ाई के लिए अलग जगह तय कर ली है। पीटर दफ़्तर के रसोईघर में नहाता है, हालाँकि उसका दरवाज़ा काँच का है। जब उसके नहाने की बारी आती है, तो वह बारी-बारी से हम सबके पास आता है और घोषणा करता है कि अगले आधे घंटे में हम रसोईघर के पास न जाएँ। उसके मुताबिक़ इतना करना काफ़ी है। मि. फ़ॉन डी ऊपर वाली मंज़िल पर ही नहाते हैं और उनका तर्क है कि उनके कमरे की सुरक्षा गर्म पानी ऊपर लाने की मुश्किल से ज़्यादा अहम है। मिसेज़ फ़ॉन डी का नहाना अभी बाक़ी है; वे देख रही हैं कि कौन सी जगह सबसे बेहतर है। पापा प्राइवेट ऑफ़िस में नहाते हैं और माँ फ़ायरगार्ड के पीछे रसोईघर में, जबकि मारगोट और मैंने फ्रंट ऑफ़िस को अपने नहाने की जगह तय की है। शनिवार दोपहर को पर्दे लगे होते हैं, इसलिए हम अँधेरे में अपनी सफ़ाई करते हैं, जो नहा नहीं रहा होता, वह पर्दे के बीच से खिड़की के बाहर देखता है और आते-जाते दिलचस्प लोगों को अचरज से घूरता है।

एक हफ़्ते पहले मैंने फ़ैसला किया कि मुझे यह जगह पसंद नहीं और मैं ज़्यादा आरामदेह जगह की तलाश में हूँ। पीटर ने मुझे ऑफ़िस के बड़े से शौचालय में अपना टब लगाने का विचार सुझाया। मैं बैठ सकती हूँ, लाइट जला सकती हूँ, दरवाज़ा बंद कर सकती हूँ, बिना किसी की मदद के पानी डाल सकती हूँ और इस डर के बिना कि कोई देख लेगा, सब काम कर सकती हूँ। रविवार को पहली बार मैंने अपने बाथरूम का इस्तेमाल किया और भले यह अजीब लगे, लेकिन मुझे यह किसी भी जगह से बेहतर लगी।

बुधवार को प्लम्बर नीचे काम कर रहा था, वह ऑफ़िस के शौचालय से पानी के पाइपों और नालियों को गलियारे तक ले जा रहा था, ताकि सर्दियों में पाइप जम न जाएँ। उसका आना बिलकुल भी अच्छा नहीं था। हम दिन भर पानी नहीं चला सकते थे और शौचालय भी नहीं जा सकते थे। मैं तुम्हें बताती हूँ कि इस समस्या से हम कैसे निबटे। तुम्हें इसके बारे में मेरा बताना कुछ अनुचित लग सकता है, लेकिन मैं इस तरह के मामलों को लेकर शर्म से चुप नहीं रह सकती। जिस दिन हम यहाँ पहुँचे थे, उसी दिन पापा और मैंने एक मर्तबान से एक चेम्बर पॉट यानी मूत्र पात्र बनाया था। जब तक प्लम्बर का काम जारी रहा, हमने दिन में उनका इस्तेमाल किया। दिन भर चुप बैठे रहना मेरे लिए ज़्यादा मुश्किल काम नहीं था। तुम कल्पना कर सकती हो कि लगातार भाषण देने वाली महिला का क्या हाल हुआ होगा। सामान्य दिनों में हमें फुसफुसा कर बात करनी होती है, लेकिन बिलकुल चुप रहना और न हिलना-डुलना उससे दस गुना बदतर है।

तीन दिन तक लगातार बैठे रहने से मेरी पीठ अकड़ गई और उसमें दर्द होने लगा। रात को हल्की-फुल्की कसरत काम आई।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 1 अक्टूबर, 1942

प्रिय किटी,

कल मेरा भयानक झगड़ा हुआ। आठ बजे अचानक दरवाज़े की घंटी बजी। मुझे तो बस लगा कि कोई हमें पकड़ने आया है, मेरा मतलब तुम समझ रही हो, न। लेकिन मैं तब शांत हो गई, जब सबने कहा कि या तो किसी ने शरारत की है या फिर डाकिया आया होगा।

यहाँ दिन बहुत ख़ामोश हैं। छोटे क़द के यहूदी केमिस्ट मि. लेविंसन रसोईघर में मि. कुगलर के लिए कुछ प्रयोग कर रहे हैं। वे पूरी इमारत से परिचित हैं, इसलिए हमें लगातार डर बना रहता है कि कहीं उनके दिमाग़ में प्रयोगशाला की हालत देखने का ख़याल न आ जाए। हम बिलकुल शांत हैं। तीन महीने पहले कौन अंदाज़ा लगा सकता था कि लगातार हिलने-डुलने वाली ऐन को कई घंटे चुपचाप बैठना होगा या फिर वह ऐसा कर सकती है?

उनतीस तारीख़ को मिसेज़ फ़ॉन डान का जन्मदिन था। हमने उसे बड़े पैमाने पर नहीं मनाया। उन्हें फूल, कुछ साधारण से उपहार दिए गए और बढ़िया खाना खिलाया गया। उनके पति की ओर से लाल कार्नेशन दिया जाना शायद उनके परिवार की परंपरा है।

मिसेज़ फ़ॉन डान की बात पर मैं थोड़ा रुकती हूँ और तुम्हें बताती हूँ कि पापा के साथ हँसी-ठिठोली करने की उनकी कोशिशों से मुझे कितनी चिढ़ होती है। वे उनके गाल व सिर पर थपकी देती हैं, अपनी स्कर्ट खींचती हैं और पिम का ध्यान अपनी तरफ़ खींचने के लिए तथाकथित मज़ाकिया टिप्पणियाँ करती हैं। ख़ुशक़िस्मती से उन्हें वे न तो प्यारी और न ही आकर्षक लगती हैं, इसलिए वे उनकी हरकतों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते। जैसा कि तुम जानती हो, मैं थोड़ी ईर्ष्यालु क़िस्म की हूँ और मैं उनके बर्ताव को स्वीकार नहीं कर सकती। माँ तो मि. फ़ॉन डी के साथ वैसा बर्ताव नहीं करती और वही मैंने मिसेज़ फ़ॉन डी के मुँह पर कह दिया।

कभी-कभार पीटर बहुत मज़ेदार लगता है। उसके और मेरे बीच एक बात साझा है: हमें तैयार होना पसंद है और उसकी वजह से सभी हँसते हैं। एक शाम हम अलग रूप में सामने आए, पीटर ने अपनी माँ की कसी हुई पोशाक पहनी और मैंने उसका सूट। उसने हैट पहना, जबकि मैंने एक टोपी। सभी बड़े लोग हँसते-हँसते दोहरे हो गए और हम दोनों को बहुत मज़ा आया।

बेप मारगोट और मेरे लिए नई स्कर्ट्स लाई हैं, बेनकोर्फ़ से। कपड़ा आलू के बोरों जैसा है। पुराने दिनों में दुकानों में ऐसा कपड़ा नहीं बिक सकता था, लेकिन अब यह 24 गिल्डर (मारगोट का) और 7.75 गिल्डर (मेरा) में बिक रहा है।

हमारे लिए एक और अच्छी चीज़ होने वाली है। बेप ने मारगोट, पीटर और मेरे लिए डाक के ज़रिये शॉर्टहैंड कोर्स मँगवाया है। बस अब देखती जाओ, अगले साल इस समय तक हम

अच्छी तरह शॉर्टहैंड में लिख सकेंगे। वैसे भी उस तरह किसी गुप्त भाषा में लिखना काफ़ी दिलचस्प होगा।

बाएँ हाथ की मेरी तर्जनी में बहुत दर्द है, इसलिए मैं कपड़े इस्तरी नहीं कर सकती। क्या क़ि स्मत है!

मि. फ़ॉन डान चाहते हैं कि मेज़ पर मैं उनके साथ बैठूँ, क्योंकि मारगोट उनके हिसाब से कम खाती है। ठीक है, मुझे बदलाव पसंद है। अहाते में हमेशा एक छोटी सी काली बिल्ली घूमती रहती है और वह मुझे मेरी प्यारी मोर्तें की याद दिलाती है। बदलाव का स्वागत करने का एक और कारण यह है कि माँ हमेशा ख़ासकर मेज़ पर मेरी ग़लतियाँ निकालती रहती हैं। अब मारगोट को वह सब झेलना पड़ेगा। या शायद नहीं भी, क्योंकि माँ उस पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ नहीं करतीं। वे सद्गुणों के नमूने को कैसे कह सकती हैं! मैं मारगोट को हमेशा अच्छाई का नमूना कहकर चिढ़ाती हूँ और उसे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता। शायद मैं ही उसे सिखाऊँगी कि कैसे शराफ़त का पुतला न बना जाए। अब समय आ गया है कि उसे सीख ही लेना चाहिए।

मि. फ़ॉन डान का मज़ेदार चुटकुला सुनाते हुए मैं ख़बरों की इस खिचड़ी को पूरा करती हूँ:

निन्यानबे बार कौन चलता है खटखट करके और एक बार कड़ाके से?

ख़राब पैरों वाला कनखजूरा।

विदा!

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 3 अक्टूबर, 1942

प्यारी किटी,

कल मुझे सबने चिढ़ाया, क्योंकि मैं मि. फ़ॉन डान के बिस्तर पर उनकी बग़ल में लेटी थी। 'तुम्हारी उम्र में! यह भयानक है!' इन बेवक़ूफ़ाना बातों के अलावा अन्य टिप्पणियाँ की गई। ज़ाहिर है कि यह बेवकूफ़ी है। मैं कभी मि. फ़ॉन डान के साथ नहीं सोना चाहूँगी, जैसा कि उनका मतलब है।

कल माँ और मेरे बीच फिर से झड़प हुई और उन्होंने काफ़ी बवाल खड़ा कर दिया। उन्होंने मेरी सभी बुराइयों को पापा को बताया और रोने लगी, जिससे मुझे भी रोना आ गया, मुझे पहले से सिरदर्द भी हो रहा था। आख़िरकार मैंने डैडी से कहा कि मैं उन्हें माँ से ज़्यादा प्यार करती हूँ और उनका कहना था कि समय के साथ यह बीत जाएगा, मैं ऐसा नहीं सोचती। मैं माँ को बर्दाश्त नहीं कर सकती और मुझे शांत रहने और उन पर हर समय चिढ़ने से ख़ुद को ज़बरदस्ती रोकना पड़ता है, जबकि मैं उनके चेहरे पर तमाचा मारना चाहती हूँ। मैं नहीं जानती कि मुझे वे

इतनी सख़्त नापसंद क्यों हैं। डैडी कहते हैं कि अगर माँ की तबियत ठीक न हो या फिर उन्हें सिरदर्द हो तो मुझे उनकी मदद करने की पेशकश करनी चाहिए, लेकिन मैं ऐसा नहीं करने वाली, क्योंकि मुझे उनसे प्यार नहीं और मुझे काम में मज़ा भी नहीं आता। माँ की तो किसी दिन मौत होगी, लेकिन डैडी की मृत्यु के बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती। मैं बहुत घटिया बात कर रही हूँ, लेकिन मुझे ऐसा ही लगता है। उम्मीद है कि माँ यह बात या फिर मेरी लिखी कोई और बात कभी न पढ़ें।

पिछले कुछ समय से मुझे बड़े लोगों की कुछ किताबें पढ़ने की अनुमति मिल गई है। आजकल मैं निको फ़ॉन सश्टेलेन की *ईवाज़ यूथ* पढ़ रही हूँ। मुझे नहीं लगता कि इस किताब और किशोरियों के लिए लिखी बाक़ी किताबों में कोई बड़ा अंतर है। ईवा को लगता था कि सेब की तरह बच्चे पेड़ पर उगते हैं और उनके पक जाने पर सारस उन्हें तोड़ लेते हैं और माँओं के पास ले आते हैं। लेकिन उसकी सहेली की बिल्ली के बच्चे थे और ईवा ने उन्हें बिल्ली के शरीर से निकलते देखा, इसलिए उसने सोचा कि बिल्लियाँ अंडे देती हैं और चूज़ों की तरह वे उनमें से निकलते हैं और जिन माँओं को बच्चे चाहिए होते हैं, अंडे देने से कुछ दिन पहले वे ऊपर जाती हैं और फिर अंडों को सेती हैं। बच्चों के आने के बाद माँएँ पालथी मारकर बैठने के कारण बहुत कमज़ोर हो जाती हैं। एक दिन ईवा को भी बच्चे की चाह होती है। वह ऊनी स्कार्फ़ निकाल कर उसे ज़ मीन पर बिछाती है, ताकि अंडे उसमें गिरें और फिर वह बैठकर ज़ोर लगाने लगती है। मुर्गी की तरह आवाज़ निकालते हुए वह इंतज़ार करने लगी, लेकिन कोई अंडा नहीं निकला। आख़िरकार बहुत देर तक बैठे रहने के बाद कुछ निकला ज़रूर, लेकिन वह अंडा नहीं, बल्कि एक सॉसेज था। ईवा झेंप गई। उसे लगा कि वह बीमार थी। मज़ेदार बात है, न? *ईवाज़ यूथ* में सड़कों पर बहुत सारे पैसे के बदले औरतों के देह बेचने की बात भी की गई है। उस तरह के आदमी के सामने मैं तो शर्म से गड़ जाऊँगी। इसके अलावा इसमें ईवा के मासिक धर्म की बात भी की गई है। मैं भी इंतज़ार कर रही हूँ, तभी मैं वाक़ई बड़ी हो जाऊँगी।

डैडी फिर से कुड़कुड़ाने लगे हैं और मेरी डायरी छीनने की धमकी दे रहे हैं। यह तो बहुत डरावनी बात है! अबसे मुझे इसे छिपाकर रखना होगा।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 7 अक्टूबर, 1942

मैं कल्पना करती हूँ कि...

मैं स्विट्ज़रलैंड गई हूँ। मैं और डैडी एक कमरे में सोते हैं, जबकि लड़कों के अध्ययन कक्ष को बैठक में बदल दिया गया है, जहाँ मैं मेहमानों से मिल सकती हूँ। मेरे लिए नया फ़र्नीचर लाया गया है, जिसमें चाय की मेज़, एक डेस्क, हत्थे वाली कुर्सी और दीवान शामिल है। सब कुछ

बहुत शानदार है। कुछ दिन बाद डैडी मुझे 150 गिल्डर्स देते हैं और कहते हैं कि मैं अपनी ज़रूरत की चीज़ें उनसे ख़रीद लूँ, ज़ाहिर है कि वे मुझे स्विस मुद्रा देते हैं, लेकिन मैं उन्हें गिल्डर्स ही कहूँगी। (बाद में मुझे एक हफ़्ते में एक गिल्डर मिलता है, जिससे मैं जो चाहे ख़रीद सकती हूँ।) मैं बर्न्ड के साथ

जाकर ये चीज़ें ख़रीदती हूँ:

3 सूती बनियानें 0.50 की एक = 1.50

3 सूती निकर 0.50 की एक = 1.50

3 ऊनी बनियानें 0.75 की एक = 2.25

3 ऊनी निकर 0.75 की एक = 2.25

2 पेटीकोट 0.50 का एक = 1.00

2 ब्रा (सबसे छोटा साइज़) 0.50 की एक = 1.00

5 पाजामे 1.00 का एक = 5.00

1 हल्का ड्रेसिंग गाउन 2.50 का एक = 2.50

1 मोटा ड्रेसिंग गाउन 3.00 का एक = 3.00

2 बेड जैकेट 0.75 की एक = 1.50

1 छोटा तकिया 1.00 का एक = 1.00

एक जोड़ी हल्की चप्पलें 1.00 प्रति जोड़ा = 1.00

एक जोड़ी गर्म चप्पलें 1.50 प्रति जोड़ा = 1.50

1 जोड़ी गर्मी के जूते (स्कूली) 1.50 प्रति जोड़ा = 1.50

1 जोड़ी गर्मी के जूते (बढ़िया) 2.00 प्रति जोड़ा = 2.00

1 जोड़ी सर्दी के जूते (स्कूली) 2.50 प्रति जोड़ा = 2.50

1 जोड़ी सर्दी के जूते (बढ़िया) 3.00 प्रति जोड़ा = 3.00

2 ऐप्रन 0.50 का एक = 1.00

25 रूमाल 0.05 का एक = 1.25

4 जोड़े सिल्क मोज़े 0.75 का एक = 3.00

4 जोड़े घुटनों तक के मोज़े 0.50 का एक = 2.00

4 जोड़े मोज़े 0.25 का एक = 1.00

2 जोड़े मोटे मोज़े 1.00 का एक = 2.00

3 लच्छे सफ़ेद ऊन (अंतर्वस्त्र, टोपी) = 1.50

3 लच्छे नीला सूत (स्वेटर, स्कर्ट) = 1.50

3 लच्छे रंगबिरंगा सूत = 1.50

स्काफ़ र्, बेल्ट, कॉलर, बटन = 1.25

इनके अलावा 2 स्कूल वर्दियाँ (ग्रीष्म), 2 स्कूल वर्दियाँ (सर्दी), 2 अच्छी पोशाकें (ग्रीष्म), 2 अच्छी पोशाकें (सर्दी), 1 गर्मी की स्कर्ट, 1 अच्छी सर्दियों की स्कर्ट, 1 स्कूल स्कर्ट सर्दी के लिए, 1 रेनकोट, 1 समर कोट, 1 विंटर कोट, 2 हैट्स, 2 टोपियाँ। कुल 108 गिल्डर्स।

2 हैंडबैग, 1 आईस-स्केटिंग पोशाक, 1 जोड़ी स्केट्स, एक डिब्बा (जिसमें पाउडर, स्किन क्रीम, फ़ाउंडेशन क्रीम, क्लेनज़िंग क्रीम, सनटैन लोशन, रुई, फ़र्स्ट-एड किट, लाली, लिपस्टिक, आईब्रो पेंसिल, बाथ सॉल्ट्स, बाथ पाउडर, यू डी कोलोन, साबुन, पाउडर पफ़ हों)।

इनके अलावा 4 स्वेटर्स, एक 1.50 का, 4 ब्लाउज़ एक 1.00 का, कई तरह की चीज़ें 10.00 की और उपहार 4.50 के।

शुक्रवार, 9 अक्टूबर, 1942

प्यारी किटी,

आज मेरे पास बताने के लिए केवल निराशाजनक और उदास बातें हैं। हमारे बहुत से यहूदी दोस्तों व परिचितों को झुंडों में ले जाया जा रहा है। गेस्टापो यानी नाज़ी पार्टी की ख़ुफ़िया पुलिस उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव कर रही है और उन्हें मवेशियों के ट्रक में लादकर ड्रेंथ के बड़े शिविर वेस्टरबर्क ले जा रहे हैं, जहाँ वे सभी यहूदियों को भेज रहे हैं। मीप ने मुझे वहाँ से बचकर निकलने वाले किसी आदमी के बारे में बताया। ज़रूर वेस्टरबर्क में बुरी हालत होगी। लोगों को खाने के लिए न के बराबर मिलता है, उससे भी कम पानी, क्योंकि एक दिन में सिर्फ़ एक घंटा पानी आता है, हज़ारों लोगों के लिए केवल शौचालय व सिंक है। स्त्री-पुरुष एक ही कमरे में सोते हैं, महिलाओं व बच्चों के सिर मुँडवा दिए जाते हैं। वहाँ से बचकर निकलना नामुमकिन है; कई लोग यहूदी दिखते हैं और कतरे हुए बालों से उनकी पहचान होती है।

अगर हॉलैंड में हालत इतनी ख़राब है, तो बाक़ी दूर-दराज़ और ऐसी जगहों पर क्या हाल होगा, जहाँ सभ्यता का नामोनिशान नहीं है और जहाँ जर्मन उन्हें भेज रहे हैं? हम मानकर चल रहे हैं कि उनमें से अधिकतर की हत्या की जा रही है। इंग्लिश रेडियो में कहा जा रहा है कि उन्हें गैस छोड़कर मारा जा रहा है। शायद वह मारने का सबसे तेज़ तरीक़ा है।

मुझे बहुत बुरा लग रहा है। मीप के ये डरावने विवरण दिल दहला देते हैं और मीप भी बहुत परेशान हैं। मिसाल के तौर पर एक दिन गेस्टापो ने एक विकलांग वृद्ध महिला को मीप

के दरवाज़े पर छोड़ दिया और कार की तलाश में चले गए। बूढ़ी महिला चमकती रोशनी और हवा में इंग्लिश विमानों पर चल रही गोलीबारी से बहुत डरी हुई थी। फिर भी मीप की हिम्मत नहीं हुई कि उस महिला को अंदर बुला लें। किसी की हिम्मत नहीं थी। सज़ा देने के मामले में जर्मन बहुत उदार हैं।

बेप भी बहुत बुझी हुई हैं। उनके बॉयफ्रेंड को जर्मनी भेजा जा रहा है। हर बार हवाई जहाज़ के उड़ने पर वे डरती हैं कि कहीं सारे के सारे बम वे बेरतुस के सिर पर न गिरा दें। इस स्थिति में मज़ाक में यह कहना, 'अरे चिंता मत करो, वे भी उस पर नहीं गिर सकते' या 'जान लेने के लिए एक बम काफ़ी है,' बिलकुल भी सही नहीं है। बेरतुस ही अकेला नहीं है, जिसे जर्मनी में काम करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। रेल में भरकर नौजवान रोज़ विदा लेते हैं। उनमें से कुछ किसी छोटे से स्टेशन पर रेल के रुकने पर चुपके से निकल जाने की कोशिश करते हैं, लेकिन कुछ ही निकलने और छिपने की जगह खोज पाने में कामयाब होते हैं।

लेकिन मेरा यह दुख यहीं ख़त्म नहीं होता। क्या तुमने कभी 'बंधक' शब्द सुना है? देशद्रोहियों के लिए सबसे नई सज़ा यही है। इससे ख़तरनाक चीज़ की कल्पना तुम कर भी नहीं सकती। प्रमुख नागरिकों, मासूम नागरिकों को बंदी बनाया जा रहा है और वे अपनी मौत का इंतज़ार कर रहे हैं। गैस्टापो को अगर कोई देशद्रोही नहीं मिलता, तो वे बस पाँच बंधकों को पकड़कर उन्हें दीवार के सामने एक पंक्ति में खड़ा कर देते हैं। उनकी मौत की ख़बर अख़बारों में छपती है, जिनमें उसे 'घातक दुर्घटना' कहा जाता है।

ज़रा सोचो, वे जर्मन मानवता के बेहतरीन नमूने हैं। मैं उनमें से एक हूँ! नहीं, वह सही नहीं है, हिटलर ने हमारी राष्ट्रीयता काफ़ी पहले छीन ली थी। इसके अलावा इस धरती पर जर्मन व यहूदियों से बढ़कर कोई दुश्मन नहीं है।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 14 अक्टूबर, 1942

प्यारी किटी,

मैं बहुत व्यस्त हूँ। कल मैंने *ला बेले निवेने* के एक पाठ के अनुवाद से शुरुआत की और नए शब्द लिखे। फिर मैंने गणित के एक *कठिन* सवाल को हल किया और उसके अलावा फ्रेंच व्याकरण के तीन पन्नों का अनुवाद दिया। आज फ्रेंच व्याकरण और इतिहास। मुझे हर रोज़ घिनौना गणित करना पसंद नहीं है। डैडी को भी ऐसा ही लगता है। मैं उसमें उनसे बेहतर हूँ, हालाँकि असल में हम दोनों ही उसमें अच्छे नहीं हैं, इसलिए हम हमेशा मदद के लिए मारगोट को बुलाते हैं। मैं अपने शॉर्टहैंड पर भी काम कर रही हूँ, जिसमें मुझे मज़ा आता है। हम तीनों में से मैंने सबसे ज़्यादा प्रगति की है।

मैंने *द स्टॉर्म फ़ैमिली* पढ़ी। यह काफ़ी अच्छी है, लेकिन *जूप त हयल* जितनी अच्छी नहीं। वैसे दोनों किताबों में एक जैसे शब्द हैं, जो समझ में आते हैं, क्योंकि दोनों की लेखक एक हैं। सिसी फ़ॉन मार्क्सवेल्ड बहुत बढ़िया लेखक हैं। मैं तो अपने बच्चों को भी उनकी किताबें ज़रूर पढ़ने दूँगी।

मैंने कर्नर के भी बहुत से नाटक पढ़े हैं। मुझे उनके लिखने का तरीक़ा पसंद है। उदाहरण के तौर पर, *हिडविग, कज़िन फ़्रॉम ब्रीमेन, द गवर्नेस, द ग्रीन डोमिनो,* आदि।

माँ, मारगोट और मैं फिर से अच्छे दोस्त बन गए हैं। दरअसल, इस तरह से यह बेहतर है। कल रात मैं और मारगोट मेरे बिस्तर पर एक साथ लेटे हुए थे। हम दोनों बहुत सिकुड़कर सोए थे, लेकिन उसकी वजह से ही मज़ा आता है। उसने पूछा कि क्या वह कभी-कभार मेरी डायरी पढ़ सकती है।

'कुछ हिस्से,' मैंने कहा और उससे उसकी डायरी के बारे में पूछा। उसने भी मुझे अपनी डायरी पढ़ने की इजाज़त दे दी।

हम भविष्य के बारे में बातचीत करने लगे और मैंने उससे पूछा कि वह बड़े होकर क्या बनना चाहती है। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और उसे लेकर बहुत रहस्यमय बनी रही। मैंने अंदाज़ा लगाया कि ज़रूर उसके काम का पढ़ाने से कुछ लेना-देना होगा; हालाँकि मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा ही कुछ होगा। मुझे इतनी दख़लअंदाज़ी नहीं करनी चाहिए।

आज सुबह मैं पीटर के बिस्तर पर लेटी थी, उससे पहले मैंने उसे वहाँ से भगाया था। वह बहुत गुस्से में था, लेकिन मैंने कोई परवाह नहीं की। उसे कभी-कभी मेरे साथ थोड़ा दोस्ताना बर्ताव करने की बात सोचनी चाहिए। मैंने कल रात ही उसे एक सेब दिया था।

मैंने एक बार मारगोट से पूछा कि क्या उसे लगता है कि मैं भद्दी हूँ। उसने कहा कि मैं ठीकठाक हूँ और मेरी आँखें अच्छी हैं। यह थोड़ी अस्पष्ट सी बात है, है न?

अगली बार तक इंतज़ार करो!

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। आज सुबह हम सबने अपना वज़न नापा। मारगोट 9 स्टोन 6 पाउंड की है, माँ 9 स्टोन 10, पापा 11 स्टोन 1, ऐन 6 स्टोन 12, पीटर 10 स्टोन 1, मिसेज़ फ़ॉन डान 8 स्टोन 5, मि. फ़ॉन डान 11 स्टोन 11। यहाँ आने के तीन महीनों में मेरा वज़न 19 पाउंड बढ़ गया है। काफ़ी ज़्यादा है, उफ़?

मंगलवार, 20 अक्टूबर, 1942

प्रिय किटी,

मेरा हाथ अब भी काँप रहा है, जबकि उस बात को दो घंटे हो चुके हैं। विस्तार से बताती हूँ, हमारी इमारत में पाँच अग्निशमन यंत्र हैं। ऑफ़िस के लोग हमें चेतावनी देना भूल गए कि कारपेंटर (बढ़ई) या फिर जो भी वह कहलाता है, वह हमारे यंत्रों को भरने आ रहा है। नतीजा यह हुआ कि हमने तब तक शांत रहने की बात नहीं सोची, जब तक कि हमें किताबों की अलमारी पर हथौड़े की आवाज़ नहीं सुनाई दी। मैंने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वह कारपेंटर होगा और मैं बेप को चेतावनी देने पहुँच गई, जो उस समय खाना खा रही थी, ताकि वह नीचे न चली जाए। मैं और डैडी दरवाज़े के पास तैनात हो गए, ताकि हम उस आदमी के जाने की आहट सुन सकें। लगभग पंद्रह मिनट काम करने के बाद उसने अपना हथौड़ा और बाक़ी औज़ार हमारी अलमारी पर रखे (या ऐसा हमें लगा!) और हमारे दरवाज़े पर आवाज़ करने लगा। हम सभी डर से सुन्न हो गए। क्या उसने कोई आवाज़ सुनी थी और अब इस अजीबोग़रीब अलमारी को देखना चाहता था? ऐसा ही लगा, क्योंकि वह उसे खटखटाता, खींचता, धक्का देता व झटके देता रहा।

मैं यहाँ सोचकर इतना डर गई थी कि वह अजनबी हमारी इस बढ़िया सी छिपने की जगह को खोजने में कामयाब रहेगा। जैसे ही मैंने सोचा कि अब बस हम पकड़े ही जाने वाले हैं, तो हमें मि. क्लेमन की आवाज़ सुनाई दी, 'खोलो, मैं हूँ।'

हमने तुरंत दरवाज़ा खोल दिया। क्या हुआ था? किताबों की अलमारी को टिकाने वाला हुक फँस गया था, इसलिए कोई हमें बढ़ई के बारे में नहीं बता पाया। उस आदमी के जाने के बाद मि. क्लेमन बेप को लेने आए, लेकिन किताबों की अलमारी को नहीं खोल सके। मैं तुम्हें नहीं बता सकती कि मुझे कितनी राहत मिली। हमारी छिपने की जगह में घुसने की कोशिश कर रहा वह आदमी मेरी कल्पना में इतना बड़ा होता जा रहा था कि न सिर्फ़ वह एक दैत्य, बल्कि दुनिया में सबसे बेरहम फ़ासिस्ट बन गया था। ख़ुशक़िस्मती से सब कुछ ठीक रहा, कम से कम इस बार तो।

सोमवार को हमने बहुत मज़े किए। मीप और यान हमारे साथ रात को रहने आए। मारगोट और मैं पापा और मम्मी के कमरे में सोए, ताकि वे दोनों हमारे बिस्तर पर सो सकें। उनके सम्मान में खाना बनाया और वह बहुत स्वादिष्ट था। उत्सव में थोड़ी रुकावट आई, जब पापा के लैम्प का शॉर्ट सर्किट हो गया और अचानक अँधेरा छा गया। हम क्या कर सकते थे? हमारे पास फ़्यूज़ थे, लेकिन उनका बक्सा गोदाम के पीछे था, जिससे रात के समय यह काम बहुत अप्रिय हो गया था। फिर भी पुरुष सामने आए और दस मिनट बाद हमने मोमबत्तियाँ बुझा दीं।

मैं आज सुबह जल्दी उठ गई। यान पहले से तैयार थे। उन्हें साढ़े आठ बजे निकलना था, इसलिए वे ऊपर आठ बजे तक नाश्ता कर रहे थे। मीप भी तैयार होने में व्यस्त थी, जब मैं वहाँ पहुँची तो वह बनियान में थी। वह साइकिल चलाते हुए उसी तरह का लंबा अंडरवियर पहनती

है, जैसा कि मैं पहनती हूँ। मारगोट और मैंने भी बहुत तेज़ी से कपड़े पहने और सामान्य समय से पहले ऊपर पहुँच गए। अच्छे से नाश्ते के बाद मीप नीचे चली गई। बारिश हो रही थी और वह ख़ुश थी कि उसे साइकिल चलाकर काम पर नहीं जाना पड़ा। डैडी और मैंने बिस्तर ठीक किए और बाद में पाँच अनियमित फ़्रेंच क्रियाएँ सीखी। काफ़ी मेहनती हूँ, तुम्हें नहीं लगता?

मारगोट और पीटर हमारे कमरे में पढ़ रहे थे, मूशी दीवान पर मारगोट के साथ सिमटी हुई थी। अपनी अनियमित फ़्रेंच क्रियाओं के बाद मैं भी उनके पास चली गई और द *वुड्स आर सिंगिंग फ़ॉर आल एटर्निटी* पढ़ी। यह बहुत ख़ूबसूरत किताब है, लेकिन काफ़ी अलग है। मैं उसे लगभग पूरा कर चुकी हूँ।

अगले हफ़्ते बेप की बारी हमारे यहाँ सोने की है।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 29 अक्टूबर, 1942

मेरी प्यारी किटी,

मैं बहुत चिंतित हूँ। पापा बीमार हैं। उनके शरीर पर चकत्ते हैं और उन्हें तेज़ बुख़ार है। चेचक जैसा दिखता है। ज़रा सोचो, हम डॉक्टर तक नहीं बुला सकते! माँ चाहती हैं कि उन्हें पसीना आए, ताकि बुख़ार उतर जाए।

आज सुबह मीप ने हमें बताया कि ज़ायडर-आमस्तलान पर फ़ॉन डान परिवार के अपार्टमेंट से फ़र्नीचर हटाया गया है। हमने अभी तक मिसेज़ फ़ॉन डी को नहीं बताया है। पिछले कुछ दिनों से वे इतनी घबराई हुई हैं कि हमें नहीं लगता कि हम फिर से ख़ूबसूरत चीनी मिट्टी के बर्तनों और प्यारी कुर्सियों को लेकर उनकी आहों को सुनना चाहते हैं, जो उन्हें छोड़नी पड़ी थीं। हमें भी अपनी अधिकतर प्यारी चीज़ों को छोड़कर आना पड़ा। अब उस पर बड़बड़ाने से क्या फ़ायदा है?

पापा चाहते हैं कि अब मैं हेबल और अन्य प्रसिद्ध जर्मन लेखकों की किताबें पढ़ना शुरू कर दूँ। अब मैं जर्मन काफ़ी अच्छी तरह पढ़ सकती हूँ, इसके सिवा कि मैं शब्दों को चुपचाप पढ़ने के बजाय उन्हें बुदबुदाकर पढ़ती हूँ। लेकिन वह भी ठीक हो जाएगा। पापा ने किताबों की बड़ी सी अलमारी से गोएठ और शिलर के नाटकों को निकाला है और वे मुझे हर शाम उन्हें पढ़कर सुनाना चाहते हैं। हमने डॉन कार्लोस से शुरुआत की। पापा के अच्छे उदाहरण से प्रोत्साहित होकर, माँ ने अपनी प्रार्थना पुस्तिका मेरे हाथों में थमा दी। लिहाज़ के तौर पर मैंने जर्मन में कुछ प्रार्थनाएँ पढ़ीं। वे सुनने में अच्छी थीं, लेकिन मेरे लिए उनके कुछ ख़ास मायने नहीं थे। वे मुझे इतनी धार्मिक व भक्तिमय बनाने पर क्यों तुली हैं?

कल हम पहली बार अंगीठी जलाने वाले हैं। बहुत समय से चिमनी की सफ़ाई नहीं हुई है,

इसलिए कमरे में धुँआ तो भरेगा ही। उम्मीद है कि वह कुछ धुँआ तो खींचेगी!

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 2 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

बेप हमारे साथ शुक्रवार शाम को रही। मज़ा आया, लेकिन वह सो नहीं पाई, क्योंकि उसने वाइन नहीं पी थी। बाक़ी बताने के लिए कुछ ख़ास है नहीं। कल मुझे भयंकर सिरदर्द था, इसलिए मैं जल्दी सो गई। मारगोट फिर से अजीब बर्ताव कर रही है।

आज सुबह मैंने ऑफ़िस के इंडेक्स कार्ड फ़ाइल को करीने से लगाना शुरु किया, क्योंकि वह गिर गई थी और सब कुछ गड़बड़ हो गया था। थोड़ी देर बार ही मैं पगला गई। मैंने मारगोट और पीटर से मदद माँगी, लेकिन दोनों बहुत आलस दिखा रहे थे, तो मैंने भी काम छोड़ दिया। मैं इतनी पागल भी नहीं कि सारा काम ख़ुद करूँ?

ऐन फ्रैंक

पुनःश्च। मैं एक बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी देना भूल गई कि शायद मेरा मासिक धर्म जल्दी ही शुरु होने वाला है। मैं इसलिए कह सकती हूँ कि मेरे अंतर्वस्त्रें में मुझे कुछ सफ़ेद से धब्बे दिखते हैं और माँ ने कहा है कि जल्दी ही वह शुरु हो जाएगा। अब इंतज़ार मुश्किल है। बहुत बुरी बात है कि मैं सैनिटरी नैपकिन का इस्तेमाल नहीं कर सकती, अब उनका मिलना मुश्किल है और मम्मी के टैम्पन्स का इस्तेमाल सिर्फ़ वही महिलाएँ कर सकती हैं, जिनका बच्चा हो चुका हो।

बृहस्पतिवार, 5 नवंबर, 1942

प्यारी किटी,

आख़िरकार ब्रिटिशों को अफ़्रीका में कुछ सफलता मिली और स्टालिनग्राद में अब तक उन्हें जीत नहीं मिली है, इसलिए पुरुष ख़ुश हैं और हमने आज सुबह कॉफ़ी व चाय पी। इसके अलावा बताने के लिए कुछ ख़ास नहीं है।

इस हफ़्ते मैं पढ़ ज़्यादा रही हूँ और बहुत कम काम कर रही हूँ। ऐसा ही होना चाहिए। यह रास्ता सफलता की ओर ले जाता है।

पिछले कुछ समय से माँ और मेरी अच्छी पट रही है, लेकिन हम बहुत क़रीब नहीं हैं। पापा अपनी भावनाओं को खुले तौर पर ज़ाहिर नहीं करते, लेकिन वे उतने ही प्यारे हैं, जैसे हमेशा थे। कुछ दिन पहले हमने अंगीठी जलाई थी और पूरा कमरा अब भी धुँए से भरा है। मुझे सेंट्रल

हीटिंग पसंद है और शायद मैं अकेली नहीं हूँ। मारगोट बहुत बदमाश (इसके अलावा कोई और शब्द नहीं) है और दिन-रात चिड़चिड़ाहट पैदा करती है।

ऐन फ्रैंक

शनिवार, 7 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

माँ आजकल बहुत चिड़चिड़ी रहती हैं और वह मेरे लिए अच्छा शकुन नहीं है। क्या यह सिर्फ़ संयोग ही है कि माँ और पापा मारगोट को कभी नहीं डाँटते और हमेशा हर चीज़ के लिए मुझे ही दोषी मानते हैं? उदाहरण के लिए, कल रात मारगोट बहुत सुंदर चित्रों वाली एक किताब पढ़ रही थी, वह उठी और किताब को एक तरफ़ रख दिया। मैं कुछ नहीं कर रही थी, इसलिए मैंने उसे उठा लिया और तसवीरें देखने लगी। मारगोट आई तो उसने मुझे उसकी किताब पढ़ते देख लिया, उसने अपनी भौंहें चढ़ाकर मुझसे चिड़चिड़ाकर किताब वापस माँगी। मैं थोड़ी देर और उसे देखना चाहती थी। मारगोट की नाराज़ गी बढ़ती गई और माँ बीच में कूद पड़ी: 'मारगोट किताब पढ़ रही थी, उसे वापस लौटाओ।'

पापा आए और बिना यह जाने कि क्या हो रहा है, उन्होंने देखा कि मारगोट के साथ अन्याय हो रहा है, वे मुझ पर चिल्लाए, 'मैं देखूँगा अगर मारगोट तुम्हारी किताब देख रही हो तो तुम क्या करोगी!'

मैंने तुरंत हथियार डाल दिए, किताब को नीचे रखा और उनके मुताबिक़ ताव में आकर कमरे से बाहर निकल गई। मैं न तो आवेश में थी और न ही चिढ़ी हुई थी, बस दुखी थी।

बात को जाने बिना पापा का इस तरह फ़ैसला देना सही नहीं था। मैं ख़ुद ही मारगोट को किताब दे देती और जल्दी दे देती, अगर माँ और पापा बीच में न पड़ते और मारगोट की तरफ़ दारी करने के लिए आगे न आते, जैसे कि उसके साथ कोई बड़ा अन्याय हो रहा था।

यह ज़रूर है कि माँ ने मारगोट का पक्ष लिया; वे हमेशा एक-दूसरे की तरफ़ दारी करती हैं। मैं तो अब इसकी इतनी आदी हो गई हूँ कि माँ की झिड़कियों और मारगोट के चिड़चिड़ेपन का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता। मैं उन्हें प्यार करती हूँ, लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि वे मेरी माँ और बहन हैं। व्यक्ति के तौर पर मुझे उनकी कोई परवाह नहीं है। मेरी बला से वे पानी में कूद जाएँ। पापा की बात और है। मैं जब उन्हें मारगोट की तरफ़ दारी करते हुए देखती हूँ, उसके हर काम को सही मानते हुए, उसकी तारीफ़ करते हुए, उसे गले लगते हुए देखती हूँ, तो मेरे भीतर एक दर्द सा उठता है। मैं उन्हें लेकर पागल हूँ। मैं उनके जैसा बनना चाहती हूँ और दुनिया में मैं उनसे ज़्यादा किसी और को प्यार नहीं करती। वे नहीं समझ पाते कि वे मारगोट से मुझसे अलग बर्ताव करते हैं। मारगोट सबसे चतुर, सबसे दयालु, सबसे प्यारी और सबसे अच्छी है।

लेकिन मुझे भी अधिकार है कि सब मुझे गंभीरता से लें। मैं हमेशा से परिवार की मसखरी और शरारत करने वाली हूँ; मुझे हमेशा से अपनी ग़लतियों का दोहरा दंड भुगतना पड़ता है: एक बार डाँट के रूप में और दूसरी बार अपनी हताशा के रूप में। मैं अब बेकार के स्नेह या कथित गंभीर बातों से संतुष्ट नहीं होती। मुझे अपने पिता से कुछ चाहिए, जो वे दे सकते हैं। मैं मारगोट से नहीं जलती; मैं कभी नहीं जली। मुझे उसकी बुद्ध या उसकी सुंदरता से कोई ईर्ष्या नहीं है। बात बस इतनी सी है कि मैं महसूस करना चाहूँगी कि पापा मुझसे प्यार करते हैं, इसलिए नहीं कि मैं उनकी बेटी हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं, मैं ऐन हूँ।

मैं पापा से चिपकती हूँ, क्योंकि माँ के प्रति मेरी नफ़रत रोज़ बढ़ती जा रही है और पापा के माध्यम से ही मैं परिवार से जुड़े होने की भावना को बनाए रख पाई हूँ। वे नहीं समझते कि कभी-कभी मुझे माँ के प्रति अपनी भावनाओं को निकालना पड़ता है। वे इस पर बात नहीं करना चाहते और माँ की कमज़ोरियों पर बात नहीं करना चाहते।

फिर भी माँ की तमाम कमियों के बावजूद उनसे निपटना मेरे लिए काफ़ी मुश्किल है। मैं नहीं जानती कि उनसे कैसा बर्ताव करना चाहिए। मैं उनकी लापरवाही, उनके व्यंग्य और उनकी बेरहमी का जवाब उसी तरह से नहीं दे सकती, फिर भी मैं हर चीज़ का दोष अपने ऊपर लगातार नहीं ले सकती।

मैं माँ से उलट हूँ, इसलिए हमारा टकराव तो होगा ही। मेरा मक़सद उन्हें आँकना नहीं है; मुझे वह अधिकार नहीं है। मैं तो बस उन्हें माँ के तौर पर देख रही हूँ। वे मेरे साथ माँ का बर्ताव नहीं करतीं, मुझे अपनी माँ ख़ुद बनना पड़ता है। मैंने ख़ुद को उनसे काट लिया है। मैं अपना रास्ता ख़ुद तय कर रही हूँ और देखें कि वह मुझे कहाँ ले जाता है। मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि मैं कल्पना कर सकती हूँ कि किसी माँ और पत्नी को कैसा होना चाहिए और उस तरह की कोई भी बात मुझे उस महिला में नहीं दिखती, जिन्हें मुझे 'माँ' कहना चाहिए।

मै ख़ुद से बार-बार माँ के बुरे उदाहरण की अनदेखी करने को कहती हूँ। मैं सिर्फ़ उनकी अच्छी बातें देखना चाहती हूँ और अपने भीतर देखना चाहती हूँ कि मुझमें क्या कमी है। लेकिन यह काम नहीं आता और सबसे बुरी बात यह है कि पापा और मम्मी अपनी कमियों को नहीं देख पाते और यह भी कि मुझे निराश करने के लिए मैं उन्हें कितना दोषी मानती हूँ। क्या कोई ऐसे माता-पिता हैं, जो अपने बच्चों को पूरी तरह ख़ुश रख सकते हैं?

इतनी कई बार मुझे लगता है कि ईश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है, अभी और भविष्य में। मुझे ख़ुद ही अच्छा इंसान बनना होगा, बिना किसी आदर्श के या किसी की सलाह के, लेकिन इससे मैं आख़िरकार मज़ बूत बनूँगी।

मेरे अलावा और कौन यह सब पढ़ने वाला है? मेरे अलावा कौन है, जो सुकून के लिए इसे खोलेगा? मुझे अक्सर सांत्वना की ज़रूरत पड़ती है। मैं अक्सर कमज़ोर महसूस करती हूँ और अक्सर ही मैं उम्मीदों पर खरी नहीं उतर पाती। मैं यह जानती हूँ और हर रोज़ बेहतर करने का

प्रण लेती हूँ।

वे मेरे साथ एक जैसा बर्ताव नहीं करते। एक दिन कहते हैं कि ऐन समझदार लड़की है और उसे सब कुछ जानना चाहिए और फिर अगले दिन कहेंगे कि ऐन तो बेवकूफ़ है, जिसे कुछ नहीं आता और फिर भी कल्पना करती है कि उसने किताबों से वह सब कुछ जान लिया है, जो उसे जानना चाहिए! मैं अब छोटी सबकी प्यारी बिगड़ैल बच्ची नहीं हूँ, जिसकी हर हरकत पर हँसा जाना चाहिए। मेरे अपने विचार, योजनाएँ और आदर्श हैं, लेकिन अभी उन्हें बता पाने के क़ाबिल नहीं हुई हूँ।

ठीक है। रात को अकेले बैठने पर मेरे दिमाग़ में इतनी बातें आती हैं या फिर दिन में जब मुझे ऐसे लोगों को झेलना पड़ता है, जिन्हें मैं सहन नहीं कर सकती या फिर जो मेरी मंशा को ग़लत समझते हैं। इसी कारण मैं वापस अपनी डायरी पर आती हूँ, मैं यहीं से बात शुरू कर यहीं ख़त्म करती हूँ, क्योंकि किटी हमेशा धीरज से काम लेती है। उससे मेरा वादा है कि मैं बढ़ती रहूँगी, अपना रास्ता खोजूँगी और अपने आँसुओं को दबा दूँगी। मैं यही चाहती हूँ कि मुझे नतीजे मिलें या फिर एक बार किसी ऐसे से प्रोत्साहन मिले, जो मुझे प्यार करता हो।

मेरी भर्त्सना मत करो, लेकिन मुझे एक ऐसे इंसान के रूप में देखा, जो कभी-कभी फटने के कगार पर पहुँचता हो!

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 9 नवंबर, 1942

प्यारी किटी,

कल पीटर का सोलहवाँ जन्मदिन था। मैं आठ बजे तक ऊपर रही और मैंने व पीटर ने उसके उपहार देखे। उसे मोनोपॉली का खेल, एक रेज़ र और एक सिगरेट लाइटर मिला। वह इतना धूम्रपान नहीं करता, बिलकुल भी नहीं, बस यह बहुत ख़ास दिखता है।

सबसे बड़ी आश्चर्यजनक बात मि. फ़ॉन डान से सुनने को मिली, जिन्होंने एक बजे बताया कि अंग्रेज़ ट्यूनिस, अल्जीयर्स, कासाब्लांका और ओरान पहुँच गए हैं।

'यह अंत की शुरुआत है,' सभी कह रहे थे, ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने भी इंग्लैंड में इसी बात को दोहराए जाते सुना होगा, उन्होंने घोषणा की, 'यह अंत नहीं है। यह अंत की शुरुआत भी नहीं है। लेकिन शायद यह शुरुआत का अंत है।' क्या तुम्हें कुछ फ़र्क़ नज़ र आता है? हालाँकि आशावादी होने का कुछ कारण है। तीन महीने से आक्रमण झेल रहा रूसी शहर स्तालिनग्राद अब भी जर्मनी के हाथ नहीं आया है।

अनेक्स की असली भावना के मुताबिक़ मुझे तुम्हें खाने के बारे में बताना चाहिए (मुझे बताना चाहिए कि ऊपर वाली मंज़िल पर रहने वाले कितने पेटू हैं।)

मि. क्लेमन के एक दोस्त, बहुत अच्छे बेकर हर रोज़ डबलरोटी दे जाते हैं। वह उतनी नहीं होती, जितनी कि हमारे घर पर होती है, फिर भी वह काफ़ी है। हम ब्लैक मार्केट से राशन बुक्स

लेते हैं। क़ीमत बढ़ती जा रही है: वह पहले ही 27 से 33 गिल्डर्स हो चुकी है। वह भी छपे हुए काग़ज़ के लिए!

हमने यहाँ खाने के काफ़ी टिन जमा किए हैं, उनके अलावा अपने पोषण के लिए हमने तीन सौ पाउंड बीन्स ख़रीदी हैं। न सिर्फ़ अपने लिए, बल्कि दफ़्तर में काम करने वालों के लिए भी। हमने बीन्स के बोरे अपने गुप्त प्रवेशद्वार के अंदर गलियारों में टाँगे थे, लेकिन वज़न के कारण कुछ सिलाइयाँ खुल गईं। इसलिए हमने उन्हें अटारी में ले जाने का फ़ैसला किया और पीटर को वज़न उठाने का काम सौंपा गया। वह छह में से पाँच बोरों को सही-सलामत ऊपर ले गया और आख़िरी बोरे को ले जा रहा था कि वह फट गया और हवा में बिखर गई भूरी बीन्स की बाढ़ या बरसात सी हो गई, जो सीढ़ियों तक फैल गई। उस बोरे में पचास पाउंड बीन्स होने के कारण इतनी ज़ोरदार आवाज़ हुई कि मुर्दे भी जाग जाएँ। नीचे मौजूद लोगों को लगा कि घर गिरने वाला है। पीटर भौंचक्का रहा गया, लेकिन फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा, जब उसने मुझे सीढ़ियों में खड़ा देखा, बीन्स के समुद्र में भूरी लहरों के बीच मैं किसी द्वीप जैसी दिख रही थी। हमने तुरंत उन्हें उठाना शुरु किया, लेकिन बीन्स इतनी छोटी और फिसलन भरी थीं कि वे हर कोने व छेद में घुस रही थीं। हर बार ऊपर जाते हुए हम झुककर कोशिश कर रहे थे कि मिसेज़ फ़ॉन डान को मुट्ठी भर बीन्स दे सकें।

मैं यह बताना तो भूल ही गई कि पापा ठीक हो गए हैं।

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। रेडियो में अभी घोषणा हुई है कि अल्जीयर्स हार गया है। मोरक्को, कासाब्लांका और ओरान कई दिनों से ब्रिटिश कब्ज़े में हैं। अब हमें ट्यूनिश का इंतज़ार है।

मंगलवार, 10 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

बढ़िया ख़बर है! हमारे साथ छिपने के लिए आठवाँ व्यक्ति आ रहा है!

हाँ, सचमुच। हमें हमेशा लगता था कि हमारे पास एक और व्यक्ति के लिए पर्याप्त जगह व खाना है, लेकिन हमें डर था कि कहीं मि. कुगलर और मि. क्लेमन पर अतिरिक्त बोझ न पड़े। लेकिन यहूदियों के साथ बढ़ते अत्याचार की घटनाओं के कारण पापा ने इन दो महाशयों की राय जानने की कोशिश की और उन्हें यह योजना बहुत अच्छी लगी। 'लोग चाहें सात हों या आठ, उतना ही ख़तरनाक है,' उन्होंने सही कहा। एक बार बात हो जाने पर हम सभी ने मिलकर अपनी जान-पहचान के लोगों पर विचार किया और एक ऐसे इंसान के बारे में सोचने की कोशिश की, जो हमारे विस्तृत परिवार में अच्छी तरह घुलमिल सके। यह मुश्किल नहीं था। पापा ने फ़ॉन डान परिवार के सभी सदस्यों को नकार दिया, उसके बाद हमने एक डेंटिस्ट

अल्फ्रेड डुसल को चुना। वे एक आकर्षक ईसाई महिला के साथ रहते हैं, जो उनसे कम उम्र की हैं। शायद उनकी शादी नहीं हुई है, लेकिन यह और बात है। वे शांत और शिष्ट इंसान के रूप में जाने जाते हैं और ऊपरी तौर पर उनके साथ मेरे परिचय से लगता है कि वे अच्छे हैं। मीप भी उन्हें जानती है, इसलिए वह आवश्यक व्यवस्था कर सकती है। अगर मि. दुसे आते हैं, तो मारगोट के कमरे के बजाय उन्हें मेरे कमरे में सोना होगा और फ़ोल्डिंग बिस्तर से काम चलाना होगा। हम उन्हें अपने साथ कुछ लाने को कहेंगे, जिससे कैविटीज़ यानी दाँतों में हुए छेदों को भरा जा सके।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 12 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

मीप हमें बताने आई कि वह डॉ. दुसे से मिलने गई थी। जैसे ही वह कमरे में घुसी, उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह छिपने की किसी जगह के बारे में जानती है और जब मीप ने बताया कि कोई जगह है, तो वे बहुत ख़ुश हुए। मीप ने कहा कि उन्हें जितनी जल्दी हो सके, छिपने चले जाना चाहिए, हो सके तो शनिवार को, लेकिन उन्होंने सोचा कि यह तो असंभव है, क्योंकि उन्हें अपने रिकॉर्ड ठीक करने करने हैं, अपने हिसाब-किताब की व्यवस्था करनी है और कुछ मरीज़ देखने हैं। मीप ने सुबह हमें वही सब बता दिया। हमें नहीं लगा कि इतना इंतज़ार करना अक्लमंदी है। इन सभी तैयारियों के लिए हमें कई ऐसे लोगों को सफ़ाई देनी पड़ती है, हमारे मुताबिक़ जिन्हें अँधेरे में रखा जाना चाहिए। मीप डॉ. दुसे से यह पूछने गई कि क्या वे शनिवार को नहीं आ सकते, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और अब उन्हें सोमवार को आना है।

मेरे ख़याल से यह अजीब है कि उन्होंने हमारे प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार नहीं किया। अगर उन्हें सड़क से उठा लिया गया, तो उनके रिकॉर्ड्स या उनके मरीज़ कोई काम नहीं आएँगे। तो फिर देरी क्यों? अगर मुझसे पूछो तो मेरे ख़याल से उनकी बात मानना पापा की बेवकूफ़ी है।

वरना, कोई और ख़बर नहीं है।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 17 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

मि. दुसे पहुँच गए हैं। सब कुछ सही रहा। मीप ने उनसे डाकघर के आगे सुबह 11 बजे एक निश्चित स्थान पर रहने को कहा, जहाँ एक आदमी उन्हें मिलेगा, जो नियत समय पर नियत जगह

पर होगा। मि. क्लेमन उसके पास जाकर कहेंगे कि जिस आदमी से उन्हें मिलना था, वह नहीं आ पाया और उससे कहेंगे कि वह दफ़्तर जाकर मीप से मिल ले। मि. क्लेमन ट्राम से वापस दफ़्तर चले गए, जबकि दुसे पैदल ही उनके पीछे चले।

ग्यारह बजकर बीस मिनट पर मि. दुसे ने हमारे दरवाज़े पर दस्तक दी। मीप ने उन्हें कोट उतारने को कहा, ताकि पीला सितारा न दिखे और उन्हें प्राइवेट ऑफ़िस में ले आई, जहाँ पर मि. क्लेमन ने उन्हें तब तक व्यस्त रखा, जब तक कि सफ़ाई करने वाली महिला नहीं चली गई। यह बहाना बनाकर कि प्राइवेट ऑफ़िस किसी और काम के लिए चाहिए, मीप मि. दुसे को ऊपर ले आई, किताबों की अलमारी खोली और अंदर आई, जबकि मि. दुसे हैरानी से देखते रहे।

इस बीच हम सातों डाइनिंग टेबल पर कॉफ़ी व कॉनियाक लेकर अपने परिवार में आने वाले व्यक्ति का इंतज़ार करने लगे। मीप पहले उन्हें फ़्रैंक परिवार के कमरे में ले गई। उन्होंने तुरंत हमारे फ़र्नीचर को पहचान लिया, लेकिन उन्हें यह ख़याल नहीं आया कि हम ठीक उनके सिर के ऊपर वाली मंज़िल पर मौजूद थे। जब मीप ने उन्हें बताया, तो वह इतने हैरान हुए कि बेहोश होते-होते बचे। शुक्र है कि मीप ने उन्हें ज़्यादा देर अनिश्चितता में नहीं रखा और उन्हें ऊपर ले आई। मि. दुसे कुर्सी पर बैठे और हमें भौंचक्के होकर ख़ामोशी से घूरते रहे, जैसे कि वे हमारे चेहरों पर सच पढ़ सकते हों। फिर वे अटकते हुए बोले, 'अरे... लेकिन आपको तो *बेल्जियम* में होना था? अफ़सर, कार, वे नहीं आए? आपके निकल जाने की योजना कारगर नहीं रही?'

हमने उन्हें पूरी बात बताई कि कैसे हमने जानबूझकर अफ़सर और कार की अफ़वाह फैलाई, ताकि जर्मन या फिर हमारी तलाश में आने वाले किसी भी व्यक्ति को हमारा पता न चल सके। मि. दुसे इस चतुराई से अवाक रह गए और हमारे प्यारे और बहुत ही व्यावहारिक अनेक्स के बाक़ी हिस्सों में घूमते हुए हैरानी से देखते रहे। फिर हम सबने एक साथ खाना खाया। फिर उन्होंने एक झपकी ली और फिर उठकर हमारे चाय पी, मीप उनका कुछ सामान पहले से ले आई थी, वे उसे रखने लगे और सहज महसूस करने लगे। ख़ासकर तब जब हमने उन्हें सीक्रेट अनेक्स के नियम-क़ायदों की टाइप की गई सूची (फ़ॉन डान की प्रस्तुति) पकड़ाई:

सीक्रेट अनेक्स की जानकारी और मार्गदर्शक

यहूदियों और अन्य बेदख़ल लोगों के लिए अस्थायी आवास की अनोखी सुविधा

पूरे साल खुला है: ऐम्स्टर्डम के बीचोंबीच सुंदर, शांत, जंगल से घिरा हुआ। आसपास कोई निजी आवास नहीं। ट्राम 13 व 17 से पहुँचा जा सकता है और कार व साइकिल से भी। जिन लोगों को जर्मन सत्ता द्वारा इस प्रकार के परिवहन का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं है, वे पैदल भी यहाँ पहुँच सकते हैं। यहाँ साज़ -सामान सहित व उसके बिना और भोजन व उसके बिना भी कमरे व अपार्टमेंट्स उपलब्ध हैं।

क़ीमत: निःशुल्क।

भोजन: कम वसा वाला।

स्नानघर में *लगातार पानी* (माफ़ कीजिए, नहा नहीं सकते) और कई अंदरूनी व बाहरी दीवारों पर भी, गर्मी के लिए आरामदेह अंगीठी।

कई तरह की चीज़ें रखने के लिए पर्याप्त जगह। दो बड़ी, *आधुनिक तिजोरियाँ*।

निजी रेडियो, जिसकी डायरेक्ट लाइन लंदन, न्यू यॉर्क, तेल अवीव और अन्य कई स्टेशनों से जुड़ी हैं। शाम छह बजे के बाद सभी निवासियों के लिए उपलब्ध। कुछ अपवादों को छोड़कर निषिद्ध प्रसारण नहीं सुन सकते, यानी कुछ जर्मन स्टेशनों को क्लासिकल संगीत के लिए सुना जा सकता है। जर्मन समाचार प्रसारणों को सुनना (चाहे वे कहीं से भी प्रसारित हो) और उन्हें दूसरों तक पहुँचना पूरी तरह निषिद्ध है।

आराम के घंटे: रात दस बजे से सुबह साढ़े सात बजे तक; रविवार को सवा दस बजे सुबह तक। परिस्थितियों के अनुसार रहने वालों को दिन के समय भी आराम के घंटों का पालन करना होगा, जब भी प्रबंधन द्वारा उन्हें निर्देश दिया जाए। सभी की सुरक्षा के लिए आराम के घंटों का सख़्ती से पालन किया जाए!!!

ख़ाली समय में गतिविधियाँ: घर के बाहर किसी गतिविधि की अनुमति नहीं, जब तक कि आगे कोई नोटिस नहीं आता।

भाषा का इस्तेमाल: हर समय बहुत धीरे से बात करना ज़रूरी है। केवल सभ्य लोगों की भाषा बोली जाए, इसलिए जर्मन नहीं बोली जाएगी।

पढ़ना व आराम: क्लासिकल और विद्वतापूर्ण किताबों को अलावा कोई जर्मन किताब न पढ़ी जाए। अन्य किताबें वैकल्पिक हैं।

व्यायाम: प्रतिदिन।

गाना: बहुत धीमे स्वर में, शाम छह बजे के बाद।

फ़िल्में: पहले से व्यवस्था करना ज़रूरी है।

पढ़ाई: शॉर्टहैंड में साप्ताहिक पत्रचार पाठ्यक्रम। अंग्रेज़ी, फ्रेंच, गणित और इतिहास दिन या रात में किसी भी समय। भुगतान अध्यापन के रूप में, उदाहरण, डच।

अलग विभाग छोटे घरेलू पालतुओं की देखभाल के लिए (कीटों के अलावा, जिनके लिए ख़ास परमिट की ज़रूरत है)।

भोजन का समय:

नाश्ता: प्रतिदिन सुबह 9 बजे, सार्वजनिक अवकाश व रविवार को छोड़कर; रविवार व सार्वजनिक अवकाश के दिनों में सुबह क़रीब 11:30 बजे।

दिन का भोजन: हल्का भोजन। 11:15 से 11:45 तक।

रात्रि भोजन: गर्म हो सकता है या फिर नहीं भी। खाने का समय समाचार प्रसारण पर निर्भर करता है।

आपूर्ति कोर के संदर्भ में दायित्व: निवासियों को दफ़्तर के काम में मदद के लिए हमेशा तैयार रहना होगा।

स्नान: रविवार सुबह 9 बजे के बाद सभी निवासियों को वाशटब उपलब्ध होगा। निवासी चाहें तो अपनी इच्छानुसार निचली मंज़िल पर मौजूद शौचालय, रसोईघर, प्राइवेट ऑफ़िस या फ्रंट ऑफ़िस का इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऐल्कोहल: केवल चिकित्सा उद्देश्य के लिए।

समाप्त।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 19 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

जैसा कि हमने सोचा था, मि. दुसे बहुत अच्छे आदमी हैं। यह ज़रूर है कि उन्हें मेरे साथ एक कमरे में रहना बुरा नहीं लगता; ईमानदारी से कहूँ तो मुझे किसी अजनबी का मेरी चीज़ें इस्तेमाल करना बहुत पसंद नहीं, लेकिन किसी अच्छे काम के लिए आपको त्याग करने पड़ते हैं और मुझे ख़ुशी है कि मैं इतनी छोटी सी कुर्बानी कर सकती हूँ। 'अगर हम अपने एक भी दोस्त को बचा सकते हैं, तो बाक़ी किसी बात से फ़र्क़ नहीं पड़ता,' पापा ने कहा और वे बिलकुल सही हैं।

पहले दिन मि. दुसे ने मुझसे हर तरह के सवाल पूछे - मिसाल के तौर पर, ऑफ़िस में महिला सफ़ाईकर्मी किस समय आती है, गुसलख़ाने के इस्तेमाल का क्या इंतज़ाम है और हम शौचालय किस समय जा सकते हैं। तुम्हें हँसी आ सकती है, लेकिन छिपे रहने के दौरान यह सब आसान नहीं है। दिन के समय हम ऐसी कोई आवाज़ नहीं निकाल सकते, जिसे नीचे सुना जा सके और जब वहाँ कोई और, जैसे कि सफ़ाई करने वाली औरत हो तो हमें ज़्यादा ध्यान रखना पड़ता है। मैंने बहुत धीरज से यह सब मि. दुसे को बताया, लेकिन मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उन्हें कितनी देर में बात समझ आती है। वे हर बात दो बार पूछते हैं और फिर भी आपकी बात उन्हें याद नहीं रहती।

हो सकता है कि अचानक आए इस बदलाव से वे थोड़े असमंजस में हों और इससे उबर जाएँ। वरना, बाक़ी सब ठीक है।

मि. दुसे ने बाहर की दुनिया के बारे में काफ़ी कुछ बताया, जिससे हम काफ़ी लंबे समय

से दूर हैं। उन्होंने दुखद समाचार दिए। अनगिनत दोस्तों और परिचितों को एक भयानक नियति की ओर ले जाया जा रहा है। हर रात हरे व स्लेटी सैन्य गाड़ियाँ सड़कों पर गश्त करती हैं। वे हर दरवाज़ा खटखटाकर पूछते हैं कि क्या वहाँ कोई यहूदी रहते हैं। अगर हाँ, तो वे उस पूरे परिवार को ले जाते हैं। अगर नहीं, तो वे अगले घर की तरफ़ बढ़ जाते हैं। अगर आप कहीं छिपने नहीं जाते, तो उनके पंजे से बचना नामुमकिन है। वे अक्सर सूचियाँ लेकर घूमते हैं, उन्हीं दरवाज़ों पर दस्तक देते हैं, जहाँ उन्हें लोगों के मिलने की उम्मीद होती है। वे अक्सर इनाम की पेशकश करते हैं, हर इंसान पर काफ़ी बड़े इनाम की। ये पुराने दिनों में गुलामों की खोज जैसा है। मैं इस बात को हल्का नहीं कर रही हूँ, उस लिहाज़ से तो यह बहुत दुःखदायक है। शाम को अँधेरा होने पर मैं अक्सर अच्छे, मासूम लोगों की कतारें देखती हूँ, जिनके साथ बच्चे होते हैं जो चलते रहते हैं, मुट्ठी भर आदमी उन्हें आदेश देते हैं और तब तक धमकाते व पीटते हैं, जब तक कि वे गिर न जाएँ। किसी को भी बख़्शा नहीं जाता। बीमार, बूढ़े, बच्चे, शिशु और गर्भवती औरतें - सबको मौत की तरफ़ ले जाया जाता है।

हम बहुत ख़ुशक़िस्मत हैं कि हलचल से दूर हैं। हम इस कष्ट पर एक पल भी ध्यान नहीं देते, अगर हम अपने प्रिय लोगों को लेकर इतने चिंतित न होते, जिनकी हम मदद नहीं कर सकते। मुझे गर्म बिस्तर पर सोना बुरा लगता है, जबकि बाहर कहीं मेरे सबसे प्यारे दोस्त थककर गिर रहे हैं या फिर ज़मीन पर गिराए जा रहे हैं।

मैं भी तब डर जाती हूँ, जब उन नज़दीकी दोस्तों के बारे में सोचती हूँ जो इस धरती पर चलने वाले सबसे क्रूर राक्षसों की दया पर हैं।

और सिर्फ़ इसलिए कि वे यहूदी हैं।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 20 नवंबर, 1942

प्यारी किटी,

हमें नहीं पता कि कैसे प्रतिक्रिया करें। अब तक हमारे पास यहूदियों की बहुत कम ख़बरें पहुँची थीं और हमें लगा कि अच्छा रहेगा कि जितना हो सके हम ख़ुश रहें। कभी-कभी मीप बताती थी कि किसी दोस्त के साथ क्या हुआ और माँ व मिसेज़ फ़ॉन डान रोने लगती थीं, इसलिए उसने फ़ैसला किया कि कुछ और न कहा जाए। लेकिन हमने मि. दुसे पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी और जो कहानियाँ उन्होंने सुनाई, वे इतनी ख़ौफ़ नाक थीं कि हम उन्हें अपने दिमाग़ से नहीं निकाल पाए। एक बार जब हम इन ख़बरों को पचा लेंगे, तो शायद हम फिर से हँसी-मज़ाक करने लगेंगे। अगर हम अभी की तरह उदास बने रहे, तो इससे न तो हमारा और न ही बाहर वालों का कोई भला होगा। वैसे भी सीक्रेट अनेक्स को उदासी भरी जगह बनाने का क्या फ़ायदा

है?

कुछ भी करते समय मैं उन लोगों के बारे में सोचना बंद नहीं कर सकती, जो चले गए हैं। जब भी मैं ख़ुद को हँसते हुए पाती हूँ, तो मुझे याद आता है कि इतना ख़ुश होना कितनी शर्म की बात है। तो क्या मुझे पूरा दिन रोते हुए बिताना चाहिए? नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। यह उदासी गुज़ र जाएगी।

इसमें एक और तकलीफ़ जुड़ गई है, जो थोड़ी व्यक्तिगत है और उस कष्ट की तुलना में यह कुछ भी नहीं, जिसके बारे में मैंने तुम्हें अभी बताया। फिर भी मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूँ कि पिछले कुछ समय से मैं बहुत अकेला महसूस करने लगी हूँ। मेरे आसपास एक बड़ा सा ख़ालीपन है। मैंने कभी उसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा, क्योंकि मैं दोस्तों के साथ थी और मज़े कर रही थी। अब मैं या तो बुरी चीज़ों के बारे में सोचती हूँ या अपने बारे में। इस बात को समझने में थोड़ा समय लगा, लेकिन मैं अब समझ गई हूँ कि पापा चाहे कितने भी दयालु हों, वे मेरी पुरानी दुनिया की जगह नहीं ले सकते। मेरी भावनाओं का जहाँ तक सवाल है, माँ और मारगोट की अहमियत काफ़ी पहले ख़त्म हो चुकी है।

लेकिन तुम क्यों इस बेवकूफ़ी को झेलो? मैं जानती हूँ कि मैं बहुत कृतघ्न हूँ, किटी, लेकिन जब मुझे अनगिनत बार डाँटा जाएगा और मेरे पास कई और परेशानियाँ भी हों, तो मेरा सिर घूमने लगता है!

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 28 नवंबर, 1942

प्रिय किटी,

हम काफ़ी बिजली का इस्तेमाल करते रहे हैं और हम अपने हिस्से से ज़्यादा ख़र्च कर चुके हैं। नतीजा यह है कि अब बिजली कट जाने के डर से हमें बहुत कंजूसी से उसका इस्तेमाल करना पड़ रहा है। एक पखवाड़े तक कोई रोशनी नहीं, यह सुखद सोच है, है न? लेकिन कौन जानता है कि इतने दिन न हां! चार या साढ़े चार बजे के बाद इतना अँधेरा हो जाता है कि पढ़ना मुश्किल हो जाता है, तो हम हर तरह की पागलपन भरी गतिविधियों में लगे रहते हैं: पहेलियाँ बुझाना, अँधेरे में कसरत करना, अंग्रेज़ी या फ्रेंच बोलना, किताबों की समीक्षा करना, थोड़ी देर बाद सब ऊब जाते हैं। कल मैंने मनोरंजन का एक नया तरीक़ा ढूँढ़ा: पड़ोसियों के रोशन घरों में अच्छी दूरबीन से झाँकना। दिन के समय हम परदे नहीं हटा सकते, ज़रा सा भी नहीं, लेकिन अँधेरा होने पर ऐसा करने में कोई हर्ज़ नहीं।

मैं नहीं जानती थी कि पड़ोसी इतने दिलचस्प हो सकते हैं। हमारे तो हर लिहाज़ से हैं। मैंने एक परिवार को खाना खाते देखा, एक को फ़िल्म बनाते और सामने एक डेंटिस्ट को एक डरी हुई बूढ़ी महिला का इलाज करते देखा।

मि. दुसे, जिनके बारे में कहा जाता था कि बच्चों के साथ उनकी बहुत पटती है और वे बच्चों को बहुत पसंद करते हैं, वे काफ़ी पुराने क़िस्म के अनुशासन का पालन करवाने वाले निकले, जो शिष्टाचार पर न झेले जाने वाले लंबे उपदेश देते हैं। मुझे जनाब के साथ अपना छोटा सा कमरा बाँटने का एकमात्र सुख मिला है और क्योंकि मैं तीनों बच्चों में से मुझे ही सबसे अशिष्ट माना जाता है, मैं पुरानी झिड़कियों और डाँट-फटकार से बचने के लिए बस यही कर सकती हूँ कि उन्हें न सुनने का दिखावा करूँ। यह उतना बुरा नहीं होता अगर मि. दुसे उतने चुगलखोर न होते और अपनी ख़बरें देने के लिए माँ को न चुनते। मि. दुसे ने मुझे झिड़की लगाई ही होती है कि माँ मुझे फिर से भाषण देने लगती हैं और आरोपों की जैसे झड़ी लगा देती हैं। अगर मैं सचमुच ख़ुशक़िस्मत रहती हूँ, तो मिसेज़ फ़ॉन डी मुझे पाँच मिनट बाद बुलाती हैं और निर्देश जारी करती हैं।

नुक्ताचीनी करने वाले परिवार का बुरे तौर पर अपनी तरफ़ ध्यान खींचने वाला होना वाक़ई आसान नहीं है। रात को सोते समय जब मैं अपने पापों और बढ़ा-चढ़ाकर कही गई कमियों के बारे में सोचती हूँ, तो मैं उन बातों के बोझ में इतनी ज़्यादा उलझ जाती हूँ कि अपने मूड के मुताबिक़ या तो मैं हँसने लगती हूँ या फिर रोने। फिर मैं अपने से अलग होने की चाह या फिर मैं जो चाहती हूँ, उससे अलग होने या शायद अलग सा बर्ताव करने की एक अजीब से ख़याल के साथ सो जाती हूँ।

अरे, अब मैं तुम्हें भी उलझाने लगी हूँ। मुझे माफ़ करना, लेकिन मुझे चीज़ों को काटना पसंद नहीं और ऐसे अभाव के समय में काग़ज़ के किसी टुकड़े को फेंक देना बहुत ही बुरी बात है। तो मैं तुम्हें बस यही सलाह दे सकती हूँ कि ऊपर लिखे अनुच्छेद को फिर से न पढ़ना और न ही उसके मर्म तक जाने की कोशिश करना, क्योंकि तुम फिर उससे बाहर कभी नहीं निकल पाओगी!

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 7 दिसंबर, 1942

प्रिय किटी,

इस साल ऑनेका और सेंट निकोलस डे लगभग साथ-साथ बस एक दिन के अंतर पर आए। हमने ऑनेका पर कुछ ख़ास नहीं किया, कुछ छोटे-मोटे उपहार का लेन-देन हुआ और मोमबत्तियाँ जलाई गईं। मोमबत्तियाँ कम थीं, इसलिए हमने उन्हें सिर्फ़ दस मिनट के लिए जलाया, लेकिन हमने ख़ूब गाने गाए, तो उससे ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पड़ा। मि. फ़ॉन डान ने लकड़ी से मेनोआ बनाया।

शनिवार को सेंट निकोलस डे में ज़्यादा मज़ा आया। रात के भोजन के दौरान बेप और मीप

पापा से इतना फुसफुसाकर बात कर रही थीं कि हमारी उत्सुकता जागी और हमें शक हुआ कि वे कोई योजना बना रहे हैं। आठ बजे हम घुप्प अँधेरे में गलियारे से होते हुए (मुझे कँपकँपी छूट गई और मैं बस चाह रही थी कि हम सुरक्षित ऊपर पहुँच जाएँ!) नीचे के कमरे में पहुँचे। हम यहाँ पर रोशनी कर सकते थे, क्योंकि उसमें कोई खिड़की नहीं थी। जब रोशनी हो गई तो हमने बड़ी अलमारी खोली।

'वाह! क्या बात है!' हम सबने कहा।

कोने में रंगीन काग़ज़ से सजी एक टोकरी थी और ब्लैक पीटर का मुखौटा था।

हम तेज़ी से उस टोकरी को अपने साथ ऊपर ले गए। उसके अंदर हर किसी के लिए एक उपहार था, जिसके साथ कुछ उपयुक्त पंक्तियाँ भी थीं। तुम्हें पता है कि सेंट निकालेस डे पर लोग किस तरह की कविताएँ लिखते हैं, इसलिए मैं वह सब नहीं लिखूँगी।

मुझे गुड़िया मिली, पापा को बुकऐंड यानी कताबों को सहारा देने वाला खाँचा। जो भी हो, यह अच्छा विचार था और हम आठों ने पहले कभी सेंट निकोलस डे नहीं मनाया था, इसलिए यह अच्छी शुरुआत थी।

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। हमने नीचे वाले लोगों को भी उपहार दिए, पुराने अच्छे दिनों की कुछ चीज़े बची थीं; मीप और बेप पैसे के लिए हमेशा कृतज्ञ रहते हैं।

आज हमें पता चला कि मि. फ़ॉन डान की राखदानी, मि. डुसल का पिक्चर फ़्रेम और पापा के बुकऐंड को और किसी ने नहीं, बल्कि मि. वुश्कल ने बनाया था। यह मेरे लिए रहस्य ही है कि कोई अपने हाथों का इतना बढ़िया इस्तेमाल कैसे कर सकता है!

बृहस्पतवार, 10 दिसंबर, 1942

प्रिय किटी,

मि. फ़ॉन डान मांस, सॉसेज और मसालों के व्यापार में थे। उन्हें मसालों के उनके ज्ञान के लिए काम पर रखा गया था और अब हमें इस बात से बहुत ख़ुशी होती है कि सॉसेज से जुड़े उनके कौशल से अब हमें फ़ायदा हो रहा है।

हमने बहुत सारा मांस (ज़ाहिर है कि गुप्त रूप से) मँगवाया था, और उसे संरक्षित करने की हमारी योजना थी, ताकि वह आने वाले मुश्किल दिनों में काम आ सके। मि. फ़ॉन डान ने ख़ातवस्त, सॉसेजेस और मेटवर्स्त बनाने का फ़ैसला किया। उन्हें कीमा बनाने की मशीन में कई बार मांस डालते देखने में मुझे मज़ा आया। फिर उन्होंने बची-खुची सामग्री को कीमे में डाला और एक लम्बे से पाइप का इस्तेमाल करते हुए उस मिश्रण को आवरण में डाला। हमने दिन के भोजन में ख़ातवस्त और ज़ावरकॉट खाया, लेकिन संरक्षित किए जाने वाले सॉसेज को पहले

सुखाना था, इसलिए हमने उन्हें छत से लटके एक डंडे पर टाँग दिया। कमरे में घुसने वाला हर इंसान छत से लटके सॉसेज को देखकर हँसने लगता। बहुत हास्यजनक दृश्य था।

रसोईघर अस्तव्यस्त था। अपनी पत्नी का ऐप्रन लगाए मि. फ़ॉन डान पहले से मोटे लग रहे थे और मांस पर काम कर रहे थे। हाथों पर लगे ख़ून, लाल चेहरे और धब्बेदार ऐप्रन में वे असली क़साई जैसे दिख रहे थे। मिसेज़ फ़ॉन डी सब कुछ एक साथ करने की कोशिश कर रही थीं: किताब से डच सीख रही थीं, सूप हिला रही थीं, मांस को देख रही थीं, अपनी टूटी पसली को लेकर कराह रही थीं। ऐसा ही होता है, जब बूढ़ी महिलाएँ अपनी चर्बी से छुटकारा पाने के लिए बेवक़ूफ़ाना कसरतें करती हैं! दुसे की आँख में संक्रमण हो गया था और वे अंगीठी के पास बैठकर अपनी आँख पर कैमोमिल चाय का सेक लगा रहे थे। पिम खिड़की से आती रोशनी की किरण के सामने बैठे हुए थे और उन्हें बार-बार अपनी कुर्सी हटानी पड़ रही थी, ताकि वे उसके रास्ते में न आएँ। उनका गठिया शायद उन्हें परेशान कर रहा था, क्योंकि वे झुके हुए थे और मि. फ़ॉन डान को देखते हुए उनके चेहरे पर दर्द के भाव थे। उन्हें देखकर मुझे उन बूढ़े अपाहिज लोगों का ध्यान आ रहा था, जो निर्धन गृहों में दिखते हैं। पीटर कमरे में मूशी के साथ उछल-कूद कर रहा था, जबकि माँ, मारगोट और मैं उबले हुए आलू छील रहे थे। अगर ध्यान से देखो, तो हममें से कोई भी अपने काम को सही तरीक़े से नहीं कर रहा था, क्योंकि हम सभी मि. फ़ॉन डान को देखने में व्यस्त थे।

दुसे ने अपनी प्रैक्टिस शुरू कर दी है। मैं मज़े लेने के लिए उनके पहले मरीज़ का विवरण देती हूँ।

माँ कपड़े इस्तरी कर रही थीं और पहली शिकार मिसेज़ फ़ॉन डी कमरे के बीचोंबीच एक कुर्सी पर बैठी। दुसे ने बड़ी गंभीरता से अपना बक्सा खोला, यू डी कोलोन माँगा, जिसका इस्तेमाल कीटाणुनाशक के रूप में किया जा सकता है और वैसलीन भी, जिसका इस्तेमाल वैक्स की जगह किया जा सकता है। उन्होंने मिसेज़ फ़ॉन डी के मुँह में देखा और उन दो दाँतों को देखा, जो उनके दर्द की वजह थे और हर बार उन्हें छुए जाने पर वे चिल्लाने लगती थीं। काफ़ी लंबे समय तक (मिसेज़ फ़ॉन डी के हिसाब से लंबा, जबकि असल में दो मिनट से ज़्यादा का वक़्त नहीं लगा) देखने के बाद दुसे ने एक कैविटी को निकालना शुरू किया। लेकिन मिसेज़ फ़ॉन डान का उन्हें ऐसा करने देने का इरादा नहीं था। वे तब तक अपने हाथ-पाँव हिलाती रहीं, जब तक कि दुसे ने अपने औज़ार को रोक नहीं दिया और... वह मिसेज़ फ़ॉन डी के दाँत में ही अटक गया। फिर क्या था! मिसेज़ फ़ॉन डी सभी दिशाओं में (उस तरह के औज़ार को मुँह में रखकर जितना चिल्लाया जा सकता है) चीख़ती-चिल्लाती रहीं, उसे निकालने की कोशिश करती रहीं, लेकिन ऐसा करते हुए उसे और अंदर धकेल दिया। मि. दुसे अपने कूल्हों पर हाथ रखते हुए शांति से उस दृश्य को देखते रहे, जबकि बाक़ी लोग ठहाके लगा रहे थे। ज़ाहिर है, वह नीच क़िस्म का बर्ताव था। अगर उनकी जगह मैं होती, तो निश्चित ही उनसे ज़्यादा चीख़ती-

चिल्लाती। काफ़ी छटपटाने, हाथ-पाँव चलाने, चीख़ने-चिल्लाने के बाद मिसेज़ फ़ॉन डी उस चीज़ को निकालने में कामयाब रहीं और मि. दुसे फिर से अपने काम में ऐसे लग गए, जैसे कि कुछ न हुआ हो। उन्होंने इतनी तेज़ी से काम किया कि मिसेज़ फ़ॉन डी को कोई और हरकत करने का मौक़ा ही नहीं मिला। लेकिन उनके पास तब इतने मददगार मौजूद थे, जितने कि पहले कभी नहीं रहे होंगे उनके पास मि. फ़ॉन डी और मेरे जैसे दो सहायक थे, जिन्होंने अपने काम को बख़ूबी अंजाम दिया। पूरा दृश्य मध्य युग के किसी खुदे हुए दृश्य जैसा लग रहा था, जिसका शीर्षक था, 'काम पर लगा नीम-हकीम।' इस बीच मरीज़ आतुर हो रहा था, क्योंकि उसे अपने सूप और अपने भोजन की भी निगरानी करनी थी। एक बात तो पक्की है कि अब मिसेज़ फ़ॉन डी डेंटिस्ट से अगली मुलाक़ात सोच-समझकर रखेंगी!

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 13 दिसंबर, 1942

प्यारी किटी,

मैं फ्रंट ऑफ़िस में आराम से बैठकर भारी परदों की दरार के बीच से झाँक रही हूँ। अँधेरा है, लेकिन लिखने लायक़ रोशनी है।

बाहर लोगों को आते-जाते देखना काफ़ी अजीब है। वे सभी इतनी जल्दी में लगते हैं कि उनके क़ दम ख़ुद ही उलझ जाते हैं। साइकिल पर सवार लोग इतनी तेज़ी से निकलते हैं कि बताना मुश्किल होता है कि उस पर कौन सवार है। आसपास के लोग इतने आकर्षक नहीं हैं कि उन्हें देखा जाए। बच्चे तो ख़ासकर इतने गंदे हैं कि आप उन्हें डंडे से भी न छूना चाहें। गंदी बस्ती में रहने वाले बहती नाक वाले बच्चे। मैं उनका बोला हुआ एक भी शब्द समझ नहीं पाती।

कल दोपहर जब मारगोट और मैं नहा रहे थे, तो मैंने कहा, 'क्या हो अगर हम मछली पकड़ने की बंसी लेकर उनमें से हर बच्चे को अंदर खींच लें, टब में अच्छी तरह नहलाकर, उनके कपड़े ठीक करके फिर...'

'और कल फिर वे पहले जितने ही गंदे हो जाएँगे,' मारगोट ने जवाब दिया।

मैं बकबक कर रही हूँ। और भी चीज़ें देखने लायक़ हैं: कारें, नाव और बारिश। मैं ट्राम व बच्चों की आवाज़ सुन सकती हूँ और अपने में मस्त हूँ।

हमारे विचारों में भी हमारी तरह कम तेज़ी से बदलाव आते हैं। वे हिंडोले की तरह हैं, यहूदियों से भोजन की तरफ़, फिर भोजन से राजनीति की ओर। यहूदियों की बात आई तो बताती हूँ कि कल बाहर झाँकते समय मैंने दो यहूदियों को देखा। मुझे लगा जैसे कि मैं दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक को देख रही हूँ। मुझमें इतना मज़ेदार भाव आया जैसे कि मैं

अधिकारियों को उनके बारे में बता दूँगी और अभी उनकी जासूसी कर रही हूँ।

हमारे ठीक सामने एक हाउसबोट है। वहाँ कप्तान अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रहते हैं। उनके पास ज़ोर से भौंकने वाला एक कुत्ता है। उस छोटे से कुत्ते को हम उसके भौंकने व उसकी पूँछ से ही जानते हैं, जो उसके डेक पर घूमते हुए दिखती है। ओह, कितनी शर्म की बात है कि अभी बारिश शुरू हुई है और अधिकतर लोग अपनी छतरियों के नीचे छिपे हैं। मुझे बस रेनकोट दिखाई दे रहे हैं और ढँके हुए सिर, दरअसल मुझे देखने की भी ज़रूरत नहीं है। अब मैं एक नज़ र में औरतों को पहचान लेती हूँ; आलू खाकर मोटी हो चुकी महिलाएँ, लाल या हरे कोट व घिस चुके जूतों में सजी, बाँहों में लटके बैग, उनके चेहरे या तो सख़्त हैं या फिर ख़ुशनुमा, जो उनके पतियों के मनोभावों पर जो निर्भर हैं।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 22 दिसंबर, 1942

प्यारी किटी,

अनेक्स में सभी को यह जानकर ख़ुशी हुई कि हमें क्रिसमस के लिए एक-चौथाई पाउंड अतिरिक्त मक्खन मिलेगा। अख़बार के मुताबिक़ हर किसी को आधा पाउंड मक्खन मिलेगा, लेकिन उनका मतलब उन ख़ुशक़िस्मत लोगों से है, जिन्हें सरकार से राशन बुक मिलती है, न कि हमारे जैसे यहूदियों से जो काले बाज़ार से आठ के बजाय सिर्फ़ चार राशन बुक ही ले सकते हैं। हममें से हर एक मक्खन से कुछ न कुछ बेक करेगा। आज सुबह मैंने दो केक और कुछ बिस्किट बनाए। ऊपर सब व्यस्त हैं और माँ ने मुझे बताया है कि घर के सभी काम ख़त्म होने तक मुझे कोई पढ़ाई-लिखाई नहीं करनी है।

मिसेज़ फ़ॉन डान अपनी चोट खाई पसली के साथ बिस्तर पर पड़ी हैं। वे दिन भर शिकायत करती रहती हैं, लगातार पट्टियाँ बदलने को कहती हैं और सब चीज़ों से असंतुष्ट रहती हैं। उनके ठीक हो जाने और अपना काम ख़ुद करने पर मुझे ख़ुशी होगी, क्योंकि मुझे यह मानना पड़ेगा कि वे काफ़ी मेहनती और साफ़ -सुथरी हैं और अगर वे शारीरिक व मानसिक तौर पर सही रहें, तो वे काफ़ी ख़ुशमिज़ाज हैं।

दिन भर में काफ़ी शोर मचाने के कारण जैसे मुझे 'शांत रहो, चुप रहो' ज़्यादा सुनाई नहीं देता, तो मेरे कमरे के प्यारे साथी ने रात भर 'चुप रहो' कहने का नया तरीक़ा निकाला है। उनके अनुसार, मुझे करवट भी नहीं बदलनी चाहिए। मैं उन पर ध्यान नहीं देती और अगली बार उन्होंने मुझे ख़ामोश करने की कोशिश की तो मैं उन्हें ही चुप करा दूँगी।

दिन बीतने के साथ वे ज़्यादा चिढ़ाने वाले और अहंवादी होते जा रहे हैं। पहले हफ़्ते की बात छोड़ दें, तो मुझे बहुत उदारता से किए गए बिस्किट का एक टुकड़ा भी अब तक नहीं दिखा

है। रविवार को वे ज़्यादा ग़ुस्सा दिलाते हैं, जब बिलकुल सुबह दस मिनट कसरत करने के लिए वे लाइट जला देते हैं।

मेरे हिसाब से तो अत्याचार कई घंटे चलता लगता है, क्योंकि जिन कुर्सियों का इस्तेमाल मैं अपने बिस्तर को लंबा करने के लिए करती हूँ, वे लगातार मेरे उनींदे सिर के नीचे झूलती रहती हैं। ज़ोर-ज़ोर से अपनी बाँहें झुलाकर कसरत पूरी करने के बाद महाशय कपड़े पहनना शुरू करते हैं। उनका जाँघिया हुक पर लटक रहा है, तो पहले वे मेरे बिस्तर के ऊपर से उसे लेते हैं। उनकी टाई मेज़ पर है, तो एक बार फिर वे कुर्सियों को धकेलकर उनके बीच से जाते हैं।

मुझे बेकार के बूढ़े आदमियों की शिकायत करके तुम्हारा समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। उससे वैसे भी कुछ नहीं होने वाला। मुझे शांति बनाए रखने के लिए बल्ब के पेंच ढीले करने, दरवाज़े पर ताला लगाने और उनके कपड़े छिपाने जैसी उनसे बदला लेने की योजनाओं को बदक़िस्मती से छोड़ना पड़ा।

अरे, मैं तो काफ़ी समझदार होने लगी हूँ! हमें पढ़ने, सुनने, अपनी जुबान पर क़ाबू रखने, बाक़ी लोगों की मदद करने, दयालु होने, समझौते करने और भी न जाने क्या-क्या करने को लेकर तर्कसंगत होना पड़ेगा। मुझे डर है कि मेरी सामान्य बुद्धि जो पहले ही कम है, वह इतनी जल्दी इस्तेमाल हो जाएगी कि लड़ाई ख़त्म होने तक शायद मेरे पास कुछ भी न बचे।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 13 जनवरी, 1943

प्रिय किटी,

आज सुबह मुझे इतनी बार टोका गया कि मैं अपना एक भी काम पूरा नहीं कर पाई।

अब हमारे पास एक नया काम है और वह है, पैकेजेस में ग्रेवी पाउडर भरना। यह ग्रेवी गीज़ ऐंड कंपनी के उत्पादों में से एक है। मि. कुगलर को पैकेज भरने के लिए कोई नहीं मिला है और अगर हम यह काम करें तो सस्ता भी पड़ेगा। जेल में इस तरह का काम करवाया जाता है। यह बहुत उबाऊ काम है और इससे हमारा सिर घूमने लगता है।

बाहर बहुत भयावह कृत्य हो रहे हैं। रात और दोपहर के किसी भी समय बेचारे असहाय लोगों को उनके घरों से घसीटकर निकाला जाता है। उन्हें सिर्फ़ एक झोला और थोड़ी नक़दी अपने साथ ले जाने की इजाज़त है और उसके बावजूद ये चीज़ें भी रास्ते में उनसे लूट ली जाती हैं। परिवार अलग किए जा रहे हैं; पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे बिछड़ रहे हैं। बच्चे स्कूल से घर लौटकर पाते हैं कि उनके माता-पिता ग़ायब हो गए हैं। ख़रीदारी करके लौटती महिलाएँ अपने घर बंद पाती हैं और उनके परिवार वहाँ नहीं होते। हॉलैंड के ईसाई भी डर के साये में जी रहे हैं, क्योंकि उनके बेटों को जर्मनी भेजा जा रहा है। हर कोई डरा हुआ है। हर रात हॉलैंड के ऊपर से सैकड़ों विमान जर्मन शहरों की ओर बढ़ते हुए जर्मनी की धरती पर बम फेंकने के लिए जाते हैं। रूस और अफ़्रीका में हर घंटे, सैकड़ों या शायद हज़ारों लोग मारे जा रहे हैं। कोई भी इस टकराव

से बाहर नहीं रह सकता, पूरी दुनिया युद्ध में शामिल है और हालाँकि मित्र देश बेहतर कर रहे हैं, फिर भी अंत कहीं नहीं दिखाई दे रहा।

जहाँ तक हमारा सवाल है, हम काफ़ी ख़ुशक़िस्मत हैं। लाखों लोगों से बेहतर क़िस्मत वाले। यहाँ शांति व सुरक्षा है और हम अपने धन का इस्तेमाल खाना ख़रीदने के लिए कर रहे हैं। हम इतने स्वार्थी हैं कि हम 'युद्ध के बाद' की बातें करते हैं और नए कपड़े-जूतों की उम्मीद करते हैं, जबकि असल में हमें एक-एक पाई बचानी चाहिए, ताकि हम लड़ाई ख़त्म हो जाने पर बाक़ी लोगों की मदद कर सकें और जो कुछ भी हो, बचा सकें।

यहाँ आसपास बच्चे पतली कमीज़ों और लकड़ी के जूते पहनकर उछल-कूद करते हैं। उनके पास कोट, टोपी, मोज़े नहीं हैं और कोई मदद करने वाला भी नहीं है। गाजर कुतरकर अपनी भूख को शांत करते हुए वे अपने ठंडे घरों से सर्द सड़कों पर होते हुए अपनी और भी ठंडी कक्षाओं में जाते हैं। हॉलैंड में हालात इतने ख़राब हो गए हैं कि बच्चों के झुंड आते-जाते लोगों को रोक कर उनसे डबलरोटी का टुकड़ा माँगते हैं।

मैं घंटों तुम्हें लड़ाई की वजह से आने वाले कष्टों के बारे में बता सकती हूँ, लेकिन उससे मैं और ज़्यादा दुखी हो जाऊँगी। हम सब, जहाँ तक मुमकिन हो, इसके ख़त्म होने का शांत रहकर इंतज़ार कर सकते हैं। यहूदी व ईसाई इंतज़ार कर रहे हैं, पूरी दुनिया इंतज़ार कर रही है और कई लोग मौत का इंतज़ार कर रहे हैं।

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 30 जनवरी, 1943

प्रिय किटी,

मैं गुस्से में उबल रही हूँ, लेकिन मैं उसे दिखा नहीं सकती। मैं चिल्लाना, अपने पैर पटकना, अपनी माँ को झकझोरना, रोना चाहती हूँ और नहीं जानती कि क्या-क्या करना चाहती हूँ, क्योंकि उनके द्वारा कहे गए कठोर शब्द, मज़ाक उड़ाने के ढंग से देखना और हर रोज़ मुझ पर आरोप लगाना मुझे चुभते तीरों जैसा लगता है, जिन्हें मैं अपने शरीर से निकाल नहीं पाती। मैं माँ, मारगोट, फ़ॉन डान परिवार, दुसे और पापा पर भी चिल्लाना चाहती हूँ: 'मुझे अकेला छोड़ दो, कम से कम मुझे रात को अकेला छोड़ दो, ताकि मैं रोते हुए, जलती आँखों और फटते सिर के साथ न सोऊँ!' लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं नहीं चाहती कि वे मेरी दुविधा या फिर मेरे घावों को देखें, जो उन्होंने मुझे दिए हैं। मैं उनकी सहानुभूति या उनके नेकदिल उपहास को नहीं झेल सकती। उससे मेरी इच्छा और चिल्लाने की होती है।

हर किसी को लगता है कि जब मैं बात करती हूँ, तो मैं दिखावा कर रही होती हूँ, ख़ामोश रहती हूँ, तो हास्यास्पद हूँ, जवाब देती हूँ, तो बदतमीज़ हूँ, कोई अच्छा विचार आए तो मैं धूर्त हूँ, थकी हूँ, तो सुस्त हूँ, एक अतिरिक्त निवाला भी लूँ तो स्वार्थी हूँ, मूर्ख, डरपोक, षड्यंत्रकारी,

वगैरह, वगैरह। दिन भर बस मुझे यही सुनाई देता है कि मैं कितनी परेशान करने वाली लड़की हूँ, हालाँकि मैं वह सब हँसी में उड़ा देती हूँ और दिखावा करती हूँ कि मुझे कोई परवाह नहीं, लेकिन मुझे परवाह है। काश! मैं भगवान से एक और व्यक्तित्व माँग पाती, ऐसा जो किसी से दुश्मनी मोल न लेता।

लेकिन वह तो नामुमकिन है। मैं उसी चरित्र में हूँ, जिसके साथ पैदा हुई हूँ और फिर भी मुझे पक्का नहीं पता कि मैं वाक़ई बुरी हूँ। मैं अपनी तरफ़ से सबको ख़ुश रखना चाहती हूँ, जितना कि लाखों वर्षों में भी न हों। जब मैं ऊपर होती हूँ, तो उस सबको हँसी में उड़ा देती हूँ, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि वे मेरी मुश्किलें देखें।

कई बार ऐसा हो चुका है कि बेकार की झिड़कियों के बाद मैं माँ पर चिल्लाती हूँ: 'मुझे आपके कहने की कोई परवाह नहीं। आप मुझसे छुटकारा क्यों नहीं पा लेती - मैं तो बिलकुल निकम्मी हूँ।' वे मुझे ज़बान न चलाने को कहती हैं और दो दिन तक पूरी तरह से मेरी अनदेखी करती हैं। फिर अचानक सब कुछ भुला दिया जाता है और वे फिर से मुझसे वैसा बर्ताव करती हैं, जैसा कि बाक़ी लोगों से करती हैं।

मेरे लिए एक दिन मुस्कराते रहना और फिर अगले ही दिन ज़हर उगलने लगना नामुमकिन है। मैं सुनहरा तरीक़ा चुनना ज़्यादा पसंद करूँगी, जो उतना सुनहरा तो नहीं है, अपने विचार ख़ुद तक ही रखूँगी। शायद किसी दिन मैं लोगों से उतनी ही हिकारत से बर्ताव करूँ, जितना कि वे मुझसे करते हैं। काश, मैं ऐसा कर पाती!

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 5 फरवरी, 1943

प्रिय किटी,

मैंने काफ़ी समय से तुम्हें झगड़ों के बारे में नहीं बताया है, लेकिन अब तक उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। शुरुआत में मि. दुसे ने जल्दी ही भुला देने वाले टकरावों को काफ़ी गंभीरता से लिया, लेकिन अब वे उनके आदी हो गए हैं और बीचबचाव करने की कोशिशें नहीं करते।

मारगोट और पीटर को आप 'नौजवान' नहीं कह सकते, क्योंकि वे दोनों बहुत चुप्पे से और नीरस हैं। उनके बीच मैं बिलकुल अलग दिखती हूँ और मुझे हमेशा कहा जाता है, 'मारगोट और पीटर ऐसा नहीं करते। तुम अपनी बहन से क्यों नहीं सीखतीं!' मुझे वह बात सख़्त नापसंद है।

मैं मानती हूँ कि मेरी इच्छा मारगोट जैसी बनने की बिलकुल भी नहीं है। मेरे हिसाब से वह बहुत कमज़ोर संकल्प वाली और दब्बू है; वह बाक़ी लोगों की बातों में आ जाती है और दबाव पड़ने पर झुक जाती है। मुझे उत्साह पसंद है! मैं इस तरह के ख़यालों को ख़ुद तक रखती हूँ। अगर मैं अपने बचाव में यह सब कहूँ, तो वे मेरा मज़ाक उड़ाएँगे।

भोजन के दौरान माहौल में तनाव होता है। सौभाग्य से कई बार 'सूप पीने वाले' आवेग को नियंत्रित कर देते हैं, ये वे लोग होते हैं, जो लंच के दौरान सूप पीने ऊपर आते हैं।

आज दोपहर मि. फ़ॉन डान ने फिर वही बात उठाई कि मारगोट कितना कम खाती है। 'मुझे लगता है कि तुम अपना फ़िगर बनाए रखने के लिए ऐसा करती हो,' उन्होंने मज़ाक उड़ाने के अंदाज़ में कहा।

हमेशा मारगोट के बचाव में आगे आने वाली माँ ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'मैं आपकी बेवकूफ़ाना बकबक को और बर्दाश्त नहीं कर सकती।'

मिसेज़ फ़ॉन डान गुस्से में लाल-पीली हो गईं। मि. फ़ॉन डान ने घूरकर देखते हुए कुछ नहीं कहा।

इसके बावजूद हम ख़ूब हँसते भी हैं। कुछ समय पहले ही मिसेज़ फ़ॉन डान बेतुकी बातों से हमारा मनोरंजन कर रही थीं। वे बीते समय की बात कर रही थीं, कैसे उनके अपने पिता के साथ अच्छी पटती थी और वे किस तरह की चुहलबाज़ थीं। 'और पता है,' बात जारी रखते हुए वे बोलीं, 'मेरे पिता ने कहा कि अगर कोई भद्र पुरुष कभी शिष्टता से न पेश आए, तो मुझे कहना चाहिए, "याद रखिए सर कि मैं एक भद्र महिला हूँ," और वह जान जाएगा कि मैं क्या कहना चाहती हूँ।' हम हँसते-हँसते ऐसे लोटपोट हो गए, जैसे कि उन्होंने हमें कोई चुटकुला सुनाया हो।

अक्सर चुप रहने वाला पीटर भी कभी-कभी चुहलबाज़ी करता है। मुसीबत यह है कि उसे विदेशी शब्दों से बहुत प्यार है और बिना उनका मतलब समझे वह उन्हें बोलता है। एक दोपहर हम शौचालय का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि ऑफ़िस में कुछ लोग आए हुए थे। वह इंतज़ार नहीं कर पाया और शौचालय चला गया, लेकिन उसे फ़्लश नहीं किया। हमें दुर्गंध की चेतावनी देने के लिए उसने दरवाज़े पर एक साइन बोर्ड टाँग दिया: 'आरएसवीपी (उत्तराकांक्षी) - गैस', जबकि उसका मतलब था 'ख़तरा - गैस!' लेकिन उसे लगा कि 'आरएसवीपी' ज़्यादा शालीन है। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसका मतलब होता है, 'कृपया जवाब दें।'

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 27 फ़रवरी, 1943

प्रिय किटी,

पिम को किसी भी दिन आक्रमण की आशंका है: चर्चिल को निमोनिया हो गया था, लेकिन वे अब ठीक हो रहे हैं। भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक गाँधी अनगिनत भूख हड़तालों में से एक कर रहे हैं।

मिसेज़ फ़ॉन डी का दावा है कि वे भाग्यवादी हैं। लेकिन गोली चलने पर कौन सबसे ज़्यादा

डरता है? और कोई नहीं, पेट्रोनेला फ़ॉन डान।

यान अपने साथ बिशप का एक पत्र लेकर आए थे, जो उन्होंने लोगों के लिए लिखा था। वह ख़ूबसूरत और प्रेरणादायक था। 'नीदरलैंड के लोगों, उठो और काम करो। हममें से हरेक को अपने देश की, अपने लोगों की और अपने धर्म की आज़ादी की लड़ाई के लिए अपने हथियार चुनने होंगे! अपनी सहायता और समर्थन दो। तुरंत क़दम उठाओ!' धर्मोपदेशक द्वारा यह शिक्षा दी जा रही है। क्या इससे कोई फ़ायदा होगा? निश्चित तौर पर अपने साथी यहूदियों की मदद करने में काफ़ी देर हो गई है।

ज़रा सोचो कि हमारे साथ क्या हुआ है? हमारी इमारत के मालिक ने मि. कुगलर और मि. क्लेमन को बताए बिना इसे बेच दिया। एक सुबह नया मकान मालिक एक वास्तुकार को जगह दिखाने ले आया। शुक्र है कि मि. क्लेमन ऑफ़िस में थे। उन्होंने उन लोगों को सीक्रेट अनेक्स के अलावा बाक़ी दिखाने लायक़ जगह दिखाई। उन्होंने कहा कि वे चाबी घर पर भूल आए हैं और नए मालिक ने उनसे आगे सवाल नहीं किए। बस, अब वह अनेक्स देखने की फ़रमाइश करते हुए फिर वापस न आ जाएँ। वैसा होने पर हम बड़ी मुश्किल में फँस जाएँगे!

पापा ने मारगोट और मेरे लिए एक कार्ड फ़ाइल ख़ाली की और उसे इन्डेक्स कार्ड्स से भर दिया, जो कि एक तरफ़ ख़ाली हैं। उसमें हमारे द्वारा पढ़ी गई किताबों का लेखा-जोखा रखा जाएगा, हमें पढ़ी गई किताबों, उनके लेखक और तारीख़ उसमें भरनी होगी। मैंने दो नए शब्द सीखे: 'ब्रॉथेल' और 'क्रॉकेट।' मैंने नए शब्दों के लिए एक अलग नोटबुक रखी है।

मक्खन और मार्जरिन के बँटवारे के लिए अब नया नियम है। हर इंसान को उसकी अपनी प्लेट में उसका हिस्सा मिलेगा। यह तरीक़ा बहुत अन्यायपूर्ण है। सबके लिए नाश्ता बनाने वाला फ़ॉन डान परिवार ख़ुद को बाक़ी लोगों से डेढ़ गुना ज़्यादा मक्खन देता है। मेरे माता-पिता झगड़े के डर से कुछ नहीं कहते, जो कि शर्मनाक है, क्योंकि मेरे हिसाब से वैसे लोगों पर उनकी ही तरकीब आज़मानी चाहिए।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 4 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

मिसेज़ फ़ॉन डी का अब एक नया नाम है - हमने उन्हें मिसेज़ बीवरब्रुक कहकर पुकारना शुरू किया है। ज़ाहिर है कि तुम्हें यह बात समझ नहीं आएगी, तो मैं तुम्हें बताती हूँ। कोई मि. बीवरब्रुक हैं, जो इंग्लिश रेडियो पर अक्सर जर्मनी पर होने वाली बमबारी को काफ़ी नरमी भरा मानते हैं। मिसेज़ फ़ॉन डान जो हमेशा चर्चिल और ख़बरों का भी विरोध करती हैं, वे भी मि. बीवरब्रुक से सहमत रहती हैं। इसलिए हमने सोचा कि मि. बीवरब्रुक से उनकी शादी करना सही

रहेगा और चूँकि वे भी इस ख़याल से काफ़ी ख़ुश थीं, तो हमने अब से उन्हें मिसेज़ बीवरब्रुक पुकारने का फ़ैसला कर लिया है।

गोदाम के पुराने कर्मचारी को जर्मनी भेजा जा रहा है, इसलिए वहाँ एक नया कर्मचारी आ रहा है। उसके लिए यह बुरा है, लेकिन हमारे लिए अच्छा है क्योंकि वह इमारत से परिचित नहीं होगा। हम अब भी गोदाम में काम करने वालों से डरते हैं।

गाँधी फिर से भोजन करने लगे हैं।

काला बाज़ार ख़ूब फल-फूल रहा है। अगर हमारे पास बेतुकी क़ीमत चुकाने लायक़ पैसा होता, तो हम भी ख़ूब सामान भर लेते। हमारा सब्ज़ीवाला 'वेयरमाख़्त' से आलू ख़रीदकर उन्हें बोरों में भरकर प्राइवेट ऑफ़िस में लाता है। उसे हमारे यहाँ छिपे होने का शक है, इसलिए वह भोजन अवकाश के दौरान आता है, जब गोदाम के कर्मचारी बाहर होते हैं।

नीचे इतनी ज़्यादा काली मिर्च पीसी जा रही है कि हम हर साँस के साथ छींकते-खाँसते हैं। जो भी ऊपर आता है वह छींक के साथ हमारा अभिवादन करता है। मिसेज़ फ़ॉन डी क़सम खाती हैं कि वे नीचे नहीं जाएँगी; मिर्च का एक झोंका और वे बीमार पड़ जाएँगी।

मुझे नहीं लगता कि पापा का काम अच्छा चल रहा है। पेक्टिन और काली मिर्च के अलावा कुछ और नहीं। अगर आप खाद्य व्यापार में हैं, तो क्यों न कुछ मीठा बनाया जाए?

आज सुबह फिर मुझे फिर कड़क आवाज़ में डाँट पड़ी। हवा में इतनी अशिष्ट बातें फैली हुई थीं कि मेरे कानों में 'ऐन बुरी है' और 'फ़ॉन डान अच्छे हैं,' जैसे जुमले गूँज रहे थे। लानतों का दौर चल रहा था!

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 10 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

कल रात शॉर्ट सर्किट हो गया था और उसके अलावा सुबह तक बंदूकों की आवाज़ आ रही थी। मैं अब भी जहाज़ों और गोलीबारी के डर से उबर नहीं पाई हूँ और लगभग हर रात दिलासे के लिए पापा के बिस्तर में घुस जाती हूँ। मैं जानती हूँ कि यह बचकानी बात है, लेकिन जब तुम पर गुज़रेगी, तुम तभी जानोगी! बंदूकें इतनी आवाज़ करती हैं कि तुम अपनी आवाज़ तक नहीं सुन सकते। भाग्यवादी मिसेज़ बीवरब्रुक के हर बार आँसू निकलने लगते हैं और घबराई आवाज़ में वे कहती हैं, 'यह बहुत भयानक है। बंदूकें कितनी आवाज़ करती हैं!' - जो यह कहने का दूसरा तरीक़ा है, 'मैं काफ़ी डरी हुई हूँ।'

मोमबत्ती की रोशनी में इतना बुरा नहीं लग रहा था, जितना कि अँधेरे में। मैं ऐसे काँप रही थी जैसे कि मुझे बुख़ार हो और मैंने पापा से विनती की कि वे मोमबत्ती को फिर से जला दें। वे

अड़े हुए थे: कोई रोशनी नहीं होगी। अचानक हमें मशीनगन की आवाज़ सुनाई दी, जो कि ऐंटी-एयरक्राफ़्ट गन से दस गुना बदतर होती है। माँ बिस्तर से बाहर निकल गईं और पिम को बहुत चिढ़ हुई कि उन्होंने मोमबत्ती जला दी। उनकी बड़बड़ाहट के जवाब में माँ ने इतना ही कहा, 'ऐन कोई पूर्व-सैनिक तो नहीं है!' और बस बात वहीं ख़त्म हो गई!

क्या मैंने तुम्हें मिसेज़ फ़ॉन डी के बाक़ी डरों के बारे में बताया है? मुझे नहीं लगता कि मैंने बताया है। सीक्रेट अनेक्स के सबसे नए रोमांच के बारे में तुम्हें नवीनतम जानकारी देने के लिए मुझे उसके बारे में बताना चाहिए। एक रात मिसेज़ फ़ॉन डी को लगा कि उन्होंने अटारी पर किसी के चलने की आवाज़ सुनी और वे चोरों से इतना डर गईं कि उन्होंने अपने पति को जगा दिया। ठीक उसी पल चोर ग़ायब हो गए और मि. फ़ॉन डी को बस अपनी पत्नी के दिल की तेज़ धड़कनों के सिवा कुछ नहीं सुना दिया। 'ओह, पुत्ती!' वे बोलीं। (मिसेज़ फ़ॉन डी अपने पति को यही कहकर बुलाती हैं।) 'वे हमारे सभी सॉसेज और सूखी बीन्स ले गए होंगे पीटर का क्या हुआ होगा? क्या तुम्हें लगता है कि पीटर अब भी अपने बिस्तर पर सुरक्षित होगा?'

'मुझे यक़ीन है कि उन्होंने पीटर को तो नहीं चुराया होगा। इतनी बेवकूफ़ मत बनो और मुझे सोने दो!'

असंभव। मिसेज़ फ़ॉन डी इतनी डरी हुई थीं कि वे सो नहीं सकीं।

कुछ ही दिन बाद एक रात पूरा फ़ॉन डी परिवार भुतहा आवाज़ों से जग गया। पीटर अटारी पर टॉर्च लेकर गया और - सर्र, सर्र - तुम्हें क्या लगता है कि उसने किसे भागते देखा होगा? बड़े से चूहों के झुंड को।

एक बार यह जानने पर कि चोर कौन थे, हमने मूशी को अटारी पर छोड़ दिया और हमें अपने अनचाहे मेहमान फिर कभी नहीं दिखे... कम से कम रात को तो नहीं।

कुछ दिन पहले शाम को (साढ़े सात बजे थे, लेकिन रोशनी थी) पीटर कुछ पुराने अख़बार लेने ऊपर गया। सीढ़ी से नीचे उतरने के लिए उसे ट्रैप डोर को बहुत कसकर पकड़ना पड़ा। उसने बिना देखे अपना हाथ नीचे रखा और झटके व दर्द से सीढ़ी से गिरते-गिरते रह गया। उसने देखे बिना अपना हाथ एक बड़े से चूहे पर रख दिया था, जिसे उसकी बाँह पर काट लिया। जब तक डरते-काँपते वह हम तक पहुँचा उसका पाजामा ख़ून से भीग चुका था। हैरत नहीं कि वह काफ़ी डरा हुआ था, चूहे पर हाथ फेरना कोई खेल नहीं था, ख़ासकर तब जब उसने आपके बाज़ू में काट लिया हो।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 12 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

मैं तुम्हें मिलवाती हूँ, मामा फ्रैंक से, बच्चों की हिमायती! बच्चों के लिए अतिरिक्त मक्खन और आज के युवाओं की समस्याएँ, कुछ भी बात हो, माँ युवा पीढ़ी के बचाव में आ जाती हैं। एक-आध हल्की सी झड़प के बाद हमेशा उनकी बात ही मानी जाती है।

अचार के एक मर्तबान का ढक्कन निकल गया है। मूशी और बॉश की तो दावत हो गई।

तुम बॉश से अभी तक नहीं मिली हो, जबकि वह हमारे छिपने से पहले से यहाँ मौजूद थी। वह गोदाम और ऑफ़िस की बिल्ली है, जो चूहों को वहाँ से दूर रखती है। उसके अजीब से राजनीति नाम की सफ़ाई दी जा सकती है। कुछ समय के लिए गीज़ ऐंड कंपनी में दो बिल्लियाँ थीं: एक गोदाम के लिए और दूसरी अटारी के लिए। वे एक-दूसरे के आड़े आती थीं, जिससे झगड़ा हो जाता था। गोदाम की बिल्ली हमेशा आक्रामक रहती थी, जबकि अटारी वाली बिल्ली अंत में जीतती थी, ठीक जैसा कि राजनीति में होता है। इस कारण गोदाम का नाम जर्मन में 'बॉश' रखा गया और अटारी की बिल्ली को अंग्रेज़ या 'टॉमी' कहा गया। कुछ समय बाद टॉमी वहाँ नहीं रही, लेकिन बॉश वहीं है और जब भी हम नीचे जाते हैं, हमारा मन बहलाती है।

हमने इतनी ब्राउन व सफ़ेद बीन्स खा ली हैं कि अब मैं उनकी तरफ़ देखना भी नहीं चाहती। उनके बारे में सोचने पर भी मुझे उबकाई आने लगती है।

एक शाम डबलरोटी नहीं परोसी गई।

डैडी ने बस कह दिया कि वे बहुत अच्छे मूड में नहीं हैं। उनकी आँखें फिर से बहुत उदास लग रही हैं, बेचारे!

मैं ख़ुद को ईना बकर बुडुआर की किताब *अ नॉक ऐट द डोर* किताब से अलग नहीं कर सकती। यह पारिवारिक गाथा बहुत अच्छी तरह लिखी गई है, लेकिन लड़ाई व लेखकों से जुड़े और महिलाओं की मुक्ति से जुड़े हिस्से अच्छे नहीं हैं। ईमानदारी से कहूँ, तो ये विषय मुझे ज़्यादा दिलचस्प नहीं लगते।

जर्मनी पर भयावह बमबारी हो रही है। मि. फ़्रॉन डान चिड़चिड़े हो गए हैं। कारण है, सिगरेट की कमी।

डिब्बाबंद खाना शुरू किया जाए या नहीं, इस विवाद की समाप्ति हमारे पक्ष में हुई।

मैं स्की बूट्स के अलावा कोई और जूते नहीं पहन सकती और घर के अंदर उन्हें पहनना व्यावहारिक नहीं है। 6.50 गिल्डर्स में ख़रीदे गए फीते वाले जूते एक हफ़्ते में बुरी तरह घिस गए हैं। शायद मीप काले बाज़ार से कुछ जुगाड़ कर सके।

पापा के बाल काटने का समय आ गया है। मैं इतनी अच्छी तरह यह काम करती हूँ कि युद्ध के बाद वे कभी किसी नाई के पास नहीं जाएँगे। काश, मैं इस दौरान उनके कानों पर खरोंच न लगाती!

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 18 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

तुर्की भी लड़ाई में शामिल हो गया है। बहुत उत्तेजना है। बेचैनी से रेडियो की ख़बरों का इंतज़ार है।

शुक्रवार, 19 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

एक घंटे से भी कम समय में ख़ुशी की जगह निराशा ने ले ली। तुर्की अभी तक लड़ाई में शामिल नहीं हुआ है। सिर्फ़ एक मंत्री ने तुर्की द्वारा तटस्थ न रहने की बात की थी। दाम स्क्वैयर में अख़बार बेचने वाला चिल्ला रहा था, 'तुर्की इंग्लैंड के पक्ष में!' और उसके हाथ से लोग अख़बार झपट रहे थे। इस तरह से हमने यह 'उम्मीद दिलाने वाली' अफ़वाह सुनी।

हज़ार गिल्डर के नोटों को अमान्य घोषित किया जा रहा है। वह काला बाज़ारी करने वालों और उनके जैसे बाक़ी लोगों के लिए बड़ा झटका होंगी, बल्कि उन लोगों के लिए और भी बड़ा झटका जो छिपे हुए हुए हैं या फिर जिनके पास ऐसा धन है जिसका कहीं हिसाब नहीं। हज़ार गिल्डर के नोट को सौंपते हुए आपको बताना होगा कि आपको वह कैसे मिला और उसका सबूत देना होगा। कर चुकाने के लिए अब भी उनका इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन सिर्फ़ अगले हफ़्ते तक। पाँच सौ के नोट भी तभी रद्द हो जाएँगे। गीज़ ऐंड कंपनी के पास अब भी ग़ैर-हिसाबी हज़ार गिल्डर्स के नोट हैं, जिनका इस्तेमाल उन्होंने आगामी वर्षों के लिए अपने अनुमानित कर चुकाने में कर दिया, इसलिए सब कुछ साफ़ लगता है।

दुसे को पुराने तरीक़े का पैर से चलाने वाला डेंटिस्ट ड्रिल है मिला है। इसका मतलब है कि शायद जल्दी ही मेरी पूरी जाँच हो सकेगी।

घर के नियमों का पालन करने के मामले में दुसे काफ़ी ढीलेढाले हैं। वे न सिर्फ़ शार्लोट को पत्र लिखते हैं, बल्कि बाक़ी कई लोगों के साथ भी अनौपचारिक रूप से पत्र-व्यवहार करते हैं। अनेक्स की डच टीचर मारगोट उनके पत्रों को सुधारती हैं। पापा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया है और मारगोट ने उनकी चिट्ठियों को सुधारना बंद कर दिया है, लेकिन मुझे लगता है कि वे जल्दी ही वह सब शुरू कर देंगे।

फ़्यूहर घायल सिपाहियों से बात करते हैं। हमने रेडियो पर उसे सुना और वह बहुत दयनीय थी। प्रश्नोत्तर कुछ इस तरह थे:

'मेरा नाम हेनरिक शेप है।'

'आप कहाँ घायल हुए?'

'स्तालिनग्राद के पास।'

'यह कैसा घाव है?'

'दोनों पैरों में शीतदंश है और बाईं बाँह टूट गई है।'

रेडियो पर चलाए गए घिनौने कठपुतली नाटक में यही सब था। घायल अपने घावों को लेकर इतने गौरवान्वित थे कि जितना ज़्यादा हो, उतना अच्छा। एक तो फ़्यूहर से हाथ (मैं मान रही हूँ कि उसके पास वह है) मिलाने के ख़याल से ही इतना प्रभावित था कि वह एक भी शब्द नहीं बोल पाया।

मुझसे दुसे का साबुन फ़र्श पर गिर गया और मेरा पैर उस पर पड़ गया। अब एक पूरा हिस्सा ग़ायब है। मैंने पापा को उस नुक़सान की भरपाई करने को कह दिया है, ख़ासकर जब दुसे को महीने में एक बार बेकार से युद्धकालीन साबुन की टिकिया मिलती है।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 25 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

कल रात माँ, पापा, मारगोट और मैं बहुत ख़ुशी से साथ बैठे थे कि अचानक पीटर आया और पापा के कान में कुछ फुसफुसाकर कहा। मेरे कानों में 'गोदाम में एक बैरल गिर रहा है' और 'कोई दरवाज़े से छेड़छाड़ कर रहा है,' जैसे शब्द पड़े।

मारगोट ने भी सुन लिया था, लेकिन वह मुझे शांत करने की कोशिश कर रही थी, क्योंकि मैं बिलकुल सफ़ेद पड़ गई थी और काफ़ी घबरा गई थी। पापा और पीटर नीचे गए और हम तीनों इंतज़ार करते रहे। एक-दो मिनट बाद मिसेज़ फ़ॉन डान वहाँ आ गई, वे रेडियो सुन रही थीं और उन्होंने हमें बताया कि पिम ने उन्हें रेडियो बंद करके चुपचाप ऊपर आने को कहा था। लेकिन तुम जानती हो कि अगर चुप रहने की कोशिश करो तो क्या होता है - पुरानी सीढ़ियाँ दोगुनी आवाज़ करती हैं। पाँच मिनट बाद बिलकुल सफ़ेद चेहरों के साथ पीटर और पिम आए और उन्होंने अपने अनुभव बताए।

वे सीढ़ियों के नीचे खड़े होकर इंतज़ार करने लगे। कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दी, जैसे कि घर के अंदर दो दरवाज़े ज़ोर से बंद किए गए हों। पिम ऊपर आए, जबकि पीटर दुसे को चेतावनी देने पहुँचा, जो आख़िरकार काफ़ी तमाशे और शोर मचाने के बाद ऊपर पहुँचे। फिर हम सब दबे क़दमों से अगली मंज़िल पर फ़ॉन डान दंपत्ति तक पहुँचे। मि.

फ़ॉन डी को बहुत बुरी तरह से जुकाम हो गया था और वे सोने चले गए थे, इसलिए हम उनके बिस्तर के पास इकट्ठा हुए और अपने संदेहों पर फुसफुसाकर बात की। हर बार मि. फ़ॉन डी के ज़ोर से खाँसने पर मुझे और मिसेज़ फ़ॉन डी को घबराहट के मारे जैसे दौरा सा पड़ जाता। वे तब तक खाँसते रहे, जब तक कि किसी को उन्हें कोडीन देने का बढ़िया ख़याल नहीं आ गया। उनकी खाँसी तुरंत कम हो गई।

एक बार फिर हम इंतज़ार करने लगे, लेकिन हमें कुछ नहीं सुनाई दिया। आख़िरकार हम इस नतीजे पर पहुँचे कि बिलकुल ख़ामोश पड़ी इमारत में क़दमों की आहट सुनकर चोर नौ दो ग्यारह हो गए थे। अब परेशानी यह थी कि प्राइवेट ऑफ़िस में रेडियो के आसपास बहुत करीने से कुर्सियाँ रखी थीं और रेडियो इंग्लैंड पर लगा था। अगर चोरों ने दरवाज़े पर ज़ोर लगाया और एयर रेड वॉर्डन ने उसे देखकर पुलिस को बुला लिया, तो उसके बहुत गंभीर परिणाम हो सकते थे। इसलिए मि. फॉन डान उठे अपना कोट-पैंट पहना, हैट लगाया और सावधानी से पापा के पीछे नीचे गए, उनके ठीक पीछे पीटर (सुरक्षा की दृष्टि से भारी हथौड़ा लेकर) था। महिलाएँ (मेरे और मारगोट समेत) अनिश्चितता में इंतज़ार करती रही, जब तक कि पाँच मिनट बाद पुरुष नहीं लौट आए और ख़बर दी कि इमारत में कहीं किसी गतिविधि का नामोनिशान नहीं था। हम इस बात को लेकर सहमत थे कि पानी या शौचालय में फ़्लश नहीं चलाएँगे, तनाव से हर किसी के पेट में मरोड़ उठ रही थी, तो तुम कल्पना कर सकती हो कि सबके शौचालय जाने के बाद बदबू से क्या हाल रहा होगा।

इस तरह की घटनाओं के साथ कई अन्य मुसीबतें भी आती हैं और इस बार भी ऐसा ही हुआ। एक तो वेस्टरटोरेन की घंटियाँ बजना बंद हो गईं और वे मुझे बहुत दिलासा देने वाली लगती थीं। दूसरे, मि. वुश्कल उस रात जल्दी चले गए और हमें पक्का नहीं पता था कि उन्होंने बेप को चाबी दी थी और वह दरवाज़े पर ताला लगाना भूल गई थी।

लेकिन अब उसकी कोई अहमियत नहीं। रात तभी शुरु हुई थी और हमें नहीं पता था कि क्या होने वाला है। हम इस बात से थोड़ा आश्वस्त थे कि रात सवा आठ बजे जब चोर पहली बार इमारत में घुसे और हमारी ज़िंदगियों को जोखिम में डाल दिया, उसके बाद से साढ़े दस बजे तक हमने कोई भी आवाज़ नहीं सुनी। हम जितना ज़्यादा उसके बारे में सोचते, उतनी ही इस बात की आशंका हमें कम लगती कि शाम के उस समय कोई चोर दरवाज़ा खोलने की कोशिश कर सकता था, जब सड़कों पर लोगों की आवाजाही थी। इसके अलावा हमारा ध्यान इस बात पर भी गया कि हो सकता है कि हमारे पड़ोस में केग कंपनी के गोदाम मैनेजर तब भी काम पर लगे हों। उत्तेजना और पतली दीवारों के कारण आवाज़ पहचानने में ग़लती हो सकती है। इसके अलावा ख़तरे के पलों में हमारी कल्पना भी हमारे साथ छल करती है।

तो हम बिस्तर पर चले गए, हालाँकि हम सोने नहीं गए थे। पापा, माँ और मि. दुसे रात के ज़्यादातर समय जगे रहे और मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कर रही, लेकिन मैं रात भर मुश्किल से कोई

झपकी ले पाई। आज सुबह पुरुष नीचे यह देखने गए कि बाहरी दरवाज़े पर ताला है या नहीं और सब कुछ ठीक था!

हमने ऑफ़िस के सभी लोगों को इस घटना का पूरा ब्योरा दिया, जो बिलकुल भी ख़ुशनुमा नहीं थी। ऐसी घटनाओं के हो जाने के बाद उन पर हँसना बहुत आसान होता है और सिर्फ़ बेप ने ही हमारी बात को गंभीरता से लिया था।

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। आज सुबह शौचालय बंद हो गया और पापा को लकड़ी के एक लंबे से डंडे को उसमें डालना पड़ा और उन्होंने कई पाउंड मल और स्ट्रॉबेरी रेसिपीज़ के पन्नों (इन दिनों हम टॉयलेट पेपर की जगह हम इसी का इस्तेमाल कर रहे हैं) को निकाला। बाद में हमने उस डंडे को जला दिया।

शनिवार, 27 मार्च, 1943

प्रिय किटी,

हमने अपना शॉर्टहैंड कोर्स पूरा का लिया है और अब हम अपनी रफ़्तार बेहतर करने पर काम कर रहे हैं। हम कितने चतुर हैं! मैं तुम्हें अपने 'टाइम किलर्स' यानी समय काटने वाली चीज़ों के बारे में बताती हूँ (मैं अपने कोर्सेज़ को यही कहती हूँ, क्योंकि हम सब कोशिश करते हैं कि दिन जल्द से जल्द बीतें, ताकि हमारा यहाँ रहने का समय पूरा हो जाए)। मुझे माइथॉलोजी बहुत पसंद है, ख़ासकर ग्रीक व रोमन देवताओं की। यहाँ सभी सोचते हैं कि मेरी यह दिलचस्पी थोड़े समय के लिए है, क्योंकि उन्होंने कभी किसी ऐसी किशोरी के बारे में नहीं सुना, जो माइथॉलोजी को पसंद करती हो। तो फिर मुझे लगता है कि मैं पहली हूँ!

मि. फ़ॉन डान को जुकाम है। या यूँ कहें कि उनका गला ख़राब है, लेकिन उन्होंने उसका बतंगड़ बना दिया है। वे केमोमिल चाय से गरारे करते हैं, अपने तालू पर लोबान का घोल लगाते हैं और अपनी छाती, नाक, मसूड़ों व जीभ पर विक्स मलते हैं। उस पर उनका मूड ख़राब रहता है!

एक बड़े जर्मन आदमी हॉउटिए ने हाल ही में एक भाषण दिया। '1 जुलाई से पहले सभी यहूदियों को जर्मन-अधिकृत क्षेत्रों से बाहर होना होगा। 1 अप्रैल व 1 मई के बीच उतरेख़्त प्रांत और 1 मई व 1 जून के बीच उत्तर व दक्षिण हॉलैंड से यहूदियों (जैसे कि वे तिलचट्टे हों) को साफ़ कर दिया जाएगा।' बीमार व उपेक्षित पशुओं की तरह इन बेचारे लोगों को गंदे बूचड़ख़ानों तक ले जाया जा रहा है। मैं अब इस विषय पर ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगी। मेरे अपने विचार मुझे दुःस्वप्न देते हैं!

एक अच्छी ख़बर यह है कि लेबर एक्सचेंज को जला दिया गया। कुछ दिन बार रजिस्टर ऑफ़िस को भी आग लगा दी गई। जर्मन पुलिस के वेश में आए कुछ आदमियों ने पहरेदारों को बाँध दिया और कुछ अहम दस्तावेज़ जलाने में कामयाब रहे।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 1 अप्रैल 1943

प्रिय किटी,

मैं शरारतों के मूड में बिलकुल नहीं हूँ (तारीख़ देखो)। उसके उलट मैं बेखटके इस कहावत का हवाला दे सकती हूँ, 'दुर्भाग्य कभी अकेले नहीं आते।'

पहले तो हमारे लिए ख़ुशियों की किरण मि. क्लेमन को फिर से गैस्ट्रोइन्टेस्टाइनल हैमरेज हुआ और उन्हें कम से कम तीन सप्ताह बिस्तर पर रहना होगा। मैं तुम्हें बताऊँ कि उनका पेट उन्हें काफ़ी परेशान कर रहा था और उसका कोई इलाज नहीं है। दूसरा यह कि बेप को फ़्लू हो गया। तीसरे, मि. वुश्कल को अगले हफ़्ते अस्पताल जाना होगा। शायद उन्हें अल्सर है और उन्हें ऑपरेशन करवाना पड़े। चौथे, पॉमोसिन इंडस्ट्रीज़ के मैनेजर्स फ़्रैंकफ़र्ट से ओपेक्टा के नए डिलीवरीज़ पर बातचीत करने के लिए आए। पापा ने मि. क्लेमन के साथ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर बात की और मि. कुगलर को विस्तार से बताने के लिए पर्याप्त समय नहीं था।

वे लोग फ़्रैंकफ़र्ट से आए और पापा यह सोचकर पहले ही काँप रहे थे कि बातचीत कैसी रहेगी। 'काश! मैं वहाँ होता, काश! मैं नीचे होता,' उन्होंने कहा।

'नीचे लेटकर अपने कान फ़र्श पर लगा दीजिए। उन्हें प्राइवेट ऑफ़िस में लाया जाएगा और आप सब कुछ सुन सकेंगे।'

कल सुबह साढ़े दस बजे मारगोट और पिम (एक से भले दो) फ़र्श पर तैनात हो गए। दोपहर तक बातचीत ख़त्म नहीं हुई थी, लेकिन पापा अपने सुनने के अभियान को जारी रखने की हालत में नहीं थे। अजीब और असहज सी स्थिति में कई घंटे लेटे रहने के बाद पापा कष्ट में थे। ढाई बजे हमें गलियारे में आवाज़ें सुनाई दी और मैंने पापा की जगह ले ली; मारगोट ने मेरा साथ दिया। बातचीत इतनी लंबी और उबाऊ थी कि मैं ठंडे, सख़्त फ़र्श पर सो गई। मारगोट ने मुझे छूने की हिम्मत नहीं की कि कहीं वे हमारी आवाज़ न सुन लें और ज़ाहिर है कि वह चिल्ला भी नहीं सकती थी। मैं आधे घंटे तक सोती रही और जब उठी तो मुझे महत्त्वपूर्ण बातचीत का एक भी शब्द याद नहीं था। शुक्र है कि मारगोट ने ज़्यादा ध्यान दिया था।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 2 अप्रैल 1943

प्रिय किटी,

मेरी ग़लतियों की सूची में एक और बात जुड़ गई है। कल रात जब मैं बिस्तर पर पड़े हुए प्रार्थना करने के लिए पापा का इंतज़ार कर रही थी, तो माँ कमरे में आकर मेरे बिस्तर पर बैठ गईं और बड़े आराम से पूछा, 'ऐन, पापा अभी तैयार नहीं हैं। तो क्यों न आज रात मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूँ?'

'नहीं, माँ,' मैंने जवाब दिया।

माँ उठीं, मेरे बिस्तर के पास एक पल को खड़ी हुईं और धीरे-धीरे दरवाज़े की तरफ़ बढ़ीं। अचानक वे मुड़ीं, उनके चेहरे पर दर्द था, उन्होंने कहा, 'मैं तुमसे नाराज़ नहीं होना चाहती। मैं तुम्हें ख़ुद से प्यार करने पर मजबूर नहीं कर सकती।' बाहर निकलते हुए उनके गाल पर आँसू ढुलक रहे थे।

मैं स्थिर लेटे रहकर सोचती रही कि इतनी क्रूरता से उन्हें झटकना कितनी घटिया बात थी, लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मैं और किसी तरह से उन्हें जवाब नहीं दे सकती थी। मैं ढोंग नहीं कर सकती थी और उनके साथ प्रार्थना नहीं कर सकती थी, क्योंकि मेरी ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं थी। ऐसा नहीं होता। मुझे माँ के लिए बहुत, बहुत, बहुत ही बुरा लगा, क्योंकि अपनी ज़िंदगी में पहली बार मैंने गौर किया कि मेरे रूखेपन को लेकर वे उदासीन नहीं थीं। मैंने उनके चेहरे पर तब दुख देखा, जब वे अपने प्रति मेरे मन में प्यार न होने की बात कर रही थीं। सच कहना मुश्किल है, लेकिन सच यही है कि उन्होंने मुझे ठुकराया था। कई चीज़ों पर, जो मुझे बिलकुल भी मज़ेदार नहीं लगती थीं, उनकी अभद्र टिप्पणियों और चुटकुलों ने मुझे उनकी तरफ़ से प्यार के किसी भी भाव के प्रति असंवेदनशील बना दिया। हर बार उनके कटु शब्द सुनकर जिस तरह मेरा दिल बैठता है, ठीक वैसे ही उनका भी बैठा, जब उन्हें महसूस हुआ कि हमारे बीच अब प्यार मौजूद नहीं है।

वे आधी रात तक रोती रहीं और उन्हें नींद नहीं आई। पापा मुझे अनदेखा करते रहे, जब भी उनकी नज़रें मुझसे मिलतीं, तो मैं उनके अनकहे शब्दों को पढ़ सकती थी: 'तुम इतनी निर्दयी कैसे हो सकती हो? तुम अपनी माँ को इतना दुखी कैसे कर सकती हो!'

हर कोई अपेक्षा करता है कि मैं माफ़ी माँगूँगी, लेकिन यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि जिसके लिए मैं क्षमा माँग सकती हूँ, क्योंकि मैंने सच कहा और कभी न कभी तो माँ को पता लग ही जाता। मैं माँ के आँसुओं और पापा की नज़रों के प्रति उदासीन लगती हूँ और मैं हूँ भी, क्योंकि वे दोनों अब वही महसूस कर रहे हैं, जो मैं हमेशा से महसूस करती आई हूँ। माँ के लिए मैं अफ़सोस ही कर सकती हूँ, जिन्हें ख़ुद ही फ़ैसला करना होगा कि उनका रवैया कैसा होना

चाहिए। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं ख़ामोश और अलग-थलग रहूँगी और मेरा इरादा सच से पीछे हटने का नहीं है, क्योंकि उसे जितना टालेंगे, उतना ही सुनने पर उनके लिए उसे स्वीकार करना मुश्किल होगा!

तुम्हारी, ऐन

मगंलवार, 27 अप्रैल 1943

प्रिय किटी,

घर अब भी झगड़ों के असर से काँप रहा है। हर कोई दूसरे पर नाराज़ है: माँ और मैं, मि. फ़ॉन डान और पापा, माँ और मिसेज़ फ़ॉन डी। क्या बढ़िया वातावरण है, तुम्हें नहीं लगता? एक बार फिर ऐन की कमियों की सूची को विस्तार से बताया जा रहा है।

पिछले शनिवार हमारे जर्मन मेहमान फिर आए। वे छह बजे तक रहे। हम सभी ऊपर रहे और ज़रा सा भी हिलने की हिम्मत नहीं की। अगर इमारत में या फिर पड़ोस में कोई काम न कर रहा हो, तो प्राइवेट ऑफ़िस में हर पदचाप को सुना जा सकता है। इतनी देर चुपचाप बैठे रहने से मैं फिर से घबरा गई।

मि. वुश्कल अस्पताल में हैं, लेकिन मि. क्लेमन दफ़्तर आ गए हैं। उनके पेट में होने वाला रक्तस्राव रुक गया है। उन्होंने हमें बताया कि रजिस्टर ऑफ़िस को अतिरिक्त नुक़सान हुआ, क्योंकि फ़ायरमेन ने केवल आग बुझाने के बजाय पूरी इमारत को पानी से भर दिया। मुझे यह सुनकर अच्छा लगा!

कार्ल्टन होटल तबाह हो गया है। बम ले जा रहे दो ब्रिटिश विमान सीधे जर्मन ऑफ़िसर्स क्लब पर उतरे। वेज़लस्त्रात और सिंगल आग में जल गए। जर्मन शहरों पर हो रहे हवाई हमले दिन ब दिन बढ़ते जा रहे हैं। हमें लंबे समय से रात को आराम नहीं मिला है, नींद की कमी से मेरी आँखें सूज फूल गई हैं।

हमारा खाना भयावह है। नाश्ते में हम बिना मक्खन के सादा डबलरोटी और कृत्रिम कॉफ़ी लेते हैं। पिछले दो सप्ताहों में दिन के भोजन में या तो पालक होता है या पके हुए लेटस (सलाद के पत्ते) और साथ में बड़े-बड़े आलू, जिनका स्वाद सड़ा व मीठा सा होता है। अगर कोई पतला होना चाहता है, तो यहाँ रहे! ऊपर वे बहुत कटुता से शिकायत करते हैं, लेकिन हमें नहीं लगता कि यह इतना दुःखद है।

1940 में जिन डच पुरुषों ने लड़ाई की थी या तैयारी की थी, उन सभी को युद्धबंदियों के शिविरों में काम करने के लिए बुलाया गया है। मुझे यक़ीन है कि हमले की वजह से वे यह सावधानी बरत रहे हैं।

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 1 मई, 1943

प्रिय किटी,

कल दुसे का जन्मदिन था। पहले उन्होंने ऐसे जताया जैसे कि वे जन्मदिन नहीं मनाना चाहते हों, लेकिन जब मीप उपहारों से भरा एक बड़ा सा शॉपिंग बैग लेकर पहुँची, तो वे किसी छोटे बच्चे की तरह रोमांचित हो गए। उनकी प्रिय 'लॉजे' ने उनके लिए अंडे, मक्खन, बिस्किट, लेमोनेड, डबलरोटी, कोनिएक, स्पाइस केक, फूल, संतरे, चॉकलेट, किताबें और लिखने के लिए काग़ज़ भेजे थे। उन्होंने मेज़ पर सभी तोहफ़ों का ढेर लगा दिया और तीन दिन उसका प्रदर्शन किया, बेवकूफ़ कहीं के!

तुम्हें यह नहीं लगना चाहिए कि वे भूखे हैं। हमें उनकी अलमारी में डबलरोटी, चीज़, जैम और अंडे मिले। यह बहुत ही शर्मनाक है कि जिस दुसे के साथ हम इतने रहम से पेश आए और जिन्हें हमने बर्बाद होने से बचाया, वही हमारी पीठ पीछे ठूँसकर खाते हैं और हमें कुछ नहीं देते। हमने भी तो अपनी सारी चीज़ें उनके साथ बाँटी थी। लेकिन हमारी राय में उससे भी बुरा यह है कि मि. क्लेमन, मि. वुश्कल और बेप के साथ भी वे कंजूसी बरतते हैं। उन्हें कुछ भी नहीं देते। दुसे की नज़र में संतरे उनके पेट को ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाएँगे, जबकि क्लेमन को अपने पेट के लिए उनकी सख़्त ज़रूरत है।

आज बंदूकों की आवाज़ इतनी ज़्यादा आ रही है कि मुझे चार बार अपना सामान समेट लेना पड़ा। कहीं भागने की स्थिति में आज मैंने अपने सूटकेस में अपनी ज़रूरत का सारा सामान पैक किया, लेकिन जैसा कि माँ का सही कहना है कि जाएँगे कहाँ?

कामगारों की हड़ताल के लिए पूरे हॉलैंड को सज़ा दी जा रही है। मार्शल लॉ की घोषणा कर दी गई है और हर किसी को एक बटर कूपन कम मिलेगा। क्या शरारती बच्चे हैं।

आज शाम मैंने माँ के बाल धोए, जो आजकल के समय में आसान काम नहीं है। हमें साफ़ करने वाले काफ़ी चिपचिपे तरल का इस्तेमाल करना पड़ता है, क्योंकि हमारे पास शैम्पू नहीं बचा है। इसके अलावा माँ को अपने बालों में कंघी करने में भी काफ़ी दिक्कत हो रही है, क्योंकि हमारी कंघी में सिर्फ़ दस दाँत बचे हैं।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 2 मई, 1943

प्रिय किटी,

जब मैं यहाँ की अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचती हूँ, तो मैं अक्सर इस नतीजे पर पहुँचती हूँ कि हम उन यहूदियों के मुक़ाबले बहुत बेहतर जगह में हैं, जो कहीं छिपे नहीं हुए हैं। साथ ही बाद

में जब सब कुछ सामान्य हो जाएगा, तो मैं शायद यह सोचकर हैरान हो जाऊँगी कि हमेशा आरामदायक स्थिति में रहने वाले हम लोग कैसे इतना 'नीचे' गिरे। मेरा मतलब आदतों से है। उदाहरण के लिए, हम जबसे यहाँ आए हैं, तब से हमारी डायनिंग टेबल पर वही मोमजामा बिछा है। इतने इस्तेमाल के बाद उसे बेदाग़ कहना बड़ा मुश्किल है। मैं उसे साफ़ करने की पूरी कोशिश करती हूँ, लेकिन सफ़ाई करने वाला कपड़ा भी यहाँ छिपने आने से पहले ख़रीदा गया था और उसमें भी काफ़ी छेद हो चुके हैं, इसलिए यह बेकार का ही काम है। फ़ॉन डान परिवार पूरी सर्दियों में एक ही सूती चादर पर सोते रहे हैं, जिसे साबुन की नियंत्रित पूर्ति और कम आपूर्ति के कारण धोया नहीं जा सकता। ख़राब क्वालिटी का होने के कारण वैसे भी वह पाउडर बेकार है। पापा घिसी हुई पतलून में घूमते हैं और उनकी टाई की भी हालत ख़राब है। मम्मी का कॉर्सेट आज टूट गया और अब उसकी मरम्मत नहीं की जा सकती, जबकि मारगोट अपने नाप से दो नंबर कम की ब्रा पहन रही है। पूरी सर्दी माँ और मारगोट ने वही तीन बनियानें साझा कीं और मेरी तो इतनी छोटी हैं कि मेरा पेट तक नहीं ढँकता। इन सब चीज़ों पर तो क़ाबू पाया जा सकता है, लेकिन कई बार मैं सोचती हूँ कि हमारी सभी चीज़ें, मेरे अंतर्वस्त्रों से लेकर पापा के शेविंग ब्रश तक, इतनी पुरानी हो चुकी हैं कि हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि हम युद्ध से पहले की स्थिति में कभी वापस पहुँच सकेंगे?

रविवार, 2 मई, 1943

युद्ध के प्रति अनेक्स निवासियों का रवैया

मि. फ़ॉन डान: हम सबकी राय है कि इन सज्जन को राजनीति की काफ़ी समझ है। उनका पूर्वानुमान है कि हमें 1943 के अंत तक यहाँ रहना होगा। यह काफ़ी लंबा समय है, लेकिन फिर भी यहाँ बने रहना संभव है। लेकिन हमें यह आश्वासन कौन देगा कि इतना दुःख-दर्द लाने वाली लड़ाई तब तक ख़त्म हो चुकी होगी? इतने लंबे समय तक हमें या हमारे सहायकों को कुछ नहीं होगा? कोई नहीं! यही वजह है कि हमारा हर दिन तनाव से भरा होता है। अपेक्षा और आशा से तनाव पैदा होता है और भय भी। उदाहरण के लिए, जब कभी हमें घर के अंदर या बाहर कोई आवाज़ सुनाई देती है, बंदूकें चलती हैं, अख़बार में हम नई 'उद्घोषणाएँ' पढ़ते हैं, तो हमें डर लगता है, क्योंकि हमें लगता है कि हमारे सहायकों को भी कभी छिपने के लिए मजबूर किया जा सकता है। इन दिनों हर कोई छिपने की बात कर रहा है। हमें नहीं पता कि कितने लोग असल में छिपे हुए हैं; ज़ाहिर है कि आम जनसंख्या के लिहाज़ से यह संख्या कम है, लेकिन बाद में हमें हैरानी होगी कि हॉलैंड में कितने अच्छे लोग यहूदियों व ईसाइयों को पैसा लेकर या उसके बिना अपने घर में रखने के इच्छुक हैं। नक़ली पहचान के काग़ज़ात रखने वाले लोगों की संख्या भी अविश्वसनीय रूप से बहुत अधिक है।

मिसेज़ फ़ॉन डान: जब इस ख़ूबसूरत लड़की (यह उनका कहना है) को लगा कि इन दिनों

नक़ली पहचानपत्र रखना आसान हो रहा है, तो उन्होंने तुरंत यह प्रस्ताव रखा कि हम सबको पहचानपत्र बनवा लेने चाहिए। जैसे कि उसमें कोई बात नहीं थी और जैसे कि पापा और मि. फ़ॉन डान पैसे से बने थे।

मिसेज़ फ़ॉन डान हमेशा अजीबोग़रीब बातें करती हैं और उनके पुत्ती अक्सर उससे भड़क जाते हैं। लेकिन इसमें आश्चर्य नहीं, क्योंकि एक दिन केर्ली घोषणा करती हैं, 'जब यह सब ख़त्म हो जाएगा, तो मैं अपना बपतिस्मा करवा लूँगी;' फिर वे कहती हैं, 'जहाँ तक मुझे याद है, मैं येरूशलम जाना चाहती थी। मुझे सिर्फ़ बाक़ी यहूदियों के साथ सहज महसूस होता है!'

पिम काफ़ी आशावादी हैं, लेकिन उनके पास हमेशा अपने कारण होते हैं।

मि. दुसे अपने हिसाब से चलते हैं और जिस किसी को भी उनका विरोध करने की इच्छा हो, बेहतर है कि वह दो बार सोचे। अल्फ्रेड दुसे के घर पर उनकी कही बात ही कानून है, लेकिन ऐन फ्रैंक को इससे बिलकुल भी फ़र्क़ नहीं पड़ता।

अनेक्स परिवार के बाक़ी सदस्य युद्ध के बारे में क्या सोचते हैं, उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। राजनीति की बात होने पर यही चार हैं, जो अहमियत रखते हैं। दरअसल, उनमें से दो ही महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन मैडम फ़ॉन डान और दुसे ख़ुद को उनमें शामिल कर लेते हैं।

मंगलवार, 18 मई, 1943

प्रिय किट,

मैंने हाल ही में जर्मन व इंग्लिश पायलट के बीच ज़बरदस्त हवाई लड़ाई देखी। बदक़िस्मती से मित्र राष्ट्रों के विमानकर्मियों को अपने जलते विमान से कूदना पड़ा। ऑफ़वे में रहने वाले हमारा दूधवाले ने सड़क किनारे चार कनाडाई लोगों को देखा, उनमें से एक धाराप्रवाह डच बोल रहा था। उसने दूधवाले से सिगरेट जलाने के लिए कुछ माँगा और बताया कि उसके दल में छह लोग थे। पायलट जलकर मर गया था और पाँचवें सदस्य ने ख़ुद को कहीं छिपा लिया था। जर्मन सिक्योरिटी पुलिस बचे हुए इन चार लोगों को लेने आई थी, जो घायल नहीं थे। जलते विमान से निकलने के बाद किसी का दिमाग़ इतनी तेज़ी से कैसे काम कर सकता है?

अभी काफ़ी गर्मी है, लेकिन फिर भी हमें हर रोज़ सब्ज़ियों के छिलकों व कचरे को फूँकने के लिए आग जलानी पड़ती है। हम कुछ भी कूड़े में नहीं डाल सकते, क्योंकि गोदाम के कर्मचारी उसे देख सकते हैं। ज़रा सी असावधानी और हमारा खेल ख़त्म!

विश्वविद्यालय के सभी छात्रों को एक आधिकारिक वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने को कहा गया है कि वे 'जर्मनों के साथ सहानुभूति रखेंगे और न्यू ऑर्डर को मानेंगे।' अस्सी प्रतिशत छात्रों ने अपनी अंतरात्मा की बात मानने का फ़ैसला किया है, लेकिन दंड काफ़ी कठोर होगा। जो भी छात्र दस्तख़त करने से मना करेगा, उसे जर्मन श्रम शिविर में भेज दिया जाएगा। हमारे देश के नौजवानों का क्या होगा, अगर उन्हें जर्मनी में हाड़तोड़ मेहनत करने के लिए भेज दिया जाएगा?

कल रात गोलियों की इतनी आवाज़ आ रही थी कि माँ ने खिड़की बंद कर दी; मैं पिम के बिस्तर पर थी। अचानक ठीक हमारे सिर के ऊपर हमें मिसेज़ फ़ॉन डी के कूदने की आवाज़ सुनाई दी, जैसे कि उन्हें मूशी ने काट लिया हो। उसके बाद ज़ोर की आवाज़ आई, ऐसा लगा कि मेरे बिस्तर के पास कोई बम गिरा हो। 'बत्ती जलाओ!' मैं चिल्लाई।

पिम ने लैम्प जला दिया। मुझे लगा कि पूरा कमरा आग की लपट में आ जाएगा। कुछ नहीं हुआ। हम सब ऊपर देखने के लिए भागे कि क्या हो रहा था। मि. और मिसेज़ फ़ॉन डी ने खुली खिड़की से लाल चमक देखी थी और मि. फ़ॉन डी को लगा कि कहीं आसपास आग लगी है, जबकि मिसेज़ फ़ॉन डी निश्चित थी कि हमारे घर में आग लगी है। मिसेज़ फ़ॉन डी आवाज़ आने से पहले ही अपने बिस्तर के पास खड़ी थीं। दुसे सिगरेट पीने के लिए ऊपर गए थे और हम सभी अपने बिस्तर में घुस गए। पंद्रह मिनट से भी कम समय बाद फिर से गोलीबारी शुरू हो गई। मिसेज़ फ़ॉन डी अपने बिस्तर से बाहर निकलीं और दुसे के कमरे में वह दिलासा पाने पहुँचीं, जो उनके जीवनसाथी उन्हें नहीं दे पा रहे थे। दुसे ने यह कहकर उनका स्वागत किया, 'मेरे बिस्तर पर आ जाओ, बच्चे!'

हम सबने ठहाके लगाए और बंदूकों की गर्जना से अब हमें फ़र्क़ नहीं पड़ रहा था, हमारे सभी डर दूर हो गए थे।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 13 जून, 1943

प्रिय किटी,

पापा ने मेरे जन्मदिन पर जो कविता लिखी है, वह इतनी अच्छी है कि उसे सिर्फ़ अपने तक सीमित रख पाना संभव नहीं है।

पिम अपनी कविता केवल जर्मन में लिखते हैं, इसलिए मारगोट ने डच में उसका अनुवाद करने का काम लिया। तुम ख़ुद ही देखो कि मारगोट ने अच्छा काम किया है या नहीं। इसकी शुरुआत साल में होने वाली घटनाओं के सारांश से होती है और इस तरह आगे चलती है:

हममें सबसे कम उम्र, पर नहीं रही अब छोटी
ज़िंदगी हो सकती दूभर, हमारे पास है काम
तुम्हें सिखाने-पढ़ाने का, नहीं है आराम।
'हमारे पास तजुर्बा है! सीखो हमसे!'
'हम यह सब पहले कर चुके हैं तुमसे!'
हमें हैं जानकारियाँ तमाम
सदियों से चल रहा ऐसे ही काम।

अपनी कमियाँ नहीं दिखतीं किसी को
दूसरों की कमियाँ लगतीं बड़ी सबको।
ऐसे हालात में कमियाँ निकालना है आसान,
माँ-बाप के लिए है काफ़ी मुश्किल काम,
निष्पक्षता, दयालुता से पेश आना तुम्हारे साथ;
मीनमेख निकालने की आदत छोड़ना है मुश्किल
जब तुम बूढ़े लोगों के साथ हो तो करना बस इतना
चुपचाप बस उनकी बड़बड़ाहट को झेलना।
कड़वी कितनी भी हो यह गोली बस इसको गटकना,
इससे अमन-चैन रहता है सदा बना।
यहाँ गुज़रे ये महीने नहीं गए बेकार
वक़्त बर्बाद करना नहीं तुम्हारा स्वभाव।
तुम दिन भर करती पढ़ाई ढेर सारी
ताकि दिमाग़ में न रहे ऊब भरी।
ज़्यादा मुश्किल सवाल जिसे झेलना है कठिन
'क्या पहनना होगा मुझे, हे ईश्वर?
निकर नहीं मेरे पास, मेरे कपड़े हैं तंग,
बनियान हो गई छोटी, यह तो नहीं कोई ढंग!
जूते हो गए छोटे, उन्हें पहनना है कठिन
मेरी तकलीफ़ें बढ़ रहीं, दिन ब दिन!'

मारगोट को खाने में तुकबंदी करने में मुश्किल हुई, इसलिए उसे मैं छोड़ रही हूँ। लेकिन उसके अलावा तुम्हें नहीं लगता कि यह अच्छी कविता है?

मुझे बहुत दुलार मिला और मेरे प्रिय विषय ग्रीक व रोमन माइथॉलोजी पर एक बड़ी सी किताब समेत काफ़ी प्यारे उपहार मिले। मैं मिठाई की कमी की शिकायत भी नहीं कर सकती, क्योंकि हर किसी ने अपने भंडार में से कुछ न कुछ निकाला। अनेक्स में सबसे छोटी होने के कारण मुझे इतनी ज़्यादा चीज़ें मिलीं, जिनके शायद मैं लायक़ नहीं।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 15 जून, 1943

प्रिय किटी,

काफ़ी कुछ हो चुका है, लेकिन अक्सर मैं सोचती हूँ कि मैं तुम्हें अपने नीरस बातचीत से उबा रही हूँ और जल्दी ही तुम्हें कम चिट्ठियाँ मिलेंगी। तो मैं घटनाओं को संक्षेप में रखूँगी।

मि. वुश्कल का आख़िरकार अल्सर का ऑपरेशन नहीं हुआ। ऑपरेटिंग टेबल पर उनका पेट खोलने पर डॉक्टरों को पता लगा कि उन्हें कैंसर था। वह इतना आगे बढ़ चुका था कि ऑपरेशन करने का कोई फ़ायदा नहीं था। उन्होंने उनके पेट को फिर से सिला और तीन हफ़्ते तक उन्हें अस्पताल में रखकर ख़ूब खिलाया-पिलाया और फिर वापस घर भेज दिया। लेकिन उन्होंने एक अक्षम्य अपराध किया कि उन्होंने बेचारे मि. वुश्कल को सब कुछ बता दिया। वे अब काम नहीं कर पा रहे, बस घर में अपने आठ बच्चों से घिरे हुए बैठे रहते हैं और आने वाली मौत की चिंता में डूबे रहते हैं। मुझे उनके लिए बहुत बुरा लगता है और यह भी कि मैं बाहर नहीं जा सकती; वरना मैं उनके पास जाती और उनके दिमाग़ को उस चिंता से दूर रखने में उनकी मदद करती। अब वे हमें नहीं बता सकते कि गोदाम में क्या कहा जा रहा है या क्या हो रहा है, जो कि हमारे लिए परेशानी है। हमारे सुरक्षा के मामले में मि. वुश्कल हमारी मदद व सहारे का सबसे बड़ा ज़रिया थे। उनकी कमी हमें खलती है।

अगले महीने हमारी बारी है, अधिकारियों को अपने रेडियो सौंपने की। मि. क्लेमन ने एक छोटा सा रेडियो सेट अपने घर में छिपाया है, वे हमारे ख़ूबसूरत फ़िलिप्स के बदले उसे हमें देंगे। बहुत बुरी बात है कि हमें अपना बड़ा फ़िलिप्स देना पड़ रहा है, लेकिन जब आप छिपे हुए हों, तो आप नहीं चाहते कि प्रशासन को आपकी भनक हो। ज़ाहिर है कि अपने 'बेबी' रेडियो को हम ऊपर रखेंगे। जब यहूदी होना ग़ैरकानूनी हो गए हैं, धन ग़ैरकानूनी हो गया है, तो रेडियो की क्या बिसात है?

पूरे देश में लोग कोई पुराना रेडियो पाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि उन्हें 'मनोबल बढ़ाने वाले' अपने सेट को न देना पड़े। यह सच है कि जैसे-जैसे बाहर से आने वाली ख़बरें बद से बदतर होती जा रही हैं, वैसे-वेसे रेडियो अपनी हैरतअंगेज़ आवाज़ से उम्मीद बनाए रखने में हमारी मदद करता है और हमें कहता है, 'ख़ुश रहो, हौसला बनाए रखो, हालात बेहतर होंगे!'

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 11 जुलाई, 1943

प्रिय किटी,

बच्चों की परवरिश की बात पर (अनगिनत बार) तुम्हें बताऊँ कि मैं अपनी तरफ़ से मददगार,

दोस्ताना और दयालु बनने और साथ ही ऐसे काम करने की पूरी कोशिश कर रही हूँ, जिनसे झिड़कियों की बरसात हल्की हो सके। ऐसे लोगों के साथ आदर्श बच्चा बनने की कोशिश करना आसान नहीं है, जिन्हें आप बर्दाश्त नहीं कर सकते और ऐसे शब्द कहने में भी मुश्किल आती है, जब आप वास्तव में उन पर ख़ुद यक़ीन नहीं करते। लेकिन मैं देख सकती हूँ कि मन की बात साफ़-साफ़ कह देने के तरीक़े के बजाय थोड़े से पाखंड से मेरा काम बन रहा है (हालाँकि कोई भी मेरी राय नहीं पूछता या किसी भी तरीक़े से उन्हें फ़र्क़ पड़ता है)। हाँ, मैं अक्सर अपनी भूमिका तब भूल जाती हूँ और अपने ग़ुस्से पर क़ाबू पाना मेरे लिए नामुमकिन हो जाता है, जब वे अन्याय करते हैं और फिर अगला महीना वे यह कहते हुए बिता देते हैं कि मैं दुनिया की सबसे बदतमीज़ लड़की हूँ। तुम्हें नहीं लगता कि मुझ पर भी कभी तरस खाया जाना चाहिए? अच्छी बात यह है कि मैं अफ़सोस करने वालों में से नहीं हूँ, क्योंकि मैं फिर चिड़चिड़ी और बदमिज़ाज हो जाऊँगी। मैं अक्सर उनकी डपट का मज़ाकिया पहलू देख सकती हूँ, लेकिन यह तब अपेक्षाकृत आसान होता है, जब किसी और पर यह गुज़र रही हो।

मैंने फ़ैसला किया है (काफ़ी सोच-विचार के बाद) कि मैं शॉर्टहैंड छोड़ दूँगी। उससे मुझे बाक़ी विषयों के लिए अधिक समय मिलेगा और दूसरा कारण मेरी आँखें हैं। बहुत दुःख भरी कहानी है। मेरी नज़र कमज़ोर हो गई है और मुझे काफ़ी पहले चश्मा लगा लेना चाहिए था। (मैं बेवकूफ़ लगूँगी!) लेकिन जैसा कि तुम जानती हो, छिपे हुए लोग...

कल यहाँ सभी लोग ऐन की आँखों के बारे में बात कर रहे थे, क्योंकि माँ का सुझाव था कि मुझे मिसेज़ क्लेमन के साथ किसी विशेषज्ञ के पास जाना चाहिए। यह बात सुनकर ही मुझे घबराहट होने लगी, क्योंकि यह कोई छोटी बात नहीं है। बाहर जाना! ज़रा सोचो कि सड़क पर चलना! मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। पहले मैं डर गई, फिर ख़ुश हुई। लेकिन यह इतनी सीधी सी बात नहीं है; जिन बड़े लोगों को इस तरह के क़दम की अनुमति देनी है, वे किसी फ़ैसले पर नहीं पहुँच पाए। उन्हें पहले सभी मुश्किलों व ख़तरों का जायज़ा लेना होगा, हालाँकि मीप तुरंत मेरे साथ जाने को तैयार हो गईं। इस दौरान, मैंने अलमारी से अपना कोट निकाला, लेकिन वह इतना छोटा था कि लगता था कि मेरी किसी छोटी बहन का कोट रहा होगा। हमने किनारे को नीचे किया, लेकिन मैं उसके बटन नहीं लगा पाई। मैं काफ़ी उत्सुक हूँ कि वे क्या फ़ैसला करते हैं, वैसे मुझे लगता है कि वे शायद ही कोई योजना बना पाएँ, क्योंकि ब्रिटिश सेना सिसली पहुँच चुकी है और पापा के मुताबिक़ 'तेज़ी से ख़त्म करने' के लिए तैयार है।

बेप मारगोट और मुझे ऑफ़िस का काफ़ी काम देती रही हैं। उससे हमें अपना महत्व महसूस होता है और उन्हें काफ़ी मदद मिल जाती है। पत्रों को फ़ाइल में लगाने और सेल्स बुक में प्रविष्टियाँ कोई भी लिख सकता है, लेकिन हम इसे काफ़ी सटीकता के साथ करते हैं।

मीप को इतना ज़्यादा सामान ढोना होता है कि वे खच्चर जैसी दिखती हैं। वे तपती दुपहरी

में ख़रीदारी करने जाती हैं और फिर सारा सामान लेकर लौटती हैं। वे हर शनिवार को अपने साथ पुस्तकालय से पाँच किताबें लाती हैं। हमें शनिवार का इंतज़ार रहता है, क्योंकि उसका मतलब किताबें होता है। हम उन छोटे बच्चों की तरह होते हैं, जिनके पास उपहार होते हैं। सामान्य लोग नहीं जानते कि कहीं छिपकर रहने वाले लोगों के लिए किताबों के क्या मायने हैं। पढ़-लिखकर, रेडियो सुनकर हम अपना ध्यान बँटाते हैं।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 13 जुलाई, 1943

बेहतरीन छोटी मेज़

कल दोपहर पापा ने मुझे मि. दुसे से यह पूछने की अनुमति (देखा, मैं कितनी विनम्र हूँ!) दे दी कि क्या वे हफ़्ते में दो दिन, चार बजे से साढ़े पाँच बजे तक मुझे हमारे कमरे की मेज़ का इस्तेमाल करने की इजाज़त देंगे। मैं पहले ही मि. दुसे के झपकी लेने के दौरान ढाई बजे से चार बजे तक उस पर बैठती हूँ, लेकिन बाक़ी समय कमरा व मेज़ मेरी पहुँच से दूर होते हैं। दोपहर में दूसरे कमरे में पढ़ना असंभव है, क्योंकि वहाँ काफ़ी कुछ चल रहा होता है। इसके अलावा, पापा कभी-कभार दोपहर में डेस्क पर बैठते हैं।

तो यह काफ़ी तर्कसंगत बात थी और मैंने बहुत विनम्रता से मि. दुसे से पूछा। तुम्हें क्या लगता है कि जनाब का जवाब क्या रहा होगा? 'नहीं।' बस, 'नहीं!'

मैं चिढ़ गई और उस तरह टाला जाना नहीं चाहती थी, तो मैंने उनसे उनके 'नहीं' का कारण पूछा, लेकिन उससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उनके जवाब का सार यही था: 'मुझे भी पढ़ना होता है, अगर मैं दिन में नहीं पढ़ पाया, तो मैं तालमेल नहीं बिठा पाऊँगा। मैंने अपने लिए जो काम निर्धारित किया है, उसे पूरा करना होगा, वरना उसे शुरू करने का कोई फ़ायदा नहीं। इसके अलावा, तुम अपनी पढ़ाई को लेकर गंभीर नहीं हो। माइथॉलोजी, यह किस तरह का शब्द है? पढ़ने और बुनाई करने को भी नहीं माना जाएगा। मैं मेज़ का इस्तेमाल करता हूँ और उसे मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ!'

मैंने जवाब दिया, 'मि. दुसे मैं अपने काम को गंभीरता से लेती हूँ। मैं दोपहर में बग़ल के कमरे में नहीं बैठ सकती और मैं बहुत आभारी रहूँगी अगर आप मेरे निवेदन पर फिर से विचार करें!'

यह कहकर अपमानित ऐन मुड़ी और उसने ऐसे दिखाया कि जैसे डॉक्टर वहाँ मौजूद ही नहीं थे। मैं गुस्से में उबल रही थी और मुझे लगा कि दुसे बहुत ही अशिष्ट थे (जो वे थे) और मैं काफ़ी विनम्रता से पेश आती रही थी।

उस शाम जब मुझे पिम मिले, तो मैंने उन्हें बताया कि क्या हुआ था और फिर हमने मेरे

अगले क़दम पर बातचीत की, क्योंकि मेरी हार मानने की इच्छा नहीं थी और उस मामले से ख़ुद ही निपटना चाहती थी। पिम ने मुझे मोटे तौर पर दुसे से निपटने का तरीक़ा बताया और आगाह किया कि मैं अगले दिन तक इंतज़ार करूँ, क्योंकि तब मैं काफ़ी उत्तेजित थी। मैंने उनकी आख़िरी सलाह को अनदेखा किया और बर्तन धोने के बाद दुसे का इंतज़ार करने लगी। पिम बग़ल के कमरे में थे और उससे मुझ पर ठंडक भरा असर पड़ा।

मैंने कहा, 'मि. दुसे आप ऐसा मान रहे हैं कि इस मामले पर बात करना बेकार है, लेकिन मेरी विनती है कि आप फिर से विचार करें।'

दुसे बड़े आकर्षक ढंग से मुस्कराए और कहा, 'मैं हमेशा बातचीत करने के लिए तैयार हूँ, चाहे मामला ख़त्म ही क्यों न हो गया हो।'

दुसे के बार-बार टोकने के बावजूद मैं बोलती रही। मैंने कहा, 'जब आप पहली बार यहाँ आए थे, तो हमारे बीच सहमति हुई थी कि हम दोनों कमरे का इस्तेमाल करेंगे। अगर हमें इसे न्यायपूर्ण तरीक़े से साझा करना हो, तो आपके पास पूरी सुबह होगी और मेरे पास पूरी दोपहर! मैं आपसे उतना नहीं माँग रही हूँ, लेकिन सप्ताह में दो दोपहर मेरे हिसाब से काफ़ी तर्कसंगत है।'

दुसे अपनी कुर्सी से ऐसे उछले, जैसे वे किसी पैनी चीज़ पर बैठ गए हो। 'तुम्हें कमरे पर अपने अधिकार को लेकर बात करने का कोई हक़ नहीं है। मैं कहाँ जाऊँगा? शायद मुझे मि. फ़ॉन डान से अटारी में कमरा बनवाने को कहना होगा। सिर्फ़ तुम ही नहीं हो, जिसे काम के लिए कोई शांत जगह नहीं मिल पाती। तुम हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहती हो। अगर तुम्हारी बहन मारगोट, जिसे तुमसे ज़्यादा काम की जगह का अधिकार है, यही बात कहती तो मैं न कहने की बात सोचता भी नहीं, लेकिन तुम...'

एक बार फिर उन्होंने माइथॉलोजी व बुनाई की बात उठाई और फिर ऐन का अपमान हुआ। फिर भी मैंने उसे जताया नहीं और दुसे को उनकी बात पूरी करने दी: 'लेकिन नहीं, तुमसे बात करना तो नामुमकिन है। तुम बेशर्मी की हद तक आत्मकेंद्रित हो। तुम्हें किसी और की परवाह नहीं, बस तुम्हारी बात मानी जानी चाहिए। मैंने कभी ऐसा बच्चा नहीं देखा। ख़ैर यह सब कहने-सुनने के बाद मैं तुम्हारी बात मान रहा हूँ, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि बाद में लोग कहें कि दुसे द्वारा मेज़ न दिए जाने के कारण ऐन फ़्रैंक परीक्षाओं में असफल रही!'

वे बोलते चले गए और कुछ देर में तो मेरे लिए उनकी बात समझना तक मुश्किल हो गया। एक पल को मैंने सोचा, 'ये और इनके झूठ। मैं इनकी भद्दी शक्ल पर इतनी ज़ोर से मारूँगी कि वे दीवार से टकराकर वापस आ जाएँगे!' लेकिन अगले ही पल मेरे मन में ख़याल आया, 'शांत रहो, वे इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं कि तुम इतना परेशान हो जाओ!'

आख़िरकार मि. दुसे का सारा गुस्सा बाहर निकल गया और वे कमरे से बाहर निकले, उनके चेहरे पर जीत व नाराज़गी के मिले-जुले भाव थे और उनके कोट की जेब खाने की चीज़ों से

फूली हुई थी।

मैं दौड़कर पापा के पास गई और उन्हें पूरी कहानी बताई या कम से कम उन हिस्सों को बताया, जो वे ख़ुद नहीं सुन पाए थे। पिम ने उसी शाम दुसे से बात करने का मन बनाया और उन्होंने आधे घंटे से अधिक समय तक बातचीत की। पहले उन्होंने इस पर बातचीत की कि ऐन को मेज़ के इस्तेमाल की इजाज़त दी जाए या नहीं। पापा ने कहा कि वे और दुसे पहले भी इस पर बातचीत कर चुके हैं और उस समय पापा ने दुसे के साथ सहमति जताई थी, क्योंकि पापा नहीं चाहते थे कि छोटे सदस्य के सामने बड़े का विरोध किया जाए और उस समय भी उन्हें यह बात सही नहीं लगी थी। दुसे को लगा कि मुझे उन्हें घुसपैठिया समझने और हर चीज़ पर दावा करने का कोई हक़ नहीं था। लेकिन पापा ने उनकी बात का ज़ोरदार विरोध किया, क्योंकि उन्होंने ख़ुद यह सुना था कि मैंने इस तरह की कोई बात नहीं की थी। तो बातचीत आगे-पीछे होती रही, पापा मेरी 'स्वार्थपरता' और 'बेकार की गतिविधियों' का बचाव करते रहे और दुसे सारा समय बड़बड़ाते रहे।

आख़िरकार दुसे को हथियार डालने पड़े और मुझे सप्ताह में दो दोपहर बेरोकटोक काम करने का अवसर मिल गया। दुसे खिन्न लग रहे थे, दो दिन तक उन्होंने मुझसे बात नहीं की और पाँच से साढ़े पाँच तक मेज़ पर जमे रहे — यह सब काफ़ी बचकाना था।

शुक्रवार, 16 जुलाई, 1943

प्रिय किटी,

इस बार फिर से सेंध लगी और इस बार वह सचमुच की थी! सुबह सात बजे पीटर गोदाम में था और उसने देखा कि गोदाम के दोनों दरवाज़े खुले थे, उसने तुरंत पिम को बताया और वे प्राइवेट ऑफ़िस में गए, जर्मन स्टेशन पर रेडियो लगाया और दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर वे दोनों ऊपर गए। ऐसे मामलों में हमारे लिए आदेश होते हैं, 'नहाना-धोना नहीं या फिर पानी का इस्तेमाल नहीं करना, ख़ामोश रहना, आठ बजे तक तैयार हो जाना और शौचालय नहीं जाना,' और हमेशा की तरह हमने इन सभी का पूरी तरह से पालन किया। हम सब ख़ुश थे कि हम अच्छी तरह सोए और हमने कुछ नहीं सुना। कुछ देर के लिए हम नाराज़ भी रहे कि पूरी सुबह नीचे ऑफ़िस से कोई भी ऊपर नहीं आया। मि. कलेमन ने साढ़े ग्यारह बजे तक हमारी बेचैनी बनाए रखी। उन्होंने हमें बताया कि चोरों ने बाहरी दरवाज़े और गोदाम के दरवाज़े को लोहे के डंडे से खोल दिया था, लेकिन जब उन्हें चुराने लायक़ कुछ नहीं मिला, तो उन्होंने अगली मंज़िल पर कोशिश की। उन्होंने कैशबॉक्स चुरा लिया, जिसमें 40 गिल्डर, ख़ाली चेकबुक्स और हमारे लिए आवंटित 330 पाउंड चीनी के कूपन थे। नए कूपन जुटा पाना आसान नहीं होगा।

मि. कुगलर का मानना है कि चोर उसी गिरोह के थे, जिन्होंने छह हफ़्ते पहले सभी दरवाज़ों (गोदाम दरवाज़ा और दो बाहरी दरवाज़े) को खोलने की नाकाम कोशिश की थी।

संधमारों ने फिर से हलचल मचा दी थी, लेकिन अनेक्स तो उत्तेजना पर पलती हुई लगती है। हमें ख़ुशी थी कि हमने कैश रजिस्टर और टाइपराइटर्स अपने अलमारियों में सुरक्षित रखे थे।

तुम्हारी ऐन

पुनःश्च। सिसली में पहुँच गए। एक और क़दम...!

सोमवार, 19 जुलाई, 1943

प्रिय किटी,

उत्तरी ऐम्स्टर्डम रविवार को भारी बमबारी हुई। उससे काफ़ी नुक़सान पहुँचा। सभी सड़कें तबाह हो गई हैं और मृतकों को खोदकर निकालने में समय लगेगा। अब तक दो सौ मृतक हैं और अनगिनत घायल; अस्पताल खचाखच भरे हैं। हमें बताया गया है कि बच्चे बहुत लाचारी से तबाही में अपने मृतक माता-पिता को खोज रहे हैं। आने वाले विनाश के प्रतीक धुंधले, सुदूर ड्रोन के बारे में सोचते ही मेरी कँपकँपी छूट जाती है।

शुक्रवार, 23 जुलाई, 1943

बेप कुछ अभ्यास-पुस्तिकाएँ, विशेषकर डायरियाँ और बहीखाते, जो कि मेरी हिसाब-किताब रखने वाली बहन के लिए काम की हैं! बाक़ी क़िस्म की भी बिक रही हैं, लेकिन यह मत पूछना कि वे कैसी हैं या कितनी देर तक चलेंगी। फ़िलहाल तो उन सब पर लिखा है, 'कूपन्स की ज़रूरत नहीं है!' बाक़ी चीज़ों की तरह जिन्हें आप राशन स्टैम्प्स के बिना ख़रीद सकते हैं, वे पूरी तरह बेकार हैं। उनमें धूसर काग़ज़ के 12 पन्ने हैं, जिनमें तिरछी सँकरी रेखाएँ हैं। मारगोट कैलिग्राफ़ का कोर्स करने की सोच रही है; मैंने उसे ऐसा करने की सलाह दी है। माँ मेरी आँखों के कारण मुझे उसकी इजाज़त नहीं देंगी, लेकिन मुझे यह बेकार की बात लगती है। मैं चाहे वह करूँ या कुछ और, सब कुछ उसी पर आकर टिकता है।

किटी तुमने कभी युद्ध का अनुभव नहीं किया है, इसलिए मेरे पत्रों के बावजूद तुम्हें छिपे रहकर जीने के बारे में बहुत कम जानकारी है। तो तुम्हें सिर्फ़ मज़े के लिए मैं बताना चाहती हूँ कि अगर हमें फिर से बाहर जाने का मौक़ा मिले, तो हममें से हरेक सबसे पहले क्या करना चाहेगा।

मारगोट और मि. फ़ॉन डान सबसे पहले गर्म पानी से लबालब भरे टब में नहाना चाहेंगे, जिसमें वे आधे घंटे से ज़्यादा देर तक पड़े रह सकें। मिसेज़ फ़ॉन डान केक पसंद करेंगी, दुसे को और कुछ नहीं बस अपनी शार्लोट से मुलाक़ात का ख़याल है और माँ को असली कॉफ़ी पीने की तलब है। पापा मि. वुश्कल से मिलने जाना चाहेंगे, पीटर शहर जाना चाहेगा और जहाँ

तक मेरी बात है, मैं तो इतनी ज़्यादा ख़ुश हो जाऊँगी कि समझ ही नहीं पाऊँगी कि कहाँ से शुरुआत करूँ।

मुझे सबसे ज़्यादा तड़प अपने घर की होती है, कहीं भी आज़ादी से आने जाने की और मेरे गृहकार्य में किसी की मदद लेने की इच्छा होती है। अन्य शब्दों में कहूँ, तो स्कूल जाना चाहती हूँ!

बेप ने हमारे लिए तथाकथित कम क़ीमत पर फल लाने की पेशकश की है: अंगूर 2.50 गिल्डर्स प्रति पाउंड, गूज़बेरी 70 सेंट प्रति पाउंड, एक आड़ू 50 सेंट, तरबूज़ 75 सेंट प्रति पाउंड। कोई आश्चर्य नहीं कि हर शाम अख़बारों में बड़े, मोटे अक्षरों में लिखा होता है: 'ईमानदार रहें और क़ीमतें कम रखें!'

सोमवार, 26 जुलाई, 1943

प्रिय किटी,

कल का दिन बहुत हलचल भरा रहा और हम अब भी तनाव में हैं। दरअसल, तुम्हें हैरानी हो सकती है कि हमारा शायद ही कोई दिन बिना किसी उत्तेजना के बीतता हो।

पहली बार सुबह हमारे नाश्ता करते समय चेतावनी के सायरन बजे, लेकिन हमने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसका मतलब था कि विमान तट को पार कर रहे थे। मुझे भयानक सिरदर्द हो रहा था, इसलिए नाश्ते के बाद मैं एक घंटा लेट गई और क़रीब दो बजे मैं दफ़्तर चली गई। ढाई बजे मारगोट ने अपना काम ख़त्म किया और वह अपना सामान समेट रही थी कि सायरन की आवाज़ फिर से गूँजने लगी। मैं और वह जल्दी से ऊपर गए। जल्दी ही, शायद पाँच मिनट बाद ही, बंदूकें इतनी तेज़ी से गरजने लगीं कि हम जाकर गलियारे में खड़े हो गए। घर हिलने लगा और बम गिरते रहे। मैं अपने 'एस्केप बैग' यानी साथ लेकर जाने वाले थैले को पकड़ रखा था, क्योंकि भागने के बजाय उस समय मैं किसी चीज़ को पकड़े रखना चाहती थी। मैं जानती हूँ कि हम इस जगह को नहीं छोड़ सकते, लेकिन अगर हमें जाना ही पड़े तो सड़कों पर देखा जाना भी उतना ही ख़तरनाक होगा, जितना कि हवाई हमले में फँसना। आधे घंटे बाद इंजनों की आवाज़ हल्की पड़ गई और घर में फिर चहलपहल शुरु हो गई। पीटर आगे की अटारी पर बनी अपनी चौकी से बाहर आ गया, दुसे फ्रंट ऑफ़िस में ही रहे, मिसेज़ फ़ॉन डी को प्राइवेट ऑफ़िस में सबसे सुरक्षित महसूस हो रहा था, मि. फ़ॉन डान ऊपर से देख रहे थे और बंदरगाह से उठते धुएँ को देखते हुए नीचे मौजूद थे। थोड़ी ही देर में आग की गंध सब तरफ़ थी और बाहर देखकर लगता था कि पूरा शहर धुंध की मोटी परत से घिरा था।

इस तरह की बड़ी आग अच्छा नज़ारा नहीं है, लेकिन ख़ुशक़िस्मती से हमारे लिए वह गुज़र चुकी थी और हम सब अपने कामों में लग गए। जब हम रात का खाना खा रहे थे, तो फिर से

हवाई हमले की चेतावनी आई। खाना अच्छा था, लेकिन सायरन सुनते ही मेरी भूख मर गई। हालाँकि कुछ हुआ नहीं और पैंतालीस मिनट बाद सब कुछ साफ़ होने का संकेत आ गया। बर्तन धुलने के बाद एक और हवाई हमले की चेतावनी, गोलीबारी और जहाज़ों की आवाज़ें आने लगीं। 'हे भगवान, एक दिन में दो बार,' हमने सोचा, 'दो बार काफ़ी ज़्यादा है।' एक बार फिर बमबारी हुई, इस बार शहर के दूसरे हिस्से में हुई। ब्रिटिश रिपोर्टों के अनुसार, स्किपहोल हवाई अड्डे पर बमबारी की गई। जहाज़ों ने गोते खाए और ऊपर उठे, हवा में इंजनों की आवाज़ गूँज रही थी। यह बहुत डरावना था और सारा समय मैं सोचती रही, 'यह आया, यही है।'

मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि जब मैं नौ बजे सोने गई तो मेरी टाँगें काँप रही थीं। आधी रात को मैं फिर से जग गई; और जहाज़ थे! दुसे कपड़े बदल रहे थे, लेकिन मैंने गौर नहीं किया और गोली की पहली आवाज़ पर ही उछलकर उठी। एक बजे तक मैं पापा के बिस्तर पर रही, फिर डेढ़ बजे तक अपने बिस्तर पर और दो बजे वापस पापा के पास पहुँच गई। लेकिन विमान आते रहे। आख़िरकार उन्होंने गोलीबारी बंद की और मैं फिर से अपने बिस्तर पर जा सकी। अंत में मैं ढाई बजे सो पाई।

सात बजे। मैं चौंककर जागी और बिस्तर पर बैठ गई। मि. फ़ॉन डान पापा के साथ थे। मुझे पहला ख़याल चोरी का आया। मैंने मि. फ़ॉन डान को 'सब कुछ' कहते सुना और सोचा कि सब कुछ चोरी हो गया है। लेकिन इस बार तो ख़बर अच्छी थी, कई महीनों में सबसे अच्छी ख़बर, शायद लड़ाई शुरु होने के बाद की सबसे अच्छी ख़बर। मुसोलिनी ने इस्तीफ़ा दे दिया है और इटली के राजा ने सत्ता सँभाल ली है।

हम ख़ुशी से उछल पड़े। कल की भयानक घटनाओं के बाद, आख़िर में कुछ अच्छा हुआ और हमारे लिए लाया... उम्मीद! लड़ाई ख़त्म होने की आशा, शांति की आशा।

मि. कुगलर आए और उन्होंने बताया कि फुकर एयरक्रफ़्ट फ़ैक्टरी को बहुत नुक़सान हुआ है। इस बीच, आज सुबह एक और हवाई हमले की चेतावनी आई, विमान हवा में थे और एक और चेतावनी आई। अलार्म सुनकर मैं थक चुकी हूँ। मैं मुश्किल से सो पाई थी और काम तो मैं बिलकुल भी नहीं करना चाहती। लेकिन अब इटली को लेकर अनिश्चय की स्थिति और साल के अंत तक युद्ध समाप्त होने की आशा हमें जगाकर रखे हुए है...

तुम्हारी ऐन

बृहस्पतिवार, 29 जुलाई, 1943

प्रिय किटी,

मिसेज़ फ़ॉन डान और मैं बर्तन धो रहे थे और मैं बहुत ख़ामोश थी। यह मेरे लिए काफ़ी असामान्य है और बाक़ी सब उस पर गौर करते, इसलिए सवालों से बचने के लिए मैंने तुरंत

अपने दिमाग़ पर किसी तटस्थ से विषय के बारे में सोचने के लिए ज़ोर डाला। मैंने सोचा कि हेनरी *फ़्रॉम अक्रॉस* द स्ट्रीट पुस्तक सही रहेगी, लेकिन मैं उससे ज़्यादा ग़लत नहीं हो सकती थी। अगर मिसेज़ फ़ॉन डान मुझे न डाँटें तो मि. दुसे वह काम कर देंगे। दरअसल, बात यह हुई कि मि. दुसे ने मारगोट और मुझे बढ़िया लेखन के उदाहरण के तौर पर वह किताब पढ़ने की सलाह दी थी। हमें वैसा नहीं लगा। नन्हें लड़के का वर्णन अच्छा था, लेकिन बाक़ी चीज़ें... उनके बारे में जितना कम कहा जाए, बेहतर होगा। बर्तन धोते हुए मैंने कुछ इसी तरह की बात की और दुसे बस शुरु हो गए।

'तुम किसी पुरुष का मनोविज्ञान कैसे समझ सकती हो? बच्चे की समझना उतना मुश्किल नहीं है! लेकिन उस तरह की किताब पढ़ने के लिहाज़ से तुम काफ़ी छोटी हो। यहाँ तक कि बीस साल का पुरुष भी उसे नहीं समझ पाएगा।' (तो फिर उन्होंने मारगोट और मुझे वह किताब पढ़ने की सलाह क्यों दी?)

मिसेज़ फ़ॉन डी और दुसे ने अपना ज़ोरदार हमला जारी रखा: 'तुम उन बातों के बारे में भी जानती हो, जो तुम्हें नहीं जाननी चाहिए। तुम्हारी परवरिश बहुत ग़लत ढंग से हुई है। बाद में बड़ी हो जाने पर तुम किसी भी चीज़ का आनंद नहीं ले सकोगी। तुम कहोगी, "अरे, यह तो मैंने बीस साल पहले किसी किताब में पढ़ा था।" बेहतर है कि पति चुनने या प्यार में पड़ने के मामले में तुम जल्दी करो, क्योंकि हर किसी चीज़ से तुम निराश ही होगी। सिद्धांत के तौर पर तुम सब कुछ जानती हो। लेकिन व्यावहारिक तौर पर? वह तो बिलकुल अलग बात है!'

क्या तुम कल्पना कर सकती हो कि मुझे कैसा लगा होगा? मैं तब ख़ुद ही हैरान रह गई, जब मैंने शांति से उन्हें जवाब दिया: 'आपको लग सकता है कि मेरी परवरिश सही ढंग से नहीं हुई, लेकिन कई लोग इस बात से असहमत होंगे!'

उनका शायद मानना है कि बच्चे की अच्छी परवरिश में मुझे मेरे माता-पिता के ख़िलाफ़ खड़ा करने की कोशिश शामिल है, क्योंकि वे हमेशा ऐसा ही करते। मेरी उम्र की लड़की को बड़ों से जुड़ी बातें न बताना ठीक है। हम सब देख सकते हैं जब ऐसे लोगों की वैसी परवरिश होती है।

उस पल मैं उन दोनों को मेरा मज़ाक उड़ाने के लिए तमाचा लगा सकती थी। मैं आपे से बाहर हो गई थी और अगर मुझे पता होता कि उनके साथ मुझे कितने दिन और झेलना है, तो दिन गिनना शुरु कर देती।

मिसेज़ फ़ॉन डान से बात करना तो अलग ही है! वे अपने आप में एक नमूना हैं और वह भी बहुत बुरा नमूना! वे बहुत आक्रामक, अहंकारी, कपटी, धूर्त और हमेशा असंतुष्ट रहने वाली के तौर पर जानी जाती हैं। इसमें घमंड और नख़रेबाज़ी जोड़ दें तो इस बात में कोई शक नहीं कि वे पूरी तरह से घृणित इंसान हैं। मैं मोहतरमा फ़ॉन डान पर एक पूरी किताब लिख सकती हूँ और कौन जानता है कि शायद किसी दिन लिख भी दूँ। कोई चाहे तो बाहर से आकर्षक

मुखौटा लगा सकता है। मिसेज़ फ़ॉन डी अजनबियों, ख़ासकर, पुरुषों के साथ काफ़ी दोस्ताना हैं, इसलिए उनसे पहली बार मिलने पर ग़लती हो सकती है।

माँ सोचती हैं कि मिसेज़ फ़ॉन डी इतनी बेवकूफ़ हैं कि कहा नहीं जा सकता, मारगोट के मुताबिक वे महत्त्वहीन हैं, पिम को लगता है कि वे बहुत भद्दी (शाब्दिक व लाक्षणिक तौर पर!) हैं और काफ़ी समय तक देखने के बाद (मैं शुरु में पूर्वाग्रह ग्रस्त नहीं होती) मैं भी इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि उनमें ऊपर कही गई तीनों बातें हैं और इनके अलावा भी काफ़ी कुछ है। उनमें इतनी ख़ामियाँ हैं कि मैं केवल एक को ही अलग क्यों करूँ?

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। क्या पाठक कृपया इस बात का ध्यान रखेंगे कि यह कहानी लेखिका के गुस्से के ठंडे होने से काफ़ी पहले लिखी गई थी।

मंगलवार, 3 अगस्त 1943

प्रिय किटी,

राजनीतिक मोर्चे पर हालात अच्छे हैं। इटली ने फ़ासिस्ट पार्टी को प्रतिबंधित कर दिया है। कई जगहों पर लोग फ़ासीवादियों से लड़ रहे हैं यहाँ तक कि सेना भी इस लड़ाई में शामिल हो गई है। ऐसा देश इंग्लैंड के ख़िलाफ़ लड़ाई कैसे जारी रख सकता है?

हमारे ख़ूबसूरत रेडियो को पिछले हफ़्ते हमसे छीन लिया गया। दुसे इस बात पर मि. कुगलर से बहुत नाराज़ थे कि उन्होंने उस दिन रेडियो चलाया। दुसे मेरी नज़रों में गिरते जा रहे हैं और वे शून्य पर पहुँच चुके हैं। राजनीति, इतिहास, भूगोल या किसी भी विषय पर वे जो कहते हैं, वह इतना अजीब होता है कि मैं उसे दोहराने की हिम्मत नहीं कर सकती: हिटलर इतिहास से लुप्त हो जाएगा; रोत्तरदाम का बंदरगाह हैमबर्ग की तुलना में बड़ा है; अंग्रेज़ बेवकूफ़ हैं, जो मौक़े का फ़ायदा उठाकर इटली की धज्जियाँ उड़ाने के लिए बमबारी नहीं कर रहे हैं, वगैरह, वगैरह।

अभी तीसरा हवाई हमला हुआ। मैंने अपने दाँत भींचने और साहसी बनने का अभ्यास करने का फ़ैसला किया।

हमेशा 'उन्हें गिरने दो' और 'समाप्त न होने के बजाय आवाज़ के साथ समाप्त होना बेहतर है,' जैसी बातें हमेशा कहने वाली मिसेज़ फ़ॉन डान हममें सबसे कायर हैं। आज सुबह वे पत्ते की तरह काँप रही थीं और आँसू तक बहाने लगी थीं। उनके पति ने उन्हें सांत्वना दी, जिनके साथ हफ़्ते भर चली तकरार के बाद उन्होंने हाल ही में समझौता किया था; उस नज़ारे को देखकर मैं भावुक होने लगी थी।

मूशी ने निस्संदेह अब यह साबित कर दिया है कि बिल्ली के होने से फ़ायदे भी हैं और नुक़सान भी। पूरे घर में पिस्सू हो गए हैं और हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। मि. क्लेमन हर कोने में पीला पाउडर छिड़क रहे हैं, लेकिन पिस्सुओं पर उसका कोई असर नहीं हुआ है। इससे हम सब घबराए हुए हैं; हमें हर समय लगता है कि हमारी बाँहों, टाँगों या शरीर के बाक़ी हिस्सों पर कुछ काट रहा है और इसलिए हम उछलकर कसरत करने लगते हैं, क्योंकि उससे हम अपनी बाँहों या गरदन को अच्छी तरह देख सकते हैं। लेकिन अब हमें शारीरिक व्यायाम न करने हर्जाना भुगतना पड़ रहा है; हम इतने अकड़ गए हैं कि अपने सिर तक नहीं घुमा सकते। असली कसरत तो कब की छूट चुकी है।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 4 अगस्त, 1943

प्रिय किटी,

हमें छिपते हुए एक साल से अधिक समय हो गया है, इसलिए तुम हमारी ज़िंदगी के बारे में काफ़ी कुछ जान चुकी हो। फिर भी मैं तुम्हें शायद सब कुछ नहीं बता सकती, क्योंकि सामान्य समय और सामान्य लोगों की तुलना में यह काफ़ी अलग है। इसके बावजूद अपनी ज़िंदगी को और क़रीब से दिखाने के लिए मैं एक आम दिन के हिस्से बारे में तुम्हें बताऊँगी। मैं शाम और रात से शुरू करूँगी।

शाम के नौ बजे: एनेक्स में सोने का समय हमेशा बहुत चहल-पहल के साथ शुरू होता है। कुर्सियाँ हटाई जाती हैं, बिस्तर निकाले जाते हैं, कम्बल खोले जाते हैं - कोई भी चीज़ उस जगह पर नहीं रहती, जहाँ दिन में होती है। मैं एक छोटे से दीवान पर सोती हूँ, जो सिर्फ़ पाँच फ़ीट लंबा है और इसलिए उसे लम्बा करने के लिए हमें उसके साथ कुर्सियाँ लगानी पड़ती हैं। रजाई-गद्दे, चादरें, तकिए, कम्बल, सभी को दुसे के पलंग से निकालना पड़ता है, जहाँ उन्हें दिन में रखा जाता है।

बग़ल के कमरे में भयानक चरचराहट की आवाज़ आ रही है; मारगोट का फ़ोल्डिंग बेड लगाया जा रहा है। ज़्यादा कम्बल, तकिए और ऐसा कुछ भी जिनसे लकड़ी की पट्टियों को ज़्यादा आरामदेह बनाया जा सके। ऊपर से गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही है, क्योंकि मिसेज़ फ़ॉन डी के पलंग को खिड़की के पास धकेला जा रहा है, ताकि गुलाबी बेड जैकेट पहने हुए मोहतरमा अपनी नाजुक नाक से रात की हवा का मज़ा ले सकें।

नौ बजे: पीटर के आने के बाद अब गुसलख़ाने जाने की बारी मेरी है। मैं ख़ुद को सिर से पाँव तक साफ़ करती हूँ और अक्सर मुझे सिंक में कोई छोटा सा पिस्सू तैरता मिलता है (सिर्फ़ गर्मी के महीनों, हफ़्तों या दिनों में)। मैं दाँत साफ़ करती हूँ, अपने बाल मोड़ती हूँ, अपने नाख़ून

साफ़ करती हूँ और अपने होंठों के ऊपर के बालों को ब्लीच करने के लिए पेरोऑक्साइड लगाती हूँ। यह सब मैं आधे घंटे में कर लेती हूँ।

साढ़े नौ बजे: मैं अपना गाउन पहनती हूँ। एक हाथ में साबुन और दूसरे में टिन कैन, बालों की पिन्स, निकर्स, कर्लर्स और रुई लेकर मैं तेज़ी से गुसलख़ाने से निकलती हूँ। मेरे बाद जाने वाला मुझे सिंक में पड़े मेरे उन घुँघराले बालों को हटाने के लिए कहता है, जो मैं वहीं छोड़ आई थी।

दस बजे: ब्लैक-आउट स्क्रीन लगाने और शुभरात्रि कहने का समय है। कम से कम अगले पंद्रह मिनट तक घर में पलंगों के चरमराने और टूटे स्प्रिंग्स की आवाज़ें भरी होंगी और उसके बाद शांति होगी, बशर्ते हमारे ऊपर वाले पड़ोसी झगड़ा न करें।

साढ़े ग्यारह बजे: ग़ुसलख़ाने का दरवाज़ा चरमराता है। कमरे में थोड़ी सी रोशनी आती है। जूतों की आवाज़, एक बड़ा सा कोट, उसे पहने हुए आदमी से भी बड़ा...दुसे मि. कुगलर के ऑफ़िस से अपने रात के काम से लौट रहे हैं। मुझे दस मिनट तक उनके आगे-पीछे पैर घसीटकर चलने की, काग़ज़ की सरसराहट (अलमारी में खाना रखने) और बिस्तर लगाने की आवाज़ आती है। फिर वह आकृति ग़ायब हो जाती है और उसके बाद शौचालय से संदेहजनक आवाज़ें ही सुनाई पड़ती हैं।

लगभग तीन बजे: मुझे अपने बिस्तर के नीचे रखे डिब्बे यानी पॉटी का इस्तेमाल करने के लिए उठना पड़ेगा, उसके नीचे रबड़ का मैट लगा है, ताकि उसमें से कुछ बाहर न निकल जाए। उसका इस्तेमाल करते हुए मैं अपनी साँस रोककर रखती हूँ, क्योंकि उस समय किसी पहाड़ से गिरते झरने जैसी आवाज़ आती है। पॉटी अपनी जगह पर रख दी जाती है और सफ़ेद नाइट गाउन (उसे देखकर हर शाम मारगोट कहती है, 'ओह, वही भद्दी नाइटी!') पहने वह आकृति वापस बिस्तर पर चढ़ जाती है। एक शख़्स है, जो रात की आवाज़ें सुनते हुए लगभग पंद्रह मिनट तक जगा रहता है। कहीं नीचे सेंधमारों की आवाज़ें तो नहीं और फिर यह जानने के लिए कि बाक़ी लोग सो रहे हैं या अधजगे हैं, वह ऊपर, बग़ल के कमरे और मेरे कमरे के पलंगों की आवाज़ों पर कान लगाता है। यह मज़ेदार नहीं है, ख़ासकर जब बात परिवार के दुसे नामक सदस्य से जुड़ी हो। पहले साँस लेती मछली की आवाज़ आती है और ऐसा नौ या दस बार होता है। फिर होंठ नम किए जाते हैं। उसके बाद थोड़ी चपत मारने की आवाज़ आती है, फिर काफ़ी देर तक तकियों के उलटने-पलटने व उन्हें लगाने की आवाज़ें आती हैं। पाँच मिनट की ख़ामोशी के बाद वही क्रम तीन बार और दोहराया जाता है और शायद उसके बाद वे थोड़ी देर के लिए सो जाते हैं।

कई बार एक और चार बजे के बीच गोलियाँ चलती हैं। उसके होने से पहले मुझे पता नहीं होता, लेकिन मैं अचानक आदतवश अपने बिस्तर के पास खड़ी हो जाती हूँ। कई बार मैं (फ़्रेंच की अनियमित क्रियाओं या ऊपर के झगड़ों के) सपने देखने में इतनी डूबी होती हूँ कि

मुझे उसके पूरा होने पर ही पता चलता है कि गोलीबारी रुक गई है और मैं ख़ामोशी से अपने कमरे में रही हूँ। लेकिन आमतौर पर मैं उठ जाती हूँ। फिर मैं अपना तकिया व रूमाल उठाती हूँ, अपना ड्रेसिंग गाउन व चप्पल पहनकर बग़ल में पापा के कमरे में चली जाती हूँ, ठीक उसी तरह जिस तरह मारगोट ने जन्मदिन की कविता में लिखा था:

रात के अँधेरे में जब चलती हैं गोलियाँ
दरवाज़ा खुलता है और दिखते हैं
रूमाल, तकिया और सफ़ेद कपड़ों में एक आकृति...

बड़े बिस्तर पर पहुँचने के बाद, अगर गोलीबारी बहुत तेज़ न हो, तो सब ठीक हो जाता है।

पौने सात बजे: अलार्म बजता है, जो दिन-रात किसी भी समय तेज़ आवाज़ करता है, आप चाहें या न चाहें। चर्र... ढम... मिसेज़ फ़ॉन डी उसे बंद करती हैं। चीं की आवाज़ ... मि. फ़ॉन डी उठते हैं और पानी पीकर तेज़ी से बाथरूम की तरफ़ बढ़ते हैं।

सवा सात बजे: फिर दरवाज़े की आवाज़ आती है। दुसे बाथरूम जा सकते हैं। आख़िरकार मैं अकेली हूँ, मैं ब्लैकआउट स्क्रीन हटाती हूँ और अनेक्स में एक नया दिन शुरू होता है।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 5 अगस्त, 1943

प्रिय किटी,

आज हम दोपहर के भोजन-अवकाश की बात करते हैं।

साढ़े बारह बजे हैं। हम सभी राहत की साँस लेते हैं: मि. ड कॉक और संदेहात्मक अतीत वाले मि. फ़ॉन मारन खाने के लिए घर जा चुके हैं।

ऊपर आप मिसेज़ फ़ॉन डी के ख़ूबसूरत व एकमात्र कालीन पर वैक्यूम क्लीनर की आवाज़ सुन सकते हैं। मारगोट कुछ किताबें बग़ल में दबाकर 'स्लो लर्नर्स', जो कि दुसे हैं, की क्लास के लिए निकल पड़ती है। पिम अपने हमेशा के साथी डिकन्स के साथ कोने में बैठ जाते हैं इस उम्मीद में कि उन्हें थोड़ी ख़ामोशी और सुकून मिल सकेगा। माँ व्यस्त घरेलू महिला की मदद के लिए जल्दी से ऊपर जाती हैं और मैं बाथरूम व ख़ुद को एक साथ साफ़ करती हूँ।

पौने एक: एक-एक करके वे आते हैं: मि. गीज़ और फिर या तो मि. क्लेमन या मि. कुगलर और उनके बाद बेप और कई बार मीप भी।

एक: रेडियो के आसपास जमा सभी लोग ध्यान से बीबीसी सुनते हैं। यही वह समय होता है, जब अनेक्स परिवार के सदस्य एक-दूसरे को नहीं टोकते, क्योंकि मि. फ़ॉन डान भी वक्ता के साथ बहस नहीं कर सकते।

सवा एक: खाना बँटता है। नीचे वाले सभी लोगों को एक कप सूप और पुडिंग, अगर हो

तो, मिलती है। संतुष्ट मि. गीज़ दीवान पर बैठते हैं या फिर डेस्क पर टिककर अपने अख़बार व कप के साथ बैठते हैं और अक्सर उनके साथ बिल्ली भी होती है। अगर इन तीनों में से कोई एक न हो, तो वे अपना विरोध दर्ज कराने में संकोच नहीं करते। मि. क्लेमन शहर से ताज़ा ख़बर देते हैं और वे ख़बरों का बेहतरीन ज़रिया हैं। मि. कुगलर तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, दरवाज़े पर छोटी, लेकिन ठोस दस्तक देते हैं और हाथ ऐंठते हुए या ख़ुशी से उन्हें मलते हुए अंदर पहुँचते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे बुरे मूड में शांत हैं या फिर बातूनी हैं और अच्छे मूड में हैं।

पौने दो: सब लोग मेज से खड़े होते हैं और अपने काम में लग जाते हैं। मारगोट व माँ बर्तन धोने लगती हैं, मि. व मिसेज़ फ़ॉन डी दीवान की तरफ़, पीटर अटारी की ओर, पापा व दुसे भी अपने दीवान की ओर चल पड़ते हैं और ऐन अपना होमवर्क करने लगती है।

अगला घंटा दिन भर का सबसे शांत घंटा होता है; जब वे सभी सो जाते हैं, तो कोई व्यवधान नहीं होता। चेहरे से पता चल रहा है कि दुसे खाने का सपना देख रहे हैं। मैं उन्हें ज़्यादा देर तक नहीं देखती, क्योंकि वक़्त तेज़ी से बीत जाता है और चार बज जाते हैं। समय को लेकर सतर्क डॉ. दुसे हाथ में घड़ी लेकर खड़े होंगे, क्योंकि मैंने मेज साफ़ करने में एक मिनट की देरी कर दी है।

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 7 अगस्त, 1943

प्रिय किटी,

कुछ हफ़्ते पहले, मैंने एक कहानी लिखनी शुरू की, जो शुरू से आख़िर तक मेरी कल्पना थी। मुझे इतना मज़ा आया कि अब मैं काफ़ी कुछ लिख चुकी हूँ।

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 9 अगस्त, 1943

प्रिय किटी,

अब हम अनेक्स के आम दिन की बात जारी रखेंगे। हम खाना खा चुके हैं, इसलिए अब रात के खाने का समय है।

मि. फ़ॉन डान: उन्हें सबसे पहले खाना मिलता है और वे अपनी पसंद की चीज़ का बड़ा सा हिस्सा लेते हैं। अक्सर बातचीत में भाग लेते हैं और अपनी राय देने से बाज़ नहीं आते। उनकी बात पत्थर की लकीर है। अगर कोई दूसरा सुझाव देता है, तो मि. फ़ॉन डी उससे भिड़ सकते हैं। वे बिल्ली की तरह गुर्राते हैं... लेकिन बेहतर है कि वे ऐसा न करें। एक बार आपने देखा हो, तो आप दोबारा नहीं देखना चाहेंगे। उनकी राय सबसे अच्छी है, वे हर चीज़ के बारे में सबसे ज़्यादा

जानते हैं। माना कि उनका दिमाग़ अच्छा है, लेकिन काफ़ी अहंकार से भरा है।

मैडम: सबसे अच्छा यही है कि कुछ न कहा जाए। जिन दिनों उनका मूड ख़राब होता है, उन दिनों उनके चेहरे का पढ़ पाना मुश्किल होता है। अगर आप बातचीत का विश्लेषण करें, तो आप पाएँगे कि वे उसका विषय नहीं होती, बल्कि कसूरवार पक्ष होती हैं! एक ऐसा तथ्य, जिसे हर कोई नज़रअंदाज़ करना पसंद करता है। फिर भी, आप उन्हें भड़काने वाली कह सकते हैं। झगड़े को हवा देना उनके मुताबिक़ मज़ाक है। मिसेज़ फ्रैंक और ऐन के बीच क्लेश करवाना। मारगोट और मि. फ्रैंक के बीच ऐसा करना आसान नहीं है।

हम वापस मेज़ की तरफ़ चलते हैं। मिसेज़ फ़ॉन डी को लग सकता है कि उन्हें हमेशा पर्याप्त नहीं मिलता, लेकिन ऐसा है नहीं। सबसे अच्छे आलू, सबसे स्वादिष्ट निवाला, वहाँ मौजूद सबसे स्वादिष्ट चीज़ लेना मैडम का लक्ष्य होता है। बाक़ी अपनी बारी में जो चाहे लें, बशर्ते मुझे सबसे अच्छी चीज़ मिले। (ठीक यही आरोप वे ऐन फ्रैंक पर लगाती हैं।) उनका दूसरा नारा है: बात करते रहो। कोई सुनने वाला होना चाहिए, लेकिन इस बात की उन्हें परवाह नहीं होती कि सुनने वाले की दिलचस्पी उनकी बात में है भी या नहीं। वे तो सोचती हैं कि मिसेज़ फ़ॉन डान की बात में हर कोई दिलचस्पी लेगा।

नखरे से मुस्कराना, यह दिखाना कि आप सब कुछ जानते हैं, हर किसी को सलाह देना और उनकी माँ बनना - उससे निश्चय ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। लेकिन ध्यान से देखने पर अच्छा प्रभाव फीका पड़ने लगता है। एक, वे मेहनती हैं; दो, हँसमुख हैं; तीसरे, नख़रेबाज़ हैं - कभी-कभार एक प्यारा चेहरा भी। यही पेट्रोनेला फ़ॉन डान हैं।

भोजन करने वाले तीसरे व्यक्ति: बहुत कम बात करते हैं। युवा मि. फ़ॉन डान अक्सर चुप रहते हैं और शायद ही कभी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। जहाँ तक उनकी ख़ुराक का सवाल है, तो वह डैनाइडियन (ग्रीक माइथॉलोजी में डनॉस की बेटियों को अपने पिता के कहने पर अपने पतियों को मारने के बदले यह सज़ा मिली थी कि वे एक छेद वाले बर्तन में पानी डालती रहें) बर्तन की तरह है, जो कभी नहीं भरता। बड़ी मात्र में भोजन के बाद भी वे बहुत आराम से कह सकते हैं कि वे उससे दोगुना भी खा सकते थे।

चौथी शख़्स - मारगोट: चिड़िया की तरह खाती है और बिलकुल बात नहीं करती। वह सिर्फ़ फल-सब्ज़ियाँ खाती है। फ़ॉन डान परिवार की राय में वह 'बिगड़ी' हुई है। हमारी राय यह है कि उसका कारण 'बहुत कम व्यायाम और ताज़ा हवा न पाना' है।

उसके बग़ल में - माँ हैं: उनकी ख़ुराक अच्छी है और वे बातें भी करती हैं। मिसेज़ फ़ॉन डान की तरह उनका घरेलू महिला के तौर पर कोई प्रभाव नहीं है। दोनों के बीच क्या फ़र्क़ है? यही कि मिसेज़ फ़ॉन डी खाना बनाती हैं, जबकि माँ बर्तन धोती हैं और फ़र्नीचर को पॉलिश करती हैं।

छह और सात: मैं पापा और अपने बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगी। पापा मेज़ पर मौजूद

सबसे विनम्र व्यक्ति हैं। वे हमेशा ध्यान रखते हैं कि बाक़ी लोगों को पहले खाना मिले। उन्हें अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए; सबसे अच्छी चीज़ें बच्चों के लिए हैं। वे अच्छाई का साकार रूप हैं। उनकी बग़ल में अनेक्स की सबसे घबराई हुई इंसान बैठी है।

दुसे: अपना हिस्सा लो। खाने पर नज़र रखो, खाओ और बात मत करो। अगर कुछ कहना भी है, तो बस खाने की बात करो। उससे झगड़ा नहीं होता, लेकिन शेख़ी बघारने का मौका मिलता है। वे काफ़ी खाना खाते हैं और 'न' शब्द उनकी शब्दावली में नहीं है, चाहे खाना अच्छा हो या बुरा।

छाती तक पहुँचने वाली पतलून, लाल जैकेट, चमड़े की काली चप्पल और सींग की कमानी वाला चश्मा, अपनी मेज पर काम करते हुए वे ऐसे ही दिखते हैं, हमेशा पढ़ते हुए, लेकिन कभी आगे न बढ़ते हुए। बीच में दिन की झपकी, खाना और उनका प्रिय काम शौचालय जाना होता है। दिन में तीन, चार या पाँच बार शौचालय के दरवाज़े पर बड़ी मुश्किल से रोकने की कोशिश करते हुए कोई न कोई इंतज़ार कर रहा होता है। लेकिन दुसे को क्या परवाह है? रत्ती भर भी नहीं। सवा सात से साढ़े सात, साढ़े बारह से एक, दो से ढाई, चार से सवा चार, छह से सवा छह, साढ़े ग्यारह से बारह बजे तक। आप अपनी घड़ी मिला सकते हैं, ये उनका 'नियमित' समय है। वे कभी इससे नहीं डिगते और न ही बाहर से उनसे जल्दी आने की विनती करने या किसी मुसीबत की आशंका व्यक्त करने वाली आवाज़ों का उन पर कोई असर पड़ता है।

नौंवा व्यक्ति: हमारे अनेक्स परिवार का हिस्सा नहीं है, हालाँकि वह हमारे घर व हमारी मेज़ की साझीदार है। बेप अच्छी तरह खाती हैं। अपनी प्लेट साफ़ करती हैं और नखरे नहीं करतीं। बेप को ख़ुश करना आसान है और उससे हमें ख़ुशी मिलती है। उनका वर्णन इस तरह किया जा सकता है: ख़ुशमिज़ाज, नेकदिल, दयालु और मदद के लिए हमेशा तैयार।

मंगलवार, 10 अगस्त, 1943

प्रिय किटी,

खाने के दौरान एक नया ख़याल आया है कि मैं बाक़ी लोगों के बजाय ख़ुद से बात करूँ, जिससे दो फ़ायदे हैं। एक, वे ख़ुश रहेंगे कि उन्हें मेरी लगातार बकबक नहीं सुननी पड़ रही है और दूसरे, मुझे उनकी राय से कोई चिढ़ नहीं होगी। मुझे नहीं लगता कि मेरे ख़याल बेवकूफ़ी भरे हैं, लेकिन बाक़ियों को ऐसा लगता है, इसलिए उन्हें अपने तक रखना बेहतर है। मैं तब भी यही तरीक़ा अपनाती हूँ, जब मुझे एकसा कुछ खाना हो, जो मुझे सख़्त नापसंद हो। मैं उसे अपने सामने रखती हूँ, उसके स्वादिष्ट होने का दिखावा करती हूँ, उसकी तरफ़ देखने से बचती हूँ और मेरे समझने से पहले ही वह ख़त्म हो जाता है। सुबह का समय भी मेरे लिए अप्रिय होता है, जब मैं उठती हूँ। मैं बिस्तर से निकलती हूँ और ख़ुद से कहती हूँ, 'तुम जल्दी फिर से बिस्तर में घुस

जाओगी,' खिड़की तक जाती हूँ, ब्लैक-आउट स्क्रीन हटाती हूँ, दरार से थोड़ी सी ताज़ा हवा लेती हूँ और जग जाती हूँ। मैं बहुत तेज़ी से बिस्तर उठाती हूँ, ताकि मुझे फिर सोने का लालच न हो। क्या तुम जानती हो कि माँ इस तरह के काम को क्या कहती हैं? जीने की कला। क्या ये अजीब सी बात नहीं है?

हम भी पिछले हफ़्ते थोड़े असमंजस में रहे, क्योंकि हमारी प्यारी वेस्टरटोरेन घंटियों को युद्ध में इस्तेमाल के लिए पिघलाने ले जाया गया है। इस कारण हमें दिन या रात के सही समय का पता नहीं चल रहा। मुझे अब भी उम्मीद है कि वे टिन या ताँबे या किसी और चीज़ का इस्तेमाल करेंगे, ताकि यहाँ के लोगों को घड़ी की याद रह सके।

मैं ऊपर-नीचे कहीं भी जाती हूँ, तो सभी लोग मेरे पैरों की ओर प्रशंसा भरी दृष्टि से देखते हैं, जिन पर बहुत ही ख़ूबसूरत (ख़ासकर ऐसे समय में!) जूते हैं। मीप ने 27.50 गिल्डर्स में उन्हें ख़रीदा। गहरे जामुनी रंग के चमड़े की मध्यम आकार की एड़ी वाले जूते। मुझे लगा कि मैं जैसे डंडों पर चल रही थी और मैं काफ़ी लंबी लग रही थी।

कल मेरा बुरा दिन था। एक बड़ी सी सुई का भोथरा सिरा मेरे दाएँ अँगूठे में चुभ गया। नतीजतन, मारगोट को मेरी जगह आलू छीलने पड़े (अच्छे के साथ बुरे को भी अपनाना पड़ेगा) और मेरी लिखावट अजीब सी हो गई। उसके बाद मैं अलमारी के दरवाज़े से इतनी ज़ोर से टकराई कि मैं गिरते-गिरते बची और धमाचौकड़ी मचाने के लिए मुझे डाँट भी पड़ी। अपने माथे को धोने के लिए उन्होंने मुझे पानी तक नहीं चलाने दिया और अब मैं दाईं आँख के ऊपर बड़ा सा गूमड़ लेकर घूम रही हूँ। हालात और भी बदतर हो गए, जब मेरे दाएँ पैर की छोटी अँगुली वैक्यूम क्लीनर में फँस गई। उससे चोट लगी और ख़ून निकला, लेकिन मेरी बाक़ी तकलीफ़ें मुझे इतना परेशान कर रही थीं कि मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया, जो कि बहुत बड़ी मूर्खता थी। अब मेरी वही अँगुली संक्रमित हो गई है। मरहम-पट्टी और टेप के कारण मैं अपने ख़ूबसूरत जूते नहीं पहन पा रही हूँ।

दुसे ने फिर एक बार हमें ख़तरे में डाल दिया। उन्होंने मीप से मुसोलिनी विरोधी एक किताब मँगवाई, जो कि प्रतिबंधित है। रास्ते में उन्हें एक एसएस मोटरबाइक ने टक्कर मारी। गुस्से में आकर वे चिल्लाईं, 'अरे जानवरों!' और अपने रास्ते चली गईं। मैं यह सोचने की जुर्रत भी नहीं कर सकती कि अगर उन्हें मुख्यालय ले जाया जाता, तो क्या कुछ हो सकता था।

तुम्हारी, ऐन

हमारे छोटे से समुदाय में एक दैनिक काम: आलू छीलना!

एक व्यक्ति कुछ अख़बार लेने जाता है; दूसरा छुरियाँ (ज़ाहिर है, सबसे अच्छी अपने लिए रखता है); तीसरा, आलू लेने और चौथा जाता है पानी लेने।

मि. दुसे शुरू करते हैं। वे उन्हें बहुत अच्छी तरह भले न छीलें, लेकिन लगातार छीलते हैं और साथ ही दाएँ-बाएँ देखते हैं कि सभी उनकी तरह काम कर रहे हैं या नहीं। नहीं, वे नहीं करते!

'देखो, ऐन, मैं इस तरह छीलनी अपने हाथ में ले रहा हूँ और ऊपर से नीचे ले जाता हूँ! नहीं, ऐसे नहीं... ऐसे!'

'मेरे ख़याल से मेरा तरीक़ा आसान है, मि. दुसे,' मैं अंदाज़ से कहती हूँ।

'लेकिन यही सबसे अच्छा तरीक़ा है, ऐन। तुम ऐसा कर सकती हो। लेकिन अगर नहीं, तो अपने तरीक़े से करो।'

हम अपना काम करते रहते हैं। मैं कनखियों से दुसे की तरफ़ देखती हूँ। ख़यालों में डूबे हुए वे अपना सिर हिलाते (निस्संदेह मेरी किसी बात पर) हैं, लेकिन कुछ नहीं कहते।

मैं छीलने में लगी रहती हूँ। फिर मैं अपने दूसरी ओर बैठे पापा की तरफ़ देखती हूँ। उनके लिए आलू छीलना उबाऊ काम नहीं है, बल्कि सूक्ष्म काम है। जब वे पढ़ते हैं, तो उनके सिर के पीछे गहरी शिकन बन जाती है। लेकिन आलू, फली या कोई अन्य सब्ज़ी की तैयारी करते हुए वे उसमें पूरी तरह डूब जाते हैं। वे आलू छीलने वाला चेहरा लगा लेते हैं और उस ख़ास तरह की स्थिति में वे बेहतरीन ढंग से आलू छीलते हैं।

मैं काम करती रहती हूँ। मैं एक सेकेंड के लिए ऊपर देखती हूँ और मुझे बस उतने ही समय की ज़रूरत होती है। मिसेज़ फ़ॉन डी दुसे का ध्यान अपनी तरफ़ खींचने की कोशिश कर रही हैं। वे उनकी तरफ़ घूरती हैं, लेकिन दुसे गौर न करने का दिखावा करते हैं। वे पलकें झपकाती हैं, लेकिन दुसे छीलने में लगे रहते हैं। वे हँसती हैं, लेकिन दुसे फिर भी ऊपर नहीं देखते। फिर माँ भी हँसती हैं, लेकिन दुसे उनकी तरफ़ ध्यान नहीं देते। अपना लक्ष्य पाने में असफल रहने पर मिसेज़ फ़ॉन डी को अपने तरीक़े बदलने पड़ते हैं। थोड़ी देर ख़ामोशी रहती है, फिर वे कहती हैं, 'पुत्ती, आप ऐप्रन क्यों नहीं लगा लेते? वरना मुझे कल का पूरा दिन आपके सूट से धब्बे छुड़ाने में लगाना पड़ेगा!'

'मैं इसे गंदा नहीं कर रहा।'

फिर छोटी सी ख़ामोशी। 'पुत्ती, आप बैठ क्यों नहीं जाते?'

'मैं ऐसे ही ठीक हूँ!'

ख़ामोशी।

'पुत्ती, ध्यान से, *आपने छींटे उड़ा दिए!*'

'जानता हूँ, मम्मी, लेकिन मैं सावधानी से कर रहा हूँ।'

मिसेज़ फ़ॉन डी दूसरा विषय खोजती हैं। 'पुत्ती, ब्रिटिश आज कोई हवाई हमला क्यों नहीं कर रहे?'

'क्योंकि मौसम ख़राब है, केर्लि!'

'लेकिन कल तो बहुत अच्छा मौसम था और कल भी वे नहीं उड़ रहे थे।'

'इस विषय को छोड़ देते हैं।'

'क्यों? क्या कोई इंसान उस पर बात नहीं कर सकता या अपनी राय नहीं दे सकता?

'नहीं!'

'लेकिन क्यों?'

'अरे, चुप हो जाओ, *मम्मी!*'

'मि. फ्रैंक हमेशा अपनी पत्नी के सवालों का जवाब देते हैं।'

मि. फ़ॉन डी ख़ुद पर नियंत्रण करने की कोशिश कर रहे हैं। यह टिप्पणी उन पर उल्टा असर करती है, लेकिन मिसेज़ फ़ॉन डी हार मानने वाली नहीं हैं: 'ओह, कोई आक्रमण नहीं होगा!'

मि. फ़ॉन डी फक पड़ जाते हैं और जब मिसेज़ फ़ॉन डी देखती हैं तो वे लाल हो जाती हैं, लेकिन उन्हें डिगाना आसान नहीं: 'ब्रिटिश कुछ भी नहीं कर रहे!'

बम फूट जाता है। 'बस अब मुँह बंद करो, *इतना मत चिल्लाओ!*'

माँ मुश्किल से अपनी हँसी दबाती हैं और मैं बस सामने घूरती हूँ।

अगर दोनों के बीच कोई भयानक झगड़ा न हुआ हो, तो इस तरह के दृश्य लगभग रोज़ दोहराए जाते हैं। झगड़ा होने पर दोनों ही कुछ नहीं बोलते।

मैं थोड़े और आलू लेने के लिए अटारी पर जाती हूँ, जहाँ पीटर बिल्ली के पिस्सू निकालने में लगा है। वह ऊपर देखता है, बिल्ली गौर करती है और सीधे निकल जाती है। खिड़की के बाहर बारिश की नाली में।

पीटर गाली देता है; मैं हँसते हुए कमरे से बाहर निकल जाती हूँ।

अनेक्स में आज़ादी

साढ़े पाँच बजे: बेप का आना हमारी रात की आज़ादी का संकेत है। हर कोई सक्रिय हो जाता है। मैं बेप के साथ ऊपर जाती हूँ, जो अक्सर हमसे पहले अपनी पुडिंग ले लेती है। जैसे ही वे बैठती हैं, मिसेज़ फ़ॉन डी अपनी इच्छाएँ व्यक्त करने लगती हैं। उनकी सूची अक्सर इस तरह शुरू होती है, 'अरे, बेप वैसे मैं कुछ और चाहती...' बेप मुझे आँख मारती हैं। जो कोई भी ऊपर आता है, मिसेज़ फ़ॉन डी उसे अपनी इच्छाएँ बताने का कोई मौक़ा नहीं चूकती। शायद यही एक वजह होगी कि उनमें से कोई भी ऊपर नहीं जाना चाहता।

पौने छह बजे: बेप चली जाती हैं। मैं दो मंज़िल नीचे जाकर निरीक्षण करती हूँ। पहले रसोईघर, फिर प्राइवेट ऑफ़िस और फिर कोयला भंडार जाकर मूशी के लिए छोटा दरवाज़ा खोलती हूँ।

अपने लंबे निरीक्षण दौरे के बाद मैं मि. कुगलर के दफ़्तर पहुँचती हूँ। मि. फ़ॉन डान आज की डाक के लिए सभी दराज़ों व फ़ाइलों की छानबीन रहे हैं। पीटर बॉश और गोदाम की चाबी उठाता है; पिम टाइपराइटर्स ऊपर ले जाते हैं; मारगोट अपने दफ़्तर का काम करने के लिए कोई शांत कोना ढूँढ़ती है; मिसेज़ फ़ॉन डी गैस पर पानी की केतली रखती हैं; माँ आलुओं का बर्तन लेकर नीचे आती हैं; हम सभी अपना काम जानते हैं।

जल्दी ही पीटर गोदाम से वापस आ जाता है। उससे पहला प्रश्न यह पूछा जाता है कि क्या उसे ब्रेड लाना याद रहा। नहीं, उसे याद नहीं रहा। वह फ्रंट ऑफ़िस जाने वाले दरवाज़े के सामने ख़ुद को सिकोड़कर झुकता है, अपने हाथों व घुटनों के बल रेंगता हुआ स्टील कैबिनेट तक पहुँचता है, ब्रेड निकालता है और जाने लगता है। वह यही करना चाहता है, लेकिन इससे पहले कि वह जाने कि क्या हुआ है, मूशी उस पर से कूदकर डेस्क के नीचे बैठने चली जाती है।

पीटर अपने आसपास देखता है। वह रही बिल्ली! वह रेंगकर वापस कार्यालय में जाता है और बिल्ली की पूँछ पकड़ लेता है। मूशी गुर्राती है, पीटर गहरी साँस लेता है। उसने क्या हासिल किया? मूशी अब खिड़की पर बैठी ख़ुद को चाट रही है और पीटर के चंगुल से निकल भागने पर बहुत ख़ुश है। पीटर के पास ब्रेड दिखाकर उसे लुभाने के सिवा कोई और चारा नहीं है। मूशी लालच में आकर उसके पीछे आती है और दरवाज़ा बंद हो जाता है।

मैं दरवाज़े की दरार से पूरा दृश्य देखती हूँ।

मि. फ़ॉन डान गुस्से में दरवाज़ा धड़ाम से बंद करते हैं। मारगोट और मेरी नज़रें मिलती हैं और हम एक ही बात सोचते हैं: मि. कुगलर की किसी ग़लती के कारण वे आगबबूला हो रहे हैं और बग़ल में मौजूद केग कंपनी के बारे में बिलकुल भूल गए हैं।

गलियारे में क़दमों की आवाज़ आती है। दुसे अंदर आते हैं, अपने अंदाज़ में खिड़की की तरफ़ बढ़ते हैं, साँस खींचते हैं... खाँसते हैं, छींकते हैं और अपना गला साफ़ करते हैं। उनकी बदक़िस्मती से वह काली मिर्च थी। वे फ्रंट ऑफ़िस की तरफ़ बढ़ते हैं। परदे खुले हैं, जिसका मतलब है कि वे अपने काग़ज़ नहीं ले सकते। वे त्योरियाँ चढ़ाकर ग़ायब हो जाते हैं।

मारगोट और मैं फिर एक-दूसरे को देखते हैं। ‘उनकी प्रिया के लिए कल एक काग़ज़ कम होगा,’ मारगोट कहती है। मैं सहमति में सिर हिलाती हूँ।

सीढ़ियों पर हाथी की पदचाप जैसी आवाज़ आती है। ये दुसे हैं, अपनी पसंदीदा जगह पर सुकून पाने की कोशिश कर रहे हैं।

हम काम में लगे रहते हैं। खट, खट, खट... तीन बार दस्तक का मतलब है, रात के खाने का समय!

सोमवार, 23 अगस्त, 1943

जब घड़ी साढ़े आठ बजाती है!

मारगोट और माँ घबराई हुई हैं। 'श्श्श्श्... पापा। चुप रहिए, ऑटो। श्श्श्श्... पिम! साढ़े आठ हो गए हैं। यहाँ आइए, आप अब पानी नहीं चला सकते। धीरे चलिए!' पापा को गुसलख़ाने में कही जाने वाली बातों का एक नमूना है यह। साढ़े आठ बजने पर उन्हें बैठक में होना चाहिए। पानी नहीं चलाना, फ़्लश नहीं करना, कोई चहलक़दमी नहीं, किसी तरह की कोई आवाज़ नहीं। जब तक दफ़्तर के कर्मचारी नहीं आ जाते, तब तक आवाज़े आसानी से गोदाम तक पहुँचती हैं।

आठ बीस पर ऊपर का दरवाज़ा खुलता है और उसके बाद दरवाज़े पर तीन बार हल्की दस्तक दी जाती है... ऐन का दलिया। मैं सीढ़ियों पर चढ़कर अपना कटोरा लेने जाती हूँ।

नीचे सब कुछ बहुत तेज़ी से किया जाना है: मैं अपने बाल बनाती हूँ, पॉटी को रखती हूँ, बिस्तर को उसकी जगह पर वापस रखती हूँ। शांत! घड़ी साढ़े आठ बजा रही है! मिसेज़ फ़ॉन डी अपने जूते बदलती हैं और चप्पलें रगड़ते हुए कमरे में चलती हैं; मि. फ़ॉन डी भी - असली चार्ली चैपलिन। सब कुछ शांत है।

आदर्श परिवार का दृश्य अब अपने चरम पर पहुँच चुका है। मैं पढ़ना चाहती हूँ और मारगोट भी। पापा और माँ भी। पापा लटके हुए, चरमराते पलंग के किनारे पर (डिकेन्स और शब्दकोश को लेकर) बैठे हैं, जिस पर ढंग के गद्दे तक नही हैं। दो गोल तकिए एक-दूसरे पर रखे जा सकते हैं। 'मुझे इनकी ज़रूरत नहीं है,' वे सोचते हैं। 'मैं इनके बिना काम चला लूँगा!'

एक बार पढ़ना शुरु करने पर वे ऊपर नहीं देखते। वे बीच-बीच में हँसते हैं और माँ को भी कहानी पढ़ाने की कोशिश करते हैं।

'मेरे पास अभी समय नहीं है!'

वे निराश दिखते हैं, लेकिन फिर पढ़ना जारी रखते हैं। थोड़ी देर बाद किसी अच्छे अंश के आने पर वे फिर से कोशिश करते हैं: 'तुम्हें यह पढ़ना चाहिए, माँ!'

माँ फ़ोल्डिंग बेड पर बैठकर पढ़ रही होती हैं, सिलाई-बुनाई या फिर वह काम कर रही होती हैं, जो उनकी सूची में हो। अचानक उन्हें कोई ख़याल आता है,क्योंकि वे इतनी तेज़ी से बोलती हैं कि कहीं भूल न जाएँ, 'ऐन, याद रखना... मारगोट इसे लिख लो...'

थोड़ी देर बाद फिर सब कुछ शांत हो जाता है। मारगोट ज़ोर से अपनी किताब बंद करती है; पापा के माथे पर बल पड़ते हैं, उनकी भौंहें अजीब सा वक्र बनाती हैं और उनके सिर के पीछे तन्मयता की सिलवट फिर से बन जाती है और वे फिर से किताब में डूब जाते हैं। माँ मारगोट से बातचीत करने लगती है और मैं भी उत्सुकतावश सुनने लगती हूँ। पिम भी बातचीत में शामिल हो जाते हैं...नौ बज गए। नाश्ता!

शुक्रवार, 10 सितंबर, 1943

प्रिय किटी,

जब भी मैं तुम्हें लिखती हूँ, कुछ ख़ास हो चुका होता है, जो कि ख़ुशनुमा होने के बजाय बुरा ज़्यादा होता है। इस बार, हालाँकि कुछ अच्छा हो रहा है।

बुधवार, 8 सितंबर को हम सात बजे के समाचार सुन रहे थे कि हमने एक घोषणा सुनी: 'अब है, लड़ाई की अब तक की सबसे बेहतरीन ख़बर: इटली ने हथियार डाल दिए हैं।' इटली ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया है! इंग्लैंड से सवा आठ बजे से होने वाला डच प्रसारण इस समाचार के साथ शुरू हुआ: 'श्रोताओं, सवा घंटे पहले जैसे ही मैंने अपनी दैनिक रिपोर्ट लिखनी समाप्त की, हमें इटली के आत्मसमर्पण का अनोखा समाचार मिला। मैं आपको बताऊँ कि मैंने कभी इतनी ख़ुशी से अपने नोट्स कचरे के डिब्बे में नहीं डाले, जितने कि आज!'

'गॉड सेव द किंग,' अमेरिकी राष्ट्रगान और रूसी 'इंटरनेशनल' बजाए गए। हमेशा की तरह डच कार्यक्रम अत्यधिक आशावादी न होते हुए भी प्रेरक था।

ब्रिटिश नेपल्स में पहुँच चुके हैं। उत्तरी इटली पर जर्मनी का कब्ज़ा है। शुक्रवार, 3 सितंबर को, ब्रिटिश के इटली पहुँचने के दिन युद्धविराम पर हस्ताक्षर किए गए। बदॉलियो और इटली के राजा के छल को लेकर जर्मनों की चीख़-चिल्लाहट सभी अख़बारों में भरी है।

फिर भी बुरी ख़बर भी है। यह मि. क्लेमन के बारे में है। जैसा कि तुम जानती हो कि वे हम सबको बहुत अच्छे लगते हैं। वे इस तथ्य के बावजूद कि वे हमेशा बीमार व दर्द में रहते हैं और ज़्यादा नहीं खा सकते या फिर चल नहीं सकते, वे हमेशा ख़ुश रहते हैं और आश्चर्यजनक तौर पर बहादुर हैं। 'जब मि. क्लेमन किसी कमरे में पहुँचते हैं, तो सूरज चमकने लगता है,' हाल ही में माँ ने कहा और वे बिलकुल सही थीं। अब लगता है कि उन्हें पेट के जटिल से ऑपरेशन के लिए अस्पताल जाना होगा और कम से कम चार हफ़्ते वहाँ रहना होगा। तुम्हें उन्हें देखना चाहिए था, जब वे हमें विदा कह रहे थे। वे बहुत सामान्य बर्ताव कर रहे थे, जैसे कि किसी काम के लिए जा रहे हों।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 16 सितंबर, 1943

प्रिय किटी,

यहाँ अनेक्स में रिश्ते ख़राब होते जा रहे हैं। हम खाने के समय अपना मुँह खोलने की जुर्रत नहीं (सिर्फ़ खाना खाने के लिए अलावा) करते, क्योंकि हम चाहे जो कुछ कहें, कोई न कोई उसका विरोध करेगा या फिर उसे ग़लत ढंग से समझेगा। मि. वुश्कल कभी-कभार हमसे मिलने आते हैं। बदक़िस्मती से उनकी हालत अच्छी नहीं है। उनके परिवार के लिए भी यह आसान नहीं है, क्योंकि उनका रवैया ऐसा लगता है कि जैसे वे कह रहे हों, मुझे परवाह नहीं है, मैं ऐसे भी मरने

ही वाला हूँ! मैं सोचती हूँ कि यहाँ जब सभी लोग इतने संवेदनशील हैं, तो वुश्कल परिवार में क्या स्थिति होगी।

मैं बेचैनी और विषाद के लिए हर रोज़ वेलिरियान ले रही हूँ, लेकिन इससे मुझे कोई फ़ायदा नहीं हो रहा और मैं अगले दिन ज़्यादा दुखी महसूस करती हूँ। दिल खोलकर हँसना वेलिरियान की दस बूँदों से ज़्यादा मददगार होगा, लेकिन हम हँसना तो जैसे भूल चुके हैं। कई बार मैं डरती हूँ कि कहीं इस दुख से मेरा चेहरा ढीला न पड़ जाए और मेरे मुँह के कोने हमेशा के लिए लटक न जाएँ। बाक़ी लोगों का भी हाल बुरा है। हर कोई ठंड के आतंक से भयभीत है।

एक और तथ्य हमारे लिए उत्साहजनक नहीं है और वह यह कि गोदाम में काम करने वाले मि. फ़ॉन मारन अनेक्स को लेकर शंकालु हो रहे हैं। दिमाग़ वाला कोई भी इंसान अब तक इस बात पर गौर कर चुका होगा कि कई बार मीप कहती है कि वह लैब जा रही है, बेप फ़ाइल रूम में, मि. क्लेमन ओपेक्टा सप्लायज़ जा रहे हैं, जबकि मि. कुगलर का दावा है कि अनेक्स इस इमारत की नहीं है, बल्कि दूसरी इमारत की है।

हम परवाह भी नहीं करते कि मि. फ़ॉन मारन इस स्थिति के बारे में क्या सोचते हैं, लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता और वे काफ़ी उत्सुक क़िस्म के भी हैं। उन्हें इधर-उधर के बहानों से नहीं बहलाया जा सकता।

एक दिन मि. कुगलर ज़्यादा सावधानी बरतना चाहते थे, तो बारह बजकर बीस मिनट पर उन्होंने कोट पहना और नज़दीकी दवा की दुकान पर गए। पाँच मिनट से भी कम समय बाद वे लौटे और चोरों की तरह चुपके से हमसे मिलने आए। सवा एक बजे वे चलने लगे, लेकिन बेप उन्हें उतरते हुए मिल गईं और उन्हें चेतावनी दी कि फ़ॉन मारन ऑफ़िस में हैं। मि. कुगलर वापस लौटे और डेढ़ बजे तक हमारे पास रहे। फिर उन्होंने जूते उतारे और जुराब पहने हुए (जुकाम होने के बावजूद) आगे वाली जगह से दूसरी तरफ़ की सीढ़ियों से चरमराहट की आवाज़ से बचने के लिए एक-एक क़दम करके उतरे। सीढ़ियों से उतरने में उन्हें पंद्रह मिनट लगे, लेकिन वे बाहर से घुसते हुए कम से कम सुरक्षित रूप से ऑफ़िस में पहुँच गए।

इस दौरान मेप फ़ॉन मारन से छुटकारा पा चुकी थी और मि. कुगलर को लेने अनेक्स पहुँची। लेकिन वे पहले ही निकल चुके थे और उस समय सीढ़ियों पर पंजों के बल चल रहे थे। मैनेजर को बाहर जूते पहनते देखकर वहाँ से गुज़रने वालों ने क्या सोचा होगा? हाँ, उन्होंने केवल जुराब पहने हुए थे!

तुम्हारी, ऐन

बुधवार,29 सितंबर, 1943

प्रिय किटी,

मिसेज़ फ़ॉन डान का जन्मदिन है। चीज़, मांस और ब्रेड के लिए एक-एक राशन स्टैम्प के अलावा उन्हें हमसे जैम का डिब्बा मिला। उनके पति, दुसे और ऑफ़िस के कर्मचारियों ने उन्हें फूलों व खाने के अलावा कुछ और नहीं दिया। हम ऐसे ही समय में जी रहे हैं!

पिछले हफ़्ते बेप को घबराहट का दौरा पड़ा, क्योंकि उनके पास बहुत काम थे। दिन भर में दस बार लोग उन्हें किसी न किसी काम से बाहर भेज रहे थे और हर बार उन्हें तुरंत जाने को कहते या फिर काम के ग़लत हो जाने पर उन्हें फिर से जाने को कहते। आपको लगेगा कि बेप के पास करने को दफ़्तर का सामान्य काम है, लेकिन मि. क्लेमन बीमार हैं, मीप जुकाम के कारण घर पर है और ख़ुद उनके टखने में मोच आ गई है, बॉयफ्रेंड से जुड़ी परेशानियाँ हैं और चिड़चिड़े पिता हैं, ऐसे में उनके धीरज का जवाब दे जाना स्वाभाविक है। हमने उन्हें दिलासा दिया और कहा कि अगर वे एक-दो बार मना करेंगी और कहेंगी कि उनके पास समय नहीं है, तो ख़रीदारी की सूची अपने आप छोटी हो जाएगी।

शनिवार को इतना बड़ा नाटक हुआ, जैसा यहाँ पहले कभी नहीं देखा गया। फ़ॉन मारन पर बातचीत के साथ शुरुआत हुई और आम बहस और आँसुओं के साथ ख़त्म हुई। दुसे ने माँ से शिकायत की कि उनके साथ कोढ़ियों जैसा बर्ताव किया जा रहा है, उनके साथ किसी का रवैया दोस्ताना नहीं है और उन्होंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया है कि उनके साथ ऐसा व्यवहार हो। इसके बाद काफ़ी ख़ुशामदी बातें हुईं, ख़ुशक़िस्मती से माँ इस बार झाँसे में नहीं आईं। उन्होंने दुसे से कहा कि हम सभी उनसे निराश हुए हैं और वे कई बार हमारी झुँझलाहट का कारण बने हैं। दुसे ने लम्बे-चौड़े वादे किए, लेकिन जैसा कि अक्सर होता है, हमें उनमें कोई भी सच्चाई नहीं दिखाई दी।

फ़ॉन डान परिवार में भी कुछ चल रहा है, मैं देख सकती हूँ! पापा बहुत ग़ुस्से में हैं, क्योंकि वे हमें धोखा दे रहे हैं: वे मांस और अन्य चीज़ें रख रहे हैं। अब क्या धमाका होने वाला है? काश, मैं इस सबमें शामिल न होती! काश, मैं इस जगह को छोड़कर कहीं जा सकती! वे हमें पागल कर रहे हैं!

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 17 अक्टूबर, 1943

प्रिय किटी,

शुक्र है कि मि. क्लेमन वापस आ गए हैं! वे थोड़े मुरझाए लगते हैं, लेकिन इसके बावजूद वे ख़ुशी-ख़ुशी मि. फ़ॉन डान के लिए कुछ कपड़े बेचने चल दिए। अजीब बात यह है कि मि. फ़ॉन डान के पैसे ख़त्म हो गए हैं। उनके आख़िरी सौ गिल्डर्स गोदाम में खो गए, जो अब भी हमारे लिए मुसीबत का कारण हैं: सभी हैरान हैं कि सोमवार की सुबह आख़िर सौ गिल्डर्स

गोदाम में कहाँ ग़ायब हो सकते हैं। सभी शक से भरे हैं। इस बीच सौ गिल्डर्स चोरी हो गए हैं। चोर कौन है?

मैं धन की कमी की बात कर रही थी। मिसेज़ फ़ॉन डी के पास कपड़ों, कोटों और जूतों का ढेर है, लेकिन उनमें से किसी के भी बगैर उनका गुज़ारा नहीं। मि. फ़ॉन डी के सूट को ले जा पाना मुश्किल है और पीटर की बाइक को भी बेचने के लिए रखा गया था, लेकिन वह वापस आ गई है, क्योंकि वह किसी को नहीं चाहिए। लेकिन कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती। मिसेज़ फ़ॉन डी को अपने फर के कोट से अलग होना पड़ेगा। उनकी राय में कंपनी को हमारे पालन-पोषण का ख़र्चा उठाना चाहिए, लेकिन यह बेतुकी बात है। अभी उनके बीच इसे लेकर झगड़ा हुआ है और अब वे फिर से मेल-मिलाप के 'अरे, मेरे प्यारे पुत्ती' और 'प्रिय केर्ली' के दौर में पहुँच चुके हैं।

पिछले महीने इस सम्मानजनक घर को जिस अभद्रता को झेलना पड़ा है, उससे मेरा दिमाग़ भन्ना गया है। पापा होंठ भींचकर घूमते हैं और जब भी उन्हें अपना नाम सुनाई पड़ता है, वे चौंककर देखते हैं, जैसे कि उन्हें किसी नाजुक परेशानी को सुलझाने के लिए बुला लिया जाएगा। माँ इतनी उत्तेजित हो गई हैं कि उनके गाल लाल हो गए हैं, मारगोट सिरदर्द की शिकायत करती है, दुसे सो नहीं पाते, मिसेज़ फ़ॉन डी दिन भर तिलमिलाती रहती हैं और मैं पूरी तरह से पागल हो गई हूँ। सच बताऊँ तो कभी मैं भूल जाती हूँ कि हम किसके विरोध में हैं और किसके नहीं। इन बातों से ध्यान हटाने का एकमात्र उपाय पढ़ाई करना है और पिछले कुछ समय से मैं वह काफ़ी कर रही हूँ।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 29 अक्टूबर, 1943

प्रिय किटी,

मि. क्लेमन फिर से अनुपस्थित हैं; उनका पेट उन्हें चैन से नहीं जीने देता। उन्हें यह तक नहीं पता कि खून का बहना बंद हुआ भी है या नहीं। वे हमें यह बताने आए कि उन्हें अच्छा महसूस नहीं हो रहा और वे घर जा रहे हैं। पहली बार वे वाक़ई उदास लगे।

मि. और मिसेज़ फ़ॉन डी के बीच ज़्यादा भयंकर झगड़े हो रहे हैं। कारण सीधा-सादा है: उनके पास पैसा नहीं है। वे मि. फ़ॉन डी का एक ओवरकोट और सूट बेचना चाहते थे, लेकिन उन्हें कोई ख़रीदार नहीं मिल पाया। उन्होंने क़ीमत कुछ ज़्यादा ही रखी थी।

कुछ समय पहले मि. क्लेमन फ़र का व्यापार करने वाले अपने एक परिचित के बारे में बात कर रहे थे। इससे मि. फ़ॉन डी को अपनी पत्नी का फ़र कोट बेचने का ख़याल आया। वह ख़रगोश के चमड़े से बना है और उनके पास यह सत्रह साल से है। मिसेज़ फ़ॉन डी को उसके

लिए 325 गिल्डर्स मिले, जो कि काफ़ी बड़ी रकम थी। वे उसे अपने पास रखना चाहती थीं, ताकि युद्ध के बाद अपने लिए नए कपड़े ले सकें। मि. फ़ॉन डी को उन्हें यह समझाने में काफ़ी समय लगा कि घर चलाने के लिए उस पैसे की उन्हें कितनी ज़रूरत थी।

तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि कितनी हाय-तौबा मची, चीख़ना-चिल्लाना, पैर पटकना और अपशब्द। कितना भयावह था। मेरा परिवार साँस रोक सीढ़ियों पर नीचे खड़ा था कि कहीं उनमें से किसी को अलग करने की नौबत न आ जाए। पूरी कहा-सुनी, आँसुओं और तनाव से मेरे लिए इतनी मुश्किल हो जाती है कि मैं रोते हुए बिस्तर पर पड़ती हूँ और शुक्र मनाती हूँ कि मेरे पास अपने लिए आधा घंटा है।

मैं ठीक हूँ, बस मेरी भूख जैसे मर गई है। मैं सुनती रहती हूँ: 'तुम कितनी ख़राब लग रही हो!' मैं यह ज़रूर स्वीकारूँगी कि वे मुझे चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए सब कुछ कर रहे हैं: वे मुझे डेक्सट्रोज़, कॉड लिवर ऑयल, ब्रूअर्स यीस्ट और कैल्शियम देते हैं। मेरी बेचैनी मेरे क़ाबू से बाहर हो जाती है, ख़ासकर रविवार को जब मैं बहुत बुरा महसूस करती हूँ। माहौल दमघोंटू, सुस्त और भारी हो जाता है। बाहर आप किसी परिंदे तक की आवाज़ नहीं सुनते और घर पर मौत की सी ख़ामोशी छाई होती है, जो मुझसे ऐसे चिपक जाती है कि मुझे लगता है कि वह मुझे पाताल की गहरी दुनिया में घसीटकर ले जाएगी। ऐसे समय में मेरे लिए पापा, माँ और मारगोट के कोई मायने नहीं रह जाते। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमती हूँ, सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाती हूँ और उस गाने वाली चिड़िया जैसा महसूस करती हूँ जिसके पंख नोच दिए गए हों और जो अपने अँधेरे पिंजरे के सींखचों पर टकराती हो। 'मुझे बाहर ले चलो, जहाँ ताज़ा हवा और हँसी हो!' मेरे अंदर से कोई आवाज़ चीख़ती है। मैं अब जवाब नहीं देती, बस दीवान पर लेट जाती हूँ। नींद से वह ख़ामोशी और भयानक डर तेज़ी से चले जाते हैं, समय बीतने में मदद मिलती है, क्योंकि उसे मार पाना नामुमकिन है।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 3 नवंबर, 1943

प्रिय किटी,

फ़ालतू चीज़ों से हमारा दिमाग़ हटाने और उसे विकसित करने के लिए पापा ने एक पत्रचार स्कूल से हमारे लिए पुस्तक-सूची मँगवाई। मारगोट ने तीन बार उसे गौर से देखा, लेकिन उसे अपनी पसंद और अपने बजट में कुछ भी नहीं मिला। पापा आसानी से संतुष्ट हो गए और और उन्होंने 'प्रारंभिक लैटिन' में नमूने के तौर पर एक अध्याय मँगवाने का फ़ैसला किया। जल्दी ही यह काम हो गया। अध्याय आ गया, मारगोट उत्साहपूर्वक काम में जुट गई और उसने पाठ्यक्रम लेने का फ़ैसला किया। मेरे लिए काफ़ी मुश्किल है, हालाँकि मैं सचमुच लैटिन सीखना चाहती

हूँ।

मुझे भी नया काम देने के लिए पापा ने मि. क्लेमन से बच्चों की *बाइबल* लाने को कहा, ताकि मैं आख़िरकार न्यू टेस्टामेंट के बारे में कुछ सीख सकूँ।

'क्या आप ऐन को ऑनेका पर *बाइबल* देने वाले हैं?' मारगोट ने कुछ बेचैनी से पूछा।

'हाँ... वैसे सेंट निकोलस डे बेहतर रहेगा,' पापा ने जवाब दिया।

ईसा मसीह और ऑनेका का आपस में कोई मेल नहीं।

वैक्यूम क्लीनर के टूट जाने के कारण मुझे पुराने ब्रश से कालीन को साफ़ करना पड़ता है। खिड़की बंद है, बत्ती जली है, अंगीठी जल रही है और मैं कालीन को ब्रश से साफ़ कर रही हूँ। 'यह तो निश्चित तौर पर समस्या है,' पहली बार मैंने सोचा। 'इससे तो सबको शिकायतें होंगी।' मैं सही थी: कमरे में घूमते धूल के गुबार से माँ को सिरदर्द हो गया, मारगोट के नए लैटिन शब्दकोश पर धूल की मोटी परत जम गई और पिम की शिकायत थी कि फ़र्श वैसे भी कुछ अलग नहीं लग रहा था। मेरे छोटे से कष्ट के लिए छोटा सा आभार।

हमने फ़ैसला किया है कि हम अब रविवार सुबह साढ़े पाँच के बजाय साढ़े सात बजे अंगीठी जलाएँगे। मेरे ख़याल से यह जोखिम भरा है। पड़ोसी हमारी चिमनी से निकलते धुएँ के बारे में क्या सोचेंगे?

ऐसा ही परदों के मामले में भी है। जब से हम छिपे हैं, तब से ही परदे खिड़कियों पर लगे हुए हैं। कई बार महिलाओं या पुरुषों में से कोई बाहर झाँकने के लालच से नहीं बच पाता और नतीजतन झिड़कियों की झड़ी लग जाती है। प्रतिक्रिया होती है, 'कोई गौर नहीं करेगा।' असावधानी का कोई भी काम इसी तरह शुरू और ख़त्म होता है। कोई नहीं गौर करेगा, कोई नहीं सुनेगा, कोई ज़रा सा भी ध्यान नहीं देगा। कहना आसान है, लेकिन क्या यह सच है?

इस समय तूफ़ानी झगड़े शांत हो गए हैं; दुसे और फ़ॉन डान परिवार अब भी टकराव की स्थिति में हैं। मिसेज़ फ़ॉन डी के बारे में बात करते हुए दुसे उन्हें 'वह बूढ़ी चमगादड़' या 'वह बेवकूफ़ बुढ़िया' कहकर पुकारते हैं और मिसेज़ फ़ॉन डी हमारे विद्वान सज्जन को 'बूढ़ी नौकरानी' या 'चिड़चिड़ा पागल कुँवारा', आदि कहती हैं।

कौन किस पर इल्ज़ाम लगा रहा है!

तुम्हारी, ऐन

सोमवार शाम, 8 नवंबर, 1943

प्रिय किटी,

अगर तुम मेरे सभी पत्र एक बार में पढ़ोगी, तो तुम देखोगी कि वे अलग-अलग मनोभावों में लिखे गए हैं। मुझे इस बात से चिढ़ होती है कि मैं यहाँ अनेक्स में मनोभावों पर इतनी निर्भर हूँ,

लेकिन मैं इसमें अकेली नहीं हूँ और हम सभी इससे प्रभावित हैं। अगर मैं किसी किताब में डूबी हुई हूँ, तो बाक़ी लोगों के साथ मिलने-जुलने से पहले मुझे अपने विचारों को फिर से व्यवस्थित करना पड़ता है, वरना उन्हें लग सकता है कि मैं अजीब हूँ। जैसा कि तुम देख सकती हो, मैं अभी अवसाद में हूँ। मैं तुम्हें नहीं बता सकती कि वह किस चीज़ से शुरु हुआ, लेकिन मुझे लगता है कि यह मेरी कायरता से जन्मा है, जिससे हर मोड़ पर मेरा सामना होता है। आज शाम जब बेप यहीं थी, तो दरवाज़े की घंटी काफ़ी देर तक और ज़ोर से बजी। मैं तुरंत सफ़ेद पड़ गई, मेरे पेट में मरोड़ उठने लगी और मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा और इसका कारण यही था कि मैं डरी हुई थी।

रात को बिस्तर में मैं ख़ुद को पापा और माँ के बिना अकेले एक तहख़ाने में देखती हूँ। या फिर मैं सड़कों पर घूम रही होती हूँ या फिर देखती हूँ कि अनेक्स में आग लग गई है या फिर आधी रात को हमें ले जाने के लिए लोग आए हैं और मैं हताश होकर अपने बिस्तर के नीचे रेंगकर जाती हूँ। मैं सब कुछ ऐसे देखती हूँ जैसे कि वह सचमुच हो रहा है। और यह सोचना कि ऐसा हो भी सकता है!

मीप अक्सर कहती हैं कि उन्हें हमसे जलन होती है, क्योंकि यहाँ काफ़ी सुकून व शांति है। हो सकता है कि यह सच हो, लेकिन ज़ाहिर है कि वे हमारे डर के बारे में नहीं सोच रही हैं।

मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि दुनिया कभी हमारे लिए सामान्य होगी। मैं 'युद्ध के बाद' की बात करती हूँ, लेकिन लगता है कि जैसे मैं हवाई किले की बात कर रही हूँ, ऐसा कुछ जो कभी सच नहीं हो सकता।

मैं अनेक्स में हम आठों को डरावने काले बादलों से घिरे नीले आसमान के टुकड़े के रूप में देखती हूँ। पूरी तरह से गोल इस जगह पर हम अभी तक सुरक्षित हैं, लेकिन बादल हमारी तरफ़ बढ़ रहे हैं और हमारे व आने वाले ख़तरे के बीच का दायरा ज़्यादा कसता जा रहा है। हम अँधेरे व ख़तरे से घिरे हुए हैं और बाहर जाने का रास्ता खोजने की हताशा में हम एक-दूसरे से टकराते हैं। हम नीचे होने वाली लड़ाई और ऊपर मौजूद शांति व सुंदरता को देखते हैं। इस बीच, हमें काले बादलों का झुंड काट देता है और इस कारण हम न ऊपर जा सकते हैं और न नीचे। वह हमारे सामने अभेद्य दीवार की तरह मँडरा रहा है, हमें कुचलने की कोशिश कर रहा है, लेकिन अभी तक कर नहीं पाया है। मैं सिर्फ़ चिल्लाकर यही विनती कर सकती हूँ, 'भँवर, खुल जाओ और हमें बाहर निकलने दो!'

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 11 नवंबर, 1943

प्रिय किटी,

इस हिस्से के लिए मेरे पास विशेष शीर्षक है:

मेरे प्रिय पेन की याद में

मेरा फ़ाउंटेन पेन हमेशा से मेरी क़ीमती चीज़ों में से एक था; मेरे लिए वह काफ़ी मूल्यवान था, ख़ासकर इसलिए कि उसकी निब बहुत मोटी थी और मैं मोटी निब से अच्छी तरह लिख सकती हूँ। उसकी ज़िंदगी काफ़ी लंबी व दिलचस्प थी, जिसके बारे में मैं बताऊँगी।

जब मैं नौ साल की थी, तो मेरा फ़ाउंटेन पेन (रुई में पैक होकर) आचेन से 'बिना किसी वाणिज्यिक मूल्य के नमूने' के रूप में आया, जहाँ मेरी नानी (दयालु दानी) रहती थी। मैं फ़्लू से पीड़ित होकर बिस्तर पर पड़ी थी, फ़रवरी की हवा हमारे घर के आसपास चीख़ रही थी। यह शानदार फ़ाउंटेन पेन चमड़े के लाल डिब्बे में था और पहला मौक़ा मिलते ही इसे मैंने अपनी सहेली को दिखाया। मैं, ऐन फ़्रैंक, इस फ़ाउंटेन पेन की मालिक थी।

दस साल की होने पर मुझे पेन को स्कूल ले जाने की अनुमति मिल गई और मुझे हैरानी तब हुई जब अध्यापक ने मुझे उससे लिखने भी दिया। ग्यारह साल की होने पर मेरे इस ख़ज़ाने को दूर रख दिया गया, क्योंकि मेरी छठी कक्षा के शिक्षक हमें केवल स्कूल के पेन और स्याही का इस्तेमाल करने की इजाज़त देते थे। बारह की होने पर मैं यहूदी स्कूल चली गई और इस ख़ास मौके पर मेरे फ़ाउंटेन पेन को नया डिब्बा मिला। उसमें न सिर्फ़ पेंसिल रखने की जगह थी, बल्कि उसमें ज़िप लगी थी, जो कि काफ़ी प्रभावशाली थी। जब मैं तेरह साल की हुई, तो फ़ाउंटेन पेन मेरे साथ अनेक्स में आया और हमने मिलकर अनगिनत डायरियाँ और रचनाएँ लिखीं। मैं चौदह साल की हुई, तो मेरा फ़ाउंटेन पेन अपनी ज़िंदगी के आख़िरी साल के मज़े ले रहा था, जब...

शुक्रवार पाँच बजे के बाद का समय था। मैं अपने कमरे से बाहर निकली और कुछ लिखने के लिए मेज़ पर बैठने ही वाली थी कि लैटिन का अभ्यास करने आए मारगोट व पापा के लिए जगह बनाने के लिए मुझे एक तरफ़ धकेला गया। फ़ाउंटेन पेन मेज़ पर बिना इस्तेमाल के पड़ा रहा, जबकि आह भरती उसकी मालकिन को मेज़ के छोटे से किनारे से काम चलाना पड़ा, जहाँ बैठकर वह बीन्स को पोंछने लगी। हम इसी तरह से बीन्स से फफूँद साफ़ करके उसे उनके मूल स्वरूप में वापस लाते हैं। पौने छह बजे मैंने फ़र्श साफ़ किया, कचरे व सड़ी बीन्स को एक अख़बार में डाला और उन्हें अंगीठी में फेंक दिया। बड़ी सी लपट उठी और मैंने सोचा कि अपनी आख़िरी साँस लेती अंगीठी में चमत्कारपूर्ण ढंग से फिर से जान आ गई।

फिर से शांति छा गई। लैटिन के विद्यार्थी जा चुके थे और मैं फिर से अपने काम में लग गई। लेकिन मेरे बहुत खोजने के बाद भी मुझे अपना फ़ाउंटेन पेन कहीं नज़र नहीं आया। मैंने फिर से देखा। मारगोट ने ढूँढ़ा, माँ ने तलाश किया और पापा ने भी देखा। लेकिन वह ग़ायब हो चुका था।

'शायद वह अंगीठी में चला गया होगा, बीन्स के साथ!' मारगोट ने कहा।

‘नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!’ मैंने जवाब दिया।

लेकिन उस शाम जब मेरा पेन मुझे नहीं मिला, तो मैंने मान लिया कि वह जल चुका होगा, क्योंकि सेललॉयड काफ़ी ज्वलनशील होता है। हमारे सबसे भयानक डर की पुष्टि अगले दिन तब हो गई, जब पापा सुबह अंगीठी को ख़ाली करने गए और उन्हें राख में उसकी चिमटी दिखाई दी, जिससे उसे जेब में रखा जाता था। सुनहरी निब का कोई निशान तक नहीं बचा था। ‘वह पिघलकर पत्थर बन गया होगा,’ पापा ने अंदाज़ा लगाया। मेरे पास एक छोटी सी सांत्वना यही बची कि मेरे फ़ाउंटेन पेन को दफ़ना दिया गया था, जैसे कि मैं किसी दिन दफ़ना दी जाऊँगी!

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 17 नवंबर 1943

प्रिय किटी,

हाल की घटनाओं ने घर की बुनियाद हिला दी है। बेप के यहाँ डिप्थीरिया फैलने के कारण उन्हें छह हफ़्ते तक हमारे संपर्क में आने की अनुमति नहीं है। उनके बिना खाना पकाना और ख़रीदारी करना बहुत मुश्किल होगा, उनके साथ की कमी भी हमें खलेगी। मि. क्लेमन अब भी बिस्तर में हैं और तीन सप्ताह से उन्होंने दलिए के अलावा कुछ ओर नहीं खाया है। मि. कुगलर काम में डूबे हुए हैं।

मारगोट अपने लैटिन सबक़ एक अध्यापक को भेजती है, जो उन्हें सुधार कर वापस भेजते हैं। मारगोट ने बेप के नाम से पंजीकरण करवा रखा है। अध्यापक बहुत अच्छे और मज़ाकिया भी हैं। मैं कह सकती हूँ कि इतनी चतुर शिष्या पाकर वे भी ख़ुश होंगे।

दुसे बेचैन हैं और हमें उसका कारण नहीं पता है। इसकी शुरुआत ऊपर उनके कुछ न कहने से हुई; उन्होंने मि. या मिसेज़ फ़ॉन डान से कोई बातचीत नहीं की। हम सबने इस पर गौर किया। कुछ दिन तक ऐसा ही चलता रहा और फिर माँ ने एक दिन उन्हें चेतावनी दी कि किस तरह मिसेज़ फ़ॉन डी उनकी ज़िंदगी को तकलीफ़देह बना सकती हैं। दुसे ने कहा कि मि. फ़ॉन डान ने पहले चुप्पी ओढ़ी और वे उसे तोड़ना नहीं चाहते।

मैं तुम्हें बता दूँ कि कल तारीख़ 16 नवंबर थी, अनेक्स में रहने की उनकी पहली वर्षगाँठ। इस मौक़े पर माँ को एक पौधा मिला, लेकिन मिसेज़ फ़ॉन डान को कुछ भी नहीं मिला, जो कई हफ़्ते से इस तारीख़ का ज़िक्र कर रही थीं और जता रही थीं कि उन्हें लगा कि दुसे उन्हें रात की दावत देंगे। इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर हमें इस बात के लिए धन्यवाद देने के बजाय कि हमने निःस्वार्थ उन्हें अपने यहाँ रखा, पहली बार था कि उन्होंने एक शब्द तक नहीं कहा। सोलह की सुबह जब मैंने उनसे पूछा कि मैं उन्हें बधाई दूँ या सांत्वना, तो उनका कहना था कि कुछ

भी चलेगा। शांति स्थापित कराने की भूमिका निभाने वाली माँ भी इस मामले में कुछ नहीं कर सकीं और स्थिति बेनतीजा रही।

मैं बिना किसी अतिशयोक्ति के कह सकती हूँ कि दुसे का कोई पेंच ढीला ज़रूर है। हम आपस में हँसते हैं, क्योंकि उनकी कोई स्मृति, कोई निश्चित राय और व्यावहारिक बुद्ध नहीं है। उन्होंने कई बार उसी समय सुने समाचार बताकर हमें हँसाया है, क्योंकि हम तक पहुँचते-पहुँचते संदेश अस्पष्ट हो जाता है। इसके अलावा, वे हर झिड़की या आरोप के जवाब में कई वादे करते हैं, जिन्हें वे कभी पूरा नहीं कर पाते।

"इस आदमी का हौसला तो बड़ा है
लेकिन उसकी हरकतें बहुत छोटी हैं!"

तुम्हारी, ऐन

शनिवार, 27 नवंबर, 1943

प्रिय किटी,

कल रात, जब मैं सोने वाली थी, तो हनेली अचानक मेरे सामने आ गई।

मैंने उसे देखा, चीथड़े पहने हुए, उसका चेहरा दुबला-पतला और थका हुआ था। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसने इतने दुःख और तिरस्कार के साथ मुझे देखा कि मैं उनमें यह संदेश पढ़ सकती थी: 'ओह, ऐन! तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया? मेरी मदद करो, मुझे इस नर्क से बचाओ!'

मैं उसकी मदद नहीं कर सकती। मैं सिर्फ़ खड़े होकर देख सकती हूँ, जबकि बाक़ी लोग कष्ट झेलकर मर रहे हैं। मैं बस ईश्वर से इतनी प्रार्थना ही कर सकती हूँ कि वे उसे हमारे पास वापस ले आएँ। मैंने और किसी को नहीं, सिर्फ़ हनेली को देखा और मैं समझ सकती हूँ कि क्यों। मैंने उसे ग़लत समझा, मैं इतनी परिपक्व नहीं थी कि समझ सकूँ कि उसके लिए यह कितना मुश्किल था। वह अपनी दोस्त के प्रति समर्पित थी और उसे लगा होगा कि मैं उसे उससे दूर ले जा रही हूँ। बेचारी को कितना बुरा लगा होगा! मैं जानती हूँ, क्योंकि मैं अपने भीतर इसे महसूस कर सकती हूँ! मुझे कभी-कभार यह बात एक झटके में समझ आती थी, लेकिन फिर मैं स्वार्थी होकर अपनी समस्याओं और ख़ुशियों में खो जाती थी।

उसके साथ वैसा बर्ताव करना बहुत घटिया बात थी और अब वह मेरी तरफ़ मुरझाया चेहरा लिए हुए विनती करती नज़रों से इतनी असहाय होकर देख रही है। काश, मैं उसकी कोई मदद कर पाती! ईश्वर, मेरे पास वह सब कुछ है, जो मैंने चाहा, जबकि उसका चेहरा जानलेवा शिकंजे में है। वह भी मेरी तरह श्रद्धालु थी, शायद मुझसे भी ज़्यादा और वह भी सही काम करना चाहती थी। फिर मुझे जीने का मौक़ा क्यों मिला, जबकि वह शायद मरने जा रही है? हमारे बीच क्या

अंतर है? अब हम इतनी दूर और अलग क्यों हैं?

ईमानदारी से कहूँ, तो मैंने कई महीनों, नहीं बल्कि एक साल से उसके बारे में नहीं सोचा। मैं उसे पूरी तरह नहीं भूली थी, लेकिन जब मैंने उसे अपने सामने देखा, तभी मुझे उसकी तकलीफ़ों का ख़याल आया।

ओह, हनेली, मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम युद्ध समाप्त होने तक ज़िंदा रहो और हमारे पास लौट आओ, मैं तुम्हें अपनाऊँगी और जो कुछ बुरा मैंने तुम्हारे साथ किया है, उसकी भरपाई कर दूँगी।

लेकिन अगर मैं उसकी मदद करने की स्थिति में भी होती, तब भी उसे उस समय के बजाय उसकी आज ज़्यादा ज़रूरत है। मैं सोचती हूँ कि क्या उसे मेरा ख़याल आता होगा और वह कैसा महसूस करती होगी?

हे दयालु ईश्वर, उसे दिलासा दो, ताकि वह कम से कम अकेली तो न पड़े। काश! तुम उसे बता पाते कि मैं करुणा व प्रेम के साथ उसे याद कर रही हूँ, शायद उसे इससे कुछ मदद मिल जाती।

मुझे इस पर विचार करना छोड़ना होगा। उससे कोई फ़ायदा नहीं। मैं उसकी बड़ी-बड़ी आँखें देखती हूँ और वे मुझे याद आती हैं। क्या हनेली वाक़ई सचमुच ईश्वर में विश्वास रखती है या फिर धर्म को उस पर ज़बरदस्ती थोप दिया गया है? मैं यह नहीं जानती। मैंने कभी पूछने की ज़हमत भी नहीं उठाई।

हनेली, हनेली, काश! मैं तुम्हें वहाँ से ले आती, तुम्हारे साथ सब कुछ साझा करती। अब बहुत देर हो गई है। मैं कुछ नहीं कर सकती या ग़लतियों को सुधार नहीं सकती। लेकिन मैं उसे फिर से नहीं भूलूँगी और हमेशा उसके लिए प्रार्थना करूँगी!

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 6 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

जैसे-जैसे सेंट निकोलस डे नज़दीक आता जा रहा है, वैसे-वैसे हमें पिछले साल की सजी हुई टोकरी याद आ रही है। मुझे लगता है कि इस साल उत्सव न मनाना काफ़ी बुरा होगा। काफ़ी सोच-विचार के बाद मुझे एक विचार आया, जो थोड़ा मज़ाकिया था। मैंने पिम से सलाह ली और एक हफ़्ता पहले हम हर सदस्य के लिए एक छंद लिखने में जुट गए।

रविवार रात पौने आठ बजे हम कपड़ों की बड़ी टोकरी लेकर ऊपर पहुँचे, जिसे गुलाबी व नीले कार्बन पेपर से बनी आकृतियों से सजाया गया था। उसमें सबसे ऊपर भूरे काग़ज़ का बड़ा सा टुकड़ा लगा था, जिस पर टिप्पणी जुड़ी थी। हर कोई उपहार के आकार को देखकर हैरान

था। मैंने उस टिप्पणी को निकाला और ऊँची आवाज़ में उसे पढ़ा:

‘एक बार फिर आया सेंट निकोलस डे
हमारे छिपे ठिकाने पर;
डर है कि यह होगा नहीं उतना मज़ेदार
जितना कि था यह पिछले साल।
उम्मीद थी, संदेह नहीं था कोई
आशावाद ही जीतेगा भाई,
अगले साल जब यह वक़्त आए फिर
हम होंगे आज़ाद, नहीं रहेगी कोई फ़िक्र।
हम न भूलें सेंट निकोलस डे है आज
जबकि हमारे पास बचा कुछ नहीं ख़ास।
खोजना होगा कुछ और करने को
तो हर कोई कृपया खोजे जूते को!’

हर व्यक्ति ने जब टोकरी में अपने जूते को देखा, तो हँसी के फ़व्वारे फूट पड़े। हर जूते के अंदर उसके मालिक के लिए कुछ लिखा था।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 22 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

आज तक फ़्लू होने के कारण मैं तुम्हें कुछ नहीं लिख पाई। यहाँ बीमार होना काफ़ी भयानक है। हर बार खाँसी आने पर मुझे कम्बल के नीचे घुसना पड़ता था, एक, दो, तीन बार और फिर खाँसी को रोकने की कोशिश करनी पड़ती थी। अधिकतर समय वह हल्की सी गुदगुदी जाती नहीं थी; इसलिए मुझे दूध के साथ शहद, चीनी या खाँसी की दवाई लेनी पड़ती थी। इन सभी इलाजों के बारे में सोचने भर से ही मेरा सिर चकराने लगता है। मुझे बुख़ार में पसीना लाने, भाप के इलाज, गीली पट्टियों, गर्म पेय, गले को साफ़ करने, चुपचाप पड़े रहने, हीटिंग पैड, गर्म पानी की बोतलें, नींबू पानी और हर दो घंटे में थर्मामीटर झेलना पड़ा। क्या ये इलाज आपको सचमुच बेहतर महसूस करवाते हैं? सबसे बुरी बात यह थी कि मि. दुसे ने डॉक्टर बनने का फ़ैसला किया और अपना पोमेड चुपड़ा सिर मेरी छाती पर आवाज़ें सुनने के लिए रख दिया। उनके बालों से

गुदगुदी हुई और मुझे थोड़ी झेंप भी हुई, हालाँकि तीस साल पहले वे स्कूल गए थे और उन्होंने कोई मेडिकल डिग्री भी ली थी। लेकिन उन्हें मेरे दिल पर अपना सिर रखने की क्या ज़रूरत थी? वे मेरे बॉयफ्रेंड तो नहीं हैं! वैसे भी वे स्वस्थ या अस्वस्थ आवाज़ के बीच अंतर नहीं कर सकते। उन्हें पहले अपने कान साफ़ करवाने चाहिए, क्योंकि उन्हें सुनने में दिक्कत होती है। मेरी बीमारी के बारे में काफ़ी हुआ। अब मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ। मेरी लंबाई आधा इंच बढ़ गई है और वज़न में दो पाउंड की बढ़ोतरी हुई है। मैं थोड़ी कुम्हला गई हूँ, लेकिन अपनी किताबें पढ़ने के लिए बेचैन हूँ।

वैसे *अपवाद* (यहाँ यही शब्द काम आएगा) के तौर पर हम सभी में अच्छी पट रही है। कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं, हालाँकि यह शायद ज़्यादा दिन न चले। छह महीने से घर में इतनी शांति, इतना सुकून नहीं रहा है।

बेप अब भी अलग रह रही हैं, लेकिन कुछ ही दिन में उनकी बहन संक्रामक नहीं रहेंगी।

क्रिसमस के लिए हमें अतिरिक्त खाना पकाने का तेल, मिठाइयाँ और शीरा मिल रहा है। ऑनेका के लिए मि. दुसे ने मिसेज फ़्रॉन डान और माँ को एक बढ़िया केक दिया, जिसे बेक करने के लिए उन्होंने मीप को कहा। इतने काम पर यह और बड़ा काम! मारगोट और मुझे सिक्कों से बना चमकदार ब्रूच मिला। मैं बता नहीं सकती, लेकिन वह ख़ूबसूरत है।

मेरे पास मीप और बेप के लिए क्रिसमस उपहार है। अपने दलिए में पड़ने वाली चीनी को मैंने महीने भर बचाकर रखा और मि. क्लेमन ने फुन्डॉन (गाढ़ी चीनी से बनाया गया केक) में उसका इस्तेमाल किया है।

मौसम हल्की बारिश वाला है और बादल घिरे हैं, अंगीठी से बदबू आ रही है, खाने से हमारे पेट भारी हैं, जिसके कारण अजीब सी आवाज़ें आ रही हैं।

युद्ध गतिरोध की स्थिति में हैं और हमारा उत्साह मंद है।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 24 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

जैसे कि मैं तुम्हें पहले भी कई बार लिख चुकी हूँ, मनोभाव यहाँ पर हमें बहुत प्रभावित करते हैं और मेरे मामले में पिछले कुछ समय से यह बदतर होता जा रहा है। 'कभी बहुत ज़्यादा ख़ुश होना और कभी निराशा के गर्त में गिर जाना,' मुझ पर निश्चित ही लागू होता है। मैं तब बहुत ख़ुश होती हूँ, जब मैं सोचती हूँ कि बाक़ी यहूदी बच्चों के मुकाबले हम काफ़ी सौभाग्यशाली हैं और तब बहुत मायूस हो जाती हूँ, जब मि. क्लेमन आकर योपी के हॉकी क्लब, डोंगी के सफ़र, स्कूल के नाटकों और दोस्तों के साथ चाय के बारे में बात करते हैं।

मुझे नहीं लगता कि मुझे योपी से जलन होती है, लेकिन मैं भी मज़े करना चाहती हूँ और इतना हँसना चाहती हूँ कि पेट दुखने लगे। हम इस घर में कोढ़ियों की तरह फँसे हुए हैं, ख़ासकर सर्दियों, क्रिसमस और नए साल की छुट्टियों में। दरअसल, मुझे यह सब नहीं लिखना चाहिए, क्योंकि इससे लगता है कि मैं कितनी कृतघ्न हूँ, लेकिन मैं यह सब अपने तक नहीं रख सकती, इसलिए मैं वहीं बात दोहराऊँगी, जो मैंने शुरू में कही थी: 'काग़ज़ में लोगों के मुकाबले ज़्यादा धीरज होता है।'

जब कभी कोई बाहर से आता है, उनके कपड़ों में हवा और गालों में ठंडक होती है, तो मुझे लगता है कि मैं कम्बल में सिर डालकर यह सोचने से बचूँ कि हम कब ताज़ा हवा ले पाएँगे? मैं वैसा नहीं कर सकती, बल्कि ठीक उसके उलट मुझे अपना सिर ताने रहना होता है और निडर दिखना होता है, लेकिन ख़याल तो आते ही रहते हैं। एक बार नहीं, कई बार।

यक़ीन मानो, अगर तुम कहीं डेढ़ साल के लिए बंद हो, तो कई बार ये काफ़ी मुश्किल हो जाता है। लेकिन भावनाएँ चाहे जितनी भी अनुचित या कृतघ्न लगें, उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। मैं साइकिल चलाना चाहती हूँ, नाचना, सीटी बजाना, दुनिया को देखना, बचपन महसूस करना चाहती हूँ और यह जानना चाहती हूँ कि मैं आज़ाद हूँ, लेकिन फिर भी मैं इसे दिखा या जता नहीं सकती। ज़रा सोचो, अगर हम आठों को हमेशा अपने लिए बुरा लगता रहे या हम चेहरों पर साफ़ तौर पर असंतोष लेकर घूमते रहें, तो क्या होगा। उससे हमें क्या मिलेगा? मैं कई बार सोचती हूँ कि क्या कभी कोई मेरी बात समझ पाएगा, क्या कभी मेरी कृतघ्नता को कोई नज़रअंदाज़ कर पाएगा और यह नहीं देखेगा कि मैं यहूदी हूँ या नहीं और मुझे सिर्फ़ एक किशोरी के रूप में देख पाएगा, जो बस जीवन का आनंद लेने के लिए तरस रही है? मुझे नहीं मालूम और मैं किसी से इस बारे में बात भी नहीं कर पाऊँगी, क्योंकि मैं जानती हूँ कि मैं रोने लगूँगी। अगर आप अकेले न रो रहे हों, तो रोने से चैन मिलता है। अपनी सभी मान्यताओं व कोशिशों के बावजूद हर रोज़, हर घंटे मुझे एक ऐसी माँ की कमी खलती है, जो मुझे समझती हो। यही वजह है कि मैं जो कुछ भी करती हूँ या लिखती हूँ, मैं कल्पना करती हूँ कि मैं बाद में अपने बच्चों के लिए किस तरह की माँ बनना चाहूँगी। ऐसी माँ जो लोगों की सभी बातों को बहुत गंभीरता से नहीं लेती, लेकिन मुझे गंभीरता से लेती है। यह बताने में मुझे मुश्किल हो रही है कि मैं क्या कहना चाहती हूँ, लेकिन 'मम यानी माँ' शब्द सब कुछ कह देता है। तुम्हें पता है कि मैंने क्या किया है? अपनी माँ को 'मम' कहने से बचने के लिए मैं अक्सर उन्हें 'मम्सी' कहकर पुकारती हूँ। कई बार मैं उसे 'मम्स' कर देती हूँ। काश! मैं अतिरिक्त 'एस' हटाकर उनका सम्मान कर पाती। यह अच्छी बात है कि वे इसे नहीं जान पाई हैं, क्योंकि वैसा होने पर वे दुखी हो जातीं।

अब इस पर काफ़ी बात हो गई। मेरे लिखने ने मुझे निराशा की गहराइयों से निकाल दिया है।

तुम्हारी, ऐन

क्रिसमस का अगला दिन है और मैं पिम और उनके द्वारा मुझे पिछले साल सुनाई गई कहानी से अपना ध्यान नहीं हटा पा रही हूँ। मैं उस समय उनकी बातों के मायने वैसे नहीं समझ पाई थी, जैसे कि अब समझ रही हूँ। कितना अच्छा हो कि वे फिर से उसकी बात करें, ताकि मैं उन्हें दिखा सकूँ कि मैं उनकी बात समझ गई हूँ!

मुझे लगता है कि पिम ने मुझे बताया, क्योंकि बहुत से लोगों के 'अंदरूनी रहस्य' जानने वाले पिम को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की ज़रूरत थी; वे कभी अपने बारे में बात नहीं करते और मुझे नहीं लगता कि मारगोट को इस बात की ज़रा सी भी भनक है कि वे किन चीज़ों से गुज़रे हैं। बेचारे पिम, वे मुझे बेवकूफ़ नहीं बना सकते कि मैं सोचूँ कि वे उस लड़की को भूल गए हैं। वे कभी नहीं भूलेंगे। इससे वे काफ़ी उदार बन गए हैं और वे माँ की ग़लतियों से भी परिचित हैं। मैं उम्मीद करती हूँ कि मैं उनके जैसी बनूँ, लेकिन उस सबसे न गुज़रूँ, जिससे वे गुज़रे हैं!

ऐन

सोमवार, 27 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

शुक्रवार की शाम अपनी ज़िंदगी में पहली बार मुझे क्रिसमस का उपहार मिला। मि. क्लेमन, मि. कुगलर और लड़कियों ने हमारे लिए कुछ शानदार तैयार किया था। मीप ने एक स्वादिष्ट केक तैयार किया था, जिस पर 'पीस 1944' यानी शांति 1944 लिखा था और बेप बिस्किट लाई थी, जो युद्ध से पहले के दौर जैसे बढ़िया थे।

पीटर, मारगोट और मेरे लिए योगर्ट थी, जबकि बड़ों के लिए बीयर की बोतलें थीं। एक बार फिर सब कुछ बहुत अच्छी तरह पैक किया गया था और बहुत प्यारी तसवीरें उन पर चिपकाई गईं थीं। हमारे लिए छुट्टियाँ तेज़ी से गुज़र गई।

ऐन

बुधवार, 29 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

कल रात मैं फिर से बहुत दुखी हो गई। नानी माँ और हनेली फिर से मेरे पास आईं। मेरी प्यारी नानी। उनके कष्ट को हम कितना समझे थे, वे हमेशा कितनी दयालु थीं और हमसे जुड़ी बातों में

कितनी दिलचस्पी लेती थीं। उस पर ज़रा सोचो कि उन्होंने कितनी सावधानी से अपने भयानक रहस्य को छिपाकर रखा था। नानी हमेशा ही बहुत निष्ठावान और अच्छी थीं। उन्होंने हमें कभी निराश नहीं किया। जो कुछ भी हो, मैं चाहे कितनी भी बदतमीज़ी करूँ, नानी हमेशा मेरी ढाल बन जाती थीं। नानी, क्या आपने मुझसे प्यार किया या आप भी मुझे नहीं समझ पाईं? मैं नहीं जानती। हम सबके होने के बावजूद नानी कितनी अकेली रही होंगी? कई लोगों द्वारा प्यार किए जाने के बाद भी आप अकेले हो सकते हैं, क्योंकि तब भी आप किसी के 'अकेले और एकमात्र' नहीं होते।

और हनेली? क्या वह अब भी ज़िंदा है? क्या कर रही है? हे ईश्वर, उसकी रक्षा करना और उसे हमारे पास वापस ले आना। हनेली, तुम याद दिलाती हो कि मेरी नियति क्या हो सकती थी। मैं तुम्हारी जगह पर ख़ुद को देखती रहती हूँ। तो फिर मैं यहाँ के हालात से बुरा क्यों महसूस करती हूँ? हनेली और उसके साथ कष्ट झेल रहे लोगों के बारे में सोचने के अलावा क्या मुझे ख़ुश, संतुष्ट और आनंदित नहीं होना चाहिए? मैं स्वार्थी और कायर हूँ। मैं क्यों हमेशा सबसे भयानक चीज़ों के बारे में सोचती और उनका सपना देखती हूँ और क्यों डरकर चिल्लाना चाहती हूँ? क्योंकि सब कुछ होने के बावजूद ईश्वर में मेरी पर्याप्त श्रद्धा नहीं है। उसने मुझे इतना दिया है, जिसके लायक़ मैं नहीं हूँ और फिर भी हर दिन मैं इतनी ग़लतियाँ करती हूँ!

अपने प्रिय लोगों की तकलीफ़ों के बारे में सोचकर आपके आँसू निकल सकते हैं; आप पूरे दिन रोते रह सकते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा आप यह कर सकते हैं कि ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे कोई चमत्कार कर दें और कम से कम उनमें से कुछ को बचा लें। मुझे उम्मीद है कि मैं उतना कर रही हूँ!

ऐन

बृहस्पतिवार 30 दिसंबर, 1943

प्रिय किटी,

पिछली ज़ोरदार लड़ाइयों के बाद से स्थिति शांत हो गई है, न सिर्फ़ हमारे बीच, दुसे व 'ऊपरवालों' के बीच, बल्कि मि. और मिसेज़ फ़ॉन डी के बीच भी सब कुछ ठीक है। हालाँकि कुछ काले तूफ़ानी बादल इस तरफ़ आते लग रहे हैं और वह भी खाने की वजह से। मिसेज़ फ़ॉन डी को एक अजीब सा ख़याल आया कि हमें सुबह कम आलू खाने चाहिए और उन्हें बाद में खाना चाहिए। माँ, दुसे और हम बाक़ी लोग उनसे सहमत नहीं थे, तो अब हम आलू भी बाँट रहे हैं। लगता है कि चर्बी और तेल का बँटवारा भी उचित ढंग से नहीं हो रहा है और माँ इसे रोकने का काम करेंगी। इस दिशा में कोई दिलचस्प बात होने पर मैं तुम्हें बताऊँगी। पिछले कुछ महीनों सेहम मांस का (उनका चर्बी के साथ, हमारा उसके बिना), सूप का (वे पीते हैं, हम

नहीं), आलुओं का (उनके छिले हुए, हमारे नहीं), अतिरिक्त चीज़ों और अब तले हुए आलुओं का भी बँटवारा कर रहे हैं।

काश, हम पूरी तरह अलग हो पाते!

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। बेप ने मेरे लिए पूरे शाही परिवार के पिक्चर पोस्टकार्ड की प्रति तैयार की। जूलियाना काफ़ी युवा लगती हैं और रानी भी। तीनों छोटी लड़कियाँ बहुत प्यारी हैं। बेप ने आश्चर्यजनक रूप से बहुत अच्छा किया, तुम्हें नहीं लगता?

रविवार, 2 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

आज सुबह जब मेरे पास करने को कुछ नहीं था, तो मैंने अपनी डायरी के पन्ने पलटे और पाया कि कितने सारे पन्नों पर 'माँ' विषय पर इतनी कठोरता से लिखा गया था कि मैं हक्की-बक्की रह गई। मैंने ख़ुद से कहा, 'ऐन, क्या तुम सचमुच नफ़रत की बात कर रही हो? ओह, ऐन, तुम ऐसा कैसे कर सकती हो?'

हाथों में खुली डायरी लेकर मैं बैठी रही और सोचने लगी कि मैं इतने ग़ुस्से व घृणा से क्यों भरी थी कि मुझे तुम्हें वह सब बताना पड़ा। मैंने पिछले साल की ऐन को समझने की कोशिश की और उसकी तरफ़ से माफ़ी माँगी, क्योंकि अगर मैं तुम्हारे सामने सिर्फ़ आरोप रखूँ और यह नहीं बताऊँ कि वे किस वजह से लगाए गए थे, तो मेरी अंतरात्मा साफ़ नहीं हो पाएगी। मैं उस समय ऐसे मनोभावों से गुज़र रही थी (अब भी गुज़र रही हूँ) कि मुझे लगता था कि मेरा सिर पानी के नीचे (प्रतीकात्मक रूप से) था और उस वजह से मुझे हालात सिर्फ़ अपने नज़रिये से दिखाई देते थे और मैं बाक़ी लोगों द्वारा कही गई बातों पर शांति से विचार नहीं करती थी, उन लोगों को मैंने अपने तेज़ ग़ुस्से से चोट पहुँचाई और फिर ऐसे जताया जैसे कि उन्होंने वही सब किया हो।

मैं अपने अंदर छिप गई, मैंने अपने अलावा किसी और के बारे में नहीं सोचा और बस अपनी ख़ुशियों, कटाक्षों व दुखों को अपनी डायरी में लिखा। यह डायरी एक तरह की स्क्रैपबुक बन गई है और यह मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन मैं आसानी से इसके कई पन्नों पर 'पूरा हुआ और गुज़र गया' लिख सकती हूँ।

मैं माँ से बहुत नाराज़ थी (और अब भी कई बार रहती हूँ)। यह सच है कि वे मुझे नहीं समझतीं, लेकिन मैं भी उन्हें नहीं समझती। मुझे प्यार करने के कारण वे बहुत कोमल और स्नेही थीं, लेकिन उन्हें मुश्किल हालात में डालने और उनकी अपनी दुःखद परिस्थितियों के कारण वे

परेशान और चिड़चिड़ी हो गईं, इसलिए अब मैं समझ सकती हूँ कि वे अक्सर मुझ पर क्यों बरस पड़ती थीं।

मैं चोट खाए हुए थी, उसे मैंने दिल पर ले लिया और उनके प्रति मैं अशिष्ट और बेरहम थी, जिसने उन्हें दुःखी कर दिया। हम वैमनस्य और दुःखों के दुष्चक्र में फँस गए थे। हम दोनों के लिए ही वह अच्छा समय नहीं था, लेकिन कम से कम वह ख़त्म होने को है। मैं हालात को नहीं देखना चाहती थी और अपने लिए बुरा महसूस करती थी, लेकिन उसे भी समझा जा सकता है।

काग़ज़ पर वे तीव्र आवेग मेरे क्रोध की अभिव्यक्ति थे, सामान्य जीवन में ऐसा होने पर मैं ख़ुद को अपने कमरे में बंद कर देती, अपने पैर पटकती और माँ की पीठ पीछे उन्हें कुछ भला-बुरा कहती।

रोकर माँ के बारे में अपनी राय देना अब पुरानी बात हो चुकी है। अब मैं पहले से समझदार हो गई हूँ और माँ भी पहले से ज़्यादा संतुलित हो गई हैं। परेशान होने की हालत में ज़्यादातर बार मैं अपनी ज़बान पर क़ाबू कर लेती हूँ और वे भी ऐसा ही करती हैं; तो कम से कम ऊपर से लगता है कि हमारी अच्छी निभ रही है। बस, एक चीज़ मैं नहीं कर सकती कि माँ से बच्चे की श्रद्धा से प्यार नहीं कर सकती।

मैं अपनी अंतरात्मा को यह सोचकर तसल्ली देती हूँ कि माँ अपने दिल में कठोर शब्द रखे, उससे बेहतर है कि काग़ज़ पर उन्हें लिख लिया जाए।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 6 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

आज मुझे दो बातें क़बूल करनी हैं। इसमें बहुत समय लगेगा, लेकिन मुझे किसी को तो बताना होगा और तुम उनमें सबसे ज़्यादा सही हो, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम किसी भी हालत में उस बात को गुप्त रखोगी।

पहली बात माँ के बारे में है। जैसा कि तुम जानती हो मैंने अक्सर उनके बारे में शिकायत की है और फिर अच्छा होने की पूरी कोशिश की है। मुझे अचानक समझ में आ गया है कि उनमें क्या गड़बड़ी है। माँ कहती हैं कि वे हमें बेटियों के बजाय दोस्त के रूप में ज़्यादा देखती हैं। यह सब बहुत बढ़िया है, लेकिन दोस्त कभी माँ की जगह नहीं ले सकते। मुझे मेरी माँ चाहिए, जो मेरे सामने अच्छा उदाहरण रखे और ऐसी इंसान बने, जिसकी मैं इज़्ज़त कर सकूँ, लेकिन अधिकांश मामलों में वे उसका उदाहरण रही हैं, जो नहीं किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि मारगोट इन चीज़ों के बारे में बहुत अलग ढंग से सोचती है और इसलिए वह इन बातों को कभी नहीं समझेगी, जो मैंने अभी तुम्हें बताई हैं। पापा हैं कि माँ से जुड़ी हर बातचीत से बचते हैं।

मैं ऐसी माँ की कल्पना करती हूँ, जिसमें सबसे पहला गुण चतुराई का होता है, ख़ासकर

अपने किशोर बच्चों के प्रति। माँ जैसी नहीं, जो मेरे रोने पर मेरा मज़ाक उड़ाती हैं। मैं दर्द की वजह से नहीं, बल्कि बाक़ी बातों की वजह से रो रही होती हूँ।

यह बात बहुत मामूली लग सकती है, लेकिन एक घटना है, जिसके लिए मैं उन्हें कभी माफ़ नहीं कर पाई। एक दिन मुझे दाँतों के डॉक्टर के पास जाना था। माँ और मारगोट भी मेरे साथ चलने को तैयार हुई और इस बात को भी मान लिया कि मैं अपनी साइकिल साथ ले जाऊँ। डॉक्टर के यहाँ काम होने के बाद हम बाहर निकले और माँ व मारगोट ने मुझे बहुत प्यार से बताया कि वे कुछ ख़रीदने या देखने के लिए शहर मुख्य हिस्से की ओर जा रही हैं। मुझे याद नहीं कि वह क्या चीज़ थी, लेकिन ज़ाहिर था कि मैं भी उनके साथ जाना चाहती थी। लेकिन उनका कहना था कि मेरे पास साइकिल होने की वजह से मैं उनके साथ नहीं जा सकती थी। ग़ुस्से के कारण मेरी आँखें आँसुओं से भर आईं और मारगोट व माँ मुझ पर हँसने लगी। मुझे इतना ग़ुस्सा आया कि मैंने उन दोनों को जीभ निकालकर चिढ़ा दिया। छोटे क़द की एक बूढ़ी महिला वहाँ से गुज़र रही थी और वे काफ़ी सदमे में लग रही थी। मैं साइकिल से घर गई और घंटों रोई। अजीब बात है कि माँ ने मुझे हज़ारों बार चोट पहुँचाई होगी, लेकिन यह घाव आज भी दुखता है, जब मैं सोचती हूँ कि मैं उस समय कितनी नाराज़ थी।

दूसरी बात को स्वीकारने में मुझे ज़्यादा मुश्किल हो रही है, क्योंकि वह मेरे बारे में है। मैं पाखंडी नहीं हूँ, किटी, फिर भी हर बार शौचालय जाने पर बाक़ी लोगों द्वारा हर पल की ख़बर देने पर मेरे मन में घृणा पैदा होती है।

कल मैंने शर्माने पर सिस हेस्टर का लेख पढ़ा। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह मेरे लिए है। ऐसा नहीं कि मैं आसानी से शर्मा जाऊँ, लेकिन बाक़ी का लेख मुझ पर लागू होता है। उनका कहना है कि किशोरावस्था के दौरान लड़कियाँ ख़ुद में सिमट जाती हैं और अपने शरीर में होने वाले आश्चर्यजनक बदलावों के बारे में सोचना शुरु करती हैं। मैं भी वैसा ही महसूस करती हूँ और शायद यही मारगोट, माँ और पापा को लेकर मेरी झेंप की वजह है। दूसरी तरफ़, मारगोट मुझसे कहीं ज़्यादा शर्मीली है, लेकिन फिर भी वह झेंपती नहीं।

मेरे ख़याल से मुझमें जो कुछ हो रहा है, वह काफ़ी अनोखा है और इससे मेरा मतलब सिर्फ़ बाहरी शारीरिक बदलावों से नहीं है, बल्कि अंदर होने वाले परिवर्तनों से भी है। इनमें से किसी भी चीज़ पर मैं लोगों से बात नहीं करती, इसीलिए मुझे उनके बारे में ख़ुद से बात करनी पड़ती है। जब भी मुझे माहवारी (अभी तक तीन बार हो चुकी है) होती है, तो सारे दर्द, असहजता और परेशानी के बावजूद मुझे लगता है कि मेरे भीतर एक छोटा सा रहस्य है। इसके थोड़ा मुश्किल भरा होने के बावजूद मैं उस समय की राह देखती हूँ, जब मैं फिर से इस रहस्य को अपने अंदर महसूस करूँगी।

सिस हेस्टर का यह भी कहना है कि मेरी उम्र की लड़कियाँ ख़ुद को लेकर असुरक्षित महसूस करती हैं और यह समझना शुरु करती हैं कि वे अलग व्यक्ति हैं, जिनके अपने विचार, सोच और

आदतें हैं। यहाँ आने से ठीक पहले मैं तेरह साल की हुई थी, तो मैंने अपने बारे में सोचना शुरू कर दिया था और महसूस किया कि अधिकतर लड़कियों की तुलना में ज़्यादा जल्दी मैं एक 'स्वतंत्र व्यक्ति' बन गई हूँ। कई बार जब मैं बिस्तर में लेटी होती हूँ, तो मुझे अपनी छातियों को छूने और अपने दिल की शांत, सधी हुई धड़कनों को सुनने की तीव्र इच्छा होती है।

अवचेतन तौर पर यह सब मेरे अंदर यहाँ आने से पहले से था। एक बार जब मैं यैक के यहाँ रात को ठहरी थी, तो उसके शरीर को लेकर अपनी उत्सुकता को मैं क़ाबू नहीं कर सकी, जिसे उसने हमेशा मुझसे छिपाया और जिसे मैंने कभी नहीं देखा था। मैंने उससे पूछा कि हमारी दोस्ती के सबूत के रूप में क्या हम एक-दूसरे का वक्ष छू सकते हैं, तो उसने मना कर दिया। मुझे उसे चूमने का भी दिल किया और मैंने उसे चूमा भी। जब कभी मैं किसी नारी की नग्न मूर्ति देखती हूँ, जैसे कि अपनी इतिहास की किताब में वीनस की मूर्ति, तो मैं बहुत आनंदित हो जाती हूँ। कई बार वे मुझे इतनी बेहतरीन लगती हैं कि मुझे अपने आँसू रोकने पड़ते हैं। काश, मेरी कोई सहेली होती!

बृहस्पतिवार, 6 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

किसी से बात करने की मेरी इच्छा इतनी असहनीय हो गई है कि मैंने इस काम के लिए पीटर के बारे में सोचा। कभी-कभार दिन में जब मैं उसके कमरे में गई हूँ, तो मुझे हमेशा लगा कि वह कमरा अच्छा और आरामदायक है। लेकिन पीटर इतना विनम्र है कि अगर कोई उसे परेशान भी कर रहा हो, तब भी वह उसे जाने के लिए नहीं कहेगा, इसलिए मैं कभी भी उसके कमरे में ज़्यादा देर तक नहीं रुकी। मुझे डर था कि कहीं वह मुझे चिपकू न समझे। मैं उसके कमरे में मँडराते रहने और उसके ख़याल में आए बिना उससे बात करवाने का मौक़ा खोज रही थी और कल मुझे वह मिल भी गया। आजकल पीटर वर्ग-पहेली की दीवानगी में है और दिन भर वह उसके अलावा कुछ नहीं करता। मैं उसकी मदद कर रही थी और जल्दी ही हम उसकी मेज़ के आमने-सामने बैठ गए, वह कुर्सी पर था और मैं दीवान पर।

उसकी गहरी नीली आँखों में झाँककर मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने देखा कि मेरे अचानक आ जाने से वह कितना झेंप गया है। मैं उसके अंदर की भावनाओं को पढ़ सकती थी और उसके चेहरे पर लाचारी व अनिश्चितता का भाव था कि वह कैसा बर्ताव करे और साथ ही अपने मर्दानगी को लेकर सचेत होने की झलक भी थी। उसके शर्मीलेपन को देखकर मैं पिघल गई। मैं कहना चाहती थी, 'अपने बारे में बताओ। मेरे बातूनी बाहरी रूप के भीतर झाँको।' लेकिन मैंने पाया कि सवाल पूछने से ज़्यादा आसान है उनके बारे में सोचना।

शाम बीत गई और कुछ भी नहीं हुआ, बस मैंने शर्माने पर पढ़े लेख के बारे में उसे बताया। ज़ाहिर है कि वह नहीं, जो मैंने तुम्हें लिखा, सिर्फ़ यही कि उम्र बढ़ने पर वह ज़्यादा सुरक्षित

महसूस करेगा।

उस रात बिस्तर पर लेटकर मैं ख़ूब रोई, यह भी ध्यान रखा कि कोई आवाज़ न सुन ले। मुझे पीटर के एहसान की ज़रूरत पड़ी, यह ख़याल भी बहुत घिनौना था। लेकिन अपनी हसरतों को पूरा करने के लिए लोग कुछ भी करेंगे, उदाहरण के तौर पर मैंने सोच लिया कि मैं पीटर के पास अक्सर जाया करूँगी और किसी तरह उसे बात करने को तैयार करूँगी।

तुम यह मत सोचना कि मुझे पीटर से प्यार हो गया है, क्योंकि ऐसा है नहीं। अगर फ़ॉन डान परिवार में लड़के के बजाय कोई लड़की होती, तो शायद मैं उससे दोस्ती करने की कोशिश कर सकती थी।

आज सुबह मैं सात बजे से पहले उठी और मुझे तुरंत याद आ गया कि मैं क्या सपना देख रही थी। मैं कुर्सी पर बैठी थी और दूसरी तरफ़ पीटर... पीटर शिफ़ था। हम मेरी बूस के चित्रों की किताब देख रहे थे। सपना इतना साफ़ था कि मुझे कुछ चित्र अब भी याद थे। इतना ही नहीं, सपना आगे भी था। पीटर की नज़रें अचानक मुझसे मिली और मैं काफ़ी देर तक उसकी मखमली भूरी आँखों में देखती रही। फिर उसने बहुत कोमलता से कहा, 'अगर मुझे पता होता, तो मैं बहुत पहले तुम्हारे पास आ जाता!' मैं भावुक होकर अचानक दूर हो गई। फिर मुझे पीटर का नर्म, ठंडा गाल हौले से अपने गाल पर महसूस हुआ और मुझे बहुत अच्छा लगा...

उस पल मैं उठ गई, उसका गाल मेरे गाल पर तब भी महसूस हो रहा था और उसकी भूरी आँखें मेरे दिल की गहराई में झाँक रही थी, इतने गहरे कि वह पढ़ सकता था कि मैं उसे कितना प्यार करती थी और अब भी करती हूँ। मेरी आँखें फिर से भर गईं और मैं दुखी थी, क्योंकि मैंने एक बार फिर उसे खो दिया था और साथ ही मैं ख़ुश थी कि मैं निश्चित तौर पर जानती थी कि अब भी पीटर ही है, जो मेरा है।

यह अजीब है, लेकिन अक्सर मेरे सपने काफ़ी स्पष्ट होते हैं। एक रात मैंने ग्रैमी यानी दादी को इतनी स्पष्टता से देखा कि मैं नर्म, मुलायम, झुर्रीदार मखमली त्वचा को महसूस कर सकती थी। एक बार मैंने नानी को फ़रिश्ते के रूप में देखा। उसके बाद हनेली को देखा, जो अब भी मेरे दोस्तों और सभी यहूदियों की तकलीफ़ों का प्रतीक है, और जब मैं उसके लिए प्रार्थना करती हूँ, तो मैं सभी यहूदियों व ज़रूरतमंदों के लिए भी प्रार्थना करती हूँ।

अब पीटर, मेरा प्यारा पीटर। मेरे दिमाग़ में उसकी इतनी साफ़ छवि कभी नहीं रही। मुझे किसी तसवीर की ज़रूरत नहीं, मैं उसे इतनी अच्छी तरह देख सकती हूँ।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 7 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

मैं कितनी बेवकूफ़ हूँ। मैं भूल गई कि मैंने तुम्हें अपने सच्चे प्यार की कहानी तो अब तक बताई ही नहीं।

जब मैं छोटी थी और नर्सरी स्कूल में पढ़ती थी, तो मुझे सैली किमल पसंद था। उसके पिता नहीं थे और वह अपनी माँ के साथ रहता था। सैली का एक भाई ख़ूबसूरत, छरहरा और काले बालों वाला ऐपी था, जो बाद में एक फ़िल्मी सितारे जैसा दिखने लगा था और गोल-मटोल सैली से कहीं ज़्यादा तारीफ़ पाता था। काफ़ी लंबे समय तक हम कहीं भी एक साथ जाते थे, लेकिन उसे छोड़ दें तो मेरा तब तक एकतरफ़ा था, जब तक पीटर और मेरी राहें नहीं मिली थीं। मैं उस पर फ़िदा थी। वह भी मुझे पसंद करता था और पूरी गर्मी हम एक-दूसरे से अलग नहीं हुए। मैं अब भी हम दोनों को हाथ पकड़े टहलते देख सकती हूँ, पीटर सफ़ेद सूती कपड़ों में था और मैं गर्मियों की पोशाक पहने हुई थी। गर्मियों की छुट्टियों में वह दूसरे स्कूल में अगली कक्षा में चला गया, जबकि मैं छठी में रही। घर जाते हुए वह मुझे साथ ले लेता या फिर मैं उसके पास चली जाती। पीटर आदर्श लड़का था: लंबा, छरहरा और ख़ूबसूरत, जिसका चेहरा गंभीर, शांत व समझदारी भरा था। उसके बाल काले थे, आँखें भूरी थी, गाल गुलाबी थे और लंबी नुकीली नाक थी। उसकी मुस्कान को लेकर मैं पागल थी, जिसके कारण वह लड़कपन से भरा व शरारती लगता था।

गर्मी की छुट्टियों में मैं ग्रामीण इलाक़े में गई थी और जब मैं वापस लौटी तो पीटर अपने पुराने पते पर नहीं था; वह दूसरी जगह चला गया था, जहाँ पर वह अपने से बड़े लड़के के साथ था और उसने शायद पीटर से कहा कि मैं बच्ची हूँ, क्योंकि पीटर ने मुझसे मिलना छोड़ दिया था। मैं उससे इतना प्यार करती थी कि सच का सामना नहीं करना चाहती थी। मैं उससे तब तक लटकी रही, जब तक कि मैंने आख़िरकार यह नहीं समझ लिया कि अगर मैं उसका पीछा करती रही, तो लोग कहेंगे कि मैं लड़कों के पीछे पागल थी।

वक्त गुज़रता गया। पीटर अपनी उम्र की लड़कियों के साथ घूमता रहा और उसने मुझे हैलो कहने तक की ज़रूरत नहीं समझी। मैं यहूदी स्कूल चली गई और मेरी कक्षा के कई लड़के मेरे प्यार में थे। मुझे वह अच्छा लगा और उनका ध्यान आकर्षित करने से मुझे महत्त्वपूर्ण महसूस हुआ। बाद में हलो मुझे पसंद करने लगा, लेकिन जैसा कि मैं पहले तुम्हें बता चुकी हूँ, मुझे फिर से प्यार नहीं हुआ।

एक कहावत है: 'वक़्त सभी ज़ख़्म भर देता है।' मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैंने ख़ुद से कहा कि मैं पीटर को भूल चुकी हूँ और उसे अब पसंद नहीं करती। लेकिन उसे लेकर मेरी यादें इतनी गहरी थीं कि मुझे यह क़बूल करना पड़ा कि उसे पसंद न करने का एकमात्र कारण यह था कि मैं बाक़ी लड़कियों से जलती थी। आज सुबह मैंने महसूस किया कि कुछ भी नहीं बदला है; बल्कि मैं बड़ी व परिपक्व हो गई हूँ, मेरा प्यार मेरे साथ ही बड़ा हो गया है। अब मैं समझ सकती हूँ कि पीटर मुझे बचकाना समझता था और फिर भी यह सोचकर चोट पहुँचती है कि

वह मुझे पूरी तरह भूल गया है। मैंने उसके चेहरे को बहुत साफ़-साफ़ देखा; मैं यह जानती थी कि पीटर के अलावा कोई और इस तरह मेरे दिमाग़ में नहीं अटका रह सकता।

आज मैं भ्रम की स्थिति में हूँ। आज सुबह जब पापा ने मुझे चूमा, तो मैं चिल्लाना चाहती थी, 'काश, आप पीटर होते!' मैं लगातार उसके बारे में सोचती रही हूँ और दिन भर मैं ख़ुद से बार-बार कहती रही हूँ, 'ओह, पीटल, मेरे प्रिय, मेरे प्रिय पीटल...'

मुझे कहाँ से मदद मिल सकती है? मुझे बस यूँ ही ज़िंदा रहना होगा और ईश्वर से प्रार्थना करनी होगी कि अगर कभी हम यहाँ से निकले, तो पीटर मुझे फिर मिले और मेरी आँखों में देखकर उनमें मौजूद प्यार को पढ़ ले और कहे, 'ओह, ऐन, काश! मुझे पता होता, तो मैं बहुत पहले तुम्हारे पास आ गया होता।'

एक बार जब पापा और मैं सेक्स के बारे में बात कर रहे थे, तो उनका कहना था कि उस तरह की इच्छा को समझने के लिए अभी मैं छोटी हूँ। लेकिन मुझे लगा कि मैं उसे समझती थी और अब तो पक्का समझती हूँ। अब मुझे कुछ भी उतना प्रिय नहीं है, जितना कि पीटल है!

मैंने आईने में अपना चेहरा देखा और वह बहुत अलग लगा। मेरी आँखें साफ़ और गहरी थीं, मेरे गाल गुलाबी थे, जो कई हफ़्ते से वैसे नहीं थे, मेरा मुँह काफ़ी कोमल लग रहा था। मैं ख़ुश दिख रही थी और फिर भी मेरे भावों में कोई दुख था कि मेरे होंठों से तुरंत मुस्कान ग़ायब हो गई। मैं ख़ुश नहीं हूँ, क्योंकि पीटल मेरे बारे में नहीं सोच रहा और फिर भी मैं अपनी ओर देखती उसकी ख़ूबसूरत आँखों और उसके ठंडे, नर्म गालों को अपने गालों पर महसूस कर सकती हूँ... ओह, पीटल, पीटल मैं कब ख़ुद को तुम्हारी छवि से अलग कर पाऊँगी? तुम्हारी जगह लेने वाला कोई और क्या तुम्हारा बुरा विकल्प नहीं होगा? मैं तुमसे प्यार करती हूँ, वह प्यार जो इतना महान है कि वह बस मेरे दिल में ही नहीं बढ़ता रह सकता, बल्कि बाहर निकलकर ख़ुद को सबके सामने ज़ाहिर करना चाहता है।

एक हफ़्ते या फिर एक दिन भी पहले अगर तुमने मुझसे पूछा होता, 'तुम अपने दोस्तों में से किससे शादी करना चाहोगी, तो मेरा जवाब होता, 'सैली, क्योंकि उसके साथ मैं ख़ुश, शांत व सुरक्षित महसूस करती हूँ!' लेकिन अब मैं कहूँगी, 'पीटल, क्योंकि मैं दिलोजान से उसे चाहती हूँ। मैं पूरी तरह से समर्पण करती हूँ!' बस, एक बात को छोड़कर: वह सिर्फ़ मेरा चेहरा छू सकता है।

आज सुबह मैंने कल्पना की कि मैं आगे वाली अटारी में पीटल के साथ खिड़की के पास फ़र्श पर बैठी हूँ और थोड़ी देर बातचीत के बाद हम दोनों रोने लगे। कुछ देर बाद मैंने उसके मुँह व उसके शानदार गालों को महसूस किया! ओह, पीटल, मेरे पास आओ। मेरे बारे में सोचो, मेरे प्यारे पीटल!

बुधवार, 12 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

दो सप्ताह पहले बेप वापस आ गई है, हालाँकि उसकी बहन को अगले हफ़्ते तक स्कूल आने की इजाज़त नहीं है। बेप दो दिन तक जुकाम के कारण बिस्तर पर रही। मीप और यान भी दो दिन तक पेट ख़राब होने के कारण नहीं आए।

फ़िलहाल मैं नाच और बैले की दीवानगी से गुज़र रही हूँ और हर शाम बहुत मेहनत से अभ्यास करती हूँ। मैंने माँ के हल्के बैंगनी जालीदार पेटीकोट से अपने लिए एक बहुत आधुनिक पोशाक बनवाई है। उसके ऊपरी हिस्से पर फ़ीता लगा है और उसे ठीक छाती के ऊपर बाँधते हैं। गुलाबी रिबन से पोशाक पूरी हो गई। मैंने अपने व्यायाम के जूतों को नृत्य के जूते बनाने की नाकाम कोशिश की। मेरे कठोर हाथ-पैर अब लचीले बन रहे हैं, जैसे वे पहले थे। फ़र्श पर बैठना बहुत बढ़िया कसरत है, हाथों में एड़ियाँ रखें और दोनों टाँगें हवा में उठाएँ। मुझे गद्दी पर बैठना पड़ता है, वरना मेरी पीठ दुखने लगती है।

यहाँ हर कोई *अ क्लाउडलेस मॉर्निंग* किताब पढ़ रहा है। माँ को लगा कि यह बहुत बढ़िया किताब है, क्योंकि इसमें किशोरों की कई समस्याओं का वर्णन किया गया है। मैंने थोड़ा व्यंग्यात्मक ढंग से सोचा, 'आप अपने किशोर बच्चों में ज़्यादा दिलचस्पी क्यों नहीं लेतीं?'

मेरे ख़याल से माँ सोचती हैं कि पूरी दुनिया में मारगोट और मेरा अपने माँ-बाप के साथ बेहतर रिश्ता है और कोई भी माँ अपने बच्चों की ज़िंदगी से उतनी नहीं जुड़ी है, जितनी कि वे। उनके दिमाग़ में ज़रूर मेरी बहन रही होगी, क्योंकि मुझे लगता है कि मारगोट की समस्याएँ और विचार मेरे जैसे नहीं हैं। मैं माँ से यह नहीं कह सकती कि उनकी एक बेटी वैसी नहीं है, जैसा कि वे समझती हैं। वे पूरी तरह घबरा जाएँगी और वैसे भी वे कभी बदलने वाली नहीं हैं; मैं उन्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचा सकती, ख़ासकर जब मैं जानती हूँ कि सब कुछ वैसा ही रहेगा। माँ को महसूस तो होता है कि मारगोट उन्हें मुझसे ज़्यादा प्यार करती है, लेकिन उन्हें लगता है कि मैं किसी दौर से गुज़र रही हूँ।

मारगोट पहले से ज़्यादा अच्छी है। वह अब काफ़ी अलग लगती है। वह अब पहले जैसी चालाक नहीं लगती और असली दोस्त जैसी बनती जा रही है। वह मुझे ऐसा छोटा बच्चा नहीं समझती, जिसकी कोई अहमियत न हो।

यह अजीब है, लेकिन कई बार मैं ख़ुद को वैसे देखती हूँ, जैसा कि वे मुझे देखते हैं। मैं 'ऐन फ़्रैंक' नाम की लड़की को आराम से देखती हूँ और उसकी ज़िंदगी के पन्नों को ऐसे पलटती हूँ, जैसे कि वह कोई अजनबी हो।

यहाँ आने से पहले जब मैं चीज़ों के बारे में उतना नहीं सोचती थी, जितना कि अब सोचती हूँ, कई बार मुझे लगता था कि मैं माँ, पिम और मारगोट से नहीं जुड़ी हूँ और यह कि मैं हमेशा बाहरी इंसान रहूँगी। कई बार छह महीने तक मैं ऐसा दिखाती थी जैसे कि मैं कोई अनाथ हूँ। फिर मैं बेचारी बनने के लिए ख़ुद को सज़ा देती थी, जबकि सच बात यह थी कि मैं काफ़ी

ख़ुशक़िस्मत थी। उसके बाद कुछ समय के लिए मैं ख़ुद को दोस्ताना बनाने की कोशिश करती थी। हर सुबह सीढ़ियों पर क़दमों की आहट सुनते हुए मैं उम्मीद करती थी कि मेरी माँ मुझे सुप्रभात कहने के लिए आ रही हो। मैं उनसे गर्मजोशी से मिलूँगी, क्योंकि ईमानदारी से मैं उनके प्यार भरी निगाह पाने की आस लगाती थी। लेकिन वे मेरी किसी टिप्पणी या किसी अन्य बात पर मुझे झिड़क देतीं और मैं स्कूल जाते हुए पूरी तरह हतोत्साहित हो जाती। घर आते हुए मैं उनके लिए बहाने बनाती, ख़ुद से कहती कि उनके सामने बहुत परेशानियाँ होती हैं। मैं पूरे जोश के साथ घर पहुँचती, तब तक ख़ूब गप्पें लगाती, जब तक कि सुबह की घटना फिर न हो जाती और मैं हाथों में बस्ता लेकर और चेहरे पर उदासी के भाव लेकर कमरे से बाहर न चली जाती। कई बार मैं नाराज़ रहने का फ़ैसला करती, लेकिन स्कूल के बारे में इतना कुछ बताने को होता कि मैं अपना इरादा भूल जाती और माँ का काम रुकवाकर उन्हें सारी बातें बताती। फिर ऐसा समय आता, जब मैं सीढ़ियों पर पदचाप पर कान नहीं लगाती और अकेला महसूस करते हुए रात को ख़ूब रोती।

सब कुछ यहाँ बदतर हो गया है। लेकिन तुम यह पहले से जानती हो। अब ईश्वर ने किसी को, पीटर को मेरी मदद के लिए भेजा है। मैं अपने पेंडेंट के साथ खेलती हूँ, उसे होंठों तक ले जाती हूँ और सोचती हूँ, 'मुझे क्या है! पीटर मेरा है और कोई यह नहीं जानता!' ऐसा सोचकर मैं हर तरह की कठोर टिप्पणी से ऊपर उठ सकती हूँ। यहाँ कौन सोच सकता है कि एक किशोरी के मन में इतना कुछ चल रहा है?

शनिवार, 15 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

यहाँ के सभी झगड़ों और बहसों की विस्तार से चर्चा करना ज़रूरी नहीं है। तुम्हें यह बताना काफ़ी होगा कि हम मांस, चर्बी और तेल का बँटवारा कर चुके हैं और अपने आलू अलग तलते हैं। हाल ही में हमने थोड़ी ज़्यादा राइ ब्रेड खाना शुरु किया है, क्योंकि चार बजे तक हमें इतनी भूख लग जाती है कि हम अपने पेट की गुड़गड़ाहट पर मुश्किल से क़ाबू पाते हैं।

माँ का जन्मदिन आने वाला है। उन्हें मि. कुगलर से कुछ अतिरिक्त चीनी मिली, जिससे फ़ॉन डान परिवार को जलन हुई, क्योंकि मिसेज़ फ़ॉन डी को उनके जन्मदिन पर वह नहीं मिली थी। लेकिन कठोर शब्दों, ईर्ष्यालु बातचीत और आँसुओं से तुम्हें उबाने क्या कोई ज़रूरत है, जबकि हम जानते हैं कि उससे हम और भी ज़्यादा ऊब जाते हैं। माँ ने एक इच्छा जताई है, जो बहुत जल्दी तो पूरी होने वाली नहीं है और वह है, मि. फ़ॉन डान का चेहरा पूरे दो हफ़्ते तक न देखना। मैं सोचती हूँ कि क्या एक ही घर में रहने वाले लोग क्या कभी न कभी एक-दूसरे से लड़ने लगते हैं। या फिर हम लोग कुछ बदक़िस्मत हैं? खाने के समय जब दुसे आधे शोरबे का बड़ा हिस्सा ख़ुद ले लेते हैं और हम सबके लिए ज़्यादा कुछ नहीं बचता, तो मेरी भूख मर जाती

है और मेरी इच्छा होती है कि खड़े होकर मैं उन्हें कुर्सी से गिरा दूँ और दरवाज़े से बाहर फेंक दूँ।

क्या अधिकतर लोग इतने कंजूस और स्वार्थी होते हैं? यहाँ आने के बाद से मुझे मानव स्वभाव के बारे में जानकारी हुई है, जो कि अच्छा है, लेकिन फ़िलहाल काफ़ी हो चुका है। पीटर भी यही कहता है।

हमारे झगड़ों और आज़ादी व ताज़ा हवा की हमारी इच्छा के बावजूद युद्ध चलता रहेगा, इसलिए हमें यहाँ रहने का फ़ायदा उठाना चाहिए। मैं सीख दे रही हूँ, लेकिन मैं यह भी मानती हूँ कि अगर मैं यहाँ ज़्यादा लंबे समय तक रही, तो मैं फलियों के सूखे तने की तरह हो जाऊँगी। मैं सिर्फ़ एक ईमानदार, अच्छी किशोरी बनना चाहती हूँ!

तुम्हारी, ऐन

बुधवार शाम, 19 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

मैं (मैं फिर शुरू हो गई!) नहीं जानती कि क्या हुआ, लेकिन सपने के बाद से मैंने गौर किया कि मैं बदल गई हूँ। वैसे, कल रात मैंने फिर से पीटर का सपना देखा और फिर से मैंने उसकी आँखों को अपनी आँखों को भेदते देखा, लेकिन यह सपना उतना साफ़ नहीं था और पिछले सपने जैसा ख़ूबसूरत भी नहीं था।

तुम जानती हो कि मैं हमेशा से मारगोट के पापा से रिश्ते को लेकर जलती थी। अब मुझमें उस जलन का कुछ भी शेष नहीं है; मुझे अब भी बुरा लगता है जब पापा मेरे प्रति अविवेकी हो जाते हैं, लेकिन फिर मैं सोचती हूँ, 'मैं आपको आपके बर्ताव के लिए दोषी नहीं मान सकती। आप बच्चों व किशोरों के दिमाग़ों की इतनी बात करते हैं, लेकिन आप उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते!' मुझे पापा के स्नेह, उनके प्यार-दुलार से कहीं ज़्यादा चाहिए। क्या मेरा सिर्फ़ ख़ुद पर केंद्रित रहना बुरा नहीं है? क्या मुझे, जो अच्छी व दयालु बनना चाहती है, उन्हें माफ़ नहीं कर देना चाहिए? मैं माँ को माफ़ कर देती हूँ, लेकिन हर बार जब वे व्यंग्यात्मक टिप्पणी करती हैं या मुझ पर हँसती हैं, तो मैं ख़ुद पर क़ाबू करने के लिए यही कर पाती हूँ।

मैं जानती हूँ कि जो मुझे होना चाहिए, मैं उससे बहुत दूर हूँ; क्या मैं कभी वैसी बन पाऊँगी?

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। पापा ने पूछा कि क्या मैंने तुम्हें केक के बारे में बताया। माँ को जन्मदिन पर दफ़्तर से युद्ध से पहले जैसी क्वालिटी का असली मोका केक मिला। बहुत अच्छा दिन था! लेकिन इस समय मेरे दिमाग़ में ऐसी चीज़ों के लिए कोई जगह नहीं है।

शनिवार, 22 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

क्या तुम मुझे बता सकती हो कि लोग अपने असली रूप को छिपाने के लिए इतनी मेहनत क्यों करते हैं? या फिर मैं जब दूसरों के साथ होती हूँ, तो इतना अलग बर्ताव क्यों करती हूँ? लोगों का एक-दूसरे पर इतना कम विश्वास क्यों है? मुझे मालूम है कि कोई कारण होगा, लेकिन कई बार मैं सोचती हूँ कि यह कितना भयानक है कि आप कभी किसी पर भरोसा नहीं कर सकते, उन पर भी नहीं, जो आपके बहुत क़रीब होते हैं।

लगता है कि उस सपने के बाद से मैं बड़ी हो गई हूँ, जैसे कि मैं अधिक स्वतंत्र हो गई हूँ। तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि फ़ॉन डान परिवार के प्रति भी मेरा रवैया बदल गया है। सभी बातचीतों व बहसों को मैंने अपने परिवार के दृष्टिकोण से देखना छोड़ दिया है। आख़िर इतना क्रांतिकारी बदलाव आया कैसे? मुझे अचानक लगा कि अगर माँ अलग ढंग की होती, वे सचमुच की माँ होती, तो हमारा रिश्ता काफ़ी अलग होता। मिसेज़ फ़ॉन डान किसी भी तरह से बढ़िया इंसान नहीं हैं, फिर भी आधी बहसों से बचा जा सकता था, अगर किसी पेचीदा विषय के आने पर माँ से निपटना मुश्किल न होता। मिसेज़ फ़ॉन डान में एक अच्छी बात तो है और यह कि आप उनसे बात कर सकते हैं। वे स्वार्थी, कंजूस और कपटी हो सकती हैं, लेकिन अगर आप उन्हें न उकसाएँ और हद से ज़्यादा न बढ़ें, तो वे पीछे हट जाती हैं। यह तरकीब हमेशा काम नहीं आती, लेकिन अगर आपमें धीरज है, तो आप कोशिश करते रह सकते हैं और देख सकते हैं कि आप कहाँ तक पहुँच पाते हैं।

हमारी परवरिश, बच्चों से लाड़-प्यार करने, खाने और सभी चीज़ों को लेकर हमारे टकराव शायद अलग मोड़ ले लेते अगर हम खुला दिल-दिमाग़ रखते और हमेशा बुरा पक्ष देखने के बजाय दोस्ताना रवैया रखते।

मैं जानती हूँ कि तुम क्या कहोगी, किटी। 'लेकिन ऐन, क्या ये शब्द वाक़ई तुम्हारे मुँह से निकल रहे हैं? तुम, जिसे ऊपरवाले लोगों से इतने कठोर शब्द सुनने पड़े? तुमसे, जो सारे अन्याय के बारे में जानती हो?'

फिर भी मेरे मुँह से ये शब्द निकल रहे हैं। मैं चीज़ों को नए ढंग से और अपने नज़रिये से देखना देखना चाहती हूँ, न कि अपने माँ-बाप की नक़ल करना चाहती हूँ, जैसा कि कहावत है, 'बच्चों में माँ-बाप के गुण आते ही हैं।' मैं फ़ॉन डान परिवार को फिर से समझना चाहती हूँ और ख़ुद तय करना चाहती हूँ कि क्या सही है और किस चीज़ को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया। अगर मैं उनसे निराश होती हूँ, तो मैं मम्मी-पापा का पक्ष ले सकती हूँ। अगर नहीं, तो मैं उनके रवैये में बदलाव लाने की कोशिश कर सकती हूँ। अगर वह काम नहीं आता, तो मैं अपनी राय व रवैये पर क़ायम रहूँगी। मैं बिना किसी डर के अपने मतभेदों पर खुले तौर पर

मिसेज़ फ़ॉन डी से बात करूँगी और बहुत ज़्यादा होशियार होने की अपनी नेकनामी के बावजूद अपनी निष्पक्ष राय दूँगी। मैं अपने परिवार के बारे में कुछ भी नकारात्मक नहीं कहूँगी, हालाँकि उसका यह मतलब नहीं कि किसी के द्वारा ग़लत बात कहे जाने पर मैं उनका पक्ष नहीं लूँगी। आज की स्थिति यही है कि बेकार की बकवास करना अब पुरानी बात हो गई है।

अब तक मैं पूरी तरह आश्वस्त थी कि फ़ॉन डान परिवार ही सभी लड़ाइयों का दोषी है, लेकिन अब मुझे यक़ीन है कि ग़लती हमारी थी। जहाँ तक मुद्दों का सवाल है, हम सही थे, लेकिन बुद्धमान लोगों (जैसे कि हम हैं!) को मालूम होना चाहिए कि बाक़ी लोगों से कैसे निपटा जाता है।

मुझे उम्मीद है कि मुझे यह बात समझ आई होगी और मुझे उसका इस्तेमाल करने का कोई मौक़ा मिलेगा।

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 24 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

मेरे साथ एक बहुत अजीब बात हुई। (दरअसल, होना भी बिलकुल सही शब्द नहीं है।)

यहाँ आने से पहले, जब कभी घर या स्कूल में कोई सेक्स के बारे में बात करता था, तो वे या तो बहुत रहस्यात्मक ढंग से या फिर घृणास्पद तरीक़े से बात करते थे। सेक्स से जुड़े किसी भी शब्द को इतना धीरे फुसफुसाकर बोला जाता था कि जो जानकार नहीं थे, उन पर सब हँसते थे। वे मुझे अलग मानते थे, क्योंकि मुझे अक्सर हैरानी होती थी कि इस विषय पर बात करने के मामले में लोग इतने रहस्यात्मक या अजीब से क्यों होते हैं। लेकिन मैं क्योंकि चीज़ों को नहीं बदल सकती थी, तो मैं जितना हो सके, कम बोलती थी या फिर जानकारी के लिए अपनी सहेलियों से पूछती थी।

काफ़ी कुछ सीखने के बाद एक बार माँ ने मुझे कहा, 'ऐन, मैं तुम्हें कुछ अच्छी सलाह देती हूँ। लड़कों से कभी इस पर बात मत करना और अगर वे उन बातों को उठाएँ, तो जवाब मत देना।'

मुझे अपना जवाब अब तक याद है। 'बिलकुल नहीं, माँ।' 'ज़रा सोचिए!' इसके बाद कुछ नहीं कहा गया।

जब हम पहली बार छिपने के लिए आए, तो पापा अक्सर मुझे ऐसी बातें बताते थे, जो मुझे माँ से सुननी चाहिए थी और बाक़ी मैंने किताबों से या बातचीत के दौरान सीखा।

पीटर फ़ॉन डान इस विषय को लेकर उतना अजीब नहीं था, जितना कि स्कूल के लड़के थे। या हो सकता है कि शुरू में एक या दो बार, हालाँकि वह मुझसे बात निकलवाने की कोशिश

नहीं कर रहा था। एक बार मिसेज़ फ़ॉन डान ने मुझे बताया था कि वे कभी भी इस तरह की बातें पीटर से नहीं करेंगी और जहाँ तक उन्हें पता था, उनके पति भी ऐसा नहीं करते। उन्हें यह भी नहीं पता था कि पीटर कितना जानता था या फिर उसे जानकारी कहाँ से मिली।

कल जब मारगोट, पीटर और मैं आलू छील रहे थे, तो बातचीत किसी तरह से बॉश की तरफ़ मुड़ गई। 'हमें अभी तक पक्का नहीं पता कि बॉश बिल्ला है या बिल्ली, क्या हमें पता है?' मैंने पूछा।

'हाँ, हमें पता है,' पीटर ने कहा। 'वह बिल्ला है।'

मैं हँसने लगी। 'हाँ, अगर उसके बच्चे होने वाले हैं।'

पीटर और मारगोट भी हँसने लगे। पता है एक या दो महीने पहले पीटर ने हमें बताया था कि बॉश के बच्चे होने वाले हैं, क्योंकि उसका पेट तेज़ी से फूल रहा है। बाद में पता चला कि उसके फूले हुए पेट का राज़ चुराई हुई हड्डियाँ थीं। उसके अंदर कोई बच्चे थे ही नहीं, पैदा होना तो दूर की बात है।

पीटर को लगा कि उसे मेरे आरोप का जवाब देना चाहिए। 'मेरे साथ आओ। तुम ख़ुद देख सकती हो। एक दिन मैं उसके साथ हुड़दंग मचा रहा था, तो मैंने जान लिया कि वह "लड़का" है।'

अपनी उत्सुकता न दबा पाने के कारण मैं उसके साथ गोदाम चली गई। बॉश हालाँकि उस समय किसी मेहमान के इंतज़ार में नहीं था और उसका कहीं अता-पता नहीं था। हमने थोड़ा इंतज़ार किया, लेकिन ठंड महसूस होने पर हम वापस ऊपर चले गए।

बाद में मैंने सुना कि पीटर फिर से नीचे गया था। मैं हिम्मत करके ख़ामोश घर से होते हुए गोदाम में पहुँची। बॉश पैकिंग टेबल पर था और पीटर के साथ खेल रहा था, जो उसका वज़न लेने के लिए उसे मशीन पर रखने की तैयारी में था।

'हैलो, क्या तुम देखना चाहती हो?' उसने सीधे बॉश को उठाकर उसे उल्टा किया, उसके सिर व पंजों को पकड़े रखा और अपना सबक़ शुरु किया। 'यह नर यौन अंग है, ये कुछ बाल हैं और ये उसका पिछला हिस्सा है।'

बॉश ने पलटी मारी और अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

अगर किसी और लड़के ने 'नर यौन अंग' के बारे में मुझे बताया होता, तो मैं उसे दोबारा नहीं देखती। लेकिन पीटर सामान्य तौर पर ऐसे विषय पर बात करता रहा, जो काफ़ी अटपटा हो। न ही उसके इरादे ख़राब थे। उसकी बात पूरी होने तक मैं काफ़ी सहज महसूस करने लगी थी और सामान्य बर्ताव करने लगी थी। हम बॉश के साथ खेलने लगे, हमें मज़ा आया, हमने थोड़ी बातचीत की और फिर लंबे से गोदाम से होकर हम दरवाज़े की तरफ़ बढ़े।

'तुम वहीं थे, जब मूशी की नसबंदी कर रहे थे?'

'हाँ, वहीं था। उसमें ज़्यादा वक़्त नहीं लगता। वे बिल्ली को बेहोश करने की दवा देते हैं।'

'क्या वे कुछ निकालते हैं?'

'नहीं, नली को सिर्फ़ काट देते हैं। बाहर से कुछ नहीं दिखाई देता।'

मुझे एक सवाल पूछने के लिए काफ़ी हिम्मत जुटानी पड़ी, क्योंकि वह उतना 'सामान्य' नहीं था जितना कि मैंने सोचा था। 'पीटर जर्मन शब्द *गेशलेक्स्टायल* का मतलब है, "यौन अंग", है न? लेकिन नर व मादा के अंगों के नाम अलग हैं।'

'मैं जानता हूँ।'

'मैं जानती हूँ कि मादा अंग योनि है, लेकिन नरों के अंग का नाम नहीं जानती।'

'हम्मम।'

'अच्छा', मैंने कहा। 'हम इन शब्दों को कैसे जान सकते हैं? अधिकतर समय बस, अचानक ही वे हमारे सामने आ जाते हैं।'

'इंतज़ार क्यों करें? मैं अपने माता-पिता से पूछता हूँ। वे मुझसे ज़्यादा जानते हैं और मुझसे ज़्यादा अनुभवी हैं।'

हम सीढ़ियों पर पहुँच चुके थे, इसलिए और कुछ नहीं कहा गया।

हाँ, ऐसा सचमुच हुआ। मैं किसी लड़की से इतने सामान्य तौर पर इस बारे में बात नहीं कर सकती थी। मैं कह सकती हूँ कि माँ के कहने का भी यह मतलब नहीं था, जब उन्होंने मुझे लड़कों को लेकर चेतावनी दी थी।

मैं पूरे दिन भर सामान्य नहीं रह पाई। जब मैंने अपनी बातचीत के बारे में सोचा, तो वह मुझे अजीब लगी। लेकिन मैंने कम से कम एक बात तो सीखी: कुछ युवा हैं और लड़कों में भी कुछ ऐसे हैं, जो बिना मज़ाक उड़ाए इन बातों पर सहज रूप से चर्चा कर सकते हैं। क्या पीटर अपने माँ-बाप से बहुत सारे सवाल पूछने वाला है? क्या वह ऐसा ही है, जैसा कि कल लगा था?

ओह, मुझे क्या मालूम?!!!

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 28 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

हाल के हफ़्तों में शाही परिवारों के वंशवृक्षों और वंशक्रम में मेरी दिलचस्पी बढ़ गई है। मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि एक बार जब आप अपनी खोज शुरू करते हैं, तो आपको अतीत में गहरे और गहरे जाना होता है, जिससे आप ज़्यादा दिलचस्प चीज़ों तक पहुँच जाते हैं।

जहाँ मेरे स्कूल के काम का सवाल है, तो मैं काफ़ी मेहनती हूँ और रेडियो पर बीबीसी होम सर्विस को भी अच्छी तरह समझती हूँ, फिर भी मैं रविवार अपने फ़िल्मी सितारों के संग्रह

को देखने और सहेजने में लगाती हूँ। यह संग्रह अब काफ़ी बड़ा हो चुका है। मि. कुगलर हर सोमवार को *सिनेमा ऐंड थियेटर* की प्रति लाकर मुझे ख़ुश कर देते हैं। हमारे घर के कुछ कम दुनियावी सदस्य मेरे इस छोटे से शौक को पैसे की बर्बादी मानते हैं, फिर भी वे हर बार इस बात से हैरान होते हैं कि मैं एक साल बाद भी किसी भी फ़िल्म के कलाकारों को कितनी सटीकता से बात सकती हूँ। छुट्टी के दिन बेप अक्सर अपने बॉयफ्रेंड के साथ फ़िल्म देखने जाती है और शनिवार को मुझे बताती है कि वे कौन सा शो देखने जा रहे हैं और फिर मैं उसे धड़ल्ले से प्रमुख कलाकारों के नाम लेती हूँ व फ़िल्म की समीक्षा के बारे में बताती हूँ। माँ ने हाल में टिप्पणी की कि मुझे बाद में फ़िल्में देखने जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि सभी कहानियाँ, सितारों के नाम और समीक्षाएँ मुझे अच्छी तरह याद हैं।

जब भी कोई नया हेयरस्टाइल अपनाती हूँ, तो उनके चेहरे पर नापसंदगी साफ़ पढ़ सकती हूँ और मुझे पता होता है कि अब वे पूछेंगे कि मैं कौन से फ़िल्मी सितारे की नक़ल करने की कोशिश कर रही हूँ। मेरा यह जवाब कि वह मेरी खोज है, को शक से देखा जाता है। जहाँ तक बालों की शैली का सवाल है, वह आधे घंटे से ज़्यादा नहीं टिकती। तब तक उनकी टिप्पणियों से मैं इतनी परेशान हो जाती हूँ कि गुसलख़ाने में जाकर अपने बालों को फिर से उनके घुँघराले रूप में वापस ले आती हूँ।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 28 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

आज सुबह मैं यह सोचते हुए उठी कि क्या कभी तुम्हें गाय जैसा महसूस हुआ है, जिसे बार-बार मेरी बासी ख़बर को तब तक इतना चबाना पड़ता है कि ऊब हो जाती है और तुम मन ही मन यह माँगती हो कि ऐन कुछ नया लेकर आए।

माफ़ी चाहती हूँ कि तुम्हें यह सब जमा पानी जैसा उबाऊ लगता है, लेकिन ज़रा सोचो कि मैं वही सब बातें सुनकर कितना थक चुकी हूँ। अगर खाने के समय राजनीति या बढ़िया खाने की बात नहीं होती, तो माँ या मिसेज़ फ़ॉन डी अपने बचपन की कहानियाँ दोहरानी लगती हैं, जिन्हें हम पहले भी हज़ार बार सुन चुके होते हैं। या फिर दुसे दौड़ के ख़ूबसूरत घोड़ों, अपनी शार्लोट के कपड़ों, चूने वाली नावों, चार साल की उम्र में तैराकी करने वाले लड़कों, दुखती मांसपेशियों और डरे हुए मरीज़ों पर बोलते चले जाते हैं। हम आठों में से जब भी कोई मुँह खोलता है, तो यही होता है कि बाक़ी सात उसकी बात पूरी कर सकते हैं। किसी भी चुटकुले के सुनाए जाने से पहले हमें उसका सार पता होता है और सुनाने वाला ही उस पर अकेला हँसने के लिए रह जाता है। इन दोनों गृहिणियों के कई दूधवालों, दुकानदारों और कसाइयों की इतनी तारीफ़ें या फिर इतनी बुराइयाँ की गई हैं कि हमारी कल्पना में वे मेथ्यूसिलाह जितने बूढ़े हो गए हैं; अनेक्स में किसी नए इंसान पर बातचीत होने की अब कोई संभावना ही नहीं है।

यह सब सहने लायक़ होता, अगर सभी बड़े लोगों को मि. क्लेमन, यान या मीप से सुनी गई कहानियों को दोहराने की आदत नहीं होती, हर बार वे उसमें अपनी कोई बात जोड़ देते हैं और अक्सर मुझे उत्साही कहानी सुनाने वाले को सही रास्ते पर लाने से बचने के लिए मेज़ के नीचे अपनी बाँह पर चिकोटी काटनी पड़ती है। ऐन जैसे छोटे बच्चों को कभी भी बड़ों को नहीं टोकना चाहिए, चाहे वे कितनी भी ग़लतियाँ करें या फिर अपनी कल्पना के घोड़े कहीं भी दौड़ाते रहें।

यान और मि. क्लेमन को उन लोगों की बातें करना अच्छा लगता है, जो भूमिगत हो चुके हैं या फिर कहीं छिपे हैं; वे जानते हैं कि हम हमारे जैसी स्थिति में लोगों के बारे में सुनने को उत्सुक हैं और हम सचमुच ऐसे लोगों के कष्टों के प्रति सहानुभूति रखते हैं, जिन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया हो या आज़ाद हो चुके क़ैदियों की ख़ुशी भी समझते हैं।

भूमिगत हो जाना और छिपना अब इतनी सामान्य दिनचर्या हो गई है, जैसे कि दिन भर के काम के बाद घर के मालिक का इंतज़ार करते पाइप व चप्पलें हुआ करती थीं। फ्री नीदरलैंड्स जैसे कई प्रतिरोधी समूह भी हैं, जो नक़ली पहचान पत्र बनाते हैं, छिपे हुए लोगों को आर्थिक सहायता देते हैं, छिपने की जगहों का इंतज़ाम करते हैं और भूमिगत हुए युवा ईसाइयों के लिए काम का इंतज़ाम करते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि ये उदार व निःस्वार्थी लोग कितना कुछ करते हैं, अन्य लोगों की मदद व उन्हें बचाने के लिए अपनी ज़िंदगी को ख़तरे में डालते हैं।

हमारी मदद करने वाले लोग इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं, जिन्होंने अब तक ज़िंदा रहने में हमारी मदद की है और उम्मीद है कि हमें हालात से सुरक्षित निकाल पाएँगे, वरना उनकी नियति भी वही हो सकती है, जो उनकी है, जिन्हें वे बचाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कभी हमारे बोझ होने की बात पर कुछ नहीं कहा है, उन्होंने कभी यह शिकायत नहीं की है कि हम कितनी बड़ी मुसीबत हैं। वे हर रोज़ ऊपर आते हैं, पुरुषों से कामकाज व राजनीति की बात करते हैं, महिलाओं से खाने-पीने व युद्ध की मुश्किलों की बात करते हैं और बच्चों से किताबों व अख़बारों की चर्चा करते हैं। वे चेहरे पर ख़ुशनुमा भाव रखते हैं, जन्मदिन व ख़ास मौक़ों पर फूल व सौगातें लाते हैं और हमेशा वह सब करने के लिए तैयार रहते हैं, जो वे कर सकते हैं। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए; बाक़ी लोग जब युद्ध या जर्मनों के ख़िलाफ़ अपनी बहादुरी दिखाते हैं, हमारे मददगार हर रोज़ अपने उत्साह व प्रेम से अपनी वीरता साबित करते हैं।

बहुत अजीब सी बातें सुनने को मिल रही हैं और उनमें से अधिकतर सच हैं। उदाहरण के लिए, मि. क्लेमन ने इस सप्ताह बताया कि गेल्डरलैंड क्षेत्र में एक फ़ुटबॉल मैच हुआ, जिसमें एक टीम में भूमिगत हो चुके लोग थे और दूसरी में मिलिट्री पुलिसमैन। इल्फ़र्शम में नए पंजीकरण कार्ड जारी किए गए। गुप्त रूप से रह रहे लोगों को राशन (अपनी राशन बुक पाने के लिए आपको इस कार्ड को दिखाना पड़ता है या फिर हर बुक के लिए 60 गिल्डर्स देने होंगे) मिल सके, इसलिए रजिस्ट्रार ने एक ज़िले में छिपे लोगों को एक निश्चित समय पर अपने कार्ड लेने के लिए कहा, जब एक अलग मेज़ पर दस्तावेज़ लिए जा सकते थे।

इसके अलावा यह सावधानी बरतना भी ज़रूरी है कि इस तरह के करतबों की ख़बर जर्मनों के कानों तक न पहुँचे।

तुम्हारी, ऐन

रविवार, 30 जनवरी, 1944

प्रिय किटी,

एक और रविवार आ गया; उनके आने से मुझे उतना फ़र्क़ नहीं पड़ता, जितना कि पहले पड़ता था, लेकिन फिर भी वे उबाऊ हैं।

मैं अभी गोदाम नहीं गई हूँ, लेकिन शायद जल्दी ही जाऊँगी। कल रात मैं अँधेरे में अकेले नीचे गई, कुछ समय पहले मैं पापा के साथ गई थी। जर्मन जहाज़ उड़ रहे थे और मैं सीढ़ियों पर ऊपर खड़ी थी और मैं जानती थी कि मैं अकेली हूँ और किसी पर मदद के लिए निर्भर नहीं कर सकती। मेरा डर ग़ायब हो गया। मैंने आसमान की तरफ़ देखा और ईश्वर में विश्वास जताया।

मुझमें अकेले रहने की गहरी इच्छा थी। पापा ने गौर किया कि मैं अपने आपे में नहीं थी, लेकिन मैं उन्हें नहीं बता सकती कि मुझे कौन सी चिंता खाए जा रही है। मैं बस चिल्लाना चाहती थी, 'मुझे अकेला छोड़ दो!'

कौन जानता है कि शायद ऐसा कोई दिन आए, जब मुझे अकेला छोड़ दिया जाएगा।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 3 फ़रवरी, 1944

प्रिय किटी,

पूरे देश में हमले का बुख़ार बढ़ता जा रहा है। अगर तुम यहाँ होती, तो यह बात पक्की है कि तुम भी तैयारियों को देखकर मेरी तरह ही प्रभावित होती, हालाँकि तुम हमारे गड़बड़झाले पर भी ज़रूर हँसती। हो सकता है कि कुछ भी न हो!

अख़बार हमले की ख़बरों से भरे हैं और इस तरह के वक्तव्यों से हर किसी को पागल कर रहे हैं: 'हॉलैंड में ब्रिटिश के आने से जर्मन वह सब करेंगे, जो अपने देश को बचाने के लिए किया जा सकता है, अगर ज़रूरी हो तो बाढ़ भी लाई जा सकती है।' उन्होंने हॉलैंड के नक्शे छापे हैं, जिनमें संभावित बाढ़ वाले इलाके चिन्हित किए गए हैं। ऐम्स्टर्डम के बड़े हिस्सों को चिन्हित किया गया है, इसलिए हमारा पहला सवाल था कि अगर हमारे यहाँ पानी कमर तक आ पहुँचे तो हमें क्या करना चाहिए। इस पेचीदा सवाल पर कई तरह की प्रतिक्रियाएँ आईं।

'चलना या फिर साइकिल चलना नामुमकिन हो जाएगा, इसलिए हमें पानी से होकर

गुज़रना होगा।'

'बेवकूफ़ी की बात मत करो। हमें कोशिश करनी होगी और तैरना होगा। हम सबको अपनी तैराकी की पोशाक पहननी होगी और जितना हो सके, पानी के नीचे तैरना होगा, ताकि कोई देख न ले कि हम यहूदी हैं।'

'बकवास! मैं कल्पना कर सकता हूँ कि महिलाएँ तैर रही होंगी और चूहे उनकी टाँगें काट रहे होंगे!' (ज़ाहिर है कि किसी पुरुष ने ऐसी बात कही हांगी; हम देखेंगे कि कौन सबसे ज़्यादा चीख़ेगा!)

'हम लोग घर से भी नहीं निकल पाएँगे। गोदाम इतना अस्थिर है कि बाढ़ आने पर वह बर्बाद हो जाएगा।'

'सभी बात सुनिए, मज़ाक की बात छोड़ दें, तो हमें वाक़ई कोशिश करनी होगी और नाव प्राप्त करनी होगी।'

'फ़िक्र क्यों करें? मेरे पास बेहतर विचार है। हम सभी अटारी से लकड़ी की एक-एक पेटी ले लेंगे और लकड़ी के चम्मच से उसे पानी में चलाएँगे।'

'मैं तो शहतीरों पर चलूँगा। मैं बचपन में इसमें माहिर था।'

'यान गीज़ को को ज़रूरत नहीं होगी। वे अपनी पत्नी को पीठ पर लादेंगे और फिर मीप शहतीरों पर होंगी।'

तो अब तुम्हें समझ आ गया होगा कि यहाँ क्या चल रहा है, है न, किट? यह हल्का-फुल्का मज़ाक काफ़ी मनोरंजक है, लेकिन असलियत इससे अलग होगी। हमले को लेकर यह दूसरा सवाल उठना स्वाभाविक है: अगर जर्मन ऐम्स्टर्डम को ख़ाली कराएँगे, तो हमें क्या करना चाहिए?

'बाक़ी लोगों के साथ शहर छोड़ देंगे। जितना संभव हो, अपना रूप बदल लेंगे।'

'जो भी हो, बाहर मत जाना! बेहतर होगा कि हम अंदर रहें! जर्मन हॉलैंड के सभी लोगों को जर्मनी में जमा करने की क्षमता रखते हैं, जहाँ वे सभी मर जाएँगे।'

'हम तो यहीं रहेंगे। यह सबसे सुरक्षित जगह है। हम क्लेमन और उनके परिवार को यहाँ आकर रहने को कह सकते हैं। हम किसी तरह से लकड़ी की छीलन के बोरे का इंतज़ाम कर सकते हैं, ताकि हम फ़र्श पर सो सकें। ज़रूरत पड़ने पर मीप व क्लेमन को हम कुछ कम्बल लाने के लिए कह सकते हैं। हम अतिरिक्त अनाज भी मँगवा सकते हैं, जो हमारे पैंसठ पाउंड के भंडार में जमा हो जाएगा। यान कुछ और बीन्स लाने की कोशिश कर सकते हैं। फ़िलहाल हमारे पास पैंसठ पाउंड बीन्स हैं और दस पाउंड मटर की दाल। हमारे पास सब्ज़ियों के पचास टिन भी हैं।'

'बाक़ी का क्या, माँ? हमें नए आँकड़े चाहिए।'

'मछली के दस, दूध के चालीस टिन, बीस पाउंड पाउडर दूध, तेल की तीन बोतलें, मक्खन

के चार डिब्बे, मांस के चार मर्तबान, स्ट्रॉबेरी के दो बड़े मर्तबान, दो रसभरी के, टमाटर के बीस मर्तबान, दस पाउंड ओटमील, नौ पाउंड चावल। बस, इतना ही।'

हमारे पास अच्छी व्यवस्था है। इसके अलावा हमें दफ़्तर के कर्मचारियों को भी भोजन करवाना होता है, जिसका मतलब है कि हमारे भंडार हर सप्ताह कम होते जा रहे हैं, इसलिए ये इतना नहीं है जितना कि लगता है। हमारे पास पर्याप्त कोयला, ईंधन की लकड़ी और मोमबत्तियाँ भी हैं।

'हम अपने कपड़ों में छिपाने के लिए पैसे रखने के छोटे बटुए बना लेते हैं, ताकि यहाँ से जाने की स्थिति में हम अपने साथ अपना पैसा ले जा सकें।'

'यहाँ से भागने की स्थिति में ले जाने लायक़ सामान की हमें सूची बना लेनी चाहिए और अपने थैले तैयार रखने चाहिए।'

'समय आने पर हम दो लोगों को पहरे पर लगा देंगे, एक, घर के आगे के हिस्से में और दूसरा, पीछे वाले हिस्से में।'

'ज़रा ठहरो, इतने खाने का क्या फ़ायदा अगर हमारे पास पानी, गैस या बिजली न हो?'

'हमें अंगीठी में खाना बनाना होगा। पानी को छानकर उबालना होगा। हमें बड़े जग साफ़ करके उनमें पानी भरकर रख देना चाहिए। हमें संरक्षण के काम आने वाले तीन कड़ाहों और टिन के बाथटब में भी पानी जमा कर देना चाहिए।'

'इसके अलावा हमारे पास अभी भी मसालों के भंडारगृह में दो सौ तीस पाउंड सर्दी के आलू भी हैं।'

दिन भर मैं यही सब सुनती हूँ। आक्रमण, आक्रमण, और कुछ भी नहीं। भूखे रहने, मरने, बमों, अग्निशमन, स्लीपिंग बैग, पहचान पत्र, ज़हरीली गैस, वगैरह, वगैरह के बारे में बहस। कोई भी हँसी-ख़ुशी की बात नहीं।

पुरुषों की टुकड़ी की स्पष्ट चेतावनी का एक बढ़िया उदाहरण यान से उनकी बातचीत है:

अनेक्स: 'हमें डर है कि अगर जर्मन पीछे हटे, तो वे अपने साथ सभी लोगों को ले जाएँगे।'

यान: 'वह नामुमकिन है। उनके पास पर्याप्त रेलगाड़ियाँ नहीं हैं।'

अनेक्स: 'रेलगाड़ियाँ? क्या आपको लगता है कि वे आम नागरिकों को रेलगाड़ियों में ले जाएँगे? बिलकुल भी नहीं। हर किसी को चलकर जाना होगा।' (या जैसे कि दुसे कहते हैं, प्रचारकों का अनुसरण करना होगा।)

यान: 'मुझे यक़ीन नहीं आता। आप हमेशा बुरे पक्ष को देखते हैं। सभी नागरिकों को इकट्ठा करने व साथ ले जाने का वे क्या कारण देंगे?'

अनेक्स: 'क्या आपने गबेल्स की वह कहावत नहीं सुनी कि अगर जर्मनों को जाना होगा, तो वे अपने पीछे सभी कब्ज़े वाले क्षेत्रों के लिए दरवाज़े बंद कर देंगे?'

यान: 'उन्होंने तो काफ़ी कुछ कहा है।'

अनेक्स: 'क्या आपको लगता है कि जर्मन इतने अच्छे या इंसानियत भरे हैं? उनका तर्क है: अगर हम डूबेंगे, तो सभी को लेकर डूबेंगे।'

यान: 'आपको जो अच्छा लगे, आप कहें, मुझे तो विश्वास नहीं है।'

अनेक्स: 'वही घिसी-पिटी कहानी है। ख़तरे के बिलकुल सामने आ जाने तक कोई उसे देखना नहीं चाहता।'

यान: 'लेकिन आप पक्के तौर पर कुछ नहीं कह सकते। आप सिर्फ़ एक धारणा बना रहे हैं।'

अनेक्स: 'क्योंकि हम ख़ुद इन सबसे गुज़र चुके हैं। पहले जर्मनी में और फिर यहाँ पर। आपको क्या लगता है कि रूस में क्या हो रहा है?'

यान: 'आपको यहूदियों को शामिल नहीं करना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि कोई भी रूस के बारे में जानता है। शायद जर्मनों की तरह ही ब्रिटिश और रूसी प्रचार के लिए बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं।'

अनेक्स: 'बिलकुल भी नहीं। बीबीसी हमेशा सच बताता है। अगर ख़बर थोड़ी अतिशयोक्ति भी है, तब भी तथ्य तो मौजूद हैं। आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि पोलैंड और रूस में शांतिप्रिय नागरिकों की हत्या की जा रही है या ज़हरीली गैस से मारा जा रहा है।'

मैं तुम्हें बाक़ी की बातचीत नहीं बताऊँगी। मैं काफ़ी शांत हूँ और इस सारे झंझट पर गौर नहीं करती। मैं ऐसे मोड़ पर पहुँच गई हूँ, जहाँ मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। दुनिया मेरे बिना भी चलती रहेगी और मैं वैसे भी हालात को बदलने के लिए कुछ भी नहीं कर सकती। मैं तो घटनाओं को होने दूँगी और पढ़ाई पर ध्यान लगाऊँगी और उम्मीद करूँगी कि आख़िर में सब कुछ ठीक हो जाए।

मंगलवार, 8 फ़रवरी, 1944

प्रिय किटी,

मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मैं कैसा महसूस कर रही हूँ। एक पल को मैं शांति व सुकून की चाह करती हूँ और अगले ही पल थोड़ी मस्ती करना चाहती हूँ। हम हँसना भूल गए हैं, मेरा मतलब है कि ऐसी हँसी, जो रोके न रुक पाए।

आज सुबह मैं खिलखिलाई, ठीक वैसे ही जैसे स्कूल में खिलखिलाती थी। मैं और मारगोट किशोरियों की तरह हँसे।

कल रात माँ के साथ फिर एक घटना हुई। मारगोट ऊनी कम्बल लपेट रही थी कि अचानक वह बिस्तर से बाहर उछली और कम्बल को ध्यान से देखने लगी। तुम्हें क्या लगता है कि उसे क्या मिला? एक सुई! माँ ने कम्बल को सिला था और सुई निकालना भूल गई थीं। पापा ने अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाया और माँ के लापरवाह होने पर टिप्पणी की। थोड़ी देर में माँ गुसलख़ाने से बाहर निकलीं और उन्हें छेड़ने के लिए मैंने कहा, 'ओह, आप बेरहम हैं।'

ज़ाहिर है कि वे जानना चाहती थीं कि मैंने वैसा क्यों कहा और हमने उन्हें बताया कि उन्होंने सुई छोड़ दी थी। उन्होंने तुरंत अहंकारी भाव अपनाते हुए कहा, 'तुम तो बात ही मत करो। जब तुम सिलाई कर रही होती हो, तो पूरे फ़र्श पर सुइयाँ बिखरी होती हैं। तुमने मैनिक्योर सेट फिर ऐसे ही छोड़ दिया। वैसे भी तुम उसे वापस रखती ही कहाँ हो!'

मैंने कहा कि मैंने उसका इस्तेमाल नहीं किया और मारगोट ने मेरा साथ दिया, क्योंकि वह उसकी ही ग़लती थी। माँ बोलती चली गईं कि मैं कितनी अव्यवस्थित हूँ और तब तक बोलती गईं जब तक कि मैं उकता नहीं गई और रूखे शब्दों में कहा, 'मैंने तो आपको लापरवाह तक नहीं कहा। मुझ पर हमेशा बाक़ी लोगों की ग़लतियों का इल्ज़ाम लगता है!'

माँ चुप हो गईं और एक मिनट से भी कम समय के बाद मुझे उन्हें शुभरात्रि कहकर चूमना पड़ा। यह घटना बहुत महत्त्वपूर्ण न भी रही हो, फिर भी आजकल मैं हर चीज़ से चिढ़ जाती हूँ।

ऐन मैरी फ्रैंक

शनिवार, 12 फ़रवरी, 1944

प्रिय किटी,

सूरज चमक रहा है, आसमान गहरा नीला है, अच्छी हवा चल रही है और मैं चाह रही, सचमुच चाह रही हूँ, हर चीज़: बातचीत, आज़ादी, दोस्त, अकेले रहना। मैं... रोना चाहती हूँ! मुझे लगता है कि जैसे मैं फट पड़ूँगी। मैं जानती हूँ कि रोने से मदद मिलेगी, लेकिन मैं रो नहीं सकती। मैं बेचैन हूँ। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती हूँ, खिड़की की चौखट की दरार से साँस लेती हूँ, अपने दिल की धड़कन महसूस करती हूँ जैसे कि कह रही हूँ, 'मेरी मुराद पूरी कर दो...'

मुझे लगता है कि मेरे भीतर बंसत है। बसंत के जागने को महसूस करती हूँ। मैं उसे अपने पूरे शरीर और आत्मा में महसूस करती हूँ। मुझे सामान्य बर्ताव करना पड़ता है। मैं बहुत असमंजस में हूँ, नहीं जानती कि क्या पढ़ना है, क्या लिखना है, क्या करना है। मैं बस जानती हूँ कि मुझे किसी चीज़ की चाह है...

तुम्हारी, ऐन

सोमवार, 14 फ़रवरी, 1944

प्रिय किटी,

शनिवार के बाद से मेरे लिए काफ़ी कुछ बदल गया है। कुछ ऐसा हुआ: मुझे किसी चीज़ की चाह थी (अब भी है), लेकिन... समस्या का एक छोटा सा, बहुत छोटा सा हिस्सा सुलझ गया है।

रविवार सुबह मुझे यह गौर करके ख़ुशी (मैं तुम्हारे साथ ईमानदारी बरतूँगी) हुई कि पीटर लगातार मेरी तरफ़ देख रहा था। वह कुछ अलग था। मैं नहीं जानती, मैं बता भी नहीं सकती, लेकिन अचानक मुझे महसूस हुआ कि उसे मारगोट से प्रेम नहीं था, जैसा कि मैं सोचती थी। मैं दिन भर कोशिश करती रही कि उसकी तरफ़ ज़्यादा न देखूँ, लेकिन जब भी मैंने उसकी ओर देखा, उसे अपनी तरफ़ देखते हुए पाया और फिर, मुझे असल में अंदर से बहुत अच्छा लगा, ऐसा मुझे अक्सर महसूस नहीं होता।

रविवार की शाम मुझे और पिम को छोड़कर बाक़ी सब रेडियो आसपास 'जर्मन उस्तादों का अमर संगीत' सुनने के लिए जमा थे। दुसे रेडियो के बटन घुमाते रहे, जिससे पीटर व बाक़ी लोग चिढ़ गए। आधे घंटे तक संयम रखने के बाद पीटर ने कुछ चिढ़कर दुसे से कहा कि क्या वे रेडियो के साथ छेड़छाड़ करना बंद करेंगे। दुसे ने अपने अहंकारी अंदाज़ में कहा, 'उसका फ़ैसला मैं करूँगा!' पीटर नाराज़ हो गया और उसने ढिठाई भरी टिप्पणी की। मि. फ़ॉन डान ने उसका पक्ष लिया और दुसे को पीछे हटना पड़ा। बस, इतना ही हुआ।

असहमति का कारण अपने आप में बहुत दिलचस्प नहीं था, लेकिन लगता है कि पीटर ने मामले को दिल पर ले लिया, क्योंकि आज सुबह जब मैं अटारी में किताबों के डिब्बे की खोजबीन में लगी थी, तो पीटर ऊपर आकर मुझे बताने लगा कि क्या हुआ था। मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी, लेकिन पीटर ने जल्दी ही महसूस कर लिया कि उसे बात ध्यान से सुनने वाला श्रोता मिल गया है और गर्मजोशी से बात बताने लगा।

'दरअसल हुआ यूँ,' उसने कहा। 'मैं अक्सर ज़्यादा बात नहीं करता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि जल्दी ही मैं चुप हो जाऊँगा। मैं हकलाने व शर्माने लगता हूँ और मैं अपने शब्द इतने घुमाता हूँ कि मुझे आख़िरकार रुकना पड़ता है, क्योंकि मुझे सही शब्द नहीं मिल पाते। कल भी ऐसा ही हुआ। मैं कुछ और कहना चाहता था, लेकिन एक बार बात शुरू होने पर सब कुछ उलझ गया। यह बहुत बुरा है। मेरी एक बुरी आदत थी और मुझे लगता है कि अब भी होती: जब भी मैं किसी पर गुस्सा होता था, तो मैं उसके साथ बहस करने के बजाय उसकी पिटाई कर दिया करता था। मैं जानता हूँ कि यह तरीक़ा मुझे कहीं नहीं ले जाएगा, इसलिए मैं तुम्हें सराहता हूँ। तुम्हारे पास कभी शब्दों की कमी नहीं होती: तुम ठीक वही कहती हो, जो कहना चाहती हो और बिलकुल भी नहीं झिझकती।'

‘अरे, इस बारे में तुम ग़लत हो,’ मैंने जवाब दिया। ‘मैं अधिकतर जो कुछ कहती हूँ, वह उस बात से बहुत अलग होता है, जो मैं बोलने की सोचती हूँ। इसके अलावा मैं बहुत और काफ़ी लंबे समय तक बोलती हूँ और वह भी उतना ही बुरा है।’

‘शायद, लेकिन तुम्हें यह फ़ायदा है कि कोई नहीं देख सकता कि तुम झेंप गई हो। तुम शर्माती नहीं हो या फिर घबरा नहीं जाती हो।’

उसकी बात सुनकर मैं भीतर ही भीतर हँसने से ख़ुद को नहीं रोक पाई। लेकिन मैं चाहती थी कि वह अपने बारे में बात करता रहे, इसलिए मैंने अपनी हँसी को छिपा लिया, फ़र्श पर कुशन पर बैठ गई, अपने घुटनों पर बाँहें लपेट ली और उसकी तरफ़ देखने लगी।

मुझे ख़ुशी है कि इस घर में कोई और है, जिसे मेरी तरह ही ग़ुस्सा आता है। मैं समझ गई कि पीटर इस बात को लेकर राहत में था कि बिना डरे वह दुसे की आलोचना कर पाया। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं भी ख़ुश थी, क्योंकि मुझे किसी के साथ का एक ज़बरदस्त एहसास हुआ, जो मेरा अपनी सहेलियों के साथ था।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 15 फ़रवरी, 1944

दुसे के साथ छोटे से टकराव के कई प्रभाव हुए, जिसके लिए वे ख़ुद ही दोषी थे। सोमवार शाम को दुसे माँ से मिलने आए और बड़े विजयी भाव से उन्हें बताया कि पीटर ने सुबह उनसे हालचाल पूछे और कहा कि रविवार शाम की घटना को लेकर उसे काफ़ी अफ़सोस है कि उसका मतलब वह नहीं था, जो उसने कहा। दुसे ने उसे आश्वस्त किया कि उन्होंने बात को दिल पर नहीं लिया है। सब कुछ बिलकुल ठीक है। माँ ने यह कहानी मुझे सुनाई और मैं इस बात पर हैरान थी कि दुसे से काफ़ी नाराज़ पीटर अपने तमाम आश्वासनों के ठीक उलट आख़िरकार झुक गया।

मैं इस पर पीटर से बात करने से ख़ुद को नहीं रोक पाई और उसने तुरंत कहा कि दुसे झूठ बोल रहे थे। तुम्हें पीटर का चेहरा देखना चाहिए था। काश, उस समय मेरे पास कैमरा होता! उसके चेहरे पर तेज़ी से एक के बाद एक नाराज़गी, रोष, अनिर्णय, आवेश और कई अन्य भाव दिखाई दिए।

उस शाम मि. फ़ॉन डान व पीटर ने वाक़ई दुसे के सामने अपनी नाराज़गी व्यक्त की। लेकिन यह सब उतना बुरा नहीं हो सकता था, क्योंकि आज पीटर को दाँत दिखाने के लिए डॉक्टर से मिलना था।

वे फिर कभी एक-दूसरे से बात नहीं करना चाहते थे।

बुधवार, 16 फ़रवरी, 1944

बस, थोड़े से निरर्थक शब्दों के अलावा पीटर और मैंने दिन भर ज़्यादा बात नहीं की। ठंड इतनी थी कि मैं अटारी तक नहीं गई और वैसे भी मारगोट का जन्मदिन था। साढ़े बारह बजे वह उपहारों को देखने आया और ज़रूरत से ज़्यादा लंबे समय तक बातचीत करने के लिए रुका रहा, जैसा कि उसने पहले कभी नहीं किया था। लेकिन मुझे दोपहर में अवसर मिला। मैं मारगोट को उसके जन्मदिन पर ख़ास महसूस करवाना चाहती थी, इसलिए मैं उसके लिए कॉफ़ी लाई और बाद में आलू भी। जब मैं पीटर के कमरे में पहुँची, तो उसने सीढ़ियों से तुरंत अपने काग़ज़ उठा लिए और मैंने उससे पूछा कि मुझे अटारी का चोर दरवाज़ा बंद कर देना चाहिए या नहीं।

'बिलकुल,' उसने कहा, 'कर दो। जब तुम नीचे जाने के लिए तैयार होगी, तब दस्तक देना, मैं तुम्हारे लिए खोल दूँगा।'

मैंने उसका धन्यवाद किया, ऊपर गई और कम से कम दस मिनट तक पीपे में सबसे छोटे आलू खोजती रही। मेरी पीठ दुखने लगी, अटारी में काफ़ी ठंड थी। ज़ाहिर है कि मैंने दस्तक देने के बजाय ख़ुद ही चोर दरवाज़ा खोल लिया। लेकिन वह उठा और उसने मेरे हाथ से बर्तन ले लिया।

'मैंने काफ़ी खोजा, लेकिन मुझे इससे छोटे आलू नहीं मिले।'

'क्या तुमने बड़े पीपे में देखा?'

'हाँ, सबको छान मारा।'

तब तक मैं सीढ़ियों पर नीचे पहुँच चुकी थी, उसने बर्तन को ध्यान से देखा। 'ये भी ठीक हैं,' उसने कहा और जैसे ही मैंने उससे बर्तन लिया, वह बोला, 'मेरी शुभकामनाएँ!'

यह कहते हुए उसने इतनी गर्मजोशी व नर्मी से मुझे देखा कि मैं अंदर से दमकने लगी। मैं देख सकती थी कि वह मुझे ख़ुश करना चाहता था, लेकिन क्योंकि वह लंबी बात नहीं कर सकता था, इसलिए उसने सब कुछ अपनी आँखों से कह दिया। मैं उसे इतनी अच्छी तरह समझ गई और भीतर से बहुत कृतज्ञ हो गई। उन शब्दों व उस नज़र को याद करके मैं अब भी ख़ुश हो जाती हूँ!

जब मैं नीचे गई, तो माँ ने कहा कि उन्हें रात के खाने के लिए और आलू चाहिए, इसलिए मैंने यह काम करने की ज़िम्मेदारी ली। पीटर के कमरे में पहुँचने पर मैंने उसे फिर से परेशान करने के लिए माफ़ी माँगी। मैं जैसे ही सीढ़ियों से ऊपर जाने लगी, तो वह उठा और सीढ़ियों व दीवार के बीच खड़ा हो गया, मेरी बाँह पकड़ी और मुझे रोकने की कोशिश की।

'मैं जाऊँगा,' उसने कहा। 'मुझे वैसे भी ऊपर जाना है।'

मैंने कहा कि उसकी ज़रूरत नहीं है और यह कि मुझे इस बार सिर्फ़ छोटे आलू ही नहीं लाने हैं। मेरी बात से आश्वस्त होकर उसने मेरी बाँह छोड़ दी। वापस आते समय उसने चोर दरवाज़ा

खोला और एक बार फिर मुझसे बर्तन ले लिया। दरवाज़े पर खड़े-खड़े मैंने उससे पूछा, 'तुम क्या पढ़ाई कर रहे हो?'

'फ्रेंच की,' उसका जवाब था।

मैंने पूछा कि क्या मैं उसके सबक़ देख सकती हूँ। फिर मैं हाथ धोने गई और दीवान पर उसके सामने बैठ गई।

फ्रेंच के बारे में कुछ समझाने के बाद हमने बात शुरु की। उसने मुझे बताया कि युद्ध के बाद वह डच ईस्ट इंडीज़ जाना चाहता है और रबड़ के बागान में रहना चाहता है। उसने घर की अपनी ज़िंदगी, काला बाज़ार के बारे में बताया और यह भी कि वह कितना बेकार का लड़का है। मैंने उसे बताया कि उसमें हीन भावना है। उसने युद्ध की बात की, यहूदियों की बात की और कहा कि रूस व इंग्लैंड एक-दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ाई करेंगे। उसने कहा कि अगर वह ईसाई होता, तो ज़िंदगी काफ़ी आसान होती और लड़ाई के बाद वह ईसाई बन सकता है। मैंने उससे पूछा कि क्या वह बपतिस्मा करवाना चाहता है, लेकिन उसका मतलब वह भी नहीं था। उसने कहा कि वह कभी भी ईसाई जैसा महसूस नहीं कर पाएगा, लेकिन युद्ध के बाद वह यह ज़रूर करेगा कि कोई न जान पाए कि वह यहूदी है। पल भर के लिए मेरे मन में टीस उठी। यह शर्मनाक है कि उसमें अब भी थोड़ी सी बेईमानी बाक़ी है।

पीटर ने आगे कहा, 'यहूदी हमेशा से चुनिंदा लोग थे और हमेशा रहेंगे!'

मैंने जवाब दिया, 'मुझे उम्मीद है कि वे किसी अच्छे काम के लिए चुने जाएँगे!'

हम पापा, मानव चरित्र को आँकने व कई तरह के विषयों पर अच्छी तरह बात करते रहे, बातें इतनी थी कि मुझे सब याद भी नहीं हैं।

मैं सवा पाँच बजे निकली, क्योंकि बेप आ चुकी थी।

उस शाम उसने कुछ और भी कहा था, जो मुझे अच्छा लगा था। हम एक फ़िल्मी सितारे की तसवीर की बात कर रहे थे, जो मैंने कभी उसे दी थी और वह तसवीर पिछले डेढ़ साल से उसके कमरे में टँगी थी। उसे वह इतनी पसंद आई कि मैंने उसे और तसवीरें देने की पेशकश की।

'नहीं,' उसने कहा, 'मैं बस इसे रखूँगा। मैं इसे हर रोज़ देखता हूँ और इसमें मौजूद लोग अब मेरे दोस्त बन चुके हैं।'

अब मुझे बेहतर ढंग से समझ आता है कि वह क्यों मूशी को इतना कसकर गले लगाता है। ज़ाहिर है कि उसे भी स्नेह चाहिए। मैं एक और बात बताना भूल गई, जो वह कह रहा था। उसने कहा, 'नहीं, मैं डरता नहीं हूँ। बस, जब ख़ुद से जुड़ी बात आती है तो गड़बड़ हो जाती है, उसे बेहतर बनाने पर मैं काम कर रहा हूँ।'

पीटर में हीन भावना बहुत है। उदाहरण के लिए, उसे लगता है कि वह बहुत बेवकूफ़ है और हम काफ़ी चतुर हैं। जब मैं फ्रेंच में उसकी मदद करती हूँ, तो वह मुझे हज़ार बार शुक्रिया

कहता है। किसी भी दिन मैं उससे कहने वाली हूँ, 'अरे, बस भी करो! तुम अंग्रेज़ी व भूगोल में बहुत बेहतर हो!'

तुम्हारी, ऐन फ्रैंक

बृहस्पतिवार, 17 फ़रवरी, 1944

प्रिय किटी,

आज सुबह मैं ऊपर थी, क्योंकि मैंने मिसेज़ फ़ॉन डी से वादा किया था कि मैं उन्हें अपनी कुछ कहानियाँ सुनाऊँगी। मैंने 'ईवा के सपने' से शुरुआत की, जो उन्हें बहुत अच्छी लगी और फिर मैंने 'सीक्रेट ऐनेक्स' से कुछ पढ़कर सुनाया, जिसमें वे कहीं-कहीं थीं। पीटर ने भी थोड़ी देर (आख़िरी हिस्सा) सुना और मुझसे पूछा कि क्या मैं थोड़ा और पढ़ने उसके कमरे में आ सकती हूँ।

मैंने सोच लिया था कि मुझे तुरंत इस मौक़े को लपकना होगा, इसलिए मैंने अपनी पुस्तिका ली और उसे उस हिस्से को पढ़ने दिया, जिसमें केडी और हान्स ईश्वर के बारे में बात करते हैं। मैं नहीं कह सकती कि उस पर उसका क्या असर पड़ा। उसने कुछ कहा था, जो मुझे याद नहीं, उसने उसके अच्छा होने की नहीं, बल्कि उसके पीछे मौजूद विचार की बात की थी। मैंने उसे कहा कि मैं उसे बस दिखाना चाहती थी कि मैं सिर्फ़ मज़ाकिया बातें नहीं लिखती। उसने सिर हिलाया और मैं कमरे से चली गई। देखते हैं कि कुछ और सुनने को मिलता है या नहीं!

तुम्हारी, ऐन फ्रैंक

शुक्रवार, 18 फ़रवरी, 1944

मेरी प्रिय किटी,

जब भी मैं ऊपर जाती हूँ, ताकि 'उसे' देख सकूँ। अब मेरे पास कोई उम्मीद है, इसलिए मेरी ज़िंदगी बहुत बेहतर हो गई है।

मेरा दोस्त यहीं मौजूद है और मुझे प्रतिद्वंद्वियों (मारगोट को छोड़कर) से कोई डर नहीं है। यह मत सोचो कि मुझे प्यार हो गया है, क्योंकि ऐसा नहीं है, लेकिन मुझे यह एहसास ज़रूर है कि पीटर और मेरे बीच कुछ ख़ूबसूरत सी चीज़ पनपेगी, एक तरह की दोस्ती और एक विश्वास की भावना। जब भी मुझे मौक़ा मिलता है, मैं उसे मिलने जाती हूँ और यह पहले की तरह नहीं है, जब उसे नहीं पता था कि मेरे साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए। उसके उलट, मेरे दरवाज़े से बाहर निकलने तक वह बात करता रहता है। माँ को मेरा ऊपर जाना पसंद नहीं है। वे हमेशा

कहती हैं कि मैं पीटर को परेशान कर रही हूँ और मुझे उसे अकेला छोड़ देना चाहिए। क्या वे मेरी सहज प्रवृत्ति को थोड़ा भाव नहीं दे सकतीं? जब भी मैं पीटर के कमरे में जाती हूँ, तो वे मुझे अजीब ढंग से देखती हैं। मेरे नीचे आने पर वे मुझसे पूछती हैं कि मैं कहाँ गई थी। यह बहुत बुरा है, लेकिन मुझे उनसे नफ़रत होने लगी है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 19 फ़रवरी, 1944

प्यारी किटी,

आज फिर शनिवार है और इससे तुम्हें काफ़ी पता चल जाना चाहिए। आज सुबह बहुत शांति थी। मैंने लगभग एक घंटा ऊपर मीटबॉल बनाने में बिताया, लेकिन मैंने 'उससे' सिर्फ़ सरसरी तौर पर बात की।

जब सभी लोग ढाई बजे पढ़ने या फिर झपकी लेने ऊपर चले गए, तो मैं कम्बल वगैरह लेकर नीचे गई, ताकि डेस्क पर बैठकर लिख या पढ़ सकूँ। थोड़ी ही देर में मैं ख़ुद पर क़ाबू नहीं रख पाई। मैंने सिर अपनी बाँहों पर रखा और ख़ूब रोई। मेरे गालों पर आँसू गिरने लगे और मुझे बहुत दुख महसूस हुआ। काश! 'वह' मुझे दिलासा देने आ पाता।

मेरे ऊपर जाने तक चार बज चुके थे। पाँच बजे मैं कुछ आलू लेने गई, इस उम्मीद में कि शायद फिर हमारी मुलाक़ात हो, लेकिन जब मैं गुसलख़ाने में अपने बाल बना रही थी, तो वह बॉश को देखने चला गया।

मैं अपनी किताब व और किसी चीज़ से मिसेज़ फ़ॉन डी की मदद करना चाहती थी, लेकिन अचानक मुझे अपने आँसू निकलते महसूस हुए। रास्ते में आईना लेते हुए मैं दौड़कर नीचे शौचालय की तरफ़ भागी। मैं पूरी तरह तैयार होकर वहाँ पर बैठी, काफ़ी देर बाद जब उठी तो मेरे आँसुओं से मेरे लाल ऐप्रन पर धब्बे बन गए थे और मैं बहुत उदास महसूस कर रही थी।

मेरे दिमाग़ में यह सब चल रहा था: 'इस तरह तो मैं कभी पीटर तक नहीं पहुँच पाऊँगी। क्या पता वह मुझे चाहता भी है या नहीं और बातें बताने के लिए किसी की ज़रूरत भी नहीं है। हो सकता है कि वह मेरे बारे में ऐसे ही हल्के-फुल्के ढंग से सोचता हो। मुझे फिर से अकेले रहना होगा, बिना किसी भरोसेमंद इंसान के, बिना पीटर के, किसी उम्मीद, दिलासे के बिना। काश! मैं अपना सिर उसके कंधे पर टिका पाती और इतना अकेला व उदास न महसूस करती। क्या पता उसे मेरी परवाह है कि नहीं और हो सकता है कि वह बाक़ी लोगों को भी वैसे ही नर्मी से देखता हो। हो सकता है कि मैंने कल्पना कर ली हो कि वह ख़ासकर मेरे लिए है। ओह, पीटर, तुम मुझे देख पाते या सुन पाते। अगर सच निराशाजनक हो, तो मैं उसे सहन नहीं कर पाऊँगी।'

थोड़ी देर बार मुझमें एक बार फिर उम्मीद जगी और मैं संभावना से भर गई, हालाँकि मेरे आँसू अब भी अंदर बह रहे थे।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

रविवार, 20 फरवरी, 1944

प्रिय किटी,

दूसरे लोगों के घर जो हफ़्ते के बाक़ी दिन होता है, वह यहाँ ऐनेक्स में रविवार को होता है। इस दिन लोग अपने अच्छे कपड़े पहनकर धूप में घूमने निकलते हैं, जबकि हम साफ़-सफ़ाई करते हैं और अपने कपड़े धोते हैं।

आठ बजे: हम लोग लेटे रहना पसंद करते हैं, जबकि दुसे आठ बजे उठ जाते हैं। वे गुसलख़ाने जाते हैं, फिर नीचे जाकर ऊपर आते हैं, फिर गुसलख़ाने में जाकर पूरा एक घंटा अपनी साफ़-सफ़ाई करते हें।

साढ़े नौ बजे: अँगीठियाँ जलाई जाती हैं, ब्लैक-आउट स्क्रीन हटा ली जाती है और मि. फ़ॉन डान गुसलख़ाने जाते हैं। रविवार सुबह का मेरा सबसे बड़ा कटु अनुभव बिस्तर पर लेटे-लेटे प्रार्थना करते हुए दुसे की पीठ को देखना है। यह अजीब लग सकता है, लेकिन प्रार्थना करते दुसे को देखना एक बहुत बुरा नज़ारा होता है। ऐसा नहीं है कि वे रोते हैं या फिर भावुक हो जाते हैं, बिलकुल भी नहीं, लेकिन वे पूरे पंद्रह मिनट प्रार्थना करने में लगाते हैं और ऐसा करते हुए वे पंजे व एड़ी को आगे-पीछे करते हैं। पीछे व आगे, पीछे व आगे। यह चलता रहता है और अगर मैं अपनी आँखें कसकर बंद न करूँ, तो मेरा सिर घूमने लगता है।

सवा दस बजे: फ़ॉन डान परिवार सीटी बजाता है; गुसलख़ाना ख़ाली है। फ्रैंक परिवार के हिस्से में नींद से उठते हुए चेहरे दिखाई देने लगते हैं। फिर सब कुछ तेज़ी से होने लगता है। मारगोट और मैं बारी-बारी से धुलाई करते हैं। नीचे काफ़ी ठंड है, इसलिए हम पतलून व सिर पर स्कार्फ़ पहन लेते हैं। इस बीच, पापा गुसलख़ाने में होते हैं। ग्यारह बजे मैं या फिर मारगोट नहाने के लिए जाते हैं और फिर हम सभी साफ़-सुथरे हो जाते हैं।

साढ़े ग्यारह बजे: नाश्ता। मैं इस पर कुछ नहीं कहूँगी, क्योंकि मैं चाहे कुछ न भी कहूँ, तब भी खाने पर काफ़ी बातचीत हो ही जाती है।

सवा बारह बजे: सभी अपने रास्ते चले जाते हैं। ओवरऑल पहने पापा अपने घुटनों व हाथों के बल झुकते हैं और कालीन को इतने ज़ोर से रगड़ते हैं कि पूरे कमरे में धूल का गुबार छा जाता है। मि. दुसे बिस्तर लगाते हैं (हमेशा ग़लत ही) और अपना काम करते हुए हमेशा बीथोवन की वही वायलिन संगीत-रचना सीटी में बजाते हैं। माँ अटारी पर कपड़े डाल रही होती हैं और उनके पैरों की आहट सुनाई देती है। मि. फ़ॉन डान अपना हैट लगाते हैं और निचले हिस्से

में ग़ायब हो जाते हैं, अक्सर पीटर व मूशी उनके पीछे होते हैं। मिसेज़ फ़ॉन डी बड़ा सा ऐप्रन, काली ऊनी जैकेट, ओवरशूज़ पहनती हैं और अपने सिर पर लाल ऊनी स्कार्फ़ लपेटती हैं। वे गंदे कपड़ों के ढेर को निकालती हैं और एक अनुभवी कपड़े धोनेवाली की तरह सिर हिलाते हुए नीचे जाती हैं। मारगोट और मैं बर्तन साफ़ करते हैं और कमरे की सफ़ाई करते हैं।

बुधवार, 23 फ़रवरी, 1944

मेरी प्रिय किटी,

कल से मौसम बहुत अच्छा है और मैं थोड़ा उत्साहित महसूस कर रही हूँ। मेरी सबसे अच्छी चीज़ मेरा लेखन भी बढ़िया चल रहा है। मैं लगभग हर सुबह अपने फेफड़ों से बासी हवा बाहर निकालने के लिए ऊपर अटारी पर जाती हूँ। आज सुबह जब मैं ऊपर गई, तो पीटर सफ़ाई में लगा था। उसने तेज़ी से काम पूरा किया और फ़र्श पर मेरी पसंदीदा जगह पर पहुँच गया। हम दोनों ने नीले आसमान की तरफ़ देखा, नंगे चेस्टनट पेड़ ओस से चमक रहे थे, हवा में उड़ान भर रहे सीगल व अन्य पक्षी रुपहले चमक रहे थे और हम वह सब देखते हुए इतने अभिभूत व मोहित हो गए कि हम कुछ नहीं कह सके। वह एक मोटी सी बीम पर सिर टिकाए खड़ा था और मैं बैठी हुई थी। हम हवा में साँस ले रहे थे, बाहर देख रहे थे और हम दोनों को लग रहा था कि उस जादू को शब्दों से नहीं तोड़ा जाना चाहिए था। हम काफ़ी समय तक वैसे ही रहे और जब वह लकड़ी काटने गया, तब तक मैं जान गई थी कि वह एक अच्छा, शिष्ट लड़का है। वह सीढ़ी पर चढ़कर ऊपर गया और मैं उसके पीछे-पीछे गई; पंद्रह मिनट तक वह लकड़ी काटता रहा और हमने कोई बात नहीं की। मैं अपने खड़े होने की जगह से उसे देखती रही और मैं देख सकती थी कि वह सही तरीक़े से लकड़ी काटने की बेहतरीन कोशिश कर रहा था और अपनी ताक़त दिखा रहा था। लेकिन मैं खुली खिड़की से बाहर भी देख रही थी और ऐम्स्टर्डम के बड़े से हिस्से पर भी नज़र डाल रही थी, छतों पर, क्षितिज पर, एक नीली पट्टी, जो इतनी हल्की थी कि लगभग अदृश्य थी।

'जब तक यह मौजूद है,' मैंने सोचा, 'यह धूप और यह साफ़ आसमान, जब मैं इसका आनंद ले सकती हूँ, मैं दुखी कैसे हो सकती हूँ?'

जो लोग डरे हुए, अकेले या दुखी हैं, उनके लिए सबसे अच्छा इलाज बाहर जाना है, कहीं जहाँ वे आसमान, प्रकृति और ईश्वर के साथ अकेले समय बिता सकें। तभी और सिर्फ़ तभी आप महसूस कर सकते हैं कि सब कुछ वैसा ही है, जैसा होना चाहिए और ईश्वर चाहता है कि सभी लोग प्रकृति की सुंदरता व सादगी के बीच ख़ुश रहें।

जब तक यह है और यह हमेशा रहना चाहिए, मैं जानती हूँ कि हर कष्ट के लिए तसल्ली रहेगी, चाहे हालात जो भी हों। मेरा दृढ़ विश्वास है कि प्रकृति उन सभी लोगों को दिलासा दे सकती है, जो तकलीफ़ में हैं।

कौन जानता है कि शायद जल्दी ही मैं इस ख़ुशी के ज़बरदस्त एहसास को किसी ऐसे इंसान के साथ साझा करूँ, जो ऐसा ही महसूस करता हो।

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। पीटर के लिए कुछ ख़याल।

हमारे पास यहाँ काफ़ी कुछ नहीं है, काफ़ी कुछ और वह भी लंबे समय से। मैं भी चीज़ों का न होना तुम्हारे जितना ही महसूस करती हूँ। मैं बाहरी चीज़ों की बात नहीं कर रही, क्योंकि उस मायने में वे तो मौजूद हैं; मेरा मतलब भीतरी चीज़ों से है। तुम्हारी तरह मैं भी आज़ादी, ताज़ा हवा की इच्छा रखती हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि उस नुक़सान की भरपाई होती रही है। मेरा मतलब है कि भीतर से।

आज सुबह जब मैं खिड़की के पास बैठ कर जब बाहर ईश्वर व प्रकृति को गहराई से देख रही थी, तो मैं ख़ुश थी, बस ख़ुश थी। पीटर, जब तक लोग अपने भीतर उस तरह की ख़ुशी, प्रकृति का आनंद, स्वास्थ्य और उनके अलावा बहुत कुछ महसूस करते रहेंगे, तब तक वे ख़ुशी को हमेशा फिर से पाने में कामयाब रहेंगे।

धन-दौलत, यश, सब कुछ खो सकता है। लेकिन आपके अपने दिल की ख़ुशी सिर्फ़ मंद पड़ सकती है; वह आपको फिर से ख़ुश करने के लिए हमेशा वहाँ रहेगी, जब तक कि आप ज़िंदा हैं।

जब कभी तुम अकेले या दुखी महसूस करो, किसी ख़ूबसूरत दिन ऊपर जाना और बाहर देखने की कोशिश करना। घरों व छतों को नहीं, बल्कि आसमान को। जब तक तुम निडर होकर आसमान देख सकोगे, तब तक तुम जान पाओगे कि तुम भीतर से निर्मल हो और तुम्हें फिर से ख़ुशी मिल जाएगी।

रविवार, 27 फ़रवरी, 1944

मेरी प्रिय किटी,

सुबह से लेकर देर रात तक मैं बस पीटर के बारे में ही सोचती रहती हूँ। मैं अपनी आँखों में उसकी छवि लेकर सोती हूँ, उसके सपने देखती हूँ और उसके अपनी तरफ़ देखने के साथ उठती हूँ।

मैं ज़बरदस्त ढंग से महसूस करती हूँ कि पीटर और मैं असल में उतने अलग नहीं हैं, जितने कि ऊपर से दिखते हैं और मैं बताती हूँ कि ऐसा क्यों है: न पीटर की और न ही मेरी कोई माँ है। उसकी माँ बहुत सतही क़िस्म की है, उन्हें छेड़छाड़ पसंद है और उन्हें परवाह नहीं है कि पीटर के दिमाग़ में क्या कुछ चल रहा है। मेरी माँ मेरी ज़िंदगी में काफ़ी दिलचस्पी लेती हैं, लेकिन उनमें कौशल, संवेदनशीलता या माँ जैसी समझ नहीं है।

मैं और पीटर, हम दोनों ही अपने भीतरी एहसास से जद्दोजहद कर रहे हैं। हम अभी तक ख़ुद को लेकर आश्वस्त नहीं हैं और भावनात्मक तौर पर इतने कच्चे हैं कि हमसे रुखाई से पेश नहीं आया जा सकता। जब कभी वैसा होता है, तो मैं बाहर भाग जाना चाहती हूँ या फिर अपनी भावनाओं को छिपाना चाहती हूँ। लेकिन वैसा करने के बजाय मैं बर्तन पटकती हूँ, पानी गिराती हूँ और आमतौर पर काफ़ी आवाज़ करती हूँ, ताकि हर कोई चाहे कि मैं उनसे मीलों दूर होती। पीटर की प्रतिक्रिया ख़ुद में सिमट जाने, कम बोलने, चुपचाप बैठ जाने और दिन में सपने देखने की होती है, इस बीच वह अपने वास्तविक रूप को सावधानी से छिपाकर रखता है।

लेकिन हम दोनों आख़िरकार एक-दूसरे तक पहुँचेंगे कैसे?

मैं नहीं जानती कि और कितना मैं उसके लिए अपनी ललक को क़ाबू में रख पाऊँगी।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार, 28 फरवरी, 1944

मेरी प्रिय किटी,

यह बुरे सपने की तरह है, ऐसा सपना जो जगने के बाद भी चलता रहता है। मैं लगभग हर रोज़ उसे देखती हूँ और फिर भी मैं उसके साथ नहीं हो सकती। मैं नहीं चाहती कि बाक़ी लोग गौर करें, मुझे ख़ुश होने का दिखावा करना पड़ता है, जबकि मेरा दिल दुख रहा होता है।

पीटर शिफ़ व पीटर फ़ॉन डान मिलकर एक पीटर बन गए हैं, जो अच्छा, नेक है और मुझे जिसकी गहरी लालसा है। माँ भयावह हैं, पापा अच्छे हैं, जिसके कारण वे और भी बुरे हो जाते हैं और मारगोट सबसे ख़राब है। वह मेरे मुस्कराते हुए चेहरे का फ़ायदा उठाती है और मुझ पर अपना दावा करती है, जबकि मैं अकेले रहना चाहती हूँ।

पीटर मेरे साथ अटारी पर नहीं था, वह लकड़ी का कुछ काम करने के लिए ऊपर चला गया। चोट की हर आवाज़ के साथ मेरी हिम्मत टूट रही थी और मैं ज़्यादा नाख़ुश हो रही थी। कहीं दूर एक घड़ी घंटा बजा रही थी, 'दिल-दिमाग़ में निष्कपट रहो!'

मैं जानती हूँ कि मैं भावुक हूँ। मैं मायूस और बेवकूफ़ हूँ, मैं वह भी जानती हूँ। मेरी मदद करो!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 1 मार्च 1944

प्रिय किटी,

मेरे अपने मामले... चोरी की एक घटना से पृष्ठभूमि में चले गए। मैं तुम्हें यहाँ होने वाली चोरी

की घटनाओं से उबा देती हूँ, लेकिन क्या करूँ चोरों को गीज़ ऐंड कंपनी में बार-बार आने में मज़ा आता है। यह घटना जुलाई, 1943 में हुई घटना से थोड़ी जटिल है।

कल रात साढ़े सात बजे मि. फ़ॉन डान रोज़ की तरह मि. कुगलर के दफ़्तर की तरफ़ जा रहे थे कि उन्होंने देखा कि काँच का और दफ़्तर का दरवाज़ा, दोनों खुले थे। उन्हें हैरानी हुई, लेकिन वे आगे बढ़े और उन्हें यह देखकर हैरानी हुई कि फ्रंट ऑफ़िस में खुलने वाले दरवाज़े भी बंद नहीं थे और ऑफ़िस अस्तव्यस्त था।

चोरी होने की बात उनके दिमाग़ में कौंधी, लेकिन फिर भी पुष्टि करने के लिए वे नीचे सामने के दरवाज़े तक गए, ताला देखा और पाया कि सब कुछ बंद था। 'बेप और पीटर ने शाम को ज़रूर लापरवाही बरती होगी,' मि.फ़ॉन डी इस नतीजे पर पहुँचे। वे थोड़ी देर मि. कुगलर के दफ़्तर में रुके, लैम्प का स्विच बंद किया और खुले दरवाज़ों व अस्तव्यस्त दफ़्तर के बारे में ज़्यादा चिंतित हुए बिना ऊपर चले गए।

आज सुबह पीटर ने हमारे दरवाज़े पर दस्तक देकर हमें बताया कि सामने का दरवाज़ा पूरी तरह खुला था और प्रोजेक्टर व अलमारी से मि. कुगलर का नया ब्रीफ़केस ग़ायब था। पीटर को दरवाज़े पर ताला लगाने का निर्देश दिया गया। मि. फ़ॉन डान ने पिछली रात के बारे में बताया और हम सब काफ़ी चिंतित हुए। यही कहा जा सकता है कि चोर के पास ज़रूर दूसरी चाबी होगी, क्योंकि ज़बरदस्ती घुसने के निशान मौजूद नहीं थे। वह शाम को जल्दी घुसा होगा, दरवाज़ा बंद किया होगा, मि. फ़ॉन डान के आने पर छिप गया होगा और उनके ऊपर जाने के बाद लूटपाट करके भाग गया होगा, जल्दबाज़ी में वह दरवाज़ा बंद करना भूल गया होगा।

किसके पास हमारी चाबी हो सकती है? चोर गोदाम में क्यों नहीं गया? क्या वह हमारे गोदाम का कोई कर्मचारी था, जिसने मि. फ़ॉन डान की आवाज़ सुनी या हो सकता है कि उन्हें देखा भी हो? वह को हमारे बारे में बता सकता है।

यह सब बहुत डरावना है, क्योंकि हमें नहीं पता कि वह चोर फिर से यहाँ आने की कोशिश कर सकता है या नहीं। या फिर इमारत में किसी की आवाज़ सुनकर वह इतना चौंक गया कि वह अब यहाँ से दूर ही रहेगा?

तुम्हारी, ऐन

पुनःश्च। हमें ख़ुशी होगी अगर तुम हमारे लिए किसी अच्छे जासूस का पता कर दो। ज़ाहिर है कि इसमें एक शर्त होगी और वह यह कि उस पर इतना भरोसा किया जा सके कि वह छिपे हुए लोगों के बारे में किसी को न बताए।

बृहस्पतिवार, 2 मार्च 1944

प्रिय किटी,

आज मैं और मारगोट अटारी में साथ थे। मुझे उसके साथ वहाँ उतना अच्छा नहीं लगता, जितना कि पीटर (या किसी और) के साथ। मुझे पता है कि वह भी अधिकतर चीज़ों के बारे में वैसा ही महसूस करती है, जैसा कि मैं।

बर्तन धोते हुए बेप ने माँ और मिसेज़ फ़ॉन डान को बताया कि वह कितना हतोत्साहित महसूस करती है। ये दोनों उसे किस तरह की मदद की पेशकश कर सकती हैं? एक अकुशल माँ, जिसने ख़ासकर हालात को बद से बदतर बनाया है। तुम्हें पता है कि उन्होंने क्या सलाह दी? यही कि उसे दुनिया के उन लोगों के बारे में सोचना चाहिए, जो तकलीफ़ में हैं! अगर आप ख़ुद परेशान हैं, तो बाक़ी दुखी लोगों के बारे में सोचकर क्या मदद मिल सकती है? मैंने भी कुछ कहा। उनकी प्रतिक्रिया यही थी कि मुझे इस तरह की बातचीत से अलग रहना चाहिए।

ये बड़े लोग वाक़ई मूर्ख होते हैं! जैसे कि पीटर, मारगोट, बेप और मेरी एक जैसी भावनाएँ न हों। सिर्फ़ एक चीज़ मदद कर सकती है, वह है, माँ का प्यार या फिर किसी बहुत गहरे दोस्त का। लेकिन ये दोनों माँएँ हमारे में कुछ भी नहीं समझतीं। काश, मैं बेचारी बेप को कह सकती, कुछ ऐसा जो मैं अपने अनुभव से जानती हूँ और जिससे उसे मदद मिलती। लेकिन पापा हमारे बीच आ गए और मुझे एक तरफ़ कर दिया। वे सभी बहुत बेवकूफ़ हैं!

मैं मारगोट से पापा और माँ के बारे में बात करती हूँ कि कितना अच्छा होता अगर वे हालात बिगाड़ने वाले नहीं होते। हम ऐसी शामां का आयोजन करते, जिनमें हर कोई किसी विषय पर बारी-बारी से अपनी राय रखता। लेकिन हम उस सबसे गुज़र चुके हैं। यहाँ पर बात करना मेरे लिए नामुमकिन है! मि. फ़ॉन डान बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं, माँ व्यंग्यात्मक हो जाती हैं और सामान्य आवाज़ में बात नहीं कर सकतीं, पापा को भाग लेना अच्छा नहीं लगता और ना ही मि. दुसे को, मिसेज़ फ़ॉन डी पर इतनी बार हमला किया जाता है कि वे बस वहाँ पर चेहरा लाल किए बैठी रहती हैं और किसी बात का विरोध मुश्किल से ही कर पाती हैं। और हमारा क्या? हमें कोई राय रखने की इजाज़त नहीं है! क्या वे प्रगतिशील नहीं हैं! कोई राय नहीं! लोग आपको चुप रहने को कह सकते हैं, लेकिन वे आपको कोई राय न रखने को नहीं कह सकते। आप किसी को मना नहीं कर सकते कि वे कोई मत रखें, चाहे वे कितने ही छोटे क्यों न हो! बेप, मारगोट, पीटर और मेरे लिए सबसे मददगार चीज़ होती ढेर सारी प्यार-मोहब्बत, जो हमें यहाँ नहीं मिलती। यहाँ पर कोई नहीं, कोई भी नहीं, ख़ासकर बेवकूफ़ बड़े लोग हमें समझने के लायक़ नहीं हैं, क्योंकि हम उनसे ज़्यादा संवेदनशील और अपने विचारों में उनसे कहीं ज़्यादा आगे हैं, इतना कि वे कभी सोच भी नहीं सकते!

प्रेम, क्या है प्रेम? मुझे नहीं लगता कि आप उसे शब्दों में बयान कर सकते हैं। प्यार किसी को समझना, उसकी परवाह करना, उसके ग़म व ख़ुशियों को बाँटना है। आख़िरकार इसमें शारीरिक प्रेम शामिल होता है। आप कुछ बाँटते हैं, कुछ देते हैं और बदले में कुछ पाते हैं, आप

चाहे शादीशुदा हों या नहीं या फिर आपका बच्चा हो या नहीं। अपनी नैतिकता खोना मायने नहीं रखता, आपको पता होना चाहिए कि जब तक आप ज़िंदा हैं आपके साथ कोई होगा, जो आपको समझता है और जिसे आपको किसी और के साथ नहीं बाँटना है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

इस पल माँ मुझ पर फिर गुर्रा रही हैं; साफ़ तौर पर उन्हें जलन हो रही है कि मैं उनसे ज़्यादा मिसेज़ फ़ॉन डान से बात करती हूँ। मुझे कोई परवाह नहीं!

आज दोपहर मुझे पीटर मिल गया और हम लोगों ने कम से कम पैंतालीस मिनट तक बातें कीं। वह मुझे अपने बारे में कुछ बताना चाहता था, लेकिन उसे मुश्किल हो रही थी। आख़िरकार उसने कहा, हालाँकि उसे काफ़ी वक़्त लगा। ईमानदारी से कहूँ, तो मैं नहीं जानती थी कि मुझे वहाँ रहना बेहतर है या फिर वहाँ से जाना। लेकिन मैं उसकी मदद करना चाहती थी! मैंने उसे बेप के बारे में बताया ओर यह भी कि हमारी माँएँ कितनी अनाड़ी हैं। उसने मुझे बताया कि उसके माता-पिता हमेशा लड़ते रहते हैं, राजनीति पर, सिगरेट पर और सब तरह की चीज़ों पर। जैसा कि मैं पहले तुम्हें बता चुकी हूँ, पीटर बहुत शर्मीला है, लेकिन इतना भी नहीं कि यह स्वीकार न कर सके कि उसे बहुत ख़ुशी होगी अगर वह एक या दो साल तक अपने माँ-बाप को न देखे। 'मेरे पिता उतने अच्छे नहीं, जितने कि दिखते हैं,' उसने कहा। 'लेकिन सिगरेटों के मामले में माँ बिलकुल सही हैं।'

मैंने भी उसे अपनी माँ के बारे में बताया। लेकिन वह पापा के बचाव में आ गया। उसके मुताबिक़ वे 'शानदार इंसान' थे।

आज रात जब मैं बर्तन धोकर अपना ऐप्रन फैला रही थी, तो उसने मुझे बुलाया और कहा कि मैं नीचे किसी को नहीं बताऊँ कि उसके माँ-बाप में फिर से झगड़ा हुआ और वे आपस में बात नहीं कर रहे हैं। मैंने उससे वादा किया, हालाँकि मैं पहले ही मारगोट को बता चुकी थी। लेकिन मुझे विश्वास है कि मारगोट यह बात किसी और को नहीं बताएगी।

'अरे, नहीं पीटर,' मैंने कहा, 'तुम्हें मेरी तरफ़ से निश्चिंत रहना चाहिए। मैं अब सीख चुकी हूँ कि सुनी गई हर चीज़ के बारे में बकबक करने की ज़रूरत नहीं। तुमने जो कुछ मुझे बताया, मैं उसे कहीं नहीं दोहराऊँगी।'

उसे यह सुनकर ख़ुशी हुई। मैंने उसे यह भी बताया कि हम कितने बुरे चुगलखोर हैं और कहा, 'मारगोट सही है, जब वह कहती है कि मैं ईमानदार नहीं हूँ, क्योंकि मैं जितना भी चाहूँ, मैं ख़ुद को बकबक करने से नहीं रोक पाती, मुझे मि. दुसे के बारे में बात करने से बेहतर कुछ भी नहीं लगता।'

'यह अच्छी बात है कि तुमने इसे क़बूल कर लिया,' उसने कहा। वह शर्माया और उसकी सच्ची प्रशंसा से मैं भी झेंप गई।

फिर हमने 'ऊपर' और 'नीचे' की थोड़ी और बात की। पीटर यह बात सुनकर हैरान हुआ कि मुझे उसके माँ-बाप अच्छे नहीं लगते। 'पीटर,' मैंने कहा, 'मैं हमेशा से ईमानदार रही हूँ, तो मुझे तुम्हें इस बारे में भी क्यों नहीं बताना चाहिए? हम उनकी ग़लतियाँ भी देख सकते हैं।'

मैंने साथ ही यह भी कहा, 'पीटर, मैं सचमुच तुम्हारी मदद करना चाहती हूँ। क्या तुम मुझे ऐसा करने दोगे? तुम एक अजीब सी स्थिति में हो और मैं जानती हूँ कि हालाँकि तुम कुछ नहीं कहते, लेकिन इससे तुम परेशान तो होते हो।'

'तुम्हारी मदद का हमेशा ही स्वागत है!'

'शायद पापा से बात करना तुम्हारे लिए बेहतर होगा। तुम उन्हें कुछ भी बता सकते हो, वे किसी को नहीं बताएँगे।'

'मैं जानता हूँ, वे बहुत अच्छे हैं।'

'तुम्हें वे बहुत पसंद हैं, है न?'

पीटर ने सिर हिलाया और मैं बोलती रही, 'पता है, वे भी तुम्हें पसंद करते हैं!'

उसने ऊपर देखा और शर्माया। यह देखना बहुत मार्मिक था कि इन कुछ शब्दों से वह कितना ख़ुश हो गया था। 'तुम्हें ऐसा लगता है?' उसने पूछा।

'हाँ,' मैंने कहा। 'उनकी छोटी-छोटी बातों से तुम समझ सकते हो।'

फिर मि. फ़ॉन डान कुछ कहने के लिए आए। पीटर बिलकुल मेरे पापा की तरह 'ज़बरदस्त लड़का' है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 3 मार्च 1944

मेरी प्रिय किटी,

आज रात जब मैंने मोमबत्ती को देखा, तो मुझे फिर से सुकून व ख़ुशी महसूस हुई। ऐसा लगता है कि नानी उस मोमबत्ती में हैं, जो मेरा ध्यान रखती हैं व मेरी रक्षा करती हैं और मुझे फिर से ख़ुशी का एहसास देती हैं। लेकिन... कोई और है, जो मेरे सभी मनोभावों को नियंत्रित करता है और वह है... पीटर। आज मैं आलू लेने गई और जब मैं आलू भरे बर्तन को लेकर सीढ़ियों पर खड़ी थी, तो उसने पूछा, 'तुमने दिन के भोजन अवकाश के दौरान क्या किया?'

मैं सीढ़ियों पर बैठ गई और हम बात करने लगे। सवा पाँच बजे तक (एक घंटा पहले मैं उन्हें लेने गई थी) आलू रसोई तक नहीं पहुँचे। पीटर ने अपने माँ-बाप के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा; बस हम किताबों व पुराने दिनों के बारे में बात करते रहे। वह मुझे गर्मजोशी भरी नज़रों से देखता है; मुझे लगता है कि जल्दी ही मुझे उससे प्यार हो जाएगा।

उसने आज शाम यही विषय उठाया। मैं आलू छीलने के बाद उसके कमरे में गई और कहा कि कितनी गर्मी है। 'तुम मुझे व मारगोट को देखकर तापमान का पता लगा सकते हो, क्योंकि ठंड होने पर हम सफ़ेद हो जाते हैं और गर्मी होने पर लाल,' मैंने कहा।

'क्या प्यार में?' उसने पूछा।

'मुझे प्यार क्यों होगा?' यह काफ़ी बेवकूफ़ी भरा जवाब (या फिर सवाल) था।

'क्यों नहीं?' उसने कहा और फिर रात के खाने का समय हो गया।

उसका क्या मतलब था? आज मैंने आख़िरकार उससे पूछ ही लिया कि क्या मेरी बातों से उसे परेशानी होती है। उसने बस इतना ही कहा, 'अरे, मेरे हिसाब से सब ठीक है!' मैं नहीं कह सकती कि उसका जवाब कितने शर्मीलेपन की वजह से था।

किटी, मैं ऐसे इंसान की तरह बात कर रही हूँ, जिसे प्यार हो गया है और अपने सबसे प्यारे इंसान के अलावा किसी और की बात ही नहीं कर सकती। पीटर बहुत प्यारा है। क्या मैं कभी उसे बता पाऊँगी? अगर वह भी मेरे बारे में वैसा ही सोचता है, लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि मैं ऐसी इंसान हूँ, जिसके साथ बहुत सावधानी से पेश आना होगा।

उसे अकेले रहना पसंद है, इसलिए मैं नहीं जानती कि वह मुझे कितना पसंद करता है। ख़ैर, हम लोग एक-दूसरे को पहले से बेहतर ढंग से समझ रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि हम थोड़ा ज़्यादा बोलने की हिम्मत करें। लेकिन कौन जानता है, हो सकता है कि वह समय जल्दी ही आ जाए! दिन में एक या दो बार वह मुझे अर्थपूर्ण नज़रों से देखता है, मैं भी पलकें झपकाती हूँ और हम दोनों ख़ुश होते हैं। उसके ख़ुश होने की बात पर कुछ कहना पागलपन लगता है और फिर भी मुझे यह एहसास होता है कि वह भी मेरी तरह ही सोचता है।

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

शनिवार, 4 मार्च 1944

प्रिय किटी,

कई महीनों में यह पहला शनिवार है, जो थका देने वाला, निराशाजनक और नीरस नहीं रहा है। पीटर उसका कारण है। आज सुबह जब मैं अपना ऐप्रन डालने अटारी पर जा रही थी, तो पापा ने मुझसे पूछा कि क्या मैं थोड़ी देर रुककर फ़्रेंच का अभ्यास करूँगी और मैंने हाँ कहा। हमने कुछ देर फ़्रेंच में बात की और मैंने पीटर को कुछ बताया, फिर हमने अंग्रेज़ी का काम किया। पापा ने डिकेन्स से कुछ पढ़कर सुनाया और मैं जैसे सातवें आसमान पर थी, क्योंकि मैं पीटर के नज़दीक पापा की कुर्सी पर बैठी थी।

पौने ग्यारह बजे मैं नीचे गई। पीटर पहले से ही सीढ़ियों पर मेरा इंतज़ार कर रहा था। हमने पौने एक बजे तक बातें कीं। जब भी मैं कमरे से बाहर निकलती हूँ, जैसे कि खाने के बाद और

कोई न सुन रहा हो, तो मौक़ा पाकर पीटर कहता है, 'विदा ऐन, बाद में मिलते हैं।'

मैं कितनी ख़ुश हूँ! मुझे लगता है कि क्या वह मुझसे प्रेम करेगा? वैसे वह भला लड़का है और तुम नहीं जानती कि उसके साथ बात करके कितना अच्छा लगता है!

मिसेज़ फ़ॉन डी को पीटर से मेरा बात करना सही लगता है, लेकिन आज उन्होंने मुझे चिढ़ाने के अंदाज़ से पूछा, 'क्या मैं ऊपर तुम्हारे साथ रहने पर विश्वास कर सकती हूँ?'

'बिलकुल!' मैंने विरोध किया। 'मैं इस बात को अपमान के रूप में लेती हूँ!'

सुबह, दोपहर, रात मैं पीटर से बात करने की राह देखती हूँ।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। इससे पहले कि मैं भूल जाऊँ, तुम्हें बता दूँ कि कल रात सब तरफ़ बर्फ़ की चादर बिछी थी। अब बर्फ़ पिघल गई है और थोड़ी सी भी नहीं बची है।

सोमवार, 6 मार्च 1944

प्रिय किटी,

जबसे पीटर ने मुझे अपने माँ-बाप के बारे में बताया है, तब से मुझे उसके प्रति एक तरह की ज़िम्मेदारी का एहसास होने लगा है, तुम्हें नहीं लगता कि यह कुछ अजीब है? जैसे कि उनके झगड़े अब मेरे भी उतने ही मामले हैं, जितने कि उसके, फिर भी मैं अब उन पर बात नहीं कर सकती, क्योंकि मुझे लगता है कि उससे पीटर असहज हो जाएगा। मैं किसी भी क़ीमत पर दख़ल नहीं देना चाहूँगी।

पीटर का चेहरा देखकर मैं समझ जाती हूँ कि वह भी उतनी ही गहराई से सोचता है, जितनी कि मैं। कल रात मैं तब चिढ़ गई थी, जब मिसेज़ फ़ॉन डान ने ताना कसा, 'विचारक!' पीटर का चेहरा लाल हो गया है और वह झेंप गया, मैं बस अपना आपा खोने ही वाली थी।

ये लोग अपना मुँह बंद क्यों नहीं रख सकते?

तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि किनारे खड़े रहकर यह देखना कैसा लगता है कि वह कितना अकेला है और कुछ किया भी नहीं जा सकता। मैं सोच सकती हूँ कि अगर मैं उसकी जगह पर होती, तो जानती कि झगड़े होने पर वह कितना हताश महसूस करता होगा। जहाँ तक प्यार का सवाल है, तो बेचारे पीटर को बहुत-बहुत प्यार की ज़रूरत है!

उसका स्वर तब बहुत ठंडा था, जब उसने कहा कि उसे दोस्तों की ज़रूरत नहीं है। वह कितना ग़लत था! मुझे नहीं लगता कि उसका यही मतलब था। वह अपने पौरुष पर, अपने अकेलेपन और अपनी उदासीनता से चिपका रहता है, ताकि वह अपनी भूमिका बनाए रख सके, ताकि उसे कभी भी अपनी भावनाओं को व्यक्त न करना पड़े। बेचारा पीटर, कब तक वह ऐसा

कर पाएगा? क्या वह अपने अतिमानवीय प्रयास से फट नहीं पड़ेगा?

काश, मैं तुम्हारी मदद कर पाती, पीटर, तुम मुझे ऐसा करने देते! साथ मिलकर हम अपने, तुम्हारे व मेरे अकेलेपन को ख़त्म कर देंगे!

मैं काफ़ी सोच-विचार करती रही हूँ, लेकिन ज़्यादा बोल नहीं रही। मैं उसे देखकर ख़ुश हो जाती हूँ और तब और भी ख़ुश हो जाती हूँ, जब धूप हो और हम दोनों साथ हों। कल मैंने अपने बाल धोए और क्योंकि मुझे पता था कि वह बग़ल वाले कमरे में है, तो मैं काफ़ी जोश में थी, मैं ख़ुद को नहीं रोक पाई; मैं भीतर से जितनी शांत व गंभीर होती हूँ, बाहर उतना ही शोर मचाती हूँ!

मेरी इस कमज़ोरी को सबसे पहले कौन खोज पाएगा?

फ़ॉन डान परिवार में कोई बेटी भी नहीं है। मेरी विजय इतनी चुनौतीपूर्ण, इतनी ख़ूबसूरत और इतनी अच्छी नहीं होती, अगर कोई लड़की होती!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। तुम जानती हो कि मैं तुम्हारे साथ ईमानदार हूँ, इसलिए तुम्हें बताती हूँ कि मैं एक मुलाक़ात से दूसरी मुलाक़ात के बीच जीती हूँ। मैं उम्मीद करती रहती हूँ कि यह पता लगा लूँ कि वह भी मुझे देखने के लिए बेकरार है और मैं जब उसकी शर्मीली कोशिशें देखती हूँ, तो मुझमें उमंग जागती है। मेरे ख़याल से वह ख़ुद को उतनी आसानी से व्यक्त कर पाएगा, जितना कि मैं करती हूँ; वह नहीं जानता कि उसका अटपटापन मुझे छू लेता है।

मंगलवार, 7 मार्च 1944

प्रिय किटी,

जब मैं 1942 की अपनी ज़िंदगी को याद करती हूँ, तो वह सब मुझे काल्पनिक लगता है। उस सुखद अस्तित्व का आनंद लेने वाली ऐन फ्रैंक इस ऐन से पूरी तरह अलग थी, जो इन दीवारों के बीच बड़ी होकर समझदार हो चुकी है। हाँ, वह बहुत ख़ूबसूरत था। हर गली के किनारे पर पाँच प्रशंसक, बीस या उसके लगभग दोस्त, अपनी अधिकतर शिक्षकों की प्रिय विद्यार्थी, पापा व माँ के लाड़-प्यार में डूबी और ढेर सारा जेबख़र्च। इससे ज़्यादा कोई क्या चाहेगा?

तुम शायद सोच रही होगी कि मैंने कैसे इतने लोगों को लुभाया होगा। पीटर कहता है कि इसका कारण है कि मैं 'आकर्षक' हूँ, लेकिन यही पूरी बात नहीं है। अध्यापक मेरे चतुर जवाबों, हाज़िरजवाब टिप्पणियों, मेरे मुस्कराते चेहरे और विवेचनात्मक मस्तिष्क से प्रसन्न होते थे। मैं एक ज़बरदस्त चुहलबाज़, नख़रेबाज़ और दिलचस्प थी। मुझमें कुछ ख़ूबियाँ थी, जिनके कारण मैं सबकी प्रिय थी: मैं मेहनती, ईमानदार और उदार थी। जो भी मेरे उत्तर देखना चाहता था, मैं उसे मना नहीं करती थी। मैं अपनी टॉफ़ी-चॉकलेट्स के मामले में बहुत उदार थी और मैं घमंडी

नहीं थी।

क्या सबकी तारीफ़ों ने मुझे अतिआत्मविश्वासी बना दिया था? यह अच्छी बात है कि अपनी कीर्ति के चरम पर मुझे अचानक सच्चाई का सामना करना पड़ा। मुझे तारीफ़ के बिना जीने का आदी होने में एक साल से ज़्यादा का समय लगा।

वे मुझे स्कूल मैं कैसे देखते थे? कक्षा की हँसाने वाली लड़की, हमेशा अगुवा रहने वाली, कभी बुरे मूड में न रहने वाली, कभी न रोने वाली के रूप में। क्या इसमें कोई ताज्जुब था कि हर कोई मेरे साथ साइकिल चलाते हुए स्कूल जाना चाहता था या मेरा कोई काम करना चाहता था।

मैं उस ऐन फ्रैंक को ख़ुशनुमा, दिलचस्प, लेकिन सतही लड़की के रूप में देखती हूँ, जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। पीटर ने मेरे बारे में क्या कहा? 'मैंने जब भी तुम्हें देखा, तुम लड़कियों के झुंड और कम से कम दो लड़कों से घिरी दिखीं, तुम हमेशा हँसती रहती थीं और तुम हमेशा सबसे आकर्षण का केंद्र होती थीं!' वह सही था।

उस ऐन फ्रैंक का क्या हुआ? मैं हँसना या कोई टिप्पणी करना अब भी नहीं भूली हूँ, मैं बेहतर न भी हूँ, तब भी ठीक हूँ, मैं चाहूँ तो अब भी लोगों की हालत बिगाड़ सकती हूँ, उनके साथ हल्के-फुल्के मज़ाक कर सकती हूँ और दिलचस्प हो सकती हूँ...

लेकिन यह थोड़ा पेचीदा है। मैं एक शाम, कुछ दिनों व किसी हफ़्ते के लिए बेफ़िक्र व ख़ुशनुमा लगती ज़िंदगी जी सकती हूँ। लेकिन उस हफ़्ते के आख़िर तक मैं थक जाऊँगी और उस पहले इंसान के प्रति बहुत कृतज्ञ हो जाऊँगी, जो मुझसे कोई सार्थक बात करेगा। मैं दोस्त चाहती हूँ, न कि प्रशंसक। लोग मेरी चापलूसी भरी मुस्कराहट के लिए नहीं, बल्कि मेरे चरित्र और मेरे काम की वजह से मेरी इज़्ज़त करें। मेरे इर्दगिर्द लोग कम होंगे, लेकिन अगर वे सच्चे हों तो उससे फ़र्क़ नहीं पड़ता।

सब कुछ होने के बावजूद मैं 1942 में पूरी तरह ख़ुश नहीं थी; मुझे अक्सर महसूस होता था कि मुझे छोड़ दिया गया था, मैं पूरे दिन भर व्यस्त रहती थी, इसलिए मैंने कभी इसके बारे में नहीं सोचा। मैं ख़ूब मज़े से रहती थी, चेतन या अचेतन तौर पर ख़ालीपन को चुटकुलों से भरती थी।

अब पीछे देखने पर महसूस करती हूँ कि मेरी ज़िंदगी का वह दौर अब ख़त्म हो चुका है; स्कूल के मेरे मस्तमौला, बेफ़िक्र दिन हमेशा के लिए बीत चुके हैं। मुझे अब उनकी कमी भी महसूस नहीं होती। मैं उनसे आगे बढ़ चुकी हूँ। मैं अब सिर्फ़ बचपने में नहीं रह सकती, क्योंकि मेरा गंभीर पक्ष भी हमेशा मौजूद रहेगा।

ऐसा लगता है कि 1944 के नए साल तक की अपनी ज़िंदगी को मैं किसी आवर्धक लेंस से देख रही हूँ। जब मैं घर पर थी तो मेरी ज़िंदगी धूप से भरी थी। फिर 1942 के मध्य तक रातोंरात सब कुछ बदल गया। झगड़े, आरोप...मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकी। मैं अचानक जैसे फँस

गई और मेरे पास वापस जवाब देने के सिवा कोई चारा नहीं बचा था।

1943 के शुरू के छह महीने रोने के दौर, अकेलापन और मेरी ग़लतियों व कमियों का क्रमिक आभास लेकर आए, जो काफ़ी थीं और काफ़ी ज़्यादा लगती थीं, इसलिए दिन भर बकबक करके मैं पिम को अपने क़रीब लाना चाहती थी, लेकिन मैं नाकाम रही। इससे ख़ुद को बेहतर बनाने का मुश्किल काम मुझ पर ही आ पड़ा, ताकि मुझे उनकी झिड़कियाँ न सुननी पड़ें, क्योंकि उनसे मैं हताश हो जाती थी।

साल के अगले छह महीने थोड़े बेहतर थे। मैं किशोर हो गई और मुझे बड़ों की तरह समझा जाने लगा। मैं चीज़ों के बारे में सोचने लगी और कहानियाँ लिखने लगी, आख़िरकार इस नतीजे पर पहुँची कि किसी का अब मुझसे कोई लेना-देना नहीं होगा। उन्हें घड़ी के पेंडुलम की तरह मुझे आगे-पीछे करने का कोई अधिकार नहीं था। मैं ख़ुद को अपने तरीक़े से बदलना चाहती थी। मैंने महसूस किया कि मैं अपनी माँ के बिना पूरी तरह से अपने आप काम कर सकती थी और उससे मुझे चोट पहुँची। लेकिन मुझ पर जिस चीज़ ने ज़्यादा असर डाला वह था, यह समझना कि मैं कभी पापा पर विश्वास नहीं कर पाऊँगी। मैं अपने अलावा किसी पर विश्वास नहीं कर सकती।

नए साल के बाद दूसरा बड़ा अवसर सामने आया: मेरा सपना, जिसके माध्यम से मैंने... किसी लड़के; किसी लड़की के लिए नहीं, बल्कि लड़के दोस्त के लिए अपनी इच्छा को जाना। मैंने अपने सतही व ख़ुशमिज़ाज बाहरी रूप के नीचे एक आंतरिक प्रसन्नता को भी खोजा। समय-समय पर मैं चुप रही। अब मैं सिर्फ़ पीटर के लिए जीती हूँ, क्योंकि भविष्य में मेरे साथ क्या होता है, वह ज़्यादा उसी पर निर्भर करता है!

मैं रात को इन शब्दों के साथ अपनी प्रार्थना पूरी करके बिस्तर पर लेटती हूँ 'आभार, ईश्वर, उस सबके लिए जो अच्छा, प्यारा व ख़ूबसूरत है,' तो मैं आनंद से भर जाती हूँ। मैं पनाह लेने, अपनी सेहत, अपने पूरे अस्तित्व को अच्छे के रूप में, पीटर के प्रेम (जो अब भी बहुत नया व नाज़ुक है और जिसके बारे में हम दोनों ज़ोर से कुछ नहीं कह सकते), भविष्य, प्रसन्नता व प्रेम को प्यारे रूप में, दुनिया, प्रकृति और हर चीज़ की अनोखी सुंदरता, जो कुछ शानदार है, उसे ख़ूबसूरत के रूप में देखती हूँ।

ऐसे पलों में मैं तकलीफ़ों के बारे में नहीं, बल्कि अब भी बची ख़ूबसूरती के बारे में सोचती हूँ। इस बात पर मेरे व माँ के बीच गहरा मतभेद है। मुश्किल का सामना होने पर उनकी सलाह होती है: 'दुनिया भर की तकलीफ़ों के बारे में सोचो और शुक्र करो कि तुम उसका हिस्सा नहीं हो।' मेरी सलाह होती है: 'बाहर निकलो, गाँव-देहात में जाओ, धूप का और प्रकृति की नेमतों का मज़ा लो। बाहर निकलो और अपने भीतर मौजूद ख़ुशी को फिर से पा लो; अपने अंदर और अपने आसपास मौजूद सारी ख़ूबसूरती के बारे में सोचो और ख़ुश हो जाओ।'

मुझे नहीं लगता कि माँ की सलाह सही हो सकती है, क्योंकि अगर आप उस कष्ट का

हिस्सा बन भी जाते हैं, तो आप क्या करेंगे? आप तो पूरी तरह खो जाएँगे। इसके ठीक विपरीत, ख़ूबसूरती मौजूद रहती है, बदक़िस्मती में भी। अगर आप उसे खोजते हैं, तो आपको और भी ज़्यादा ख़ुशी मिलेगी और आप अपना संतुलन फिर से पा सकेंगे। ख़ुश इंसान बाक़ी लोगों को भी प्रसन्न कर सकता है; जिस इंसान के पास हिम्मत व आस्था है, वह कभी कष्ट में नहीं मरेगा!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 8 मार्च 1944

मारगोट व मैं मज़े के लिए एक-दूसरे को कुछ लिखकर देते रहते हैं।

ऐन: यह अजीब है, लेकिन एक रात पहले की घटना मुझे उसके अगले दिन याद रहती है। मिसाल के तौर पर, मुझे अचानक याद आया कि कल रात मि. दुसे बहुत ज़ोर से खर्राटे भर रहे थे। (अभी बुधवार की दोपहर के पौने तीन बज रहे हैं और मि. दुसे फिर से खर्राटे ले रहे हैं, इसी वजह से मुझे वह सब याद आया।) मुझे जब पॉटी का इस्तेमाल करना होता है, तो मैं जानबूझकर ज़्यादा आवाज़ करती हूँ, ताकि खर्राटे रुक जाएँ।

मारगोट: क्या बेहतर है, खर्राटे या साँस लेने के लिए संघर्ष करना?

ऐन: खर्राटे लेना बेहतर है, क्योंकि मेरे आवाज़ करने पर वे रुक जाते हैं और उन्हें लेने वाला इंसान जागता भी नहीं है।

मैंने मारगोट को यह नहीं लिखा, लेकिन प्रिय किटी, मैं तुम्हारे सामने क़बूल करूँगी कि मैं पीटर के सपने काफ़ी देखने लगी हूँ। परसों रात मैंने देखा कि मैं यहाँ बैठक में अपोलो आईस-स्केटिंग रिंग के लड़के के साथ स्केटिंग कर रही हूँ; उसके साथ पतली-लंबी टाँगों वाली उसकी बहन नीली पोशाक में थी, जो वह हमेशा पहना करती थी। मैंने अपना परिचय दिया, थोड़ी अति कर दी और उसका नाम पूछा। उसका नाम पीटर था। सपने में मैंने सोचा कि मैं कितने पीटरों को जानती थी!

फिर मैंने सपना देखा कि हम पीटर के कमरे में सीढ़ियों के पास आमने-सामने खड़े थे। मैंने उसे कुछ कहा; उसने मुझे चूमा, लेकिन जवाब दिया कि वह मुझे उतना प्यार नहीं करता और मुझे छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। निराश व याचना भरे स्वर में मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर रही, पीटर!'

उठने पर मैं ख़ुश थी कि पीटर ने वह सब नहीं कहा था। कल रात मैंने सपना देखा कि हम एक-दूसरे को चूम रहे थे, लेकिन पीटर के गाल बिलकुल बेकार थे, वे उतने मुलायम नहीं थे, जितने कि दिखते थे। वे पापा के गालों की तरह थे, दाढ़ी बनाने वाले आदमी के गालों जैसे।

शुक्रवार, 10 मार्च 1944

मेरी प्यारी किटी,

'आफ़त कभी अकेले नहीं आती,' यह कहावत आज के दिन पर पूरी तरह लागू होती है। पीटर ने अभी यही कहा। मैं तुम्हें बताती हूँ कि आज क्या कुछ हुआ और वह अभी हमारे सिर पर लटका है।

पहला, हेंक और आश्य की शादी के कारण मीप बीमार है। शादी में वेस्टरकेर्क में उसे जुकाम हो गया। दूसरे, मि. क्लेमन के पेट में हुए रक्तस्राव के बाद से वे काम पर नहीं लौटे हैं, इसलिए बेप को अकेले मोर्चा सँभालना पड़ रहा है। तीसरे, पुलिस से एक आदमी (जिसका नाम मैं नहीं लिखूँगी) को गिरफ़्तार किया है। यह उसके लिए ही बुरा नहीं है, बल्कि हमारे लिए भी है, क्योंकि वह हमें आलू, मक्खन व जैम मुहैया करा रहा था। मैं उसे मि. एम कहूँगी, उसके तेरह साल से कम उम्र के पाँच बच्चे हैं और छठा होने वाला है।

कल रात को हम फिर डर गए थे। खाना खाते हुए अचानक किसी ने बग़ल के दरवाज़े पर दस्तक दी। बाक़ी समय हम लोग काफ़ी घबराए हुए व दुखी रहे।

पिछले कुछ समय से यहाँ की घटनाओं पर लिखने का मेरा मन नहीं है। मैं ख़ुद में ज़्यादा डूबी हुई हूँ। मुझे ग़लत मत समझना। बेचारे, दयालु मि. एम के साथ जो कुछ हुआ, मैं उससे बहुत ज़्यादा परेशान हूँ, लेकिन मेरी डायरी में उनके लिए ज़्यादा जगह नहीं है।

मंगलवार, बुधवार और बृहस्पतिवार मैं साढ़े चार से सवा पाँच बजे तक पीटर के कमरे में रही। हमने फ्रेंच की पढ़ाई की और कई चीज़ों पर बात की। मैं उस एक घंटे की राह देखती हूँ, लेकिन उससे भी अच्छी बात यह है कि पीटर भी मुझे देखकर उतना ही ख़ुश होता है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 11 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

पिछले कुछ दिन से मैं शांत नहीं बैठ पा रही हूँ। मैं हर समय ऊपर-नीचे जाती रहती हूँ। मुझे पीटर से बात करना पसंद है, लेकिन मुझे डर रहता है कि कहीं मैं उसे परेशान तो नहीं कर रही। उसने मुझे अतीत के बारे में, अपने माँ-बाप के बारे में और ख़ुद के बारे में थोड़ा-बहुत बताया है, लेकिन वह काफ़ी नहीं है और हर पाँच मिनट में मैं सोचती हूँ कि क्यों मुझे ज़्यादा जानने की लालसा लगी रहती है। वह सोचा करता था कि मैं काफ़ी परेशान करने वाली लड़की हूँ और हम दोनों ही ऐसा सोचते थे। मैंने अपनी सोच बदल ली है, लेकिन मैं यह कैसे जानूँगी कि वह भी ऐसा ही कर चुका है? मेरे ख़याल से वह कर चुका है, लेकिन उसका यह मतलब कतई नहीं कि हमें अच्छा दोस्त बनना है, वैसे मेरा मानना है कि ऐसा करने से यहाँ वक़्त गुज़ारना आसान हो जाएगा। लेकिन मैं इस बात को ख़ुद पर हावी नहीं होने दे सकती। मैं काफ़ी समय उसके

बारे में सोचते हुए बिताती हूँ और नहीं चाहती कि तुम पर भी वही सब थोप दूँ, सिर्फ़ इसलिए कि मैं इतनी दयनीय दशा में हूँ!

रविवार, 12 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

दिन ब दिन यहाँ हालात अजीब होते जा रहे हैं।

कल से पीटर ने मेरी तरफ़ नहीं देखा है। वह ऐसा बर्ताव कर रहा है कि जैसे वह मुझसे नाराज़ है। मैं पूरी कोशिश कर रही हूँ कि उसका पीछा न करूँ और उससे कम से कम बात करूँ, लेकिन यह इतना आसान नहीं है! क्या चल रहा है, ऐसी क्या बात है कि एक पल तो वह मुझसे फ़ासला बनाए रखता है और दूसरे ही पल मेरे पास भागा चला आता है? शायद मैं बदतर की कल्पना कर रही हूँ, जो कि असल में है नहीं। शायद वह मेरी तरह ही मूडी हो और कल सब कुछ ठीक हो जाए!

बहुत परेशान होने की स्थिति में बाहरी रूप से सामान्य बने रहना मेरे लिए सबसे मुश्किल काम होता है। मुझे बात करनी होती है, घर के काम में मदद करनी होती है, बाक़ी लोगों के साथ बैठना होता है और सबसे बड़ी बात कि ख़ुश होने का दिखावा करना होता है! ऐसे में मुझे बाहर न जा पाना और ऐसी जगह का न होना सबसे ज़्यादा खलता है, जहाँ कितनी भी देर अकेली बैठ सकूँ! मैं सब कुछ गड़बड़ कर रही हूँ, किटी, लेकिन मैं ख़ुद बहुत उलझी हुई हूँ: एक तरफ़ मैं उसकी चाहत के पीछे पागल हूँ, उसकी तरफ़ देखे बिना एक कमरे में रहना मुश्किल लगता है और दूसरी तरफ़, मैं सोचती हूँ कि वह मेरे लिए क्यों इतने मायने रखता है और मैं फिर से शांत क्यों नहीं हो जाती!

दिन-रात, सोते-जागते मैं कुछ और नहीं करती, बस ख़ुद से पूछती हूँ, 'क्या तुमने उसे अकेले रहने का पर्याप्त अवसर दिया? क्या तुम ऊपर ज़रूरत से ज़्यादा वक्त गुज़ारती हो? क्या तुम ऐसे गंभीर विषयों पर इतनी ज़्यादा बात करती हो कि जिन पर बात करने के लिए वह अभी तैयार नहीं? हो सकता है कि वह तुम्हें पसंद न करता हो? क्या यह सब तुम्हारी कल्पना थी? लेकिन फिर उसने क्यों तुम्हें अपने बारे में इतना कुछ बताया? क्या उसे इस बात का अफ़सोस है?' इसी तरह की और भी बातें।

कल दोपहर मैं बाहर से मिले दुखद समाचार से भीतर से इतनी थक गई थी कि मैं झपकी लेने के लिए अपने दीवान पर लेट गई। मैं कुछ नहीं सोचना चाहती थी, बस सो जाना चाहती थी। मैं चार बजे तक सोई, लेकिन फिर मुझे बग़ल के कमरे में जाना पड़ा। माँ के सभी सवालों का जवाब देना और अपनी झपकी का कोई बहाना पापा को देना आसान नहीं था। मैंने कहा कि मुझे सिरदर्द है, जो कि झूठ नहीं था, क्योंकि मुझे था... लेकिन अंदर!

आम लोग, सामान्य लड़कियाँ, मेरी जैसी किशोरियाँ सोचेंगे कि आत्मदया थोड़ा पागलपन

है। बस, यही बात है। मैं अपने दिल की सभी बातें तुम्हें बताती हूँ, लेकिन बाक़ी समय पर मैं जहाँ तक हो सके बेपरवाह, ख़ुशमिज़ाज व आत्मविश्वासी बनी रहती हूँ और ख़ुद पर ही चिढ़ने से बचती हूँ।

मारगोट बहुत रहमदिल है और चाहती है कि मैं उसे सब कुछ बताऊँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। वह मुझे बहुत गंभीरता से लेती है, काफ़ी गंभीरता से और काफ़ी वक़्त अपनी बावली बहन के बारे में सोचते हुए बिताती है, मैं जब भी अपना मुँह खोलती हूँ, तो मुझे ध्यान से देखते हुए सोचती है, 'यह अभिनय कर रही है या फिर इसके कहने का यही मतलब है?'

कारण यह है कि हम हमेशा साथ रहते हैं, मैं नहीं चाहती कि जिस इंसान को मैं सब कुछ बताऊँ, वह हर समय मेरे आसपास रहे। मैं अपने उलझे विचारों को कब सुलझाऊँगी? मैं फिर से कब भीतरी शांति पाऊँगी?

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 14 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

हमारे आज के खाने के बारे में सुनना शायद तुम्हारे लिए (हालाँकि मेरे लिए नहीं है) दिलचस्प हो सकता है। महिला सफ़ाईकर्मी नीचे काम कर रही है, इसलिए अभी मैं फ़ॉन डान परिवार के मोमजामा बिछी मेज़ पर एक रूमाल से अपने नाक-मुँह ढँककर बैठी हूँ, जिस पर युद्ध-पूर्व का इत्र छिड़का हुआ है। तुम्हें शायद ज़रा सा भी अंदाज़ा नहीं है कि मैं किस बारे में बात कर रही हूँ, तो फिर मैं 'शुरु से शुरुआत' करती हूँ। हमें खाने के कूपन मुहैया करवाने वाले लोग गिरफ़्तार हो चुके हैं, तो अब हमारे पास काले बाज़ार की सिर्फ़ पाँच राशन पुस्तिकाएँ हैं, कोई कूपन नहीं, कोई चर्बी व तेल नहीं। मीप व मि. क्लेमन फिर से बीमार पड़ गए हैं, बेप ख़रीदारी नहीं कर पा रही हैं। खाना बुरी स्थिति में है और हम भी। कल के लिए हमारे पास ज़रा सी भी चर्बी, मक्खन या मार्जरीन नहीं है। हम नाश्ते में तले हुए आलू नहीं खा सकते (जो हम डबलरोटी बचाने के लिए खा रहे थे), इसलिए उसकी जगह हम दलिया खा रहे हैं और क्योंकि मिसेज़ फ़ॉन डी को लगता है कि हम भूख मर रहे हैं, इसलिए हमने कुछ दूध व मलाई ख़रीदी।

आज दिन के खाने में मसले हुए आलू और केल का अचार था। इससे मुँह पर रूमाल रखने का ऐहतियाती क़दम समझ में आता है। तुम विश्वास नहीं करोगी कि कुछ साल पुराना केल कैसी सड़ी गंध देता है! रसोई से ख़राब आलूबुखारों, सड़े हुए अंडों और खारे पानी की मिली-जुली गंध आ रही है। उस गंदी चीज़ को खाने के ख़याल से ही मुझे उल्टी आ रही है! इसके अलावा हमारे आलुओं को कोई अजीब सी बीमारी हो गई है, जिसके कारण हर दो बाल्टी आलू में से एक हमें कचरे में फेंकनी पड़ती है। उन आलुओं की बीमारी के बारे में अटकलें लगाकर हम

अपना मनोरंजन करते हैं और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि उन्हें कैंसर, चेचक और खसरा हो गया है।

ईमानदारी से कहूँ, तो लड़ाई के चौथे साल छिपे रहकर जीना कोई मज़े का काम नहीं है। काश, यह सड़ाँध ख़त्म हो जाती!

सच बताऊँ तो मुझे खाने से उतना फ़र्क़ नहीं पड़ता, अगर यहाँ ज़िंदगी दूसरे मामलों में थोड़ी ख़ुशनुमा होती। लेकिन है ऐसा ही: इस उबाऊ अस्तित्व से हम सब झगड़ालू होते जा रहे हैं। वर्तमान स्थिति पर पाँच वयस्कों के विचार इस प्रकार हैं (बच्चों को राय रखने की अनुमति नहीं है और पहली बार मैं नियमों को मान रही हूँ):

मिसेज़ फ़ॉन डान: 'मैंने काफ़ी समय पहले ही रसोई की रानी बनने की इच्छा छोड़ दी थी। ख़ाली बैठे रहना काफ़ी नीरस था, इसलिए मैंने खाना बनाना फिर से शुरु कर दिया। फिर भी मैं शिकायत ज़रूर करूँगी: बिना तेल के खाना बनाना नामुमकिन है और उन सभी घिनौनी बदबुओं से मुझे उबकाई जैसा लगता है। इसके अलावा, मुझे अपनी कोशिशों के बदले में क्या मिलता है? कृतघ्नता और रूखी टिप्पणियाँ। मैं हमेशा से कलंकित रही हूँ; मुझ पर हर चीज़ का आरोप लगाया जाता है। मेरी राय है कि युद्ध बहुत धीमी गति से बढ़ रहा है। अंत में जर्मनों की विजय होगी। मुझे डर है कि हम भूखे मरेंगे और जब भी मैं ख़राब मूड में होती हूँ, तो अपने आसपास फटकने वाले हर इंसान को जैसे काट खाने दौड़ती हूँ।'

मि. फ़ॉन डान: 'मैं बस धूम्रपान करता हूँ। उसके बाद खाना, राजनीतिक हालात और केर्ली का मूड उतने बुरे नहीं लगते। केर्ली बहुत प्यारी है। अगर मेरे पास धूम्रपान करने को न हो, तो मैं बीमार पड़ जाता हूँ, फिर मुझे मांस चाहिए, ज़िंदगी असहनीय हो जाती है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता और फिर दहकते हुए शब्द निकलते हैं। मेरी केर्ली बेवकूफ़ है।'

मिसेज़ फ्रैंक: 'खाना बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है, लेकिन अभी मैं राई ब्रेड का एक टुकड़ा खाना चाहूँगी, क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है। अगर मैं मिसेज़ फ़ॉन डान की जगह होती, तो काफ़ी पहले ही मि. फ़ॉन डान के धूम्रपान पर रोक लगा देती। लेकिन अभी मुझे सिगरेट की बहुत ज़रूरत है, क्योंकि मेरा सिर घूम रहा है। फ़ॉन डान परिवार बहुत बुरा है; ब्रिटिश ने भले काफ़ी ग़लतियाँ की हों, लेकिन युद्ध आगे बढ़ रहा है। मुझे अपना मुँह बंद रखना चाहिए और शुक्र मनाना चाहिए कि मैं पोलैंड में नहीं हूँ।'

मि. फ्रैंक: 'सब कुछ ठीक है। मुझे किसी बात से फ़र्क़ नहीं पड़ता। शांत रहो, हमारे पास काफ़ी वक़्त है। बस, मुझे थोड़े आलू दे दो, तो मैं चुप रहूँगा। बेहतर होगा मेरे राशन के कुछ हिस्से को बेप के लिए रख दो। राजनीतिक स्थिति बेहतर हो रही है, मैं काफ़ी आशावादी हूँ।'

मि. दुसे: 'अपने लिए तय काम को मुझे पूरा करना ही होगा, क्योंकि सब कुछ समय पर पूरा होना चाहिए। राजनीतिक स्थिति "अच्छी" लग रही है, हमारा पकड़ा जाना "नामुमकिन" है। मैं, मैं, मैं...!'

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 16 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

उफ़! कुछ पलों के लिए मैं निराशा व उदासी से बाहर निकली हूँ! मैं आज बस यही सब सुन रही हूँ: 'अगर ऐसा और वैसा होता है, तो हम मुश्किल में हैं और अगर वह बीमार हो जाता है, तो हमें अपना इंतज़ाम ख़ुद ही करना होगा, और अगर...'

वैसे, बाक़ी तो तुम जानती हो या फिर मैं यह मान सकती हूँ कि तुम अनेक्स के निवासियों से काफ़ी परिचित हो चुकी हो और इसलिए यह अंदाज़ा लगा सकती हो कि वे किस बारे में बात कर रहे होंगे।

सभी 'अगर' का कारण यह है कि मि. कुगलर को छह दिन के काम के विवरण के लिए बुलाया गया है, बेप को जुकाम हुआ है और शायद उसे कल घर पर ही रहना पड़े, मीप का फ़्लू अभी ठीक नहीं हुआ है और मि. क्लेमन के पेट से इतना रक्तस्राव हुआ कि वे बेहोश हो गए। कितनी दुख भरी कहानी है!

हमें लगता है कि मि. कुगलर को किसी विश्वसनीय डॉक्टर के पास जाकर बीमारी का मेडिकल सर्टिफ़िकेट बनवाना चाहिए, जिसे वे इल्वर्ज़म में सिटी हॉल में दिखा सकते हैं। गोदाम के कर्मचारियों को कल की छुट्टी दी गई है, इसलिए बेप दफ़्तर में अकेली होंगी। अगर (फिर से एक और 'अगर') बेप को घर पर रहना पड़ा, तो दरवाज़ा बंद रहेगा और हमें बिलकुल ख़ामोशी से रहना होगा, ताकि केग कंपनी तक हमारी आवाज़ें न पहुँचें। एक बजे यान आधे घंटे के लिए हम बेचारे परित्यक्त लोगों को देखने आएँगे, जैसे कोई चिड़ियाघर का संरक्षक आता है।

आज दोपहर, लंबे समय के बाद पहली बार यान ने हमें बाहरी दुनिया की कोई ख़बर दी। तुम्हें देखना चाहिए था कि हम लोग कैसे उन्हें घेरकर खड़े थे, वैसे ही जैसे बच्चे अपनी 'दादी-नानी के पास कहानी सुनने को' जमा होते हैं। उन्होंने अपने कृतज्ञ श्रोताओं को खाने की बातों से ख़ुश कर दिया। मीप की एक दोस्त मिसेज़ पी उनके लिए खाना बनाती हैं। परसों यान ने मटर के साथ गाजर खाई, कल बचा-खुचा खाना खाया, आज वे उनके लिए सूखे मटर बनाने वाली हैं और कल बचे हुए गाजर व आलू को मिलाकर बनाएँगी।

'डॉक्टर?' यान ने कहा। 'कौन डॉक्टर? मैंने आज सुबह उसे फ़ोन किया और उसकी रिसेप्शनिस्ट ने बात की। मैंने फ़्लू की दवा की पर्ची के बारे में पूछा और मुझे बताया गया कि मैं कल सुबह आठ से नौ बजे तक उसे ले लूँ। अगर आपकी हालत बहुत ख़राब हो, तो डॉक्टर ख़ुद आकर आपसे बात करता है और कहता है, "जीभ बाहर निकालकर 'आह' कहें। मैं उसे सुन सकता हूँ, आपके गले में संक्रमण है। मैं पर्ची लिख दूँगा और आप दवा की दुकान पर उसे

ला सकते हैं। आपका दिन शुभ हो।" बस, हो गया। उसका काम आसान है, फ़ोन पर बता दो। लेकिन मुझे डॉक्टरों को दोष नहीं देना चाहिए। हर इंसान के दो ही हाथ होते हैं और आजकल मरीज़ों की तादाद बहुत ज़्यादा है, जबकि डॉक्टरों की संख्या बहुत कम है।'

यान की फ़ोन की बात पर हम सभी ख़ूब हँसे। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि डॉक्टर का वेटिंग रूम आजकल कैसा लगता होगा। डॉक्टर अब ग़रीब मरीज़ों को देखकर नाक-भौं नहीं सिकोड़ते, बल्कि हल्की बीमारी वालों को देखकर ऐसा करते हैं। 'अरे, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?' वे सोचते हैं। 'कतार में आख़िर में चले जाइए; असली मरीज़ ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं!'

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 16 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

मौसम बहुत अच्छा है, इतना ख़ूबसूरत कि बयान नहीं किया जा सकता। मैं थोड़ी देर में अटारी पर जाऊँगी।

मैं अब जानती हूँ कि मैं पीटर से ज़्यादा बेचैन क्यों हूँ। उसका अपना कमरा है, जहाँ वह काम कर सकता है, सपने देख सकता है, सोच सकता है और सोता है। मुझे लगातार एक कोने से दूसरे कोने में भगाया जाता है। मैं दुसे के साथ साझा किए गए कमरे में कभी भी अकेली नहीं होती, जबकि मैं अकेली रहना चाहती हूँ। अटारी में पनाह लेने की यह एक और वजह है। जब मैं वहाँ पर या तुम्हारे साथ होती हूँ, तो मैं अपने असली रूप में होती हूँ, कम से कम थोड़ी देर के लिए ही सही। फिर भी मैं शिकायत नहीं करना चाहती। इसके उलट, मैं बहादुर होना चाहती हूँ!

शुक्र है कि बाक़ी लोग मेरी सबसे आंतरिक भावनाओं पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते, यही कि मैं हर रोज़ माँ को लेकर बेपरवाह और तिरस्कारपूर्ण होती जा रही हूँ, पापा के प्रति कम स्नेही और मारगोट के साथ कोई भी विचार साझा नहीं करना चाहती; मैं बस अपने में सिमटती जा रही हूँ। इससे भी ज़्यादा मुझे अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होता है। किसी को भनक भी नहीं लगनी चाहिए कि मेरे दिल-दिमाग़ में हमेशा जद्दोजहद चलती रहती है। अब तक हमेशा तर्क ही लड़ाई जीता है, लेकिन क्या मेरी भावनाएँ कभी सशक्त स्थिति में होंगी? कभी मैं डरती हूँ कि वे होंगी, लेकिन अक्सर मैं उम्मीद करती हूँ कि ऐसा हो!

पीटर के साथ इन चीज़ों के बारे में बात न करना बहुत मुश्किल है, लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझे उसे शुरुआत करने देनी होगी; दिन के समय ऐसे दिखाना बहुत मुश्किल है कि जैसे मेरे सपनों में मैंने जो भी किया व कहा, असल में वह कभी हुआ ही नहीं! किटी, ऐन पागल है, लेकिन यह समय ही ऐसा है और हालात तो और भी पागलपन भरे हैं।

सबसे अच्छी बात यह है कि मैं अपने सभी विचारों व भावनाओं को लिख सकती हूँ; वरना

मेरा दम घुट जाता। मैं सोचती हूँ कि पीटर की इस सब पर क्या राय होगी? मैं एक दिन इस सब पर उससे बात कर सकूँगी। उसने ज़रूर मेरे भीतर की लड़की के बारे में कुछ तो अंदाज़ा लगाया होगा, क्योंकि जिस बाहरी ऐन को उसने अब तक जाना है, उसे तो वह शायद प्यार नहीं कर सकता! शांति व सुकून पसंद करने वाला पीटर जैसा इंसान आख़िर कैसे मेरी हलचल व मेरे शोर को बर्दाश्त कर सकता है? क्या वही पहला और अकेला इंसान होगा, जो मेरे सख़्त मुखौटे के नीचे देख सकेगा? क्या उसे इसमें वक़्त लगेगा? क्या ऐसी पुरानी कहावत नहीं है, जो प्यार को तरस खाने के जैसा मानती है? क्या यहाँ भी ऐसा ही तो नहीं हो रहा? मैं अक्सर उस पर भी उतना ही तरस खाती हूँ, जितना कि ख़ुद पर!

मैं नहीं जानती कि कहाँ से शुरू करूँ, सचमुच नहीं जानती, तो मैं पीटर से कैसे अपेक्षा कर सकती हूँ, जबकि उसके लिए बात करना काफ़ी मुश्किल है? काश, मैं उसे लिख पाती, तब कम से कम वह जानता तो कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ, क्योंकि ज़ोर से बोल पाना तो काफ़ी मुश्किल है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 17 मार्च, 1944

मेरी प्यारी-दुलारी,

आख़िरकार सब कुछ अच्छा रहा; बेप का गला ख़राब था, उसे फ़्लू नहीं हुआ था और मि. कुगलर को मेडिकल सर्टिफ़िकेट मिल गया था, ताकि उन्हें काम के विवरण से छूट मिल जाए। पूरे अनेक्स ने बड़ी राहत की साँस ली। यहाँ सब कुछ ठीक है! बस, मैं व मारगोट अपने माँ-बाप से परेशान हैं।

मुझे ग़लत मत समझना, मैं पापा से अब भी प्यार करती हूँ और मारगोट माँ व पापा, दोनों से प्यार करती है, लेकिन जब आप हमारे जितने बड़े होते हैं, तो आप अपने लिए कुछ निर्णय लेना चाहते हैं, उनके शासन से निकलना चाहते हैं। जब भी मैं ऊपर जाती हूँ, तो वे मुझसे पूछते हैं कि मैं क्या करने जा रही हूँ। वे मुझे अपने खाने में नमक नहीं मिलाने देते। माँ हर शाम सवा आठ बजे मुझसे पूछती हैं कि क्या मेरा नाइटी पहनने का वक़्त नहीं हुआ, मुझे व उन्हें मेरे द्वारा पढ़ी जाने वाली हर किताब को मंजूरी देनी पड़ती है। मैं मानती हूँ कि वे उसे लेकर बहुत सख़्त नहीं हैं और मुझे लगभग सब कुछ पढ़ने देते हैं, लेकिन मारगोट व मैं दिन भर उनकी टिप्पणियाँ व सवाल सुनकर परेशान हो चुके हैं।

कुछ और भी है जो उन्हें नाराज़ करता है: मुझे अब सुबह, दोपहर और रात को उन्हें चूमना अच्छा नहीं लगता। वे सभी प्यारे से उपनाम बहुत बनावटी लगते हैं और पापा का गैस और शौचालय के बारे में बात करना मुझे घिनौना लगता है। संक्षेप में कहूँ, तो मैं कुछ दिन उनके

बिना बिताना पसंद करूँगी, लेकिन वे इस बात को नहीं समझते। मारगोट और मैंने उनसे कभी इस तरह की बात नहीं की। उससे क्या फ़ायदा होगा? वे समझने नहीं वाले हैं।

कल रात मारगोट ने कहा, 'मुझे यह बात बहुत परेशान करती है कि अगर आप अपने हाथों में सिर लेकर बैठे हों और एक या दो गहरी साँसें भरें, तो वे तुरंत पूछेंगे कि कहीं तुम्हें सिरदर्द तो नहीं या फिर तुम्हारी तबियत ख़राब तो नहीं!'

हम दोनों के लिए एक बड़ा झटका यह समझना रहा कि घर में हम जिस तरह का जुड़ा हुआ व सामंजस्यपूर्ण परिवार हुआ करते थे, उसके बस अब थोड़े से अवशेष ही बच पाए हैं! इसका कारण यह है कि यहाँ पर सब कुछ तरतीब से बाहर है। इससे मेरा मतलब है कि बाहरी मामलों को लेकर हमें बच्चा समझा जाता है, जबकि अंदर से हम अपनी उम्र की बाक़ी लड़कियों से काफ़ी बड़ी हैं। मैं सिर्फ़ चौदह साल की हूँ, मैं जानती हूँ कि कौन सही है और कौन ग़लत, मेरे अपने विचार, अपनी राय व सिद्धांत हैं और हो सकता है कि किसी किशोरी से यह सुनना अजीब लगे कि मुझे लगता है कि मैं कोई बच्ची नहीं बल्कि बड़ी इंसान हूँ, मैं पूरी तरह से स्वतंत्र हूँ। मैं जानती हूँ कि माँ के मुक़ाबले मैं बहस करने या किसी बातचीत में हिस्सा लेने में बेहतर हूँ, मैं जानती हूँ कि मैं ज़्यादा निष्पक्ष हूँ, मैं ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बात नहीं करती, मैं ज़्यादा साफ़-सुथरी हूँ और बेहतर काम करती हूँ और उसके कारण मुझे लगता है कि (हो सकता है कि इस बात से तुम्हें हँसी आज जाए) मैं माँ से कई तरह से बेहतर हूँ। किसी से प्यार करने के लिए ज़रूरी है कि मैं उसकी प्रशंसा करूँ, उसका सम्मान करूँ, लेकिन माँ के लिए तो मेरे मन में न इज़्ज़त है और न ही तारीफ़!

सब कुछ ठीक हो जाए, अगर मेरे पास पीटर हो, क्योंकि मैं कई तरह से उसे पसंद करती हूँ। वह इतना भला व चतुर है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 18 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

मैंने तुम्हें अपने व अपने एहसास के बारे में किसी भी ज़िंदा इंसान के मुक़ाबले ज़्यादा बताया है, तो फिर उसमें सेक्स क्यों शामिल नहीं होना चाहिए?

सेक्स के मामले में माता-पिता और आम तौर पर लोग बहुत अजीब होते हैं। बारह साल की उम्र में अपने बेटे-बेटियों को सब कुछ बताने के बजाय इस विषय की बात उठने पर वे बच्चों को कमरे से बाहर भेज देते हैं और उन्हें सब कुछ अपने आप जानने के लिए छोड़ देते हैं। बाद में जब माता-पिता गौर करते हैं कि उनके बच्चे किसी तरह जानकारी हासिल कर चुके हैं और मान लेते हैं कि वे ज़्यादा (या कम) जान चुके हैं, जबकि असल में वे उतना नहीं जानते। तो फिर वे

उसकी कमी को पूरा करने के लिए बच्चों से जानने की कोशिश क्यों नहीं करते?

वयस्कों के लिए सबसे बड़ी रुकावट, मेरी राय में जो बहुत छोटी सी बात है वह यह कि वे डरते हैं कि उनके बच्चे शादी को उतना पवित्र नहीं मानेंगे, जब उन्हें महसूस होगा, अधिकतर मामलों में कि यह पवित्रता की बात बकवास है। जहाँ तक मेरी राय है, थोड़े अनुभव से कुछ नहीं बिगड़ने वाला। आख़िरकार, इसका शादी से कुछ लेना-देना नही हैं, है न?

ग्यारह साल की होने के बाद उन्होंने मुझे मासिक धर्म के बारे में बताया। लेकिन तब भी मुझे नहीं पता था कि ख़ून कहाँ से निकलता था और उसका क्या काम था। जब मैं साढ़े बारह साल की हुई, तो मैंने यैक से थोड़ी और जानकारी ली, जो मेरी तरह अनजान नहीं थी। मेरे सहज ज्ञान ने मुझे बताया कि स्त्री-पुरुष जब साथ होते हैं, तो क्या करते हैं और वह पहली नज़र में मुझे बहुत पागलपन भरा विचार है, लेकिन जब यैक ने उसकी पुष्टि की, तो मुझे ख़ुद पर गर्व हुआ कि मैंने अपने आप उसका पता लगा लिया था!

यैक ही थी जिसने मुझे बताया कि बच्चे माँ के पेट से नहीं निकलते। उसका कहना था, 'जहाँ पर कच्चा माल जाता है, वहीं से तैयार माल भी निकलता है!' यैक और मैंने यौन शिक्षा की एक किताब से योनिच्छद के बारे में जाना और बाक़ी अन्य जानकारी भी ली। मैंने यह भी जाना कि किस तरह से बच्चे पैदा न हों, लेकिन आपके शरीर में वह कैसे काम करता है, वह रहस्य ही बना रहा। जब मैं यहाँ आई, तो पापा ने मुझे वेश्या, आदि के बारे में बताया, लेकिन कुल मिलाकर अब भी कई सवाल ऐसे हैं, जिनके जवाब नहीं मिले हैं।

अगर माँएँ अपने बच्चों को सब कुछ नहीं बतातीं, तो वे इधर-उधर से जानकारी लेंगे, जो सही नहीं हो सकती।

आज शनिवार है, लेकिन मैं फिर भी ऊब नहीं रही हूँ। इसका कारण यह है कि मैं पीटर के साथ थी। मैं वहाँ पर आँखें बंद कर सपने देख रही थी, वह अद्भुत था।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

रविवार, 19 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

कल का दिन मेरे लिए बहुत अहम था। दिन के खाने के बाद सब कुछ सामान्य था। पाँच बजे मैंने आलू चढ़ाए और माँ ने मुझे पीटर के लिए ले जाने के लिए कुछ ब्लड सॉसेज दिए। पहले मैं नहीं जाना चाहती थी, लेकिन आख़िरकार मैं चली गई। वह सॉसेज नहीं लेगा और मुझे लगता है कि अविश्वास पर हुई बहस के कारण ऐसा हो सकता है। अचानक मैं उस बात को सहन नहीं कर पाई और मेरी आँखें भर आईं। बिना कुछ कहे मैंने प्लेट माँ को पकड़ाई और जी भरकर रोने के लिए शौचालय में चली गई। उसके बाद मैंने पीटर से बात करने का फ़ैसला

किया। रात के खाने से पहले हम चारों वर्ग-पहेली भरने में उसकी मदद कर रहे थे, इसलिए मैं कुछ कह नहीं पाई। जैसे ही हम खाने के लिए बैठे, मैंने फुसफुसाकर उसे कहा, 'आज रात शॉर्टहैंड का अभ्यास करोगे, पीटर?'

'नहीं,' उसने जवाब दिया।

'मैं बाद में तुमसे बात करना चाहूँगी।'

वह राज़ी हो गया।

बर्तन धोने के बाद मैं उसके कमरे में गई और उससे पूछा कि क्या उसने हमारी पिछली लड़ाई के कारण सॉसेज लेने से मना कर दिया था। ख़ुशक़िस्मती से कारण वह नहीं था; उसने सोचा कि किसी चीज़ को लपक लेना शिष्टाचार नहीं था। नीचे बहुत गर्मी थी और मेरा चेहरा लाल हो गया था। मारगोट के लिए नीचे पानी ले जाने के बाद मैं ताज़ा हवा लेने वापस ऊपर चली गई। पीटर के कमरे में जाने से पहले दिखावे के लिए पहले मैं फ़ॉन डान दंपत्ति की खिड़की के पास खड़ी हो गई। वह खुली खिड़की के बाईं ओर खड़ा था, इसलिए मैं दाईं तरफ़ चली गई। दिन के उजाले के बजाय हल्की रोशनी में खुली खिड़की के पास बात करना ज्यादा आसान होता है और मुझे लगता है कि पीटर भी यही सोचता है।

हमने एक-दूसरे को इतना कुछ बताया, इतना कुछ कि मैं उसे दोहरा नहीं सकती। लेकिन ऐसा करके अच्छा लगा; अनेक्स में मेरी अब तक यह सबसे बढ़िया शाम थी। मैं तुम्हें उन विषयों के बारे में संक्षेप में बताऊँगी, जिन पर हमने बात की थी।

पहले हमने लड़ाइयों के बारे में बात की और कैसे मैं आजकल उन्हें बिलकुल अलग ढंग से देखती हूँ और फिर इस बारे में कि हम किस तरह से अपने माता-पिता से दूर हो गए हैं। मैंने पीटर को मम्मी-पापा, मारगोट और अपने बारे में बताया। बातचीत के दौरान उसने पूछा, 'तुम हमेशा एक-दूसरे को शुभरात्रि कहते हुए चूमते हो, है न?'

'एक बार? दर्जनों बार। तुम नहीं करते?'

'नहीं, मैंने कभी सचमुच किसी को नहीं चूमा।'

'अपने जन्मदिन पर भी नहीं?'

'हाँ, जन्मदिन पर तो चूमा है।'

हमने बात की कि कैसे हम दोनों ही अपने माँ-बाप पर भरोसा नहीं करते और कैसे उसके माँ-बाप एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं और इच्छा व्यक्त की कि वह उन्हें अपनी बातें बता पाता, लेकिन वह ऐसा नहीं करना चाहता। कैसे मैं जी भरकर रोती हूँ और कैसे वह ऊपर जाकर बुरा-भला है। कैसे मारगोट व मैं हाल ही में एक-दूसरे को जानने लगे हैं और फिर भी एक-दूसरे को कितना कम बताते हैं, क्योंकि हम हमेशा साथ रहते हैं। हमने हर संभव चीज़ पर बात की, भरोसे, भावनाओं और ख़ुद के बारे में। किटी, वह वैसा ही है, जैसा मैंने उसके बारे में सोचा था।

फिर हमने साल 1942 के बारे में बात की और तब हम कितने अलग थे; हम उस ज़माने

के अपने रूप को पहचानते तक नहीं हैं। कैसे हम एक-दूसरे को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। वह सोचता था कि मैं बहुत शोर मचाती हूँ और मैं भी तुरंत इस नतीजे पर पहुँच गई थी कि वह कुछ ख़ास नहीं है। मुझे तब समझ नहीं आया था कि वह मेरे साथ हँसी-मज़ाक क्यों नहीं करता और अब मैं ख़ुश हूँ कि उसने ऐसा नहीं किया। उसने इस बात का भी ज़िक्र किया कि कैसे वह अपने कमरे में पनाह ले लेता था। मैंने कहा कि मेरा शोर-शराबा व चुलबुलापन और उसकी ख़ामोशी एक ही सिक्के के दो पहलू थे, यह कि मुझे भी शांति व सुकून पसंद थे, लेकिन मेरे पास अपने लिए कुछ भी नहीं था, बस एक डायरी को छोड़कर और यह भी कि हर किसी को मेरे पीछे देखना चाहिए, शुरूआत मि. दुसे से होनी चाहिए और मैं हमेशा अपने माँ-बाप के साथ नहीं बैठना चाहती। हमने इस पर भी बात की कि वह कितना ख़ुश है कि मेरे माँ-बाप के बच्चे हैं और मैं भी कितनी ख़ुश हूँ कि वह यहाँ है। मैं अब उसके अपने में सिमटने की बात को, उसके माँ-बाप के साथ उसके रिश्ते को समझने लगी हूँ और उनके बहस करने पर मैं उसकी मदद करना चाहती हूँ।

'तुम तो हमेशा से मेरी मददगार रही हो!' उसने कहा।

'कैसे?' हैरानी से मैंने पूछा।

'ख़ुश रहकर।'

सारी शाम वही सबसे अच्छी बात उसने कही। उसने यह भी कहा कि उसे मेरा उसके कमरे में आना पहले की तरह बुरा नहीं लगता; असल में उसे वह पसंद है। मैंने उसे यह भी बताया कि पापा व माँ के सभी उपनाम बेकार थे और यह कि चूमने से स्वाभाविक रूप से विश्वास पैदा नहीं होता। हमने अपने तरीक़े से काम करने, डायरी, अकेलेपन, लोगों के बाहरी व भीतर रूप में अंतर, मेरे मुखौटे आदि पर भी बात की।

वह बस बहुत बढ़िया था। वह ज़रूर अब मुझसे एक दोस्त की तरह प्यार करने लगा होगा और फ़िलहाल वह काफ़ी है। मैं इतनी कृतज्ञ व प्रसन्न हूँ कि मुझे शब्द नहीं मिल रहे। मैं माफ़ी चाहूँगी, किटी कि आज मेरा तरीक़ा मेरे अपने सामान्य दर्जे के अनुसार नहीं है। जो कुछ मेरे दिमाग़ में आया, मैंने वही लिख दिया!

मुझे लगता है कि पीटर व मेरे बीच एक गुप्त बात है। जब भी वह मुझे उन नज़रों से, उस मुस्कराहट व इशारे से देखता है, लगता है जैसे कि मेरे अंदर कोई रोशनी जा रही हो। मुझे उम्मीद है कि हालात ऐसे ही रहें और हम ऐसे ही कई ख़ुशनुमा घंटे साथ बिता सकें।

तुम्हारी कृतज्ञ व प्रसन्न ऐन

सोमवार, 20 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

आज सुबह पीटर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं किसी शाम फिर से आऊँगी। उसने क़सम खाई कि मैं उसे परेशान नहीं करती और अगर एक के लिए जगह है, तो दूसरे के लिए भी हो सकती है। मैंने कहा कि मैं हर शाम उससे नहीं मिल सकती, क्योंकि मेरे माता-पिता को यह बात सही नहीं लगती, लेकिन उसका कहना था कि मुझे उससे परेशान नहीं होना चाहिए। मैंने उसे कहा कि मैं किसी शनिवार की शाम आऊँगी और उससे यह भी कहा कि क्या वह मुझे बताएगा कि चाँद को कब देखा जा सकता है।

'बिलकुल,' उसने कहा। 'हम नीचे जाकर वहाँ से चाँद देख सकते हैं।' मैं राज़ी हो गई; मुझे चोरों से डर नहीं लगता।

इस बीच मेरी ख़ुशी पर एक छाया पड़ गई है। काफ़ी लंबे समय तक मुझे लगता था कि मारगोट पीटर को पसंद करती है। कितना, मैं नहीं जानती, लेकिन पूरी स्थिति ख़ुशनुमा नहीं है। अब हर बार जब भी मैं पीटर से मिलने जाती हूँ, तो न चाहते हुए भी मैं उसे चोट पहुँचाती हूँ। सबसे मज़ेदार बात यह है कि वह ऐसा दिखाती नहीं है। मैं जानती हूँ कि मैं तो काफ़ी जलन महसूस करती, लेकिन मारगोट का कहना है कि मुझे उसके लिए अफ़सोस नहीं होना चाहिए।

'मेरे ख़याल से यह बहुत बुरा है कि तुम अकेली पड़ गई हो,' मैंने कहा।

'मुझे आदत पड़ गई है,' उसने थोड़ी कड़वाहट से जवाब दिया।

मैं पीटर को नहीं बता सकती। शायद बाद में बताऊँ, लेकिन उसे और मुझे अभी कई चीज़ों पर बात करनी है।

कल रात मुझे माँ ने चेतावनी भरी थपकी दी, जो मुझे दी जानी चाहिए थी। मुझे उनके प्रति अपनी उदासीनता और नफ़रत को बहुत दूर नहीं ले जाना चाहिए। सब चीज़ों के बावजूद मुझे फिर से दोस्ताना बनने की कोशिश करनी चाहिए और अपनी टिप्पणियों को अपने तक ही रखना चाहिए!

पिम भी उतने अच्छे नहीं रहे, जितने कि पहले थे। वे कोशिश करते रहे हैं कि मेरे साथ बच्चे की तरह बर्ताव न करें, लेकिन अब वे बहुत भावनारहित लगते हैं। अब देखना है कि इसका क्या नतीजा होता है! उन्होंने मुझे चेतावनी दी है कि अगर मैं अपना बीजगणित नहीं करती, तो मुझे युद्ध के बाद अतिरिक्त ट्यूशन नहीं मिलेगी। मैं बस, इंतज़ार करूँगी कि क्या होता है, लेकिन मैं फिर से शुरु करना चाहूँगी, बशर्ते मुझे नई किताब मिलें।

अभी के लिए इतना ही। मैं पीटर को निहारने के सिवा कुछ और नहीं करती और मैं भर गई हूँ, ऊपर तक!

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

मारगोट की अच्छाई का सबूत। यह मुझे आज 20 मार्च, 1944 को मिला:

ऐन, कल जब मैंने कहा था कि मैं तुसमे नहीं जलती, तो मैं पूरी तरह ईमानदार नहीं थी। हालत इस तरह है: मैं तुमसे या पीटर से ईर्ष्या नहीं करती। मुझे बस अफ़सोस है कि मुझे ऐसा

कोई नहीं मिला, जिसके साथ मैं अपने विचार, अपनी भावनाएँ बाँट सकूँ और भविष्य में भी इसकी संभावना नहीं है। इसी वजह से मैं अपने दिल की गहराइयों से कामना करती हूँ कि तुम दोनों एक-दूसरे पर विश्वास कर सको। तुम पहले ही कितना कुछ नहीं कर पा रहे हो, जिसकी अहमियत लोग नहीं समझ पाते।

दूसरी ओर, यह बात पक्की है कि मैं पीटर के साथ इतनी दूर तक नहीं जा सकती थी, क्योंकि किसी के साथ अपने विचार साझा करने से पहले मेरे लिए ज़रूरी है कि मैं उसके साथ नज़दीकी महसूस करूँ। मैं ऐसा एहसास चाहती हूँ कि मेरे एक शब्द बोले बिना भी वह मुझे पूरी तरह समझ जाए। इस वजह से उस इंसान को ऐसा होना चाहिए, जो बौद्धिक रूप से मुझसे श्रेष्ठतर हो और पीटर के मामले में ऐसा नहीं है। मैं उसके प्रति तुम्हारी भावनाओं को समझ सकती हूँ।

इसलिए तुम्हें ख़ुद को कोसने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि तुम्हें लगता है कि तुम ऐसा कुछ ले रही हो, जो मेरा था; जबकि यह बात सच से कोसों दूर है। तुम्हें व पीटर को इस दोस्ती से फ़ायदा होगा।

मेरा जवाब:

प्रिय मारगोट,

तुम्हारी चिट्ठी बहुत उदारता भरी थी, लेकिन फिर भी इस स्थिति को लेकर मैं पूरी तरह ख़ुशी महसूस नहीं करती और मुझे नहीं लगता कि मैं कभी ऐसा कर पाऊँगी।

फ़िलहाल पीटर और मैं एक-दूसरे पर उतना भरोसा नहीं करते, जितना कि तुम्हें लगता है। बात बस यही है कि जब आप शाम के वक़्त खुली खिड़की के सामने खड़े हों, तो आप एक-दूसरे से ज़्यादा कुछ कह सकते हैं, जबकि चमकती धूप में शायद न कह पाएँ। अपने एहसास को छत पर खड़े होकर चिल्लाने के मुक़ाबले फुसफुसाकर कहना कहीं ज़्यादा आसान होता है। मुझे लगता है कि तुम्हारे मन में पीटर के प्रति बहन के जैसा स्नेह पनपने लगा है और तुम भी उसकी वैसे ही मदद करना चाहती हो, जैसे कि मैं करना चाहूँगी। शायद किसी दिन तुम ऐसा कर पाओ, हालाँकि हमारे मन में उस तरह के विश्वास की बात नहीं है। मेरा विश्वास है कि भरोसा दोनों तरफ़ से आता है। मेरा यह भी ख़याल है कि यही कारण है कि पापा और मैं कभी बहुत क़रीब नहीं आ पाए। लेकिन अब इसके बारे में और बात नहीं करते। अगर अब भी तुम कोई चर्चा करना चाहती हो, तो मुझे लिखना, क्योंकि मेरे लिए अपने मन की बात काग़ज़ पर कहना बोलने के मुक़ाबले ज़्यादा आसान है। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना सराहती हूँ और सिर्फ़ उम्मीद कर सकती हूँ कि कुछ तुम्हारी व कुछ पापा की अच्छाई मुझ पर भी आ जाए, उस मायने में तुम दोनों काफ़ी कुछ एक से हो।

तुम्हारी, ऐन

बुधवार, 22 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

मुझे कल रात मारगोट का यह पत्र मिला:

प्रिय ऐन,

कल की तुम्हारी चिट्ठी पढ़ने के बाद मेरे मन में यह अप्रिय भावना है कि जब कभी तुम पीटर से काम के लिए या फिर बातचीत के लिए मिलती हो, तो तुम्हारी अंतरात्मा तुम्हें परेशान करती है; जबकि उसका कोई वास्तविक कारण नहीं है। अपने दिल में मैं जानती हूँ कि कोई है, जो मेरे विश्वास के लायक़ है (और जैसे मैं उसके) और उस जगह पर मैं पीटर को बर्दाश्त नहीं कर सकती।

लेकिन जैसा कि तुमने लिखा, मैं पीटर को भाई जैसा मानती हूँ... छोटे भाई जैसा; हम एक-दूसरे को अपने एहसास का अंदाज़ा देते रहे हैं और आने वाले समय में भाई-बहन का स्नेह विकसित हो सकता है या नहीं भी, लेकिन अब तक यह उस चरण तक नहीं पहुँचा है। इसलिए तुम्हें मेरे लिए अफ़सोस करने की ज़रूरत नहीं है। अब जबकि तुम्हें साथ मिल गया है, तुम जितना हो सके उसका आनंद लो।

इस बीच, यहाँ हालात अच्छे होते जा रहे हैं। मुझे लगता है किटी कि अनेक्स में शायद सच्चा प्यार परवान चढ़ रहा है। यहाँ लंबे समय तक रहने की स्थिति में पीटर से शादी करने के चुटकुले शायद उतने मूर्खतापूर्ण भी नहीं थे। ऐसा नहीं है कि मैं उससे शादी करने की सोच रही हूँ। मैं यह तक नहीं जानती कि बड़ा होने पर वह कैसा इंसान बनेगा। या फिर हमें एक-दूसरे से इतना प्यार होगा कि हम शादी कर लें।

अब मुझे निस्संदेह लगता है कि पीटर भी मुझसे प्यार करता है; मैं बस नहीं जानती कि किस तरह से। मैं नहीं जान पा रही हूँ कि उसे सिर्फ़ अच्छे दोस्त की ज़रूरत है या फिर वह मेरी तरफ़ एक लड़की या बहन के तौर पर आकर्षित है। जब उसने मुझसे कहा कि उसके माता-पिता के लड़ने पर मैंने हमेशा उसकी मदद की है, तो मैं बहुत ख़ुश हुई; वह उसकी दोस्ती की तरफ़ मेरे भरोसे का पहला क़दम था। कल मैंने उससे पूछा कि अगर दर्जनों ऐन उसे मिलने के लिए आती रहीं, तो वह क्या करेगा। उसका जवाब था: 'अगर वे तुम्हारी तरह हों, तो कोई बात नहीं।' वह बहुत ध्यान रखने वाला है और मुझे लगता है कि उसे मुझसे मिलना पसंद है। इस बीच वह फ्रेंच सीखने में कड़ी मेहनत कर रहा है और रात सवा दस बजे तक बिस्तर पर भी पढ़ता रहता है।

जब भी मैं शनिवार रात के, अपने शब्दों, अपनी आवाज़ों बारे में सोचती हूँ, तो मैं पहली बार अपने आपको ख़ुद से ही संतुष्ट पाती हूँ; मेरा मतलब है कि मैं अब भी वही कहूँगी और कुछ

भी बदलना नहीं चाहूँगी, जैसा कि अक्सर मैं करती हूँ। वह बहुत ख़ूबसूरत है, चाहे वह मुस्करा रहा हो या फिर ऐसे ही बैठा हो। वह बहुत प्यारा, अच्छा व सुंदर है। मेरे ख़याल से वह तब सबसे ज़्यादा हैरान हुआ, जब उसे पता चला कि मैं बिलकुल भी बनावटी, दुनियावी ऐन नहीं हूँ, जैसी कि दिखती हूँ, बल्कि उसकी तरह ही सपने देखने वाली और उतनी ही परेशानियों से घिरी हुई हूँ!

कल रात बर्तन धोने के बाद मैं इंतज़ार करने लगी कि वह मुझे ऊपर आने के लिए कहेगा। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ; मैं चली गई। वह नीचे दुसे को यह कहने आया कि रेडियो सुनने का समय है और थोड़ी देर गुसलख़ाने के आसपास मँडराया, लेकिन जब दुसे ने ज़्यादा वक़्त लगाया, तो वह वापस ऊपर चला गया। उसने अपने कमरे में चहलकदमी की और जल्दी सोने चला गया।

मैं पूरी शाम इतनी बेचैन रही कि अपने चेहरे पर ठंडा पानी डालने के लिए गुसलख़ाने जाती रही। मैंने थोड़ा पढ़ा, दिन में थोड़े और सपने देखे, घड़ी की तरफ़ देखा और इंतज़ार, बस इंतज़ार करती रही और उसके क़दमों की आवाज़ सुनती रही। मैं थककर जल्दी सोने चली गई।

आज रात मुझे नहाना है, कल का क्या? कल अभी बहुत दूर है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मेरा जवाब:

प्यारी मारगोट,

मेरे ख़याल से सबसे अच्छा यही रहेगा कि हम इंतज़ार करें। कुछ समय बाद मुझे और पीटर को यह फ़ैसला करना होगा कि हम जिस तरह थे, वैसे ही रहें या फिर कुछ और होगा। मैं नहीं जानती कि क्या होगा; मैं बहुत दूर तक नहीं देख सकती।

लेकिन एक बात को लेकर मैं निश्चित हूँ: अगर पीटर और मैं दोस्त बने, तो मैं उसे बताऊँगी कि तुम भी उसे पसंद करती हो और अगर उसे ज़रूरत हो, तो उसकी मदद करने के लिए तैयार हो। मैं जानती हूँ कि तुम ऐसा नहीं चाहोगी, लेकिन मुझे परवाह नहीं है; मुझे नहीं पता कि पीटर तुम्हारे बारे में क्या सोचता है, लेकिन वक़्त आने पर मैं उससे पूछूँगी। इसमें कुछ भी बुरा नहीं, बल्कि उसके उलट है!

तुम चाहो तो हमारे साथ अटारी पर या हम जहाँ भी हों, आ सकती हो। तुम हमें परेशान नहीं करोगी, क्योंकि हमारे बीच एक अनकहा समझौता है कि हम शाम को अँधेरे में ही बात करते हैं।

अपना उत्साह बनाए रखो! मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश कर रही हूँ, हालाँकि यह आसान नहीं है। जल्दी ही तुम्हारा समय भी आएगा।

तुम्हारी, ऐन

बृहस्पतिवार, 23 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

हालात यहाँ कमोबेश सामान्य होने लगे हैं। शुक्र है कि हमारे लिए कूपन लाने वाले लोग जेल से छूट गए हैं!

मेप भी कल काम पर वापस आ गई हैं, लेकिन आज बिस्तर पर पड़ने की बारी उनके पति की है - कँपकँपी, बुख़ार, उनमें फ़्लू के सामान्य लक्षण हैं। बेप बेहतर हैं, हालाँकि उन्हें अब भी खाँसी है और मि. कुगलर को अभी काफ़ी लंबे समय तक घर पर रहना होगा।

कल नज़दीक ही एक विमान टकराकर गिर गया। चालक दल के लोग समय पर पैराशूट से उतर गए। वह स्कूल के ऊपर टकराया, लेकिन ख़ुशक़िस्मती से अंदर बच्चे नहीं थे। थोड़ी आग लगी थी और कुछ लोग मारे गए। जैसे ही लोग पैराशूट से उतरे, जर्मनों ने उन पर गोलियाँ चला दी। ऐसी कायरतापूर्ण हरकत पर ऐम्स्टर्डम काफ़ी रोष में था। हम महिलाएँ भी काफ़ी डर गई थीं। मुझे गोलियों की आवाज़ से नफ़रत है।

अब कुछ मेरे बारे में।

कल मैं पीटर के साथ थी और ईमानदारी से कहूँ तो पता नहीं कैसे हम लोग सेक्स पर बात करने लगे। मैंने काफ़ी पहले उससे कुछ चीज़ें पूछने के बारे में सोचा था। वह सब कुछ जानता है; जब मैंने उसे बताया कि मैं व मारगोट उतनी अच्छी तरह नहीं जानते, तो उसे हँसी आ गई।

मैंने उसे मारगोट व अपने और मम्मी-पापा के बारे में काफ़ी कुछ बताया और कहा कि मैं उनसे पूछने की हिम्मत नहीं कर सकती। उसने मुझे समझाने की पेशकश की और मैंने उसे कृतज्ञता से स्वीकार कर लिया: उसने मुझे बताया कि गर्भनिरोधक कैसे काम करते हैं और मैंने बहुत बेधड़क होकर उससे पूछा कि लड़के कैसे जानते हैं कि वे बड़े हो चुके हैं। उस पर उसे सोचना पड़ा; उसने कहा कि वह मुझे आज रात बताएगा। मैंने उसे यैक के साथ जो कुछ हुआ, उसके बारे में बताया और कहा कि मज़बूत लड़कों के सामने लड़कियाँ असहाय हो जाती हैं। 'तुम्हें मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं है,' उसने कहा।

जब मैं उस शाम वापस गई, तो उसने मुझे लड़कों के बारे में बताया। थोड़ी झेंप हुई, लेकिन फिर भी उसके साथ वह सब बात करना बहुत अच्छा था। न उसने और न मैंने ही कभी यह कल्पना की थी कि हम इतने खुले तौर पर किसी लड़की या लड़के से इतने अंतरंग विषयों पर इस तरह बातचीत कर पाएँगे। मुझे लगता है कि अब मुझे सब कुछ पता है। उसने मुझे गर्भनिरोधकों के बारे में काफ़ी कुछ बताया।

उस रात गुसलख़ाने में मैं व मारगोट ने उसकी दो दोस्तों ब्रैम और ट्रीज़ के बारे में बात कर रहे थे।

आज सुबह एक अप्रिय बात हुई: नाश्ते के बाद पीटर ने मुझे इशारे से ऊपर बुलाया। 'तुमने मेरे साथ एक गंदी चाल चली,' उसने कहा। 'मैंने सुना, कल रात गुसलख़ाने में तुम व मारगोट बात कर रहे थे। मेरे ख़याल से बस तुम जानना चाहती थी कि पीटर को कितनी जानकारी है और फिर मेरी हँसी उड़ाना चाहती थी!'

मैं हैरान रह गई! मैंने सब कुछ किया, ताकि उसे उस अजीब से ख़याल से बाहर निकाल सकूँ; मैं समझ सकती थी कि उसे कैसा लगा होगा, लेकिन वह सच नहीं था!

'अरे नहीं, पीटर,' मैंने कहा। 'मैं इतनी घटिया नहीं हो सकती। मैंने तुम्हें कहा था कि मैं किसी को नहीं बताऊँगी और मैंने ऐसा नहीं किया। उस तरह की हरकत जानबूझकर करना बहुत नीचता भरी बात है... नहीं, पीटर, मज़ाक से मेरा मतलब वह बिलकुल नहीं है। यह ठीक नहीं है। ईमानदारी से कहूँ तो मैंने कुछ भी नहीं कहा। क्या तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे?'

उसने आश्वासन दिया कि वह करेगा, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे फिर से कभी उस पर बात करनी होगी। मैंने दिन भर कुछ नहीं किया, बस उसकी ही फ़िक्र करती रही। शुक्र है कि उसने सब कुछ साफ़-साफ़ बता दिया। अगर वह मेरे बारे में वैसा सोचता रहता, तो कितना बुरा होता। वह बहुत प्यारा है!

अब मुझे उसे सब कुछ बताना होगा!

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 24 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

मैं आजकल अक्सर रात के खाने के बाद ताज़ा हवा लेने के लिए पीटर के कमरे में जाती हूँ। सूरज की रोशनी के मुकाबले अँधेरे में आप तुरंत सार्थक बातचीत कर सकते हैं। उसके बग़ल में कुर्सी पर बैठकर बाहर देखना सुखद व आरामदेह लगता है। मैं जब कभी उसके कमरे में जाती हूँ, तो फ़ॉन डान दंपति और दुसे बहुत मूर्खतापूर्ण टिप्पणियाँ करते हैं। वे कहते हैं, 'ऐन का दूसरा घर,' या फिर 'क्या किसी भद्रजन के लिए यह उचित है कि वह रात को अँधेरे में लड़कियों को अपने कमरे में आने दे?' इस तथाकथित हाज़िरजवाबी के उत्तर में पीटर के पास ग़ज़ब का दिमाग़ है। वैसे मेरी माँ भी बेताबी से भरी हैं और यह जानने के लिए मरी जा रही हैं कि हम बात क्या करते हैं, बस चुपके से उनके मन में यह डर भी है कि मैं जवाब देने से इनकार कर दूँगी। पीटर कहता है कि बड़े लोग जलते हैं, क्योंकि हम छोटे हैं और हमें उनकी बेकार की टिप्पणियों को दिल पर नहीं लेना चाहिए।

कई बार वह मुझे लेने के लिए नीचे आता है, लेकिन वह भी अजीब लगता है, क्योंकि उसकी सभी सावधानियों के बावजूद उसका चेहरा लाल हो जाता है और उसके मुँह से मुश्किल

से ही शब्द निकल पाते हैं। मुझे ख़ुशी है कि मैं शर्माती नहीं; वह बहुत बुरा होता होगा।

इसके अलावा मुझे यह भी बुरा लगता है कि मारगोट नीचे बिलकुल अकेली होती है, जबकि मैं पीटर के साथ होती हूँ। लेकिन मैं इस बारे में कर क्या सकती हूँ? उसके आने से मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, लेकिन वह चुपचाप बैठी रहेगी और उसे अलग-थलग लगेगा।

मुझे हमारी अचानक हुई दोस्ती पर अनगिनत टिप्पणियाँ सुनने को मिलती रहती हैं। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि कितनी ही बार खाना खाते समय यह बात होती है कि अगर लड़ाई अगले पाँच साल और चली तो अनेक्स में शादी हो सकती है। क्या हम माता-पिता की इस तरह की बातचीत पर गौर करते हैं? बहुत कम, क्योंकि यह सब बहुत बेवकूफ़ाना है। क्या मेरे माता-पिता भूल गए हैं कि वे भी कभी छोटे थे? शायद वे भूल चुके हैं। कुछ भी हो, हमारे गंभीर होने पर वे हम पर हँसते हैं और हम जब मज़ाक करते हैं, तो वे संजीदा हो जाते हैं।

मैं नहीं जानती कि आगे क्या होगा या फिर हमारे पास कहने के लिए बातें नहीं रहेंगी। लेकिन अगर इसी तरह चलता रहा तो अंततः हम बिना बात किए भी साथ हो सकते हैं। बस, उसके माता-पिता अजीब ढंग से बर्ताव करना छोड़ दें तो। शायद इसका कारण यह है कि उन्हें मुझे अक्सर देखना पसंद नहीं है; पीटर और मैं उन्हें नहीं बताते कि हम किस बारे में बात करते हैं। अगर उन्हें पता चल जाए कि हम कितनी निजी बातें करते हैं, तो क्या होगा।

मैं पीटर से पूछना चाहूँगी कि क्या वह जानता है कि लड़कियाँ नीचे से कैसे दिखती हैं। मुझे नहीं लगता कि लड़के, लड़कियों जितने जटिल होते हैं। तुम आसानी से तसवीरों या फिर पुरुषों के नग्न चित्रों में देख सकते हो कि लड़के कैसे दिखते हैं, लेकिन महिलाओं के मामले में यह काफ़ी अलग होता है। महिलाओं में जननांग या उन्हें जो कुछ भी कहा जाता है, वे उनकी टाँगों के बीच छिपे होते हैं। पीटर ने शायद कभी किसी लड़की को इतनी नज़दीकी से नहीं देखा होगा। सच बताऊँ तो मैंने भी नहीं देखा। लड़कों के मामले में यह काफ़ी आसान है। लेकिन लड़कियों के अंगों के बारे में बता पाना काफ़ी मुश्किल है। उसने कहा कि वह नहीं जानता कि यह सब एक साथ कैसे फ़िट होता है। वह गर्भाशय ग्रीवा की बात कर रहा था, लेकिन वह तो अंदर होती है, जहाँ उसे देखा नहीं जा सकता। हम औरतों में सब कुछ अच्छी तरह व्यवस्थित होता है। ग्यारह या बारह साल की उम्र तक मैं नहीं जानती थी कि अंदर भी योनि की मुड़ी हुई त्वचा का एक और हिस्सा यानी भगोष्ठ का दूसरा हिस्सा भी होता है, क्योंकि वह दिखाई नहीं देता। इससे भी ज्यादा मज़ेदार यह है कि मैं सोचती थी कि पेशाब क्लाइटॉरिस या भग-शिश्न से निकलती है। एक बार मैंने माँ से पूछा था कि वह उठी हुई चीज़ क्या है, तो उन्होंने जवाब दिया कि वे नहीं जानतीं। यदि वे चाहें तो एकदम मूर्ख होने का दिखावा कर सकती हैं!

अब विषय पर वापस लौटते हैं। किसी मॉडल के बिना आप अंदरूनी जानकारी कैसे दे सकते हैं?

क्या मैं कोशिश करूँ? ठीक है, तो यह इस तरह होता है!

जब आप खड़े होते हैं, तो बाहर से आप सामने के बाल देख सकते हैं। टाँगों के बीच में दो कोमल गुदगुदी चीज़ें होती हैं, जिन पर बाल होते हैं और खड़े होने पर जो आपस में दबती हैं, इसलिए आप अंदर नहीं देख सकते। बैठे रहने की स्थिति में वे अलग होती हैं और अंदर से वे बहुत लाल और मांसल होती हैं। ऊपर के हिस्से में, बाहरी भगोष्ठ में त्वचा की एक परत होती है, वह किसी छाले की तरह दिखती है। वह भग-शिश्न है। फिर अंदरूनी भगोष्ठ है, जो मिलकर एक सिलवट बनाता है। जब वे खुलते हैं, तो आप छोटे से मांसल उभार को देख सकते हैं, जो कि मेरे अँगूठे के ऊपरी हिस्से से बड़ा नहीं होता। ऊपरी हिस्से में थोड़े छेद होते हैं, वहीं से मूत्र बाहर आता है। नीचे वाला हिस्सा लगता है कि जैसे सिर्फ़ त्वचा हो, लेकिन वहीं पर योनि होती है। उसका पता मुश्किल से लगाया जा सकता है, क्योंकि त्वचा की परतें उसके छेद को छिपा देती हैं। वह इतना छोटा होता है कि मेरे लिए कल्पना करना मुश्किल है कि कोई आदमी उसमें कैसे प्रवेश कर सकता है, इससे भी कम यह कि शिशु कैसे बाहर आ सकता है। उसमें अपनी तर्जनी डालना तक मुश्किल होता है। बस यही सब है, फिर भी यह कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 25 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

हम तब तक नहीं समझ पाते कि हम कितना बदले हैं, जब तक वैसा होता नहीं है। मैं काफ़ी ज़बरदस्त रूप से बदल चुकी हूँ, मुझसे जुड़ा सब कुछ अब अलग है: मेरी राय, मेरे विचार, आलोचनात्मक दृष्टिकोण। अंदर से, बाहर से अब कुछ भी पहले जैसा नहीं रहा। मैं आराम से कह सकती हूँ, क्योंकि यह सच भी है कि मैं बेहतर के लिए बदली हूँ। मैंने एक बार तुम्हें बताया था कि कई साल तक लाड़-प्यार में रहने के बाद मेरे लिए बड़े लोगों व डाँट-फटकार की कठोर सच्चाइयों के बीच तालमेल बिठना मुश्किल था। मुझे इतना जो कुछ झेलना पड़ा, उसके लिए बड़े पैमाने पर मम्मी-पापा ज़िम्मेदार हैं। घर पर वे चाहते थे कि मैं जीवन का आनंद लूँ, जो कि ठीक था, लेकिन यहाँ पर उन्हें मुझे उनके साथ सहमत होने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए था और सभी झगड़ों व बेकार की बातचीत में सिर्फ़ मुझे 'उनका अपना' पक्ष नहीं दिखाना चाहिए था। मैं काफ़ी देर बाद यह बात समझी कि दोनों ही पक्ष ज़िम्मेदार थे। मैं अब जानती हूँ कि यहाँ बड़ों व बच्चों द्वारा काफ़ी भयंकर ग़लतियाँ हुई हैं। फ़ॉन डान परिवार के मामले में मम्मी-पापा की सबसे बड़ी ग़लती यह है कि वे उनके साथ कभी खुलकर पेश नहीं आए व दोस्ताना नहीं रहे (यह मानना पड़ेगा कि दोस्ती भरे रवैये का दिखावा भी करना पड़ता है)। सबसे बड़ी बात यह है कि मैं चाहती हूँ कि शांति बनी रहे और झगड़ा व बेकार की बात न

हो। पापा व मारगोट के साथ वह मुश्किल नहीं है, लेकिन माँ के साथ है, इसलिए मुझे ख़ुशी है कि कभी-कभार वे मुझे फटकार लगा देती हैं।

मि. फ़ॉन डान को अपनी तरफ़ करने के लिए बस आपको उनकी हाँ में हाँ मिलानी होती है, उनकी बात चुपचाप सुननी होती है, ज़्यादा कुछ नहीं कहना होता और सबसे बड़ी बात यह कि... उनके घटिया से चुटकुलों के जवाब में अपना कोई चुटकुला सुना देना होता है। मिसेज़ फ़ॉन डी का दिल जीतने के लिए उनसे खुलकर बात करनी होती है और अपनी ग़लती को मान लेना होता हे। वे भी खुलकर अपनी ग़लतियाँ क़बूल कर लेती हैं, जो कि उनमें भरी पड़ी हैं। मैं अब यह अच्छी तरह जान चुकी हूँ कि वह मुझे अब उतना बुरा नहीं समझती, जितना कि पहले समझा करती थीं।

इसका सीधा सा कारण यह है कि मैं ईमानदार हूँ और मुझे जो सही लगता है, उसे लोगों के मुँह पर कह देती हूँ, अब चाहे वह बात बुरी ही क्यों न हो। मैं ईमानदार रहना चाहती हूँ; मेरे ख़याल से इससे आप दूर तक जा सकते हैं और आपको अपने बारे में बेहतर महसूस होता है।

कल मिसेज़ फ़ॉन डी उस चावल की बात कर रही थी, जो हमने मि. क्लेमन को दिए थे। 'हम बस देते रहते हैं। लेकिन कभी मैं सोचती हूँ कि बस, अब बहुत हो गया। थोड़ी ज़हमत उठाते, तो मि. क्लेमन को अपने चावल मिल जाते। हम उन्हें अपना सामान क्यों दें? हमें भी उसकी उतनी ही ज़रूरत है।'

'नहीं, मिसेज़ फ़ॉन डान,' मैंने कहा। 'मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। हो सकता है कि मि. क्लेमन को थोड़ा चावल मिल जाए, लेकिन उन्हें उसकी चिंता करना पसंद नहीं। यहाँ पर हमें अपने मददगार लोगों की आलोचना नहीं करनी चाहिए। अगर मुमकिन हो, तो जैसे भी हो हमें उनकी मदद करनी चाहिए। हफ़्ते में एक प्लेट कम चावल से उतना फ़र्क़ नहीं पड़ेगा; हम उसके बजाय बीन्स खा सकते हैं।'

मिसेज़ फ़ॉन डी मेरे नज़रिये को नहीं समझ पाई, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि असहमत होने के बावजूद वे अपनी बात से पीछे हटने को तैयार हैं और वह बिलकुल अलग मामला था।

मैंने काफ़ी कुछ कह दिया। कई बार मैं अपनी स्थिति जानती हूँ और कई बार मुझे संदेह होते हैं, लेकिन आख़िरकार मैं अपने मुकाम तक पहुँच जाऊँगी! ख़ासकर अब जब मेरे पास कोई मदद करने वाला है, क्योंकि उतार-चढ़ाव में पीटर मेरी मदद करता है।

मैं सचमुच नहीं जानती कि वह मुझे कितना प्यार करता है और हम किसी चुंबन तक भी पहुँच सकेंगे या नहीं; ख़ैर मैं इस मामले पर ज़ोर नहीं देना चाहती। मैंने पापा से कहा कि मैं अक्सर पीटर से मिलने जाती हूँ और उनसे उनकी मंज़ूरी के बारे में पूछा और उन्होंने स्वीकृति दी!

अब पीटर को वे बातें बताना ज़्यादा आसान है, जो मैं आमतौर पर ख़ुद तक ही रखती थी; उदाहरण के लिए, मैंने उसे बताया कि बाद में मैं लिखना चाहती हूँ और अगर मैं लेखक नहीं बन सकी, तो अपने काम के साथ-साथ लिखना ज़रूर चाहूँगी।

पैसे या दुनियावी चीज़ों के मामले में मेरे पास कुछ ख़ास नहीं है, मैं सुंदर, बुद्धमान या चतुर नहीं हूँ, लेकिन मैं ख़ुश हूँ और ऐसे ही रहना चाहती हूँ! मैं ख़ुश पैदा हुई थी, मुझे लोगों से प्यार है, मैं लोगों पर भरोसा करती हूँ और चाहती हूँ कि बाक़ी लोग भी ख़ुश रहें।

तुम्हारी निष्ठावान दोस्त, ऐन एम फ्रैंक

साफ़ चमकीला दिन भी अगर हो ख़ाली
उसकी चमक भी होगी रात जितनी काली।

(मैंने कुछ हफ़्ते पहले यह लिखा था और अब यह सही नहीं है, लेकिन मैंने इसे इसलिए शामिल किया, क्योंकि मेरी कविताएँ काफ़ी कम हैं।)

सोमवार, 27 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

छिपकर रहने की हमारी ज़िंदगी का कम से कम एक लंबा अध्याय राजनीति पर होना चाहिए, लेकिन मैं इस विषय से बचने की कोशिश करती रही हूँ, क्योंकि इसमें मेरी दिलचस्पी बहुत कम है। आज हालाँकि मैं पूरा एक पत्र इसी को समर्पित करूँगी।

इस विषय पर बहुत सी अलग-अलग राय हैं और युद्ध के समय इस पर बातचीत होते सुनना हैरानी की बात नहीं है, लेकिन... राजनीति पर इतनी बहस करना बिलकुल मूर्खता है! वे हँसें, चाहें गालियाँ दें, शर्त लगाएँ, बड़बड़ाएँ और चाहे जो कुछ भी करें, जब तक कि उनकी बातों का असर उन तक ही सीमित रहे। लेकिन उन्हें बहस मत करने दो, क्योंकि उससे हालात बदतर हो जाते हैं। हमारे पास बाहर से आने वाले लोग काफ़ी ख़बरें लेकर आते हैं, जो बाद में झूठी साबित होती हैं; हालाँकि अब तक हमारे रेडियो ने कभी झूठ नहीं बोला है। यान, मीप, मि. क्लेमन, बेप और मि. कुगलर के राजनीतिक मूड ऊपर-नीचे होते रहते हैं, यान के सबसे कम होते हैं।

यहाँ अनेक्स में मनोभाव कभी नहीं बदलते। आक्रमण, हवाई हमलों, भाषणों, आदि, आदि पर होने वाली अंतहीन बहसों में 'नामुमकिन!' 'ईश्वर के लिए', जैसे अनगिनत विस्मयबोधक शब्द कहे जाते हैं। अगर वे तभी शुरुआत कर रहे होते हैं, तो यह कितनी देर चलेगा! यह बढ़िया चल रहा है!

आशावादी व निराशावादी और यथार्थवादियों की बात करें, तो सभी अपनी पूरी ऊर्जा के साथ अपनी राय देते हैं और हर मामले को लेकर वे इतने आश्वस्त होते हैं कि सच पर बस, उनका एकाधिकार है। एक महिला को इस बात से चिढ़ होती है कि उनके पति को ब्रिटिश पर गहरी आस्था है, जबकि एक पति अपनी पत्नी पर इसलिए हमला बोलता है कि वह उसके प्रिय

राष्ट्र पर चिढ़ाने वाली व अपमानजक टिप्पणियाँ करती है!

इस तरह सुबह से देर रात तक यह सिलसिला चलता रहता है; मज़ेदार बात यह है कि वे कभी उससे थकते नहीं है। मैंने एक तरकीब निकाली है और उसका असर ज़बरदस्त है, यह ठीक वैसा ही जैसे कि आप किसी को कोई पिन चुभोकर फिर उसे उछलता देखें। यह इस तरह काम करता है: मैं राजनीति पर बात करने लगती हूँ। केवल एक प्रश्न पूछती हूँ, एक शब्द या फिर एक वाक्य और ज़रा सी देर में तो पूरा परिवार उसमें शामिल हो जाता है!

जर्मन 'वेयरमाट न्यूज़' और अंग्रेज़ी में बीबीसी ही काफ़ी नहीं थे कि अब हवाई हमलों से जुड़ी विशेष उद्घोषणाएँ भी जोड़ दी गई हैं। बहुत बढ़िया है। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि ब्रिटिश वायु सेना तो चौबीसों घंटे काम करती है। जर्मन प्रचार तंत्र की तरह नहीं, जो कि दिन भर बस तेज़ी से झूठ ही फैलाता रहता है!

तो हर सुबह आठ बजे (अगर उससे पहले नहीं) रेडियो शुरु हो जाता है और रात ग्यारह बजे तक हर घंटे सुना जाता है। यह इस बात का सबसे अच्छा सबूत है कि बड़े लोगों में कितना असीमित धैर्य होता है, लेकिन इस बात का भी कि उनके दिमाग़ की लुगदी बन चुकी है (मेरा मतलब है कि उनमें से कुछ की, क्योंकि मैं उनमें से किसी का अपमान नहीं करना चाहती)। दिन भर में एक या फिर ज़्यादा से ज़्यादा दो प्रसारण पूरे दिन के लिए काफ़ी होने चाहिए। लेकिन नहीं, वे बूढ़े बेवकूफ़ ... कोई बात नहीं, मैं पहले ही सब कुछ बोल चुकी हूँ! 'काम के दौरान संगीत,' इंग्लैंड से होने वाला डच प्रसारण, फ्रैंक फिलिप्स या क्वीन विल्हेल्मिना, उन सबको एक उत्सुक श्रोता मिल ही जाता हे। अगर वयस्क खाना नहीं खा रहे होते या फिर सो नहीं रहे होते, तो वे खाने, सोने और राजनीति की चर्चा करते हुए रेडियो के आसपास जमा रहते हैं। उफ़! यह सब बहुत उबाऊ होता जा रहा है और मैं ख़ुद को नीरस बुढ़िया बनने से बचाने के लिए यही सब कर सकती हूँ! अपने आसपास बूढ़े लोगों के होते हुए यह विचार बुरा नहीं है!

हमारे प्रिय विन्स्टन चर्चिल द्वारा दिए गए भाषण का यह बढ़िया उदाहरण है।

रविवार रात, नौ बजे। ढँकी हुई चाय की केतली मेज़ पर रखी है और सभी लोग कमरे में आते हैं। दुसे रेडियो के बाईं ओर बैठते हैं, मि. फ़ॉन डी उसके सामने और पीटर बग़ल में है। मि. फ़ॉन डी के साथ माँ हैं, जबकि मिसेज़ फ़ॉन डी उनके पीछे हैं। मैं और मारगोट आख़िरी कतार में हैं और पिम मेज़ पर हैं। मैं जान रही हूँ कि यह हमारे बैठने की व्यवस्था का बहुत स्पष्ट विवरण नहीं है, लेकिन इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता। पुरुष धूम्रपान करते हैं, सुनने पर ज़ोर लगाने के कारण पीटर की आँखें बंद हैं, मम्मी ने अपना लंबा, गहरे रंग का गाउन पहना है, मिसेज़ फ़ॉन डी विमानों के कारण काँप रही हैं, जिन्हें भाषण से कोई मतलब नहीं है और वे ऐसेन की तरफ़ बढ़ रही हैं। पापा चाय पी रहे हैं, मारगोट और मैं बहनों के स्नेह से जुड़कर सोती हुई मूशी के साथ बैठे हैं, जो हम दोनों के घुटनों पर पसरी है। मारगोट के बालों में कर्लर लगे हैं और मेरी रात की पोशाक बहुत छोटी, कसी हुई है। यह सब बहुत अंतरंग, आरामदेह व शांत दिख रहा है और यह

है भी। फिर भी मैं डरते हुए भाषण के अंत की प्रतीक्षा कर रही हूँ। वे बेसब्र हैं और अगली बहस के लिए तत्पर हैं! ठीक वैसे ही जैसे कि कोई बिल्ली किसी चूहे को उसके बिल से ललचा रही है, वे भी एक-दूसरे को लड़ाइयों व असहमतियों के लिए कोंच रहे हैं।

तुम्हारी, ऐन

मंगलवार, 28 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

मैं चाहे कितना भी राजनीति पर ज़्यादा लिखना चाहूँ, मेरे पास बाक़ी बहुत सी बातें बताने को हैं। पहली यह कि माँ ने मुझे ऊपर पीटर के कमरे में जाने से मना कर दिया है, क्योंकि उनके मुताबिक मिसेज़ फ़ॉन डान जलती हैं। दूसरे, पीटर ने मारगोट को हमारे साथ ऊपर आने का निमंत्रण दिया है। मुझे नहीं पता कि वह सचमुच ऐसा चाहता है या फिर सिर्फ़ विनम्रता के कारण ऐसा कर रहा है। तीसरे, मैंने पापा से पूछा है कि क्या मुझे मिसेज़ फ़ॉन डान की ईर्ष्या पर ध्यान देना चाहिए और उनका कहना है कि नहीं देना चाहिए।

अब मैं क्या करूँ? माँ नाराज़ हैं, वे नहीं चाहती कि मैं ऊपर जाऊँ और वे चाहती हैं कि मैं दुसे के साथ साझा किए जाने वाले अपने कमरे में जाकर अपना काम करूँ। हो सकता है कि ख़ुद उन्हें ही जलन हो रही हो। पापा को तो उन कुछ घंटो से फ़र्क़ नहीं पड़ता और उन्हें लगता है कि यह अच्छी बात है कि हमारे बीच पट रही है। मारगोट को भी पीटर पसंद है, लेकिन उसे लगता है कि तीन लोग एक सी बातों पर वैसे बात नहीं कर सकते, जैसे कि दो लोग कर सकते हैं।

इसके अलावा माँ को लगता है कि पीटर को मुझसे प्यार है। सच बताऊँ, तो काश ऐसा कुछ होता! फिर हम बराबरी पर होते और एक-दूसरे को जानना कहीं ज़्यादा आसान होता। माँ का दावा है कि वह हमेशा मुझे देखता रहता है। हाँ, हम एक-दूसरे को कभी-कभार देखते हैं। लेकिन अगर वह मेरे गाल के गड्ढों को पसंद करता है, तो मैं क्या कर सकती हूँ?

मैं मुश्किल हालत में हूँ। माँ मेरे ख़िलाफ़ हैं और मैं उनके। मेरी और माँ की ख़ामोश लड़ाई के प्रति पापा अनजान बने रहते हैं। माँ दुखी हैं, क्योंकि अब भी वे मुझे प्यार करती हैं, लेकिन मैं बिलकुल भी दुखी नहीं हूँ, क्योंकि वे मेरे लिए अब कोई मायने नहीं रखती।

जहाँ तक पीटर का सवाल है... मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती। वह बहुत प्यारा है और मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। उसके व मेरे बीच वाक़ई ख़ूबसूरत रिश्ता हो सकता है, तो फिर ये बूढ़े लोग हमारे मामले में फिर से टाँग क्यों अड़ा रहे हैं? ख़ुशक़िस्मती से मुझे अपनी भावनाएँ छिपाने की आदत है, इसलिए मैं उसके प्रति अपनी दीवानगी छिपाने में कामयाब रहती हूँ। क्या वह कभी कुछ कहेगा? क्या मैं फिर से उसके गाल को अपने गाल पर महसूस कर सकूँगी, जैसा

कि पीटल के गाल को मैंने अपने सपने में महसूस किया था? ओह, पीटर व पीटल, तुम एक ही हो! वे हमें नहीं समझते; वे कभी नहीं समझेंगे कि हम बिना एक शब्द बोले एक-दूसरे के साथ बैठकर ही संतुष्ट हैं। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं कि क्या हमें एक साथ खींचता है? क्या हम कभी इन मुश्किलों से पार पाएँगे? फिर भी अच्छी बात है कि हमें उन पर जीत पानी होगी, तभी नतीजा ज़्यादा ख़ूबसूरत हो सकेगा। अपने बाजुओं पर सिर रखकर जब वह अपनी आँखें बंद करता है, तो वह बच्चा है; जब वह मूशी के साथ खेलता है या फिर उसके बारे में बात करता है, तो वह स्नेहिल है; जब वह आलू या फिर कोई और भारी चीज़ उठाता है, तो वह मज़बूत है; जब वह गोलीबारी देखने जाता है या चोरों की तलाश में अँधेरे घर में चलता है, तो वह बहादुर है; जब वह अटपटा व ढीला-ढाला लगता है, तो वह बहुत-बहुत प्यारा लगता है। उसके द्वारा मुझे कुछ बताया जाना, उसे मेरे द्वारा कुछ सिखाए जाने से कहीं अच्छा लगता है। अच्छा होता कि वह लगभग हर चीज़ में मुझसे बेहतर होता!

हमें अपनी माँओं की क्या परवाह? काश, वह कुछ कहता!

पापा हमेशा कहते हैं कि मैं घमंडी हूँ, जबकि मैं हूँ नहीं। मैं बस निरर्थक हूँ! एक लड़के के सिवा जिसने मुझे कहा था कि मुस्कराने पर मैं प्यारी लगती हूँ, मुझे सुंदर कहने वाले लोगों की तादाद ज़्यादा नहीं है। कल पीटर ने मेरी सच्ची तारीफ़ की थी और चलो मज़े के लिए मैं तुम्हें अपनी बातचीत का थोड़ा ब्योरा देती हूँ। पीटर अक्सर कहता है, 'मुस्कराओ!' मुझे यह अजीब लगता था, इसलिए मैंने कल उससे पूछा, 'तुम मुझे हमेशा मुस्कराने को क्यों कहते हो?'

'क्योंकि मुस्कराने पर तुम्हारे गालों पर गड्ढे पड़ते हैं। तुम वैसा कैसे कर लेती हो?'

'ये जन्म से ही हैं। मेरी ठोढ़ी पर भी एक है। मेरे पास सुंदरता की यही एक निशानी है।'

'नहीं, यह सच नहीं है!'

'यही सच है। मैं जानती हूँ कि मैं ख़ूबसूरत नहीं हूँ। मैं कभी नहीं रही और कभी नहीं रहूँगी!'

'मैं नहीं मानता। मुझे लगता है कि तुम प्यारी हो।'

'मैं नहीं हूँ।'

'मैं कह रहा हूँ कि तुम हो और तुम्हें मेरी बात माननी होगी।'

ज़ाहिर है कि मैंने भी फिर उसके बारे में वही कहा।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 29 मार्च, 1944

प्यारी किटी,

लंदन से होने वाले डच प्रसारण में मंत्री मि. बोल्कस्टाइन ने कहा कि युद्ध के बाद उससे जुड़ी

डायरियों व पत्रों का एक संग्रह तैयार किया जाएगा। सब मेरी डायरी पर टूट पड़ेंगे। ज़रा कल्पना करो कि कितना मज़ा आए अगर मुझे सीक्रेट अनेक्स पर कोई उपन्यास छापना हो। उसके शीर्षक से ही लोगों को लगेगा कि यह कोई जासूसी कहानी है।

गंभीरता से देखें तो युद्ध के दस साल बाद लोगों को यह पढ़ना दिलचस्प लगेगा कि छिपे रहने के दौरान हम यहूदी कैसे रहते थे, क्या खाते थे और किन विषयों पर बात करते थे। तुम्हें मैं अपनी ज़िंदगी के बारे में इतना कुछ बताती हूँ, फिर भी तुम हमारे बारे में बहुत कम जानती हो। हमलों के दौरान महिलाएँ कितना डर जाती हैं; उदाहरण के तौर पर पिछले रविवार को 350 ब्रिटिश विमानों ने इमूइडिन पर 550 टन बम बरसाए, जिसके कारण घर हवा में घास के तिनकों के जैसे काँपने लगा था। या फिर यहाँ पर कितनी महामारियाँ सिर उठा रही हैं।

तुम इन बातों के बारे में कुछ भी नहीं जानती और हर बात विस्तार से बताने में मुझे पूरा दिन लग जाएगा। लोगों को सब्ज़ियाँ व हर तरह का सामान ख़रीदने के लिए कतार में खड़ा होना पड़ता है; डॉक्टर अपने मरीज़ों को देखने नहीं जा सकते, क्योंकि उनके मुड़ते ही उनकी कार या साइकिलें चोरी हो जाती हैं; सेंधमारी, चोरी अब इतनी आम हो गई है कि तुम जानना चाहोगी कि आख़िर डच हाथ की सफ़ाई में इतने माहिर कैसे हो गए। आठ और ग्यारह साल के छोटे से बच्चे लोगों के घरों की खिड़कियों के काँच तोड़कर जो हाथ आता है, उसे चोरी कर लेते हैं। लोग पाँच मिनट के लिए भी अपने घर छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकते, क्योंकि वापस आने पर उनका सारा सामान ग़ायब हो जाता है। हर रोज़ अख़बार चुराए हुए टाइपराइटरों, फ़ारसी कालीनों, इलेक्ट्रिक घड़ियों, कपड़ों आदि को लौटाने पर दिए जाने वाले इनामों के नोटिस से भरे रहते हैं। सड़क के कोनों पर लगीं इलेक्ट्रिक घड़ियों को खोल दिया जाता है, सार्वजनिक फ़ोन का आख़िरी तार तक खोल दिया जाता है।

डच लोगों का हौसला बुलंद नहीं है। हर कोई भूखा है; एरसाट्ज़ कॉफ़ी के अलावा हफ़्ते भर का राशन दो दिन नहीं चलता। हमले होते जा रहे हैं, पुरुषों को जर्मनी भेजा जा रहा है, बच्चे बीमार व कुपोषित हैं, हर किसी ने पुराने कपड़े व घिसे हुए जूते पहने हुए हैं। काले बाज़ार में नए जूते की कीमत 7.50 गिल्डर्स है। इसके अलावा, जूता बनाने वाले बहुत कम लोग ही उनकी मरम्मत कर रहे हैं, अगर वे करें भी तो आपको अपने जूतों के लिए चार महीने का इंतज़ार करना होगा, जो हो सकता है कि इस दौरान ग़ायब ही हो जाएँ।

इस सबसे बस एक ही अच्छी बात सामने आई है: जैसे-जैसे खाना बदतर और निर्णय कड़े होते जाते हैं, व्यवस्था के ख़िलाफ़ क्रियाकलाप भी बढ़ते जाते हैं। खाद्य कार्यालय, पुलिस, अधिकारी-वे सभी या तो अपने साथी नागरिकों की मदद कर रहे हैं या फिर उन पर आरोप लगाकर उन्हें जेल भेज रहे हैं। ख़ुशक़िस्मती से डच लोगों की बहुत कम तादाद ग़लत पक्ष में है।

तुम्हारी, ऐन

शुक्रवार, 31 मार्च 1944

प्यारी किटी,

ज़रा सोचो कि अब भी सर्दी है, फिर भी अधिकतर लोगों के पास लगभग एक महीने से कोयला नहीं है। बहुत भयावह लगता है, है न? रूसी मोर्चे को लेकर आमतौर पर आशावाद है, क्योंकि वह अच्छा चल रहा है! मैं अक्सर राजनीतिक स्थिति पर नहीं लिखती, लेकिन मैं तुम्हें ज़रूर बताऊँगी कि इस समय रूसी कहाँ पर हैं। वे पोलिश सीमा और रोमानिया में प्रुत नदी पर पहुँच चुके हैं। वे ओडेसा के पास हैं और उन्होंने टर्नोपिल को घेर लिया है। हर रात हम स्टालिन से अतिरिक्त शासकीय सूचना की उम्मीद कर रहे हैं।

मॉस्को में इतनी तोपें चल रही हैं कि शहर दिन भर आवाज़ करता व काँपता होगा। पता नहीं कि उन्हें यह दिखाना अच्छा लगता है कि लड़ाई कहीं नज़दीक हो रही है या फिर उनके पास अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करने का कोई और तरीक़ा नहीं है!

हंगरी पर जर्मन सेनाओं का कब्ज़ा हो गया है। वहाँ अब भी लाखों यहूदी हैं; उनकी मौत तय है।

यहाँ कुछ ख़ास नहीं हो रहा है। आज मि. फ़ॉन डान का जन्मदिन है। उन्हें तंबाकू के दो पैकेट, एक बार की कॉफ़ी, जो उनकी पत्नी ने बचाकर रखी थी, मिकुगलर से नींबू का पेय, मीप से कुछ सार्डीन, हमसे यू डी कोलोन, हल्के बैंगनी फूल, ट्यूलिप और रस्पबेरी भरा हुआ केक भी मिला, जो मैदे की ख़राब क्वालिटी व बटर की कमी के कारण थोड़ा चिपचिपा होने के बावजूद स्वादिष्ट था।

मेरे व पीटर के बारे में बातचीत आजकल थोड़ी कम हो गई है। वह आज रात मुझे लेने आ रहा है। तुम्हें नहीं लगता कि वह बहुत अच्छा है, क्योंकि उसे ऐसा करना पसंद नहीं! हम बहुत अच्छे दोस्त हैं। हम काफ़ी वक़्त साथ गुज़ारते हैं और हर संभव विषय पर बात करते हैं। कितना अच्छा लगता है कि किसी संवेदनशील विषय पर बात करने के मामले में ख़ुद को नहीं रोकना पड़ता, जैसा कि मैं बाक़ी लड़कों के साथ करती। उदाहरण के लिए, हम ख़ून पर बात कर रहे थे और किसी तरह से बातचीत मासिक धर्म की ओर मुड़ गई। उसे लगता है कि हम औरतें काफ़ी मज़बूत होती हैं कि ख़ून बहना बर्दाश्त कर पाती हैं और मैं भी हूँ। ताज्जुब है कि क्यों?

मेरी ज़िंदगी बेहतर, बहुत बेहतर हो गई है। ईश्वर मुझे नहीं भूला है और कभी भूलेगा भी नहीं।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 1 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

फिर भी सब कुछ बहुत मुश्किल है। तुम समझ रही हो न कि मेरा क्या मतलब है? मैं चाहती हूँ कि वह मुझे चूमे, लेकिन उसमें बहुत वक़्त लग रहा है। क्या वह अब भी मुझे दोस्त ही समझता है? क्या मैं उससे कुछ ज़्यादा मायने नहीं रखती?

तुम और मैं जानते हैं कि मैं बहुत मज़बूत हूँ और काफ़ी ज़िम्मेदारियाँ अपने आप उठा सकती हूँ। मुझे किसी के साथ अपनी परेशानियाँ बाँटने की आदत नहीं रही है और मैं कभी माँ से कभी बँधी नहीं रही, लेकिन मैं उसके कंधे पर सिर रखकर बस चुपचाप बैठना चाहती हूँ।

मैं नहीं भूल सकती, मैं पीटर के गाल छूने का सपना बिलकुल नहीं भूल सकती, जब सब कुछ कितना अच्छा था! क्या उसकी भी यही चाहत है? क्या वह इतना शर्मीला है कि कह नहीं सकता कि वह मुझसे प्यार करता है? वह मुझे अपने पास क्यों चाहता है? ओह, वह कुछ क्यों नहीं कहता?

मुझे रुकना होगा, मुझे शांत होना होगा। मैं फिर से मज़बूत बनने की कोशिश करूँगी और अगर मैं धीरज से रही, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन, सबसे बुरी बात यह है कि लगता है कि जैसे मैं उसके पीछे पड़ी हूँ। मुझे ही ऊपर जाना होता है; वह मुझ तक कभी नहीं आता। लेकिन वैसा कमरों की वजह से है और वह समझता है कि मैं क्यों आपत्ति करती हूँ। मुझे यक़ीन है कि वह मेरी सोच से कहीं ज़्यादा कुछ समझता है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार, 3 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

आमतौर पर लिखे जाने वाले तरीक़े से उलट आज मैं खाद्य पदार्थों की स्थिति पर विस्तार से लिखने वाली हूँ, क्योंकि यह कुछ मुश्किल भरा व महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है, न केवल यहाँ अनेक्स में, बल्कि पूरे हॉलैंड, पूरे यूरोप और यहाँ तक कि उसके भी परे।

यहाँ रहने के इक्कीस महीने के दौरान हम कई अच्छे 'खाद्य चक्रों' से गुज़रे, इस शब्द का अर्थ तुम्हें अभी पता चल जाएगा। 'खाद्य चक्र' एक ऐसी अवधि है, जिसमें हमें एक ही तरह की चीज़ या सब्ज़ी खानी पड़ी। लंबे समय तक हमें केवल पत्तेदार सब्ज़ी खानी पड़ी। कभी रेत के साथ, कभी रेत के बिना कभी मसले आलुओं के साथ, कभी आलू कैसरोल के साथ। उसके बाद पालक आया, फिर गाँठ गोभी, कचालू, खीरे, टमाटर, खट्टी गोभी, वगैरह, वगैरह।

अगर आपको खट्टी गोभी दिन व रात के खाने में हर रोज़ खानी पड़े, तो वह बिलकुल भी मज़ेदार नहीं होता, लेकिन जब आप भूखे हों तो बहुत कुछ करते हैं। फिलहाल तो हम बहुत अच्छे दौर से गुज़र रहे हैं, क्योंकि सब्ज़ियाँ हैं ही नहीं।

हमारे दोपहर की साप्ताहिक भोजन सूची में ब्राउन बीन्स, मटर का सूप, आलू डमप्लिंग, आलू कुग्ल (नूडल्स व आलू से बना व्यंजन), ईश्वर की कृपा से शलगम के पत्ते या सड़ी गाजर और फिर से ब्राउन बीन्स शामिल हैं। डबलरोटी की कमी के कारण हम नाश्ते से शुरू करके हर भोजन में आलू खाते हैं, लेकिन फिर हम उसे थोड़ा तल लेते हैं। सूप बनाने के लिए हम ब्राउन बीन्स, सफ़ेद फलियों, आलू, सब्ज़ियों के सूप का पैकेट, चिकन सूप व बीन सूप के पैकेट्स का इस्तेमाल करते हैं। डबलरोटी समेत हर चीज़ में ब्राउन बीन्स होती हैं। रात के खाने में हमेशा आलू होते हैं, रसेदार और शुक्र है कि चुकंदर का सलाद अब भी है। तुम्हें मैं डमप्लिंग के बारे में बताती हूँ। हम उन्हें सरकारी आटे, पानी व ख़मीर से बनाते हैं। वे इतने चिपचिपे व सख़्त होते हैं कि लगता है कि पेट में पत्थर हैं, लेकिन ठीक है! सप्ताह में एक बार लिवर सॉसेज और बिना मक्खन लगी डबलरोटी पर जैम हमारे खाने की ख़ास चीज़ हैं। लेकिन हम अब भी ज़िंदा हैं और अधिकतर समय खाना स्वादिष्ट लगता है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 5 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

लंबे समय तक मैं नहीं जान सकी कि मैं स्कूल का काम कर क्यों रही हूँ। लड़ाई ख़त्म होने में लगता है कि अभी और समय लगेगा। यह बात परीकथा की कल्पना की तरह लगती है। अगर सितंबर तक यह युद्ध समाप्त नहीं हुआ, तो मैं स्कूल वापस नहीं जाऊँगी, क्योंकि मैं दो साल पीछे नहीं रहना चाहती।

मेरे दिन पीटर से भरे हैं, सिर्फ़ पीटर से, उसके सपनों व ख़यालों से, लेकिन शनिवार रात मुझे बहुत तकलीफ़ हुई; बहुत बुरा लग रहा था। जब मैं पीटर के साथ थी, तो मैंने किसी तरह अपने आँसुओं को रोके रखा, फ़ॉन डान परिवार के साथ नींबू पेय पीते हुए ख़ूब हँसी और मैं ख़ुशमिज़ाज व उत्साहित थी, लेकिन जैसे ही मैं अकेली हुई, मुझे पता था कि मैं फूट-फूटकर रोने वाली हूँ। गाउन पहने हुए मैं फ़र्श पर झुकी और उत्साहित होकर प्रार्थना करने लगी। फिर अपने घुटने छाती तक लाकर अपनी बाँहों पर सिर रखा और फ़र्श पर ही पड़े हुए रोने लगी।

एक ज़ोर की सिसकी मुझे जैसे धरती पर वापस ले आई और मैंने अपने आँसुओं को दबा दिया, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि बग़ल के कमरे से कोई मेरी आवाज़ सुने। फिर मैंने बार-बार यह कहते हुए ख़ुद को सँभालने की कोशिश की, 'मुझे ऐसा करना होगा...।' इस अजीब सी स्थिति में बैठकर अकड़ने के कारण मैं पलंग से टकराकर पीछे की तरफ़ गिर गई और साढ़े

दस बजे तक ऐसे ही रहा और फिर मैं बिस्तर पर गई। फिर वह ख़त्म हो गया!

अब वह सचमुच बीत चुका है। मैंने आख़िरकार महसूस किया कि मुझे अज्ञानी बनने से बचने, जीवन में आगे बढ़ने, पत्रकार बनने के लिए स्कूल का काम करना होगा, क्योंकि मैं वही चाहती हूँ! मैं जानती हूँ कि मैं लिख सकती हूँ। मेरी कुछ कहानियाँ अच्छी हैं, सीक्रेट अनेक्स के मेरे विवरण हास्यजनक हैं, मेरी अधिकांश डायरी बहुत सुस्पष्ट व जीवंत है, लेकिन... यह देखना अभी बाक़ी है कि वास्तव में मुझमें प्रतिभा है या नहीं।

'ईवा का सपना' मेरी सबसे अच्छी परी कथा है और अजीब बात यह है कि मुझे बिलकुल भी अंदाज़ा नहीं है कि वह ख़याल आया कहाँ से। 'केडी की ज़िंदगी' के कुछ हिस्से भी अच्छे हैं, लेकिन कुल मिलाकर वह कुछ ख़ास नहीं है। मैं सबसे अच्छी और सबसे कठोर आलोचक हूँ। मैं जानती हूँ कि क्या अच्छा है और क्या नहीं है। जब तक आप ख़ुद नहीं लिखते, आप नहीं जान पाते कि यह कितना अनोखा होता है। मुझे हमेशा इस बात का अफ़सोस होता था कि मैं चित्र नहीं बना सकती, लेकिन अब मैं काफ़ी ख़ुश हूँ कि कम से कम मैं लिख तो सकती हूँ। अगर मुझे किताबें या अख़बारों के लेख लिखने की प्रतिभा नहीं हुई, तब भी मैं अपने लिए तो लिख ही सकती हूँ। लेकिन मैं उससे कहीं ज़्यादा हासिल करना चाहती हूँ।

मैं माँ, मिसेज़ फ़ॉन डान और उन सभी औरतों की तरह जीने की कल्पना नहीं कर सकती, जो अपना काम करती हैं और फिर भुला दी जाती हैं। मुझे पति व बच्चों के अलावा भी कुछ चाहिए, जिसके प्रति मैं समर्पित हो सकूँ। मैं अधिकतर लोगों की तरह व्यर्थ ही नहीं जीना चाहती।

मैं उपयोगी होना चाहती हूँ या फिर लोगों के जीवन में आनंद लाना चाहती हूँ, उनके भी जिनसे मैं कभी नहीं मिली। मैं मरने के बाद भी जीते रहना चाहती हूँ! यही वजह है कि मैं ईश्वर की बहुत आभारी हूँ कि उसने मुझे यह उपहार दिया, जिसका इस्तेमाल मैं अपने विकास में और अपने भीतर मौजूद भावनाओं को व्यक्त करने में कर सकती हूँ!

जब मैं लिखती हूँ, तो अपनी परेशानियों को दूर झटक सकती हूँ। मेरा दुख ग़ायब हो जाता है, मेरा उत्साह फिर से जाग जाता है! लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि क्या मैं कुछ बड़ा लिख पाऊँगी, क्या मैं कभी पत्रकार या लेखक बन पाऊँगी? मुझे उम्मीद है कि ऐसा होगा, क्योंकि लिखने से मैं अपने विचारों, आदर्शों व कल्पनाओं को दर्ज कर सकती हूँ।

मैंने काफ़ी समय से 'केडी की ज़िंदगी' पर कुछ नहीं किया। अपने दिमाग़ में मैंने सोच लिया है कि आगे क्या होगा, लेकिन कहानी उतनी जम नहीं रही है। हो सकता है कि वह कभी ख़त्म ही न हो और वह रद्दी की टोकरी या आग के हवाले हो जाए। यह विचार ही बहुत भयावह है, लेकिन फिर मैं ख़ुद से कहती हूँ, 'चौदह साल की उम्र में इतने कम अनुभव के साथ आप दर्शन के बारे में नहीं लिख सकते।'

नए उत्साह के साथ आगे और आगे बढ़ना है। सब कुछ ठीक हो जाएगा, क्योंकि लिखने

को लेकर मेरा निश्चय दृढ़ है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

गुरुवार, 6 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

तुमने मुझसे मेरे शौक व दिलचस्पियों के बारे में पूछा था और मैं बताना चाहूँगी, लेकिन मैं तुम्हें आगाह कर दूँ कि मेरे बहुत से शौक हैं, इसलिए तुम हैरान मत होना।

सबसे पहले: लिखना, लेकिन मैं उसे शौक के रूप में नहीं देखती।

दूसरा: वंशावली विवरण। मैं फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश, इंग्लिश, ऑस्ट्रियन, रूसी, नॉर्वेजियाई और डच शाही परिवारों के वंशवृक्षों को मैं हर अख़बार और दस्तावेज़ में खोजती रहती हूँ। उनमें से कई में मैंने काफ़ी सफलता पाई है, क्योंकि लंबे समय से मैं जीवनियाँ या इतिहास की किताबें पढ़ते हुए उनके बारे में जानकारी को दर्ज करती रही हूँ। मैं इतिहास के कई अंशों को उतारती भी रही हूँ।

तो मेरा तीसरा शौक इतिहास है और पापा पहले से ही मेरे लिए काफ़ी किताबें ख़रीद चुके हैं। मैं उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ जब मैं सार्वजनिक पुस्तकालय में जाकर अपनी ज़रूरत की जानकारी निकाल पाऊँगी।

चौथे क्रम पर ग्रीक व रोमन माइथॉलोजी है। इस विषय पर भी मेरे पास कई किताबें हैं। मैं नौ वाग्देवियों और ज्यूस की सात प्रेमिकाओं के नाम बता सकती हूँ। मुझे हरक्यूलिस की पत्नियों के नाम भी याद हैं।

मेरे बाक़ी शौक फ़िल्मी सितारे व पारिवारिक फ़ोटो हैं। पढ़ने व किताबों को लेकर मुझे जुनून है। मुझे कलाओं का इतिहास बहुत पसंद है, ख़ासकर जब वह लेखकों, कवियों व चित्रकारों से जुड़ा हो; संगीतकार उसके बाद आ सकते हैं। मुझे बीजगणित, ज्यामिति व अंकगणित नापसंद हैं। मुझे अपने स्कूल के सभी विषय अच्छे लगते हैं, लेकिन इतिहास मुझे सबसे प्रिय है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार, 11 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

मेरा सिर घूम रहा है, मैं सचमुच नहीं जानती कि कहाँ से शुरु करूँ। बृहस्पतिवार (आख़िरी बार जब तुम्हें लिखा था) को सब कुछ सामान्य था। शुक्रवार (गुड फ्राइडे) दोपहर को हमने

मोनोपॉली खेला; शनिवार दोपहर को भी। दिन बहुत तेज़ी से गुज़रे। शनिवार दो बजे के क़रीब भारी गोलीबारी शुरू हुई, पुरुषों के मुताबिक़ मशीनगन चल रही थी। बाक़ी समय, सब कुछ शांत था।

रविवार दोपहर पीटर मेरे कहने पर साढ़े चार बजे मुझसे मिलने आया। सवा पाँच बजे हम आगे की अटारी पर गए, जहाँ पर हम छह बजे तक रहे। छह बजे से सवा सात बजे तक रेडियों पर मोज़ार्ट का ख़ूबसूरत संगीत कार्यक्रम चल रहा था; मैंने ख़ासकर *क्लेन नाख़्तम्यूज़िक* का आनंद उठाया। रसोई में संगीत सुनना मुझे मुश्किल लगता है, क्योंकि सुंदर संगीत मेरी आत्मा की गहराइयों में उतर जाता है। रविवार शाम को पीटर नहा नहीं सका, क्योंकि टब नीचे ऑफ़िस के रसाईघर में था और उसमें गंदे कपड़े भरे थे। हम दोनों साथ आगे की अटारी पर गए और आराम से बैठने के लिए मैं अपने कमरे में मिला एकमात्र कुशन लेकर गई। हम पैकिंग क्रेट पर बैठे। क्रेट और कुशन दोनों ही बहुत सँकरे थे, इसलिए हम काफ़ी नज़दीक बाक़ी दो क्रेट्स के सहारे बैठे थे। मूशी हमारे साथ थी, इसलिए हमारी चौकसी करने के लिए कोई मौजूद था। अचानक पौने नौ बजे मि. फ़ॉन डान ने सीटी बजाई और पूछा कि हमारे पास मि. दुसे का कुशन तो नहीं। हम तेज़ी से उठे और कुशन, बिल्ली व मि. फ़ॉन डान के साथ नीचे गए। कुशन के कारण काफ़ी परेशानी खड़ी हो गई। दुसे नाराज़ थे, क्योंकि मैं उनके द्वारा तकिए के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले उनके कुशन को ले गई थी और उन्हें डर था कि कहीं उसमें पिस्सू न हो गए हों; एक कुशन के कारण उन्होंने पूरे घर को सिर पर उठा लिया था। बदला लेने के लिए पीटर व मैंने उनके बिस्तर पर दो सख़्त ब्रश फँसा दिए, लेकिन उन्हें वापस निकालना पड़ा, क्योंकि अचानक दुसे ने अपने कमरे में बैठने का फ़ैसला किया। इस छोटे से हल्के-फुल्के व्यवधान पर हम ख़ूब हँसे।

लेकिन हमारा मज़ा बहुत कम समय के लिए था। साढ़े नौ बजे पीटर ने हमारे दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक दी और पापा से पूछा कि क्या वे ऊपर आकर मुश्किल अंग्रेज़ी वाक्य में उसकी मदद कर सकते हैं।

'यह कुछ संदेहास्पद लगता है,' मैंने मारगोट से कहा। 'साफ़ तौर पर यह कोई बहाना है। जिस तरह से पुरुष बात कर रहे हैं, उससे लगता है कि कोई घुसा है!' मैं सही थी। ठीक उसी समय गोदाम में में कोई घुसा था। पापा, मि. फ़ॉन डान और पीटर तुरंत नीचे पहुँचे। मारगोट, माँ, मिसेज़ फ़ॉन डान और मैं इंतजार करते रहे। चार डरी हुई औरतों को बात करनी होती है, इसलिए हम तब तक बात करते रहे, जब तक कि हमें नीचे ज़ोर की आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसके बाद सन्नाटा छा गया। घड़ी ने पौने दस बजाए। हमारे चेहरों का रंग उड़ गया, लेकिन हम शांत रहे, जबकि हम काफ़ी डरे हुए थे। पुरुष कहाँ थे? वह आवाज़ कैसी थी? क्या वे चोरों के साथ लड़ रहे थे? हम इतने डरे हुए थे कि कुछ भी सोच नहीं पा रहे थे; हम बस इंतज़ार कर सकते थे।

दस बजे सीढ़ियों पर पदचाप सुनाई दी। पापा घबराए हुए अंदर आए और उनके पीछे मि. फ़ॉन डान थे। 'बत्ती बुझा दो, चुपचाप ऊपर चलो, पुलिस आ सकती है!' डरने का समय ही नहीं था। बत्तियाँ बुझा दी गई, मैंने जैकेट ली और हम ऊपर जाकर बैठ गए।

'क्या हुआ? जल्दी से बताओ!'

हमें बताने वाला कोई नहीं था; पुरुष वापस नीचे चले गए थे। दस बजकर दस मिनट तक वे ऊपर नहीं आए। उनमें से दो ने पीटर की खुली खिड़की पर नज़र रखी। नीचे चौकी तक जाने वाला दरवाज़े पर ताला था, किताबों की अलमारी बंद थी। हमने रात की लाइट पर एक स्वेटर लपेटा और फिर उन्होंने हमें बताया कि क्या हुआ था।

पीटर नीचे चौकी पर था, जब उसने दो ज़ोर की आवाज़ें सुनी। वह नीचे गया और देखा कि गोदाम के दरवाज़े के बाएँ हिस्से में मौजूद बड़ा पैनल ग़ायब था। वह ऊपर गया, 'होम गार्ड' को चौकन्ना किया और वे चारों नीचे गए। जब वे गोदाम में पहुँचे तो उन्होंने चोरों को चोरी करते देखा। बिना कुछ सोचे-समझे मि. फ़ॉन डान 'पुलिस!' चिल्लाए! तेज़ी से बाहर जाने की आवाज़ें आई और चोर भाग गए। बोर्ड को वापस दरवाज़े पर लगा दिया गया, ताकि पुलिस को बीच की जगह न दिखाई दे, लेकिन फिर बाहर से की गई एक चोट से वह ज़मीन पर गिर गया। पुरुष चोरों के दुस्साहस से हैरान थे। पीटर और मि. फ़ॉन डान तो ग़ुस्से से उबल रहे थे। मि. फ़ॉन डान ने फ़र्श पर एक कुल्हाड़ी दे मारी और फिर सब कुछ शांत हो गया। फिर से पैनल को बदल दिया गया और फिर एक और कोशिश नाकाम कर दी गई। बाहर एक पुरुष व महिला उस खुली जगह से फ़्लैशलाइट चमका रहे थे, जो पूरे गोदाम को रोशन कर रही थी। 'क्या है...' एक पुरुष बुदबुदाया, लेकिन अब उनकी भूमिका बदल गई थी। पुलिस के बजाय अब वे चोर थे। चारों पुरुष ऊपर भागे। दुसे और मि. फ़ॉन डान ने दुसे की किताबें ली, पीटर ने रसोई व प्राइवेट ऑफ़िस के दरवाज़े व खिड़कियाँ खोली, फ़ोन को नीचे गिराया और चारों किताबों की अलमारी के पीछे पहुँच गए।

पहला भाग समाप्त

हो सकता है कि फ़्लैशलाइट लिए स्त्री व पुरुष ने पुलिस को सचेत कर दिया हो। वह रविवार की रात थी, ईस्टर सन्डे था। अगले दिन ईस्टर मन्डे था, दफ़्तर बंद रहने वाला था, जिसका मतलब था कि हम मंगलवार सुबह तक यहाँ-वहाँ नहीं घूम सकते। ज़रा सोचो, एक दिन और दो रातों तक डर के मारे बैठे रहना! हमने कुछ नहीं सोचा, बस बिलकुल अँधेरे में बैठे रहे, डर के मारे मिसेज़ फ़ॉन डान ने लैम्प बंद कर दिया। हम फुसफुसाते रहे, हर बार ज़रा सी भी चरचराहट होते ही कोई कहता, 'श्श्श, श्श्श।'

साढ़े दस बजे, फिर ग्यारह बज गए। कोई आवाज़ नहीं। पापा और मि. फ़ॉन डान बारी-बारी से हमारे पास ऊपर आए। फिर सवा ग्यारह बजे नीचे एक आवाज़ हुई। ऊपर पूरे परिवार की साँसों की आवाज़ सुनी जा सकती थी। कोई ज़रा सा भी नहीं हिला। घर में, प्राइवेट

ऑफ़िस में, रसोई में, फिर... सीढ़ियों पर पदचाप। साँसों की आवाज़ें भी रुक गई, आठ दिल धड़कने लगे। सीढ़ियों पर क़दमों की आवाज़ें, फिर किताब की अलमारी पर तेज़ आवाज़। इस पल को बयान नहीं किया जा सकता।

'अब तो बस हो गया,' मैंने कहा और कल्पना की कि उस रात गेस्टापो हम पंद्रह लोगों को घसीटकर ले जा रही है।

किताबों की अलमारी पर फिर से चोट मारने की दो बार आवाज़ें आई। फिर टीन के डिब्बे के गिरने की आवाज़ आई और पदचाप हल्की पड़ गई। हम ख़तरे से बाहर थे, तब तक तो थे ही! हर किसी के शरीर में सरसराहट सी दौड़ गई। मैंने दाँत किटकिटाने की आवाज़ें सुनी, लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। साढ़े ग्यारह बजे तक हम वैसे ही बैठे रहे।

घर से अब कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, लेकिन किताबों की अलमारी के ठीक सामने से हमारी चौकी पर रोशनी चमक रही थी। क्या उसकी वजह यह थी कि पुलिस को शक हो गया था या फिर पुलिस उसे भूल गई थी? क्या कोई आकर उसे बंद करने वाला था? हमारी आवाज़ फिर से लौट आई थी। अब इमारत में कोई भी नहीं था, लेकिन शायद बाहर कोई था। हमने फिर तीन चीज़ें कीं: यह अंदाज़ा लगाने की कोशिश की कि क्या चल रहा था, डर से काँपे और शौचालय चले गए। बाल्टियाँ अटारी पर थीं, इसलिए हमें पीटर की धातु से बनी कचरे की टोकरी का इस्तेमाल करना पड़ा। पहले मि. फ़ॉन डान गए, फिर पापा, लेकिन माँ बहुत संकोच में थीं। पापा बग़ल वाले कमरे में टोकरी ले आए और फिर मारगोट, मिसेज़ फ़ॉन डान तथा मैंने उसका इस्तेमाल किया। माँ को आख़िर झुकना पड़ा। काग़ज़ की बहुत ज़रूरत थी और ख़ुशक़िस्मती से मेरी जेब में कुछ काग़ज़ थे।

कचरे की टोकरी से बदबू आ रही थी, हम लोग फुसफुसाते रहे और थक चुके थे। आधी रात हो चुकी थी।

'फ़र्श पर लेटकर सो जाओ!' मारगोट और मुझे एक-एक तकिया व कम्बल दिया गया। मारगोट खाना रखने की अलमारी के पास लेटी और मैंने मेज़ की टाँगों के बीच अपने लिए जगह बनाई। फ़र्श पर लेटकर बदबू उतनी तेज़ नहीं लग रही थी, लेकिन मिसेज़ फ़ॉन डान चुपचाप कुछ पाउडर ब्लीच लाई और सावधानी के लिए एक छोटे तौलिए को पॉटी पर बाँध दिया।

बातें, फुसफुसाहटें, डर, बदबू, अधोवायु छोड़ना और लोगों का लगातार गुसलख़ाने जाते रहना; ऐसे में सोने की कोशिश! हालाँकि ढाई बजे तक मैं इतनी थक चुकी थी कि सो गई और साढ़े तीन बजे तक मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। मिसेज़ फ़ॉन डी के मेरे पैरों पर सिर रखने से मैं उठ गई।

'मुझे कुछ पहनने के लिए दो!' मैंने कहा। मुझे कुछ कपड़े पकड़ाए गए, लेकिन पूछो मत कि क्या पकड़ा गया! अपने पाजामे पर मैंने ऊनी पाजामी, लाल जम्पर, काली स्कर्ट, सफ़ेद स्लैक्स और फटे-पुराने मोज़े पहन लिए।

मिसेज़ फ़ॉन डी वापस कुर्सी पर पर बैठ गईं और मि. फ़ॉन डी मेरे पैरों पर सिर रखकर लेट गए। साढ़े तीन बजे के बाद से मैं सोच में डूबी रही और इतना काँपती रही कि मि. फ़ॉन डी सो नहीं पाए। मैं पुलिस के लौटने की स्थिति के लिए ख़ुद को तैयार कर रही थी। हम उन्हें बता देंगे कि हम छिपे हुए हैं; अगर वे अच्छे लोग हुए तो हम सुरक्षित रहेंगे और अगर वे नाज़ी समर्थक हुए तो हम उन्हें रिश्वत देने की कोशिश करेंगे!

'हमें वायरलेस सेट छिपा लेना चाहिए,' मिसेज़ फ़ॉन डी ने कहा।

'हाँ, अंगीठी में,' मि. फ़ॉन डी ने जवाब दिया। 'अगर उन्हें हम मिल गए, तो वे वायरलेस तो खोज ही लेंगे!'

'फिर तो उन्हें ऐन की डायरी भी मिल जाएगी,' पापा ने कहा।

'तो उसे जला दो,' सबसे डरे हुए इंसान ने सुझाया।

इस पल और जब पुलिसवाले लकड़ी की अलमारी पर चोट मार रहे थे मैं सबसे ज़्यादा डरी हुई थी। मेरी डायरी नहीं; अगर मेरी डायरी गई, तो मैं भी ख़त्म हो जाऊँगी! शुक्र है कि पापा ने कुछ और नहीं कहा।

बातचीत याद करने का कोई फ़ायदा नहीं है; काफ़ी कुछ कहा गया। मिसेज़ फ़ॉन डान बहुत डरी हुई थीं और मैंने उन्हें दिलासा दिया। हमने बच निकलने, गेस्टापो द्वारा पूछताछ किए जाने, मि. क्लेमन को फ़ोन करने और हिम्मत बनाए रखने पर बात की।

'हमें सिपाहियों की तरह बर्ताव करना चाहिए, मिसेज़ फ़ॉन डान। अगर हमारा समय आ गया है, तो ठीक है हमारा बलिदान महारानी, देश, स्वतंत्रता, सत्य और न्याय के लिए होगा, जैसा कि वे हमें रेडियो पर बताते रहते हैं। एक बुरी बात सिर्फ़ यही होगी कि हमारे साथ और लोग भी फँसेंगे!'

एक घंटे के बाद मि. फ़ॉन डान ने अपनी पत्नी के साथ फिर से जगह बदल ली और पापा आकर मेरे पास बैठ गए। पुरुष सिगरेट पीते रहे और कभी-कभार आह भरने की आवाज़ आती रही, कोई फिर से पॉटी गया और सब कुछ फिर से शुरू हो गया।

चार, पाँच, साढ़े पाँच। मैं जाकर पीटर के साथ खिड़की पर बैठकर गई, हम इतने नज़दीक बैठे थे कि एक-दूसरे की कँपकँपी महसूस कर सकते थे; बीच-बीच में हम कुछ बोलते और फिर ध्यान से आवाज़ पर कान लगाते। बग़ल में उन्होंने ब्लैक आउट स्क्रीन हटा दी। उन्होंने फ़ोन पर मि. क्लेमन को बताई जाने वाली बातों की सूची बनाई, क्योंकि वे उन्हें सात बजे फ़ोन करके किसी को भेजने के लिए कहने वाले थे। वे बहुत बड़ा ख़तरा लेने वाले थे, क्योंकि दरवाज़े पर या गोदाम में बैठा पुलिस वाला उनकी आवाज़ सुन सकता था, लेकिन उससे भी बड़ा ख़तरा पुलिस के लौट आने का था। मैं उनकी सूची यहाँ साथ लगा रही हूँ, लेकिन स्पष्टता के लिए उसे यहाँ उतार रही हूँ।

चोरी: इमारत में पुलिस है, किताब की अलमारी तक, लेकिन उससे आगे नहीं। शायद

चोरों ने रुकावट डाल दी, गोदाम का दरवाज़ा खोला, बगीचे से होकर भागे। प्रमुख प्रवेशद्वार पर ताला है; कुगलर दूसरे दरवाज़े से निकले होंगे।

टाइपराइटर और कैलकुलेटर प्राइवेट ऑफ़िस की काली तिजोरी में सुरक्षित हैं।

मीप या बेप के धोने के कपड़े रसोई में हैं।

केवल बेप या कुगलर के पास दूसरे दरवाज़े की चाबी है; हो सकता है कि ताला टूटा हो।

यान को आगाह करने की कोशिश करें, दफ़्तर में जायज़ा लें; बिल्ली को खाना खिला दें।

बाक़ी सब योजना के अनुसार हुआ। मि. क्लेमन को फ़ोन किया गया, दरवाज़ों से डंडे हटाए गए, टाइपराइटर को तिजोरी में रखा गया। फिर हम सब मेज़ के इर्दगिर्द बैठे और यान या पुलिस का इंतज़ार करने लगे।

पीटर सो गया और मि. फ़ॉन डान और मैं फ़र्श पर थे, जब हमने नीचे तेज़ पदचाप सुनी। मैं तेज़ी से उठी, 'ये यान हैं!'

'नहीं, नहीं, पुलिस है!' बाक़ी सबने कहा।

हमारी किताबों की अलमारी पर दस्तक हुई। मीप ने सीटी बजाई। मिसेज़ फ़ॉन डान के लिए अब बर्दाश्त करना मुश्किल था, वे बिलकुल सफ़ेद पड़ गई थीं और अपनी कुर्सी में पड़ी रही। अगर एक पल और भी तनाव बना रहता, तो वे बेहोश हो जातीं।

यान और मीप अंदर आए और उनके सामने अजीबोग़रीब नज़ारा था। अकेली मेज़ की तसवीर ही काफ़ी थी: *सिनेमा ऐंड थियेटर* की एक प्रति पड़ी थी, नाचती लड़कियों की तसवीर वाला पन्ना खुला था और उस पर जैम व पेक्टिन लगा था, जिसे हम डायरिया से निपटने के लिए काम में ले रहे थे, दो जैम के जार, आधा ब्रेड रोल, एक-चौथाई ब्रेड रोल, पेक्टिन, आईना, कंघी, राख, सिगरेटें, तंबाकू, राखदानी, किताबें, पतलून, फ़्लैशलाइट, मिसेज़ फ़ॉन डान की कंघी, टॉयलेट पेपर, वगैरह।

यान और मीप का स्वागत ऊँची आवाज़ों व आँसुओं से हुआ। यान ने चीड़ की लकड़ी की एक चौखट दरवाज़े की दरार पर ठोक दी थी और फिर मीप के साथ पुलिस को सूचना देने चले गए थे। मीप को गोदाम के दरवाज़े के नीचे रात के चौकीदार स्लीगर्स का लिखा एक काग़ज़ मिला, जिसने छेद देखा था और पुलिस को सावधान किया था। यान स्लीगर्स के मिलने का भी सोच रहे थे।

तो हमारे पास पूरे घर व ख़ुद को ठीक करने के लिए आधा घंटा था। मैंने जैसा बदलाव उस आधे घंटे में देखा, वैसा कभी नहीं देखा था। मारगोट व मैंने नीचे बिस्तर ठीक किए, गुसलख़ाने जाकर अपने दाँत, हाथ साफ़ किए, कंघी की। फिर मैंने कमरा थोड़ा ठीक किया और वापस ऊपर चली गई। मेज़ पहले ही साफ़ की जा चुकी थी, हमने थोड़ा पानी लिया, कॉफ़ी व चाय बनाई, दूध उबाला और मेज़ लगाई। पापा व पीटर ने हमारी कामचलाऊ पॉटी यानी मलमूत्र

पात्र को ख़ाली किया और उसे गुनगुने पानी व ब्लीच पाउडर से साफ़ किया। बड़ी वाली पॉटी तो ऊपर तक भरी होने के कारण इतनी भारी थी कि उसे उठाने में उन्हें काफ़ी मुश्किल हुई। वह टपक भी रही थी, इसलिए उन्हें उसे बाल्टी में रखना पड़ा।

ग्यारह बजे यान वापस आ गए और हम सबके साथ मेज़ पर बैठे, फिर धीरे-धीरे सभी को चैन आया। यान ने हमें यह कहानी सुनाई:

मि. स्लीगर्स सोए हुए थे, लेकिन उनकी पत्नी ने बताया कि चक्कर लगाते हुए उनके पति को दरवाज़े पर एक छेद दिखाई दिया। उन्होंने एक पुलिसवाले को बुलाया और उन दोनों ने इमारत की तलाशी ली। रात का चौकीदार होने के नाते मि. स्लीगर्स रात को इलाके में अपने दो कुत्तों के साथ गश्त लगाते हैं। उनकी पत्नी ने कहा कि बाक़ी बातें वे मि. कुगलर को मंगलवार को आकर बताएँगे। पुलिस स्टेशन पर किसी को भी सेंधमारी की जानकारी नहीं थी, लेकिन उन्होंने यह बात दर्ज की कि वे मंगलवार सुबह आकर देखेंगे।

वापस आते हुए यान को मि. फ़ॉन हूवन मिले, जो हमारे लिए आलू लाते हैं। यान ने उन्हें घटना के बारे में बताया, तो उन्होंने बहुत शांति से जवाब दिया, 'मुझे मालूम है।' 'कल रात जब मैं व मेरी पत्नी आपकी इमारत के सामने से गुज़र रहे थे, तो हमने दरवाज़े में छेद देखा। मेरी पत्नी आगे बढ़ना चाहती थी, लेकिन मैंने फ़्लैशलाइट लेकर अंदर झाँका और हो सकता है तभी चोर भाग गए हों। लेकिन सावधानी के लिहाज़ से मैंने पुलिस को जानकारी नहीं दी। मैंने सोचा कि आपके मामले में ऐसा करना समझदारी नहीं होगी। मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन मुझे थोड़ा संदेह है।' यान ने उनका धन्यवाद किया और आगे बढ़ गए। मि. फ़ॉन हूवन को शक है कि हम यहाँ पर हैं, क्योंकि वे हमेशा भोजन अवकाश के समय आलू पहुँचाते हैं। बहुत अच्छे इंसान हैं!

एक बजे यान चले गए और हमने बर्तन वगैरह धोए। हम आठों सोने चले गए। पौने तीन बजे मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि मि. दुसे पहले से जगे हुए हैं। मैं अभी नींद में ही थी और नीचे आकर गुसलख़ाने में जाते हुए पीटर से मेरा सामना हुआ। हमने दफ़्तर में मिलने की बात की। मैं तरोताज़ा होकर नीचे गई।

'इतना सब होने के बावजूद तुम सामने की अटारी पर जाने की हिम्मत कर सकती हो?' उसने पूछा। मैंने सिर हिलाया, अपना तकिया उठाया, उस पर एक कपड़ा लपेटा हुआ था और हम दोनों साथ ऊपर गए। मौसम बहुत बढ़िया था, हालाँकि जल्दी ही हवाई हमलों के सायरन बजने लगे, लेकिन हम अपनी जगह पर ही रहे। पीटर ने मेरे कंधे पर अपनी बाँह रखी, मैंने उसके कंधे पर और इसी तरह चार बजे तक हम दोनों ख़ामोश बैठे रहे, जब तक कि मारगोट हमारे लिए कॉफ़ी नहीं ले आई।

हमने डबलरोटी खाई, नींबू पानी पिया और हँसी-मज़ाक (आख़िरकार हम फिर से ऐसा कर पाए) करने लगे और इस तरह बाक़ी सब कुछ फिर से सामान्य हो गया। उस शाम मैंने पीटर का धन्यवाद किया, क्योंकि वह हम सबमें से सबसे बहादुरी से पेश आया था।

हममें से कोई भी कभी उतने बड़े ख़तरे में नहीं पड़ा था, जितना कि उस रात था। ईश्वर सचमुच हमारी रक्षा कर रहा था। ज़रा सोचो कि पुलिस किताबों की अलमारी तक पहुँच गई थी, बत्ती जली हुई थी और फिर भी किसी को हमारे छिपने की जगह का पता नहीं चला! 'बस, अब तो हमारा काम तमाम!' उस पल मैं फुसफुसाई थी, लेकिन एक बार फिर हम बच गए थे। हमला होने पर और बमों के गिरने पर हर किसी को अपनी हिफ़ाज़त करनी होती है, लेकिन इस बार हमें उन अच्छे, निर्दोष ईसाइयों के लिए आशंका थी, जो हमारी मदद कर रहे हैं।

'हम बच गए हैं, हमें बचाते रहें!' बस, यही हम कह सकते हैं।

इस घटना से काफ़ी बदलाव आए हैं। फ़िलहाल दुसे को अपना काम गुसलख़ाने में करना होगा और पीटर रात साढ़े आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक घर में गश्त लगाएगा। पीटर को अब अपनी खिड़की खोलने की अनुमति नहीं है, क्योंकि केग के किसी आदमी ने उसे खुला हुआ देख लिया था। रात साढ़े नौ बजे के बाद हम फ़्लश नहीं चला सकते। मि. स्लीगर्स को रात के चौकीदार के रूप में रखा गया है और आज रात एक बढ़ई हमारी सफ़ेद फ़्रैंकफ़र्ट चारपाई से एक आड़ बनाने आ रहा है। अनेक्स में लगातार बहस चल रही है। मि. कुगलर ने हमें हमारी लापरवाही के लिए डाँट लगाई। यान ने भी कहा कि हमें नीचे बिलकुल नहीं जाना चाहिए। अब हमें यह पता लगाना है कि स्लीगर्स पर भरोसा किया जा सकता है या नहीं, दरवाज़े के पीछे से आवाज़ें सुनकर क्या कुत्ते भौकेंगे, आड़ कैसे बनानी है, बहुत तरह की बातें हैं।

हमें बहुत ज़बरदस्त ढंग से यह बात याद दिलाई जाती रही है कि हम ज़ंजीरों में बँधे यहूदी हैं, जो एक जगह से बँधे हैं, हमारे कोई अधिकार नहीं हैं, लेकिन हमारे हज़ारों दायित्व हैं। हमें अपनी भावनाओं को एक तरफ़ करना होगा; हमें बहादुर व मज़बूत बनना होगा, बिना किसी शिकायत के तकलीफ़ों को सहना होगा, जो कुछ हमारे बस में है, उसे करना होगा और ईश्वर पर भरोसा करना होगा। एक दिन यह भयावह युद्ध समाप्त हो जाएगा। ऐसा समय आएगा, जब हम फिर से इंसान होंगे, सिर्फ़ यहूदी नहीं!

इसे किसने हम पर थोपा है? किसने हमें बाक़ी लोगों से अलग किया है? किसने हमें इतने कष्टों में धकेला है? हमें ईश्वर ने ऐसा बनाया है, लेकिन ईश्वर ही हमें फिर से उठाएगा। दुनिया की नज़र में हम अभिशप्त हैं, लेकिन अगर इन सभी कष्टों के बाद भी अगर यहूदी बचे रहे, तो यहूदी लोगों को एक उदाहरण के तौर पर देखा जाएगा। हो सकता है कि हमारा धर्म दुनिया को और उसमें रहने वाले सभी लोगों को अच्छाई के बारे में सिखाए और यही कारण है, यही एकमात्र कारण है कि हमें परेशानियाँ झेलनी पड़ रही हैं। हम केवल डच, अंग्रेज़ या जो कोई भी नहीं हो सकते, हम उसके साथ-साथ यहूदी भी रहेंगे। हमें यहूदी बने रहना होगा और हम यहूदी बने रहना चाहेंगे।

बहादुर बनो! हम अपना कर्तव्य याद रखें और बिना किसी शिकायत के उसे पूरा करें। कोई न कोई रास्ता निकलेगा। ईश्वर ने कभी हमारे लोगों को नहीं त्यागा। कई युगों तक यहूदियों को

तकलीफ़ें झेलनी पड़ी हैं, लेकिन कई युगों तक वे ज़िंदा रहे हैं और सदियों के कष्टों ने उन्हें और मज़बूत बनाया है। कमज़ोरों का विनाश होगा और मज़बूत जीवित रहेंगे और हारेंगे नहीं!

उस रात मैंने वाक़ई सोचा था कि मैं मरने वाली हूँ। मैं पुलिस का इंतज़ार कर रही थी और मौत के लिए तैयार थी, जैसे कोई सिपाही युद्धक्षेत्र में होता है। मैं ख़ुशी से देश के लिए अपनी जान दे देती। लेकिन अब जबकि मैं बच गई हूँ, तो युद्ध समाप्त हो जाने के बाद मेरी पहली इच्छा डच नागरिक बनने की है। मैं अपने देश से प्यार करती हूँ, मैं अपनी भाषा से प्यार करती हूँ और मैं यहाँ काम करना चाहती हूँ। इसके लिए अगर मुझे महारानी को भी लिखना पड़े, तो लिखूँगी और अपना लक्ष्य पाने तक हार नहीं मानूँगी!

मैं अब स्वावलंबी होती जा रही हूँ। इस उम्र में मैं ज़्यादा हिम्मत से ज़िंदगी का सामना कर सकती हूँ और माँ के मुक़ाबले मुझे न्याय की बेहतर व अधिक सच्चे अर्थ में समझ है। मैं जानती हूँ कि मुझे क्या चाहिए, मेरा एक लक्ष्य है, मेरे अपने विचार हैं, धर्म है, प्रेम है। अगर मैं ख़ुद जैसी बनी रह सकी, तो मैं संतुष्ट रहूँगी। मैं जानती हूँ कि मैं एक औरत हूँ, एक औरत जिसके अंदर ताक़त है और काफ़ी हिम्मत भी!

अगर ईश्वर ने मेरी ज़िंदगी बनाए रखी, तो मैं माँ से ज़्यादा कुछ पा सकूँगी, मैं अपनी आवाज़ दुनिया तक पहुँचाऊँगी और मनुष्यता के लिए काम करूँगी!

अब मैं जानती हूँ कि सबसे पहले साहस और प्रसन्नता की आवश्यकता होती है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 14 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

हर कोई यहाँ अब भी तनाव में है। पिम का पारा तो बहुत चढ़ गया है; मिसेज़ फ़ॉन डी जुकाम के कारण बिस्तर पर हैं और बड़बड़ा रही हैं; मि. फ़ॉन डी अपनी सिगरेटों के बिना पीले पड़ते जा रहे हैं; अपने कई आराम छोड़ने के कारण दुसे सबके मीनमेख निकालते रहते हैं; वगैरह, वगैरह। पिछले कुछ समय से हमारी क़िस्मत ख़राब चल रही है। शौचालय रिस रहा है, नल बंद है। शुक्र है कि हमारे काफ़ी संपर्क हैं, इसलिए इनकी मरम्मत हो जाएगी।

जैसा कि तुम जानती हो, मैं कई बार भावुक हो जाती हूँ, लेकिन अक्सर उसका कोई न कोई कारण होता है: जब पीटर और मैं कबाड़ व धूल के बीच लकड़ी की सख़्त पेटियों पर एक-दूसरे के कंधे पर बाँहें डाले साथ बैठे होते हैं, पीटर मेरे बालों से खेल रहा होता है; जब बाहर पंछी अपने गीत गा रहे होते हैं, जब पेड़ों पर कोंपले निकल रही होती हैं, जब सूरज इशारे करता है और आसमान बहुत नीला होता है, तो मैं बहुत सी ख़्वाहिशें करती हूँ!

अपने आसपास मुझे असंतुष्ट व चिड़चिड़े चेहरे दिखाई देते हैं, मुझे बस आहों व घुटी हुई शिकायतों की आवाज़ें सुनाई देती हैं। तुम्हें लगेगा कि हमारी ज़िंदगियों ने अचानक बुरा मोड़ ले

लिया है। ईमानदारी से कहूँ तो हालात उतने ही बुरे होते हैं, जितना कि आप उन्हें बनाते हैं। यहाँ अनेक्स में कोई भी अच्छी मिसाल रखने की परवाह नहीं करता। हममें से हरेक को ख़ुद ही अपने बुरे मूड से निकलने का रास्ता खोजना होगा।

हर दिन यही सुनने को मिलता है, 'काश, यह सब ख़त्म हो जाता!'

काम, प्यार, साहस और आशा
मदद करे मेरी, बनाए मुझे अच्छा!

किट, मुझे सचमुच यक़ीन है कि आज मैं थोड़ी झक्की हो रही हूँ और मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों हो रहा है। मेरा लेखन आज उलझ रहा है। मैं एक बात से दूसरी बात पर जा रही हूँ और कई बार मुझे संदेह होता है कि क्या कभी कोई इस बकवास में दिलचस्पी लेगा। शायद वे इसे 'एक बदसूरत लड़की का चिंतन' कहेंगे। यह बात तो पक्की है कि मेरी डायरियाँ शायद ही मि. बोकस्टाइन या मि. ज़ेरब्रूंडी के किसी काम आएँगी।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 15 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

'एक के बाद एक बुरा होता जा रहा है। यह सब कब ख़त्म होगा?' आप इसे बार-बार कहते रह सकते हैं। ज़रा अंदाज़ा लगाओ कि अब क्या हुआ होगा। पीटर सामने के दरवाज़े का ताला खोलना भूल गया। नतीजतन, मि. कुगलर और गोदाम के अन्य कर्मचारी अंदर नहीं आ पाए। वे केग गए, हमारे दफ़्तर की खिड़की को तोड़ा और उस रास्ते से अंदर आए। अनेक्स की खिड़कियाँ खुली हुई थीं और केग के लोगों ने उसे भी देखा। वे क्या सोच रहे होंगे? और फ़ॉन मारन? मि. कुगलर आगबबूला हैं। हम दरवाज़ों को मज़बूत बनाने के लिए कुछ न करने का उन्हें दोष देते हैं और फिर ऐसी बेवकूफ़ी भरी हरकत करते हैं! पीटर बहुत परेशान है। मेज़ पर माँ ने कहा कि उन्हें किसी भी चीज़ से ज़्यादा अफ़सोस पीटर के लिए है, यह सुनकर उसे रोना आने लगता है। हम भी बराबर के दोषी हैं, क्योंकि हम रोज़ उससे पूछते हैं कि उसने दरवाज़े का ताला खोला या नहीं और मि. फ़ॉन डान भी। शायद मैं बाद में उसे कुछ दिलासा देने जाऊँ। मैं उसकी मदद करना चाहती हूँ!

पिछले कुछ हफ़्ते में सीक्रेट अनेक्स की ज़िंदगी के बारे में कुछ नई ख़बरें इस प्रकार हैं:

एक सप्ताह पहले बॉश अचानक बीमार पड़ गया। वह बिलकुल स्थिर बैठा रहा और उसकी लार बहने लगी। मीप ने उसे तुरंत उठाया, तौलिए में लपेटा और अपने शॉपिंग बैग में रखकर जानवरों के क्लीनिक ले गई। बॉश को आँत की कोई परेशानी थी, इसलिए डॉक्टर ने

उसे दवा दी। पीटर ने उसे समय-समय पर दवा दी और फिर जल्दी ही बॉश का दिखना कम हो गया। पक्की बात है कि वह अपनी प्रेमिका के पास चला गया होगा। लेकिन अब उसकी नाक सूज गई है और उसे उठाने पर वह आवाज़ करने लगता है। शायद वह कहीं खाना चुराने की कोशिश कर रहा होगा और किसी ने उसे मारा होगा। कुछ दिनों के लिए मूशी की आवाज़ चली गई थी। जैसे ही हमने सोचा कि उसे डॉक्टर के पास ले जाना होगा, वह ठीक होने लगी।

अब हम हर रात अटारी की खिड़की को ज़रा सा खोलते हैं। पीटर और मैं अक्सर शाम को वहीं पर बैठते हैं।

रबर सीमेंट और ऑयल पेंट की वजह से हमारे शौचालय की तेज़ी से मरम्मत हो पाई। टूटे हुए नल को भी बदल दिया गया है।

अच्छी बात यह है कि मि. क्लेमन अब बेहतर महसूस कर रहे हैं। वे जल्दी ही किसी विशेषज्ञ के पास जाएँगे। हम सिर्फ़ यह उम्मीद कर सकते हैं कि उन्हें किसी ऑपरेशन की ज़रूरत न हो।

इस महीने हमें आठ राशन बुक्स मिली हैं। बदक़िस्मती से अगले दो हफ़्ते तक हमें बीन्स के बजाय ओटमील या दलिया खाना पड़ेगा। हमारा सबसे नया पकवान पिकालिली है। अगर आपकी क़िस्मत ख़राब है तो आपको खीरे व मस्टर्ड सॉस का जार ही मिलेगा।

सब्ज़ियाँ मिलनी मुश्किल हैं। सिर्फ़ लेटस (सलाद के पत्ते) और बस पत्ते ही हैं। हमारे खाने में मुख्य तौर पर आलू व माँस के स्वाद से मिलता-जुलता सालन होता है।

रूसियों का आधे से ज़्यादा क्रीमिया पर कब्ज़ा हो चुका है। ब्रिटिश कैस्सिनो से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। हमें वेस्टर्न बॉल का ही सहारा है। कुछ अविश्वसनीय रूप से बड़े हवाई हमले हुए हैं। हेग के सेंट्रल रजिस्टर ऑफ़िस पर बम गिराया गया। सभी डच लोगों को नए राशन पंजीकरण कार्ड जारी किए जाएँगे।

आज के लिए इतना ही।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

रविवार, 16 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

कल की तारीख़ याद रखना, क्योंकि वह मेरे लिए ऐतिहासिक दिन था। क्या किसी लड़की के लिए वह दिन अहम नहीं होता, जब उसे पहला चुंबन मिलता है? तो फिर यह भी मेरे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। ब्रैम द्वारा मेरे दाएँ गाल को चूमना या मि. वाडस्ट्रा का मेरे हाथ को चूमना इसमें शामिल नहीं है। यह चुंबन मुझे अचानक कैसे मिला? मैं तुम्हें बताती हूँ।

कल रात आठ बजे मैं पीटर के साथ उसके दीवान पर बैठी थी और थोड़ी ही देर में उसने

अपनी बाँहें मुझ पर डाल दीं। (शनिवार होने के कारण उसने अपना ओवरॉल नहीं पहना था।) 'तुम थोड़ा इधर क्यों नहीं आ जाते,' मैंने कहा, 'ताकि मेरा सिर बार-बार अलमारी से न टकराए।'

वह इतना ज़्यादा खिसक गया कि कोने पर पहुँच गया। मैंने उसकी बाँह में अपनी बाँह डाली और उसने मेरे कंधों पर उसे रख दिया, जिससे मैं पूरी तरह उससे घिर गई। हम कई बार ऐसे बैठे हैं, लेकिन कल रात जितना नज़दीक हम कभी नहीं बैठे थे। उसने मुझे कसकर पकड़ रखा था; मेरा दिल बहुत तेज़ी से धड़कने लगा था, लेकिन अभी और भी कुछ बाक़ी था। वह तब संतुष्ट नहीं हुआ, जब तक कि मेरा सिर उसके कंधों पर नहीं आया और फिर उस पर उसने अपना सिर रख दिया। पाँच मिनट बाद मैं फिर से बैठ गई, लेकिन जल्दी ही उसने मेरे सिर को अपने हाथों में लेकर उसे फिर से अपने क़रीब खींच लिया। बहुत अच्छा लग रहा था। मैं मुश्किल से बात कर पा रही थी, मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था; उसने थोड़े ढीले-ढाले अंदाज़ में मेरे गाल व बाँह को सहलाया और मेरे बालों से खेलने लगा। हमारे सिर ज़्यादातर वक़्त एक-दूसरे को छू रहे थे।

किटी, मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मुझे क्या एहसास हो रहा था। मैं इतनी ख़ुश थी कि कुछ नहीं बोल सकती थी और मेरे ख़याल से वह भी बहुत ख़ुश था।

साढ़े नौ बजे हम उठे। पीटर ने अपने टेनिस शूज़ पहने, ताकि रात को इमारत में गश्त लगाते हुए ज़्यादा आवाज़ न हो और मैं उसके बग़ल में खड़ी थी। अचानक मैंने कैसे सही हरकत की, मुझे पता नहीं, लेकिन नीचे जाने से पहले उसने मुझे बालों के बीच से चूमा, आधा मेरे बाएँ गाल पर और आधा मेरे कान पर। मैं पीछे देखे बिना नीचे की तरफ़ भागी और अब मुझे आज का बेसब्री से इंतज़ार है।

रविवार सुबह, ठीक ग्यारह बजे से पहले।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार, 17 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

क्या तुम्हें लगता है कि पापा और माँ मेरी उम्र की लड़की को साढ़े सत्रह साल के लड़के के साथ दीवान पर बैठने व चूमने को मंजूरी देंगे? मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा, लेकिन इस मामले में मुझे अपने विवेक का इस्तेमाल करना होगा। उसकी बाँहों में सपने देखते हुए इतनी शांति मिलती है, इतना सुरक्षित महसूस होता है, अपने गाल पर उसके गाल को महसूस करने में रोमांच होता है, यह जानना कितना अच्छा है कि कोई है, जो मेरा इंतज़ार कर रहा है। लेकिन फिर एक लेकिन है कि क्या पीटर इसे यहीं छोड़ देगा? मैं उसका वादा नहीं भूली हूँ, लेकिन...

वह तो लड़का है!

मैं जानती हूँ कि मैं काफ़ी छोटी उम्र में शुरुआत कर रही हूँ। अभी पंद्रह की भी नहीं हूँ और इतनी आत्मनिर्भर हूँ, यह लोगों के लिए समझना थोड़ा मुश्किल है। मारगोट कभी किसी लड़के को तब तक नहीं चूमेगी, जब तक कि उससे उसका रिश्ता तय न हो या फिर शादी न हो गई हो। न तो पीटर की और न ही मेरी ऐसी कोई योजना है। मुझे पक्का यक़ीन है कि माँ ने भी पापा से मिलने से पहले किसी पुरुष को कभी नहीं छुआ होगा। अगर पता लग गया कि मैं पीटर की बाँहों में थी, मेरा दिल उसकी छाती पर धड़क रहा था, मेरा सिर उसके कंधों पर था और उसका सिर व चेहरा ठीक मेरे सामने था, तो मेरी सहेलियाँ या यैक क्या बोलेंगे!

ओह, ऐन, यह तो बहुत चौंकाने वाला है! लेकिन मुझे तो नहीं लगता कि यह इतना चौंकाने वाला है; हम यहाँ बाक़ी दुनिया से कटकर रह रहे हैं, बेचैन व डरे हुए हैं, ख़ासकर पिछले कुछ दिनों से। तो फिर जब हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो हम अलग क्यों रहें? इस तरह के समय में हम एक-दूसरे को क्यों न चूमें? हम सही उम्र तक पहुँचने का इंतज़ार क्यों करें? हम किसी से इजाज़त क्यों लें?

मैंने अपना ध्यान ख़ुद रखने का फ़ैसला किया है। वह कभी मुझे चोट पहुँचाना या दुखी नहीं करना चाहेगा। मैं अपने दिल की क्यों न सुनूँ, ख़ासकर जब उससे हम दोनों को ख़ुशी मिलती है?

फिर भी मुझे लगता है किटी कि तुम मेरी शंका को महसूस कर सकती हो। आसपास छिपकर बातें करने वाले लोगों के ख़िलाफ़ यह मेरी ईमानदारी की बगावत है। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे पापा को बताना चाहिए कि मैं क्या कर रही हूँ? क्या तुम्हें लगता है कि हमारे इस रहस्य को किसी तीसरे इंसान को बताया जाना चाहिए? उसकी ज़्यादातर ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाएगी, लेकिन क्या उससे मुझे अंदर से बेहतर महसूस होगा? मैं इस बारे में उनसे बात करूँगी।

हाँ, मेरे पास अब भी बहुत बातें हैं, जो मैं उसके साथ बाँटना चाहती हूँ, क्योंकि सिर्फ़ गले लगने के कोई मायने नहीं हैं। एक-दूसरे के साथ अपने विचार साझा करने के लिए काफ़ी भरोसे की ज़रूरत होती है, लेकिन उसके कारण हम और भी मज़बूत होंगे।

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

पुनःश्च। सुबह हम छह बजे उठ गए थे, क्योंकि पूरे परिवार ने फिर से सेंधमारी की आवाज़ें सुनी थी। इस बार हमारे पड़ोसियों में से कोई शिकार बना होगा। सात बजे जब हमने अपने दरवाज़ों का जायज़ा लिया, तो शुक्र है कि वे कसकर बंद थे!

मंगलवार, 18 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

यहाँ सब कुछ ठीक है। कल रात बढ़ई फिर से आया था और उसने दरवाज़ों के पैनलों पर लोहे के पत्तर लगाए थे। पापा ने अभी कहा कि उम्मीद है कि 20 मई से पहले रूस व इटली और पश्चिम में बड़े पैमाने पर कार्रवाई होगी; युद्ध जितना लंबा खिंचता है, उतनी ही इस जगह से मुक्त होने की कल्पना करना मुश्किल हो जाता है।

कल पीटर और मैं आख़िरकार उस बातचीत पर पहुँच गए, जिसे हम पिछले दस दिनों से टालते आ रहे थे। मैंने उसे लड़कियों के बारे में सब कुछ, यहाँ तक कि बहुत अंतरंग बातें भी बताई। मुझे यह बात अजीब लगी कि उसे लगता था किकिसी स्त्री के शरीर के प्रवेशद्वार को तसवीरों में नहीं दिखाया जाता था। वह समझ नहीं पाया कि दरअसल वह उसकी टाँगों के बीच होता है। शाम का अंत मुँह के पास एक पारस्परिक चुंबन के साथ हुआ। यह बहुत प्यारा एहसास है!

मैं किसी दिन अपने पसंदीदा उद्धरणों की किताब पीटर को दिखाऊँगी और मैं बातों की अधिक गहराई में जा सकती हूँ। मुझे नहीं लगता कि हर रोज़ एक-दूसरे की बाँहों में पड़े रहना संतोषजनक है और मुझे उम्मीद है कि वह भी ऐसा ही महसूस करता होगा।

हल्की सर्दियों के बाद अब ख़ूबसूरत बहार का वक़्त है। अप्रैल शानदार है, कभी-कभार हल्की बौछारों के साथ न ज़्यादा गर्म, न ज़्यादा ठंडा। हमारा चेस्टनट पेड़ पत्तों से भरा है और कहीं-कहीं कुछ छोटी-छोटी कलियाँ दिख जाती हैं।

बेप शनिवार को हमारे लिए चार गुलदस्ते लेकर आई: तीन डैफ़ोडिल और एक मेरे लिए ग्रेप हाइसिंथ का। मि. कुगलर हमें ज़्यादा से ज़्यादा अख़बार मुहैया करवा रहे हैं।

अब मेरा गणित पढ़ने का समय है, किटी। विदा!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 19 अप्रैल 1944

डियरेस्ट डार्लिंग,

(यह एक फ़िल्म का शीर्षक है जिसका मतलब है मेरी सबसे प्यारी। इसमें डोरिट क्रेज़लर, ईडा वुस्ट और हारल्ड हाउलज़ेन थे।)

इससे अच्छा क्या हो सकता है कि खुली खिड़की के सामने बैठकर प्रकृति का आनंद लिया जाए, परिंदों का संगीत सुनें, गालों पर सूरज को महसूस करें और बाँहों में आपका प्रिय हो? अपने इर्दगिर्द उसकी बाजुओं में मैं बहुत शांत व सुरक्षित महसूस करती हूँ, यह जानते हुए कि वह पास है, फिर भी कुछ बोलने की ज़रूरत न हो; यह बुरा कैसे हो सकता है, जबकि इससे मुझे इतना अच्छा लगता है? काश, हमें कोई तंग न करें, यहाँ तक कि मूशी भी नहीं!

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

शुक्रवार, 21 अप्रैल, 1944

मेरी प्यारी किटी,

कल गला ख़राब होने के कारण मैं बिस्तर पर ही रही और क्योंकि मैं पहली ही दोपहर ऊब गई थी और मुझे बुख़ार भी नहीं था, तो मैं आज उठ गई। मेरे गले की तकलीफ़ भी लगभग ग़ायब हो गई है। कल, जैसा कि तुमने भी जाना होगा, हमारे फ़्यूहर का पचपनवाँ जन्मदिन था। आज यॉर्क की राजकुमारी एलिज़ाबेथ का जन्मदिन है। बीबीसी का कहना है कि उन्होंने अभी तक अपनी उम्र की औपचारिक घोषणा नहीं की है, हालाँकि शाही बच्चे अक्सर कर देते हैं। हम सोच रहे हैं कि इस ख़ूबसूरत राजकुमारी की शादी किस राजकुमार से होगी, लेकिन किसी उपयुक्त उम्मीदवार के बारे में हम नहीं सोच पा रहे हैं; शायद उनकी बहन राजकुमारी मारग्रेट रोज़ का विवाह बेल्जियम के युवराज बूदूँ से हो सकता है!

यहाँ हम एक मुसीबत के बाद दूसरी मुसीबत का सामना कर रहे हैं। बाहर के दरवाज़े को जैसे ही मज़बूत किया गया, फ़ॉन ने फिर से अपना सिर उठा लिया। यह संभावना है कि उन्होंने ही शायद आलू का पाउडर चुराया और अब वे बेप पर इल्ज़ाम लगाने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें हैरानी नहीं कि अनेक्स में एक बार फिर हंगामा मचा है। बेप अपने आपे में नहीं हैं। शायद मि. कुगलर आख़िरकार इस संदेहपूर्ण व्यक्ति को ठीक करेंगे।

आज सुबह बीथोवनस्ट्रीट से एक आदमी आया था और उसने हमारी तिजोरी की क़ीमत 400 गिल्डर्स आँकी थी; हमारी राय में बाक़ी आकलन भी काफ़ी कम हैं।

मैं द *प्रिंस* पत्रिका से यह पूछना चाहती हूँ कि क्या वे मेरी कोई परी कथा लेंगे, ज़ाहिर है कि उसके साथ मेरा असली नाम नहीं होगा। लेकिन अब तक की मेरी परीकथाएँ काफ़ी लंबी रही हैं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि मुझे कोई मौक़ा मिलेगा।

अगली सुबह तक के लिए, विदा।

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

मंगलवार, 25 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

पिछले दस दिन से दुसे मि. फ़ॉन डान से बात नहीं कर रहे और इसकी वजह सेंधमारी के बाद उठाए गए नए सुरक्षा क़दम हैं। इनमें से एक तो यह है कि उन्हें शाम को नीचे जाने की इजाज़त नहीं है। रात साढ़े नौ बजे पीटर व मि. फ़ॉन डान आख़िरी चक्कर लगाते हैं और उसके बाद

कोई भी नीचे नहीं जा सकता। रात को आठ बजे के बाद और सुबह आठ बजे के बाद हम लोग फ़्लश नहीं चला सकते। खिड़कियों को भी सुबह मि. कुगलर के ऑफ़िस में बत्तियाँ जलने के बाद खोला जा सकता है और उन्हें रात को अब डंडे से नहीं खोला जा सकता। मि. दुसे के नाराज़ होने की यही वजह है। उनका दावा है कि मि. फ़ॉन डान ने उन्हें परेशान किया है, लेकिन उसके लिए वे ख़ुद दोषी हैं। उनका कहना है कि वे खाने के बिना रह सकते हैं, लेकिन हवा के बिना नहीं और उन्हें खिड़कियाँ खुली रखने का कोई न कोई उपाय ढूँढ़ना होगा।

'मुझे इस बारे में मि. कुगलर से बात करनी होगी,' उन्होंने मुझसे कहा।

मेरा जवाब था कि हम इस तरह की बातें मि. कुगलर से नहीं करते, सिर्फ़ हमारे समूह में ही ये सब बातें हो सकती हैं।

'सब कुछ मेरी पीठ पीछे होता है। मुझे इस बारे में तुम्हारे पापा से बात करनी होगी।'

अब शनिवार दोपहर या रविवार को उन्हें मि. कुगलर के दफ़्तर में बैठने की अनुमति नहीं है, क्योंकि अगर केग के मैनेजर बग़ल की इमारत में हुए तो वे उनकी आवाज़ सुन सकते हैं। दुसे फिर भी वहाँ जाकर बैठे। मि. फ़ॉन डान बहुत गुस्से में थे और पापा दुसे से बात करने नीचे गए। दुसे ने कोई बेकार सा बहाना बनाया, लेकिन इस बार पापा उनकी बातों में नहीं आए। अब पापा दुसे से कम से कम बातचीत करते हैं क्योंकि दुसे ने उनका अपमान किया। हममें से कोई नहीं जानता कि उन्होंने क्या कहा, लेकिन वह ज़रूर बहुत बुरा रहा होगा।

ऊपर से बात यह है कि अगले सप्ताह उस घटिया से आदमी का जन्मदिन आने वाला है। आप जब नाराज़ हों, तो अपना जन्मदिन कैसे मना सकते हैं और कैसे उन लोगों से उपहार ले सकते हैं, जिनसे आप बातचीत तक नहीं कर रहे?

मि. वुश्कल की हालत ख़राब होती जा रही है। दस दिन से ज़्यादा समय से उन्हें लगभग एक सौ चार डिग्री बुख़ार है। डॉक्टरों का कहना है कि उनकी हालत बहुत निराशाजनक है; उनका मानना है कि कैंसर उनके फेफड़ों तक पहुँच चुका है। बेचारे, हम उनकी मदद करना चाहते हैं, लेकिन अब तो केवल ईश्वर ही उनकी सहायता कर सकते हैं!

मैंने एक मज़ेदार कहानी, 'खोजी ब्लरी' लिखी है, जो मेरे तीन श्रोताओं को काफ़ी पसंद आई।

मुझे अब भी जुकाम है और मैंने उसे मारगोट, माँ और पापा तक पहुँचा दिया है। पीटर को न हो। उसने चूमने पर ज़ोर दिया और मुझे अपनी एल डोराडो कहा। बुध्दू लड़के, आप किसी इंसान को वह नहीं कह सकते! लेकिन वह प्यारा तो है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

गुरुवार, 27 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

मिसेज़ फ़ॉन डान आज सुबह बहुत बुरे मूड में थीं। वे बस शिकायत कर रही थीं, पहले अपने जुकाम को लेकर, खाँसी की दवा पर्याप्त मात्र में न मिलने पर और हर वक़्त अपनी नाक साफ़ करने की तकलीफ़ को लेकर। फिर वे बड़बड़ाने लगीं कि सूरज नहीं चमक रहा, आक्रमण शुरु नहीं हो रहा, हमें खिड़कियों से बाहर देखने की इजाज़त नहीं है, वगैरह, वगैरह। हम उन पर हँसने के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे, और वह बुरा नहीं था, क्योंकि वे भी हमारे साथ शामिल हो गई थीं।

आलू कूगेल बनाने की हमारी विधि, प्याज़ न होने के कारण इसमें बदलाव किए गए हैं:

> छिले हुए आलुओं को महीन कसें और फिर उसमें सरकार द्वारा मुहैया करवाया गया आटा व नमक डालें। किसी साँचे या ओवनप्रूफ़ बर्तन में पैराफ़िन वैक्स या स्टियरिन लगाकर उसे चिकना करें और दो-ढाई घंटे तक बेक करें। स्ट्रॉबेरी मुरब्बे के साथ पेश करें। (प्याज़ उपलब्ध नहीं हैं। साँचे या गुँथे हुए आटे के लिए तेल भी नहीं है!)

इस समय मैं *ऐम्परर चार्ल्स पंचम* पढ़ रही हूँ, जिसे गटिंगन के एक प्रोफ़ेसर ने लिखा है; इस किताब पर काम करने में उन्हें चालीस साल लगे। पचास पन्ने पढ़ने में मुझे पाँच दिन लगे। मैं उससे ज़्यादा नहीं पढ़ सकती। इस किताब के 598 पन्ने हैं, तो तुम समझ सकती हो कि मुझे कितना समय लगेगा। मैं अभी दूसरे खंड की बात भी नहीं कर रही हूँ। लेकिन... काफ़ी दिलचस्प है!

एक दिन में स्कूल में पढ़ने वाली लड़की को क्या-क्या करना पड़ता है! मेरा ही उदाहरण लो। पहले मैंने डच में लिखे नेल्सन के अंतिम युद्ध का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। फिर मैंने नॉर्दर्न वॉर (1700-21) के बारे में पढ़ा, जिसमें पीटर महान, चार्ल्स XII, ऑगस्टस, श्टानिसलॉस लेकज़िंस्की, मज़ेपा, फ़ॉन गात्ज़, ब्रैंडनबर्ग, पश्चिमी पॉमेरानिया, पूर्वी पॉमेरानिया और डेनमार्क शामिल थे, इसके अलावा सामान्य तारीख़ें थीं। फिर मैं ब्राज़ील पहुँची, जहाँ मैंने बाहया तंबाकू, कॉफ़ी की प्रचुरता, रियो द जेनेरियो के पाँच लाख निवासियों, साओ पाउलो और अमेज़न नदी के बारे में पढ़ा। फिर नीग्रो, मुलाटो, मेस्टिज़ा, श्वेत लोगों, निरक्षरता की दर, जो कि पचास प्रतिशत से अधिक है और मलेरिया के बारे में पढ़ा। मेरे पास थोड़ा समय बचा था, इसलिए मैंने वंशवृक्ष चार्ट पर नज़र दौड़ाई: विलियम लुई, अर्नेस्ट केज़िमिर I, हेनरी केज़िमिर II से लेकर नन्ही मार्गरीत फ़्रांसिस्का (1943 में ओटावा में जन्मी) को भी देख लिया।

बारह बजे: मैंने अटारी में फिर से पढ़ाई शुरु की, डीन, पादरियों, पोप के बारे में पढ़ा... और एक बज गया!

दो बजे बेचारी बच्ची फिर से काम पर लग गई। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के बंदर अगले थे। किटी, मुझे जल्दी से बताओ कि दरियाई घोड़े के पैरों में कितनी अँगुलियाँ होती हैं?

फिर बारी आई बाइबल, नोह की नौका, शेम, हैम और जेयफ़ेथ की। उसके बाद चार्ल्स। फिर पीटर के साथ अंग्रेज़ी में कर्नल के बारे में लिखी थाकरे की किताब पढ़ी। फ्रेंच की परीक्षा दी और फिर मिसीसिपी और मिसूरी के बीच तुलना!

आज के लिए इतना ही। विदा!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 28 अप्रैल, 1944

प्यारी किटी,

मैं पीटर शिफ़ के अपने सपने (जनवरी की शुरुआत में) को कभी नहीं भूल सकी। अब भी मैं उसके गाल को अपने गाल पर महसूस कर सकती हूँ और उस शानदार चमक को भी जिसने बाक़ी सारी कमी को पूरा कर दिया था। कभी-कभार इस पीटर के साथ मुझे वैसा ही एहसास होता है, लेकिन उतना ज़ोरदार नहीं... कल रात तक नहीं। हम दीवान पर बैठे थे, रोज़ की तरह एक-दूसरे की बाँहों में। अचानक रोज़मर्रा की ऐन जैसे चुपके से निकल गई और दूसरी ऐन ने उसकी जगह ले ली। दूसरी ऐन, जो अतिआत्मविश्वासी या मज़ेदार नहीं है, लेकिन प्यार करना चाहती है और सौम्य रहना चाहती है।

मैं उसके साथ बैठी थी और मुझे अचानक एक भावनात्मक लहर सी महसूस हुई। मेरी आँखों में आँसू आ गए; बाईं आँख से आँसू उसके ओवरॉल पर गिरे, जबकि दाईं तरफ़ से मेरी नाक तक, हवा में और फिर पहले के पास पहुँच गए। क्या उसने गौर किया? उसने ऐसी कोई हरकत नहीं की कि जिससे पता चले कि उसने ध्यान दिया। क्या उसे भी वैसा ही महसूस हुआ? उसने कुछ नहीं कहा। क्या उसने महसूस किया कि उसके पास दो ऐन हैं? मेरे प्रश्न अनुत्तरित रह गए।

साढ़े आठ बजे मैं खड़ी हुई और खिड़की के पास पहुँची, जहाँ हम हमेशा विदा लेते हैं। मैं तब भी काँप रही थी, मैं तब भी दूसरी ऐन थी। वह मेरे पास आया और मैंने उसके गले में बाँहें डालकर उसके बाएँ गाल को चूमा। मैं उसके दूसरे गाल को चूमने वाली थी कि मेरा मुँह उसके मुँह से मिल गया और हमारे होंठ आपस में जुड़ गए। विस्मित होकर हम गले लगे, बार-बार और यह सिलसिला चलता रहा!

पीटर को कोमलता चाहिए। अपनी ज़िंदगी में पहली बार उसने एक लड़की को जाना; पहली बार उसने देखा कि बड़े से बड़े खीझ दिलाने वाले इंसानों का भी अंदरूनी रूप होता है, दिल होता है और एक बार आपके साथ अकेले होने पर वे बिलकुल बदल जाते हैं। उसने अपनी ज़िंदगी में पहली बार ख़ुद को, अपनी दोस्ती को किसी और इंसान को सौंपा था। इससे पहले उसका कोई दोस्त नहीं था, न लड़का और न ही कोई लड़की। अब हमने एक-दूसरे को पा

लिया है। मैं भी उसे नहीं जानती थी, मेरे पास भी कोई नहीं था, जिसे मैं सब कुछ बता सकती और उससे यह सब हुआ...

मुझे एक सवाल बार-बार परेशान कर रहा है: 'क्या यह सही है?' क्या मेरा इतनी जल्दी समर्पित हो जाना सही है, क्या मेरा इतना भावुक होना, पीटर के प्रति इतने आवेग से भर जाना और उसकी इतनी कामना करना सही है? क्या मैं एक लड़की ख़ुद को इतना दूर जाने दे सकती हूँ?

इसका एक ही संभावित जवाब हो सकता है: 'मुझे इतनी चाह है...और वह इतने लंबे समय से रही है। मैं बहुत अकेली हूँ और अब मुझे सुकून मिल गया है!'

सुबह हम सामान्य बर्ताव करते हैं, दिन में भी, बस कभी-कभार ऐसा नहीं होता। लेकिन शाम को दिन भर की दबाई गई चाह, पहले की ख़ुशी व आनंद जैसे तेज़ी से ऊपर आने लगता है और हम बस एक-दूसरे के बारे में ही सोच सकते हैं। हर रात हमारे आख़िरी चुंबन के बाद मुझे लगता है कि मैं वहाँ से दौड़ जाऊँ और फिर से उसकी आँखों में कभी न देखूँ। दूर, कहीं दूर अँधेरे में अकेली!

उन चौदह सीढ़ियों के नीचे क्या है, जो मेरा इंतज़ार कर रहा होता है? चमकीली रोशनी, सवाल और हँसी। मुझे सामान्य बर्ताव करना होता है और यह उम्मीद कि उन्होंने किसी चीज़ पर ध्यान न दिया हो।

मेरा दिल अब भी बहुत नाजुक है और कल रात के झटके से उबरने में उसे समय लगेगा। सौम्य ऐन कभी-कभार सामने आती है और वह आते ही ख़ुद को इतनी आसानी से दरवाज़े के बाहर धकेलने नहीं देना चाहती। पीटर मेरे उस हिस्से तक पहुँच गया है, जहाँ अब तक कोई नहीं पहुँचा था, मेरे सपने के सिवाय! उसने मुझे पकड़ लिया है और मुझे पूरी तरह उलट दिया है। क्या हर किसी को अपने लिए थोड़े शांत समय की ज़रूरत नहीं होती? पीटर, तुमने क्या कर दिया है? तुम मुझसे क्या चाहते हो?

यह सब हमें कहाँ ले जाएगा? अब मैं बेप को समझ गई हूँ। अब जबकि मैं ख़ुद उससे गुज़र रही हूँ, तो मैं उसकी दुविधा को समझ सकती हूँ; अगर मैं थोड़ी बड़ी होती और वह मुझसे शादी करना चाहता, तो मेरा जवाब क्या होता? ऐन, ईमानदारी से जवाब दो! तुम उससे शादी नहीं कर पातीं! लेकिन उसे जाने देना भी मुश्किल है। पीटर का चरित्र अभी उतना मज़बूत नहीं है, उसकी इच्छाशक्ति कम है, उसमें हिम्मत व ताक़त भी कम है। वह अब भी बच्चा है, भावनात्मक तौर पर मुझसे ज़्यादा बड़ा नहीं है; उसे सिर्फ़ ख़ुशी व सुकून चाहिए। क्या मैं सचमुच सिर्फ़ चौदह साल की हूँ? क्या मैं वाक़ई स्कूल जाने वाली एक बुद्धू सी लड़की हूँ? क्या मैं हर चीज़ में बहुत कच्ची हूँ? अधिकतर लोगों से मेरा अनुभव अधिक है; मैंने इतना कुछ देखा है कि मेरी उम्र के किसी बच्चे ने शायद ही देखा हो।

मैं ख़ुद से डरी हुई हूँ, मुझे डर है कि मेरी चाहत के कारण मैं इतनी जल्दी समर्पण कर रही

हूँ। बाद में बाक़ी लड़कों के साथ यह कभी कैसे सही हो सकता है? यह बहुत मुश्किल है, दिल और दिमाग़ की हमेशा चलने वाली लड़ाई। दोनों के लिए सही समय व जगह है, लेकिन मैं पक्के तौर पर कैसे कह सकती हूँ कि मैंने सही समय चुना है?

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार, 2 मई, 1944

प्यारी किटी,

शनिवार रात को मैंने पीटर से पूछा कि उसे क्या लगता है कि मुझे, पापा को हम दोनों के बारे में बता देना चाहिए। इस पर बातचीत करने के बाद उसने कहा कि उसे लगता है कि मुझे बता देना चाहिए। मुझे ख़ुशी हुई कि इससे पता चलता है कि वह समझदार व संवेदनशील है। जैसे ही मैं नीचे आई, पापा के साथ पानी लेने चली गई। जब हम सीढ़ियों पर थे, तो मैंने कहा, 'पापा, आप यह तो समझ गए होंगे कि जब मैं व पीटर साथ होते हैं, तो हम कमरे के दो कोनों पर एक-दूसरे के सामने नहीं बैठते। क्या आपको लगता है कि यह ग़लत है?'

जवाब देने से पहले पापा रुके: 'नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह ग़लत है। लेकिन जैसे कि हमारी स्थिति है, जब हम एक-दूसरे के इतना नज़दीक रह रहे हों, तो हमें सावधान रहना चाहिए।' उन्होंने वैसा ही कुछ और भी कहा और फिर हम ऊपर चले गए।

रविवार सुबह उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, 'ऐन, मैं तुम्हारी कही बात पर सोचता रहा हूँ।' (मैं जानती हूँ कि वे अब क्या कहने वाले हैं!) 'यहाँ अनेक्स में यह कोई अच्छा ख़याल नहीं है। मैंने सोचा कि तुम बस दोस्त हो। क्या पीटर को तुमसे प्यार है?'

'बिलकुल नहीं,' मेरा जवाब था।

'मैं तुम दोनों को समझता हूँ। लेकिन तुम्हें थोड़ा संयम बरतना होगा; अक्सर ऊपर मत जाया करो, उसे ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ावा मत दो। इस तरह के मामलों में पुरुष सक्रिय भूमिका निभाते हैं और यह महिला पर है कि वह सीमाएँ तय करे। बाहर जब तुम आज़ाद हो, तो हालात अलग होते हैं। तुम लड़के-लड़कियों को देखते हो, तुम बाहर जा सकते हो, खेलों व बाक़ी तमाम गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हो। लेकिन यहाँ अगर तुम ज़रूरत से ज़्यादा साथ रहते हो और फिर दूर जाना चाहते हो, तो तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम हर घंटे, पूरे समय एक-दूसरे को देखते हो, सावधान रहो, ऐन और इसे बहुत गंभीरता से मत लो!'

'मैं नहीं लेती, पापा, लेकिन पीटर एक अच्छा, एक भला लड़का है।'

'है तो, लेकिन उसका चरित्र अभी बहुत मज़बूत नहीं है। उसे कुछ अच्छा करने या फिर कुछ बुरा करने के लिए बहकाया जा सकता है। उसकी भलाई के लिए ही मैं चाहता हूँ कि वह अच्छा बना रहे, क्योंकि वह बुनियादी रूप से अच्छा इंसान है।'

हमने थोड़ी और बात की और इस बात पर राज़ी हुए कि पापा उससे बात करेंगे।

रविवार दोपहर जब हम आगे की अटारी पर थे, तो पीटर ने पूछा, ‘क्या तुमने अपने पापा से बात की, ऐन?’

‘हाँ,’ मैंने जवाब दिया, ‘मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी। उन्हें यह ग़लत नहीं लगता, लेकिन उनका कहना है कि यहाँ पर जब हम इतने नज़दीक रहते हैं, तो उससे टकराव हो सकता है।’

‘हम तो पहले ही बात कर चुके हैं कि हम लड़ाई नहीं करेंगे और मेरा इरादा अपना वादा निभाने का है।’

‘मेरा भी, पीटर। लेकिन पापा को नहीं लगता कि हम गंभीर हैं, उन्हें लगा कि हम बस दोस्त हैं। क्या तुम्हें लगता है कि हम अब भी रह सकते हैं?’

‘बिलकुल लगता है। तुम्हारा क्या ख़याल है?’

‘मेरा भी यही है। मैंने पापा को बताया कि मुझे तुम पर भरोसा है। मैं तुम पर विश्वास करती हूँ, पीटर, जितना कि पापा पर करती हूँ। मुझे लगता है कि तुम मेरे भरोसे के क़ाबिल हो। तुम हो, है न?’

‘उम्मीद करता हूँ।’ (वह बहुत शरमाया।)

‘मैं तुम पर विश्वास रखती हूँ,’ मैंने अपनी बात जारी रखी। ‘मेरा विश्वास है कि तुम्हारा चरित्र अच्छा है और तुम दुनिया में आगे बढ़ोगे।’

उसके बाद हमने बाक़ी चीज़ों पर बात की। बाद में मैंने कहा, ‘अगर हम कभी यहाँ से बाहर निकले, तो मैं जानती हूँ कि तुम मेरे बारे में सोचोगे भी नहीं।

वह गुस्से में आ गया। ‘यह सही नहीं है, ऐन। अरे नहीं, मैं तुम्हें अपने बारे में ऐसा सोचने भी नहीं दूँगा!’

तभी किसी ने हमें बुला लिया।

पापा ने उससे बात की, उसने मुझे सोमवार को बताया। ‘तुम्हारे पापा को लगता है कि हमारी दोस्ती शायद प्यार में बदल जाएगी,’ उसने कहा, ‘लेकिन मैंने उनसे कहा कि हम ख़ुद पर क़ाबू रखेंगे।’

पापा चाहते हैं कि मैं ऊपर ज़्यादा न जाऊँ, लेकिन मैं जाना चाहती हूँ। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि मुझे पीटर के साथ रहना अच्छा लगता है, बल्कि इसलिए कि मैंने कहा कि मुझे उस पर भरोसा है। मैं उस पर विश्वास करती हूँ और मैं यह साबित करना चाहती हूँ, लेकिन अगर मैं अविश्वास के कारण नीचे ही रही, तो कभी ऐसा नहीं कर पाऊँगी।

नहीं, मैं जाऊँगी!

इस बीच दुसे की नौटंकी सुलझ गई। शनिवार शाम को खाने के समय उन्होंने ख़ूबसूरत डच बोलते हुए माफ़ी माँगी। मि. फ़ॉन डान तुरंत मान गए। दुसे ने अपने भाषण का बहुत अभ्यास

किया होगा।

रविवार को उनका जन्मदिन बिना किसी हादसे के गुज़र गया। हमने उन्हें 1919 की बनी वाइन दी, फ़ॉन डान परिवार (अब वे उन्हें उपहार दे सकते हैं) ने उन्हें पिकालिली का एक जार और रेज़र ब्लेड का पैकेट दिया, मि. कुगलर ने उन्हें नींबू का शीरा (नींबू का पेय बनाने के लिए) दिया, मीप ने *लिट्ल मार्टिन* किताब दी और बेप ने उन्हें पौधा दिया। उन्होंने सबको अंडा खिलाया।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 3 मई, 1944

प्यारी किटी,

सबसे पहले साप्ताहिक समाचार! हमें राजनीति से छुट्टी मिल गई है। ऐसा कुछ भी, हाँ कुछ भी नहीं है, जिसे बताया जा सके। मैं भी धीरे-धीरे मानने लगी हूँ कि हमला होगा। आख़िर वे नहीं चाहेंगे कि रूसी ही सारा बुरा काम करें, वैसे अभी रूसी भी कुछ नहीं कर रहे हैं।

अब मि. क्लेमन हर रोज़ दफ़्तर आते हैं। वे पीटर के दीवान के लिए नए स्प्रिंग लेकर आए हैं, इसलिए अब पीटर को सब कुछ ठीक करना होगा। हैरानी की बात नहीं कि यह काम करने का उसका बिलकुल भी मन नहीं है। मि. क्लेमन बिल्लियों के लिए पिस्सू मारने का पाउडर भी लाए हैं।

क्या मैंने तुम्हें बताया कि बॉश ग़ायब हो गया है? पिछले बृहस्पतिवार से हमने उसका कोई नामोनिशान नहीं देखा है। हो सकता है कि वह बिल्लियों के स्वर्ग में पहुँच गया हो, जानवरों से प्रेम करने वाले किसी इंसान ने उसे स्वादिष्ट व्यंजन में बदल दिया हो। शायद किसी लड़की ने बॉश के फ़र से बनी टोपी पहनी हो। पीटर का दिल टूट गया है।

पिछले दो हफ़्तों से हम दिन का खाना साढ़े ग्यारह बजे खा रहे हैं; सुबह हमें दलिए से काम चलाना पड़ता है। कल से हर रोज़ ऐसा ही होने वाला है; इससे हमारे खाने की बचत होती है। सब्ज़ियाँ मिलने में अब भी मुश्किल हो रही है। आज दोपहर हमने उबले हुए लेटस के पत्ते खाए। सामान्य लेटस, पालक और उबला हुआ लेटस, बस यही कुछ है। उसके साथ सड़े हुए आलू और फिर आपके पास राजा जैसी दावत है!

दो महीने से ज़्यादा वक़्त से मेरा मासिक धर्म नहीं आया, लेकिन पिछले रविवार को हो गया। सारी परेशानी के बावजूद मुझे ख़ुशी है कि उसने मुझे नहीं छोड़ा।

इसमें कोई शक नहीं कि तुम कल्पना कर सकती हो कि हम अक्सर निराशा में कहते हैं, 'युद्ध का आख़िर क्या मतलब है? लोग क्यों शांति से नहीं रह सकते? इतना विनाश आख़िर क्यों?'

इस सवाल को समझा जा सकता है, लेकिन अब तक किसी को भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला है। इंग्लैंड एक तरफ़ क्यों बड़े व बेहतर विमान और बम बना रहा है, जबकि दूसरी तरफ़ वह पुनर्निर्माण के लिए नए घर तैयार कर रहा है? हर दिन क्यों युद्ध पर लाखों ख़र्च किए जाते हैं, जबकि चिकित्सा विज्ञान, कलाकारों व ग़रीब लोगों को एक पैसा तक नसीब नहीं होता? लोगों को भूखा क्यों रहना पड़ता है, जबकि दुनिया के कई हिस्सों में भोजन के ढेर सड़ रहे हैं? ओह, लोग इतने पागल क्यों हैं?

मैं नहीं मानती कि युद्ध केवल नेताओं और पूँजीवादियों की कारस्तानी है। नहीं, आम आदमी भी उतना ही दोषी है; वरना लोग व राष्ट्र बहुत पहले ही विद्रोह कर चुके होते! लोगों में एक विनाशक इच्छा होती है, ग़ुस्से, क़त्ल व मारने की इच्छा। जब तक पूरी मानवता का कायापलट नहीं होती, तब तक लड़ाइयाँ होती रहेंगी और जो सब कुछ बहुत सावधानी से बनाया गया है, पाला-पोसा गया है, उसे काटकर नष्ट कर दिया जाएगा और फिर से शुरुआत होगी!

मैं अक्सर दुखी रही हूँ, लेकिन मैं कभी निराश-हताश नहीं होती। मैं छिपकर बिताई जा रही अपनी ज़िंदगी को एक दिलचस्प साहसिक कारनामे के रूप में देखती हूँ, जिसमें ख़तरा है, रोमांस है और जिसकी हर असुविधा मेरी डायरी में कुछ दिलचस्प आयाम जोड़ती है। मैंने सोच लिया है कि मुझे बाक़ी लड़कियों से अलग ज़िंदगी बितानी है और बाद में एक सामान्य गृहिणी नहीं बनना है। मैं यहाँ जो अनुभव कर रही हूँ, वह एक मज़ेदार ज़िंदगी की अच्छी शुरुआत है, और यही कारण है, एकमात्र कारण है कि क्यों मुझे सबसे ख़तरनाक पलों के मज़ाकिया पहलू पर हँसना होता है।

मैं छोटी हूँ और मुझमें कई छिपे हुए गुण हैं; मैं छोटी व मज़बूत हूँ और एक बड़े कारनामे से गुज़रते हुए जी रही हूँ; मैं ठीक उसमें हूँ और पूरा दिन शिकायत करते नहीं बिता सकती, क्योंकि ऐसा करने पर मज़ा आना नामुमकिन है! मेरे पास कई चीज़ें हैं: ख़ुशी, हँसमुख स्वभाव और ताक़त। हर दिन मुझे लगता है कि मैं परिपक्व हो रही हूँ, मुझे मुक्ति नज़दीक आती लग रही है। मैं प्रकृति की सुंदरता और अपने आसपास के लोगों की अच्छाई को महसूस करती हूँ। हर दिन मैं सोचती हूँ कि यह कितना लुभावना व मज़ेदार जोखिम है! इस सबके होते हुए मैं निराश क्यों हो जाऊँ?

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 5 मई, 1944

प्यारी किटी,

पापा मुझसे नाख़ुश हैं। रविवार को हुई हमारी बातचीत के बाद उन्हें लगा कि मैं हर शाम ऊपर

जाना छोड़ दूँगी। वे इस तरह गले मिलने को पसंद नहीं करेंगे। मुझे वह शब्द पसंद नहीं है। उसके बारे में बात करना ही काफ़ी बुरा था, अब उन्हें मुझे बुरा क्यों महसूस करवाने की क्या ज़रूरत है! आज मैं उनसे बात करूँगी। मारगोट ने मुझे कुछ अच्छी सलाह दी।

मैं यही सब कहना चाहूँगी:

मुझे लगता है कि आपको मुझसे स्पष्टीकरण चाहिए, पापा, तो मैं आपको वही देती हूँ। आप मुझसे निराश हैं, आपको मुझसे संयम की आशा थी, इसमें कोई शक नहीं कि आप चाहते हैं कि मैं किसी चौदह साल की लड़की तरह बर्ताव करूँ। लेकिन यहीं पर आप ग़लत हैं!

जुलाई, 1942 से हम यहाँ हैं ओर कुछ हफ़्ते पहले तक मेरे लिए कुछ भी आसान नहीं था। काश! आप जान पाते कि मैं रात को कितना रोती थी, मैं कितनी दुखी व मायूस थी, मैं कितना अकेला महसूस करती थी, तब आप समझेंगे कि मैं क्यों ऊपर जाना चाहती हूँ! मैं अब उस मोड़ पर पहुँच गई हूँ, जहाँ पर मुझे माँ या किसी और के सहारे की ज़रूरत नहीं है। यह रातोंरात नहीं हुआ। मैंने काफ़ी संघर्ष किया है और अभी जितना स्वावलंबी होने के लिए काफ़ी आँसू भी बहाए हैं। आप हँस सकते हैं और मेरी बात का विश्वास नहीं कर सकते, लेकिन मुझे परवाह नहीं है। मैं जानती हूँ कि मैं आज़ाद इंसान हूँ और मुझे नहीं लगता कि मुझे आपको अपने कामों की सफ़ाई देने की ज़रूरत है। मैं आपको सिर्फ़ इसलिए बता रही हूँ, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि आपको लगे कि मैं आपकी पीठ पीछे कुछ कर रही हूँ। लेकिन मैं एक इंसान के प्रति जवाबदेह हूँ और वह मैं ख़ुद हूँ।

जब मैं परेशानियों से गुज़र रही थी, तो सबने, आपने भी जैसे आँख-कान बंद किए हुए थे और मेरी कोई मदद नहीं की। उसके उलट, मुझे झिड़कियाँ सुननी पड़ी कि मैं उतना क्यों बोलती हूँ। मैं शोर इसलिए मचाती थी, ताकि हर समय परेशान न रहूँ। मैं ज़रूरत से ज़्यादा आत्मविश्वासी इसलिए थी कि कोई मेरे भीतर की आवाज़ न सुन ले। पिछले डेढ़ साल, हर दिन मैं नाटक करती रही। मैंने कभी शिकायत नहीं की या अपना मुखौटा नहीं हटाया, वैसा कुछ भी नहीं किया, लेकिन अब... अब जंग ख़त्म हुई। मैं जीत गई! मैं शरीर व दिमाग़ से स्वतंत्र हूँ। मुझे अब माँ की ज़रूरत नहीं रही और मैं उस संघर्ष से ज़्यादा ताक़तवर इंसान बनकर उभरी हूँ।

अब जबकि वह ख़त्म हो चुका है, अब जबकि मैं जानती हूँ कि मैं युद्ध जीत चुकी हूँ, मैं अपने रास्ते जाना चाहती हूँ, उस रास्ते पर जो मुझे सही लगता है। मुझे किसी चौदह साल की बच्ची तरह न देखें, क्योंकि इन सभी मुश्किलों ने मुझे ज़्यादा बड़ा बना दिया है; मैं अपने काम पर अफ़सोस नहीं करूँगी, मैं वैसा ही बर्ताव करूँगी, जो मुझे लगता है कि मुझे करना चाहिए।

आराम से मना करने से मैं ऊपर जाना बंद नहीं करूँगी। आपको या तो उसकी मनाही करनी होगी या फिर मुझ पर पूरा भरोसा करना होगा। आप जो चाहे करें, बस मुझे अकेला छोड़ दें!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार 6 मई, 1944

प्यारी किटी,

कल रात खाने से पहले मैंने अपनी चिट्ठी पापा की जेब में डाल दी। मारगोट के मुताबिक़ पापा ने उसे पढ़ा और काफ़ी परेशान रहे। (मैं ऊपर बर्तन धोने में लगी थी!) बेचारे पिम, मुझे पता होना चाहिए था कि इस तरह के पत्र का क्या असर हो सकता था। वे बहुत संवेदनशील हैं! मैंने तुरंत पीटर से कहा कि वह कोई और सवाल न पूछे या फिर कुछ और न कहे। पिम ने उस मामले में मुझे कुछ और नहीं कहा। क्या वे कहने वाले हैं?

यहाँ सब कुछ कमोबेश सामान्य है। हमें यान, मि. कुगलर और मि. क्लेमन द्वारा क़ीमतों व बाहर के लोगों के बारे में बताई गई बातों पर यक़ीन नहीं आ रहा; आधा पाउंड चाय की क़ीमत 350 गिल्डर्स, आधा पाउंड कॉफ़ी की क़ीमत 80 गिल्डर्स है, आधा पाउंड मक्खन 35 गिल्डर्स और एक अंडा 1.45 गिल्डर्स का है। एक औंस बल्गेरियाई तंबाकू के लिए लोग 14 गिल्डर्स दे रहे हैं! हर कोई काला बाज़ारी कर रहा है; हर छोटे-मोटे काम करने वाले के पास कुछ न कुछ पेश करने को है। बेकरी से सामान लाने वाले लड़के ने हमें रफ़ू करने वाली ऊन, उसका बस एक लच्छा 90 सेंट में लाकर दिया है। दूध वाले के पास राशन बुक्स हैं, मृतक क्रिया करने वाला चीज़ बेच रहा है। चोरी-सेंधमारी, क़त्ल रोज़मर्रा की घटनाएँ हो गई हैं। पुलिस व रात के चौकीदार तक इस तरह के काम कर रहे हैं। हर कोई अपने पेट की आग बुझाना चाहता है और तनख़्वाह रोके जाने के कारण लोगों को धोखाधड़ी का सहारा लेना पड़ रहा है। पुलिस को हर रोज़ पंद्रह, सोलह, सत्रह वर्ष तथा उससे बड़ी लड़कियों के ग़ायब होने के कई मामलों की छानबीन करनी पड़ रही है।

मैं परी ऐलेन की अपनी कहानी को ख़त्म करना चाहती हूँ। मज़े के लिए, ताकि पापा को उनके जन्मदिन पर उसके सभी कॉपीराइट्स के साथ भेंट कर सकूँ।

बाद में मिलते हैं! (दरअसल, यह सही वाक्य नहीं है। इंग्लैंड से होने वाले जर्मन प्रसारण में वे हमेशा अंत में कहते हैं, *'ऑफ़ वीडरहॉरना'* यानी अगली बार बात करने तक। तो मेरे ख़याल से मुझे कहना चाहिए, 'जब तक हम फिर लिखते हैं।')

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

रविवार सुबह, 7 मई, 1944

प्यारी किटी,

कल दोपहर पापा और मेरे बीच लंबी बातचीत हुई। मैं ख़ूब रोई और वे भी बहुत रोए। किटी, तुम जानती हो कि उन्होंने मुझसे क्या कहा?

'अपनी ज़िंदगी में मुझे बहुत से पत्र मिले हैं, लेकिन कोई भी इतना चोट पहुँचाने वाला नहीं था। तुम्हें अपने माता-पिता से इतना प्यार मिला। तुम्हारे माता-पिता हमेशा तुम्हारी मदद के लिए तैयार रहे, जिन्होंने हमेशा तुम्हारी हिफ़ाज़त की, चाहे कुछ भी हो। तुम अपने कामों के लिए हमारे प्रति ज़िम्मेदार न होने की बात करती हो! तुम्हें लगता है कि तुम्हारे साथ ग़लत हुआ है और तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दिया गया था। नहीं, ऐन, तुमने हमारे साथ बहुत अन्याय किया है!'

'शायद तुम्हारा वह मतलब नहीं था, लेकिन तुमने लिखा तो वही था। नहीं, ऐन इस तरह हमने ऐसा कुछ नहीं किया, जिसके लिए हमें यह उलाहना सुनना पड़े!'

मैं बुरी तरह से नाकाम रही हूँ। अपनी पूरी ज़िंदगी में मैंने कोई इससे बुरी चीज़ नहीं की। मैंने अपने आँसुओं का इस्तेमाल दिखावे के लिए किया, ख़ुद को महत्त्वपूर्ण दिखाने के लिए किया, ताकि वे मेरी इज़्ज़त करें। यह ज़रूर है कि मुझे तकलीफ़ हुई है और माँ के बारे में मैंने जो कहा, वह सच है। लेकिन पिम पर इल्ज़ाम लगाना, जो कि इतने अच्छे रहे हैं और जिन्होंने मेरे सब कुछ किया है, नहीं वह तो बेरहमी वाली बात है।

यह अच्छी बात है कि किसी ने मुझे मेरी जगह दिखा दी है, मेरे घमंड को तोड़ दिया है, क्योंकि मैं बहुत दंभी हो गई थी। मिस ऐन जो भी करती हैं, ज़रूरी नहीं कि वह सही ही हो! कोई भी, जो किसी प्यार करने वाले को जानबूझकर तकलीफ़ पहुँचाता हो, वह निंदनीय है, वह नीचों का नीच है!

सबसे ज़्यादा शर्म इस बात पर है, जिस तरह पापा ने मुझे माफ़ कर दिया है; उन्होंने कहा कि वे चिट्ठी को आग के हवाले कर देंगे, वे मेरे साथ बहुत अच्छी तरह पेश आ रहे हैं, जैसे कि उन्होंने ही कुछ ग़लत किया हो। ऐन, तुम्हें अब भी काफ़ी कुछ सीखना है। समय आ गया है कि तुम एक शुरुआत करो, न कि सबको नीचा दिखाओ और हमेशा उन पर आरोप लगाती रहो!

मैंने काफ़ी तकलीफ़ें झेली हैं, लेकिन मेरी उम्र में किसने नहीं झेली होंगी? मैं नाटक कर रही थी और मुझे उसका पता तक नहीं था। मैंने अकेलेपन को महसूस किया है, लेकिन मैं कभी हताश नहीं रही! पापा की तरह नहीं, जो एक बार सड़क पर चाकू लेकर निकल गए थे, ताकि वह परेशानी का अंत कर सकें। मैं कभी उस हद तक नहीं पहुँची।

मुझे ख़ुद पर शर्म आनी चाहिए और मुझे आ भी रही है। जो हो चुका, अब उसे बदला नहीं जा सकता, लेकिन उसे फिर से होने से तो बचाया जा सकता है। मैं फिर से शुरुआत करना चाहूँगी और उसमें मुश्किल भी नहीं होनी चाहिए, अब मेरे पास पीटर है। वह मेरी मदद के लिए मेरे साथ है, तो मैं कर सकती हूँ! मैं अब अकेली नहीं हूँ। वह मुझसे और मैं उसे प्यार करती हूँ, मेरे पास मेरी किताबें, मेरा लेखन और मेरी डायरी है। मैं उतनी बदसूरत नहीं हूँ या फिर उतनी बेवकूफ़ भी नहीं हूँ, मैं आशावादी हूँ और मैं अच्छा चरित्र विकसित करना चाहती हूँ!

हाँ, ऐन, तुम अच्छी तरह जानती थी कि तुम्हारा पत्र बेरहम व कुटिल था, लेकिन तुम्हें तो

उस पर गर्व था! मैं पापा की मिसाल लेकर एक बार फिर ख़ुद को बेहतर बनाने की कोशिश करूँगी।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार 8 मई, 1944

प्यारी किटी,

क्या मैंने कभी तुम्हें अपने परिवार के बारे में कुछ बताया है? मुझे नहीं लगता है कि मैंने कुछ बताया है, तो इसलिए मैं बताती हूँ। पापा का जन्म फ्रैंकफ़र्ट अम मान में बहुत धनी माता-पिता के यहाँ हुआ था। माइकल फ्रैंक एक बैंक के मालिक थे और लखपति बने। एलिस स्टर्न के माता-पिता भी प्रतिष्ठित व संपन्न थे। माइकल फ्रैंक पहले से अमीर नहीं थे, उन्होंने अपनी मेहनत से पैसा कमाया। अपनी जवानी के दिनों में पापा ने एक अमीर आदमी के बेटे की ज़िंदगी जी। हर हफ़्ते पार्टियाँ, नाच, दावतें, सुंदर लड़कियाँ, वॉल्ट्ज़, रात का खाना, एक बड़ा सा घर, आदि। दादाजी के मरने के बाद अधिकतर पैसा ख़त्म हो गया और पहले विश्व युद्ध व मुद्रास्फीति के बाद कुछ भी नहीं बचा। युद्ध होने तक फिर भी कुछ रईस रिश्तेदार बचे थे। तो पापा की परवरिश बहुत अच्छी तरह हुई थी और कल उन्हें हँसी आई, जब उन्हें पचपन साल की अपनी ज़िंदगी में पहली बार मेज़ पर बर्तन को खुरचना पड़ा।

माँ का परिवार बहुत धनी नहीं था, लेकिन फिर भी संपन्न था और निजी नाच, रात्रिभोजों व 250 मेहमानों वाली दावतों के बारे में सुनकर हमें आश्चर्य होता था।

हम अब तो अमीरी से बहुत दूर हैं, लेकिन मैंने अपनी सारी उम्मीदें युद्ध के बाद वाले समय पर लगाई हैं। मैं तुम्हें पक्के तौर पर कह सकती हूँ कि मैं माँ व मारगोट जैसी बुर्जुआ ज़िंदगी बिताना पसंद नहीं करूँगी। मैं पेरिस व लंदन में भाषाएँ सीखते व कला का इतिहास पढ़ते हुए साल बिताना चाहती हूँ। अब इसकी तुलना मारगोट से करो, जो फ़िलीस्तीन में शिशुओं का पालन-पोषण करना चाहती है। मैं बढ़िया पोशाकों व शानदार लोगों की कल्पना करती हूँ। जैसा कि मैं पहले भी कई बार तुम्हें बता चुकी हूँ, मैं दुनिया देखना चाहती हूँ और हर तरह की रोमांचक चीज़ें करना चाहती हूँ, पैसा होने में कोई बुराई नहीं है!

आज सुबह मीप ने हमें अपनी चचेरी बहन की सगाई की पार्टी के बारे में बताया, जिसमें वह शनिवार को गई थी। उसके रिश्तेदार धनी हैं और लड़के वाले का परिवार उनसे भी धनी है। मीप ने हमें कई तरह के व्यंजनों के बारे में बताया तो हमारे मुँह में पानी आ गया। मीटबॉल वाले सब्ज़ियों के सूप, चीज़, मांस के रोल, अंडे व भुने मांस से बने हॉर्सदेवूज़, चीज़ रोल्स, गेटो थे, वाइन व सिगरेटें थीं और आप जितना चाहे खा सकते थे।

मीप ने दस श्नप्स पिए व तीन सिगरेटें फूँकी, क्या यही संयम की हिमायती हमारी मीप

थीं? अगर मीप ने इतना पिया तो उनके पति का क्या हाल रहा होगा? ज़ाहिर है कि पार्टी में हर कोई थोड़ा नशे में रहा होगा। मर्डर स्क्वॉड के दो अफ़सर भी थे, जिन्होंने जोड़े की तसवीर भी ली। तुम देख सकती हो कि मीप को हमेशा हमारा ख़याल रहता है, क्योंकि उसने उनके नाम व पते तुरंत लिखे, अगर कभी कुछ हो जाए और हमें अच्छे डच लोगों के संपर्क की ज़रूरत पड़े, तो वे काम आ सकें।

हमारे मुँह में इतना पानी आ रहा था कि पूछो मत! हम, जिन्हें नाश्ते में सिर्फ़ दो चम्मच दलिया मिला था और जो पूरी तरह से भूखे थे; जिन्हें हर रोज़ आधा पका हुआ पालक (विटामिनों के लिए!) और सड़े हुए आलू के सिवा कुछ और नहीं मिलता था, हम, जो अपने ख़ाली पेट को सिर्फ़ उबले लेटस, कच्चे लेटस, पालक, पालक और ज़्यादा पालक से भरते थे। हो सकता है कि हम पॉपेई जितने ताक़तवर बन जाएँ, लेकिन अब तक तो इसका कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहा!

अगर मीप हमें दावत में साथ ले जाती, तो बाक़ी मेहमानों के लिए तो रोल्स बचते ही नहीं। अगर हम वहाँ होते, तो हम हर दिखने वाली चीज़ यहाँ तक कि फ़र्नीचर को भी चट कर जाते। मैं तुम्हें बताऊँ कि हम तो जैसे उसके मुँह से शब्द निकाल रहे थे। हम उसके इर्दगिर्द ऐसे बैठे थे, मानो हमने अपनी सारी ज़िंदगी में स्वादिष्ट खाने या शिष्ट लोगों के बारे में कभी सुना भी न हो! और ये हाल था एक जाने-माने लखपति की पोतियों का। दुनिया वाक़ई पागलपन भरी जगह है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार, 9 मई, 1944

प्यारी किटी,

मैंने परी ऐलन की अपनी कहानी पूरी कर ली है। मैंने बढ़िया काग़ज़ पर उसे लिख लिया है, लाल स्याही से सजाया है और सभी पन्नों को साथ सिल दिया है। सब कुछ प्यारा लग रहा है, लेकिन मैं यह नहीं जानती कि यह अपने आप में जन्मदिन का पर्याप्त उपहार है या नहीं। मारगोट व माँ ने कविताएँ लिखी हैं।

मि. कुगलर आज दोपहर ऊपर यह ख़बर लेकर आए कि सोमवार से हर दोपहर मिसेज़ ब्रोक्स दो घंटे ऑफ़िस में बिताएँगी। ज़रा सोचो! ऑफ़िस के लोग ऊपर नहीं आ पाएँगे, आलू नहीं पहुँच सकेंगे। बेप को रात का खाना नहीं मिलेगा, हम शौचालय का इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे, हम हिल-डुल नहीं पाएँगे और बाक़ी कई तरह की असुविधाएँ होंगी। हमने उनसे छुटकारा पाने के कई तरीक़े सुझाए। मि. फ़ॉन डान का ख़याल था कि उनकी कॉफ़ी में विरेचक दवा मिलाने से शायद काम बन जाए। 'नहीं,' मि. क्लेमन ने कहा, 'ऐसा न करें, वरना हम उन्हें

कभी भी बॉग यानी शौचालय से निकाल नहीं पाएँगे!'

हँसी की लहर दौड़ पड़ी। 'बॉग?' मिसेज़ फ़ॉन डान ने पूछा। 'उसका क्या मतलब है?' उन्हें जवाब दिया गया। 'क्या इस शब्द का इस्तेमाल करना सही है?' उन्होंने बहुत मासूमियत के साथ पूछा। 'ज़रा सोचो,' बेप खिलखिलाते हुए बोली, 'तुम बेयनकॉर्फ़ में ख़रीदार कर रहे हो और बॉग जाने का रास्ता पूछते हो। उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो!'

अगर इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करूँ, तो दुसे अभी 'बॉग' पर बैठे हैं, हर रोज़ ठीक साढ़े बारह बजे। आज दोपहर मैंने बेधड़क होकर गुलाबी काग़ज़ का एक टुकड़ा लेकर उस पर लिखा:

मि. दुसे की शौचालय समय-सारणी

सुबह 7:15 से 7:30

दोपहर 1 बजे

बाक़ी समय, जब आवश्यकता हो!

जब वे अंदर थे, तो मैंने शौचालय के हरे दरवाज़े पर उसे लगा दिया। मुझे यह भी जोड़ देना चाहिए था, 'हदें पार करने वाले को क़ैद होगी!'

मि. फ़ॉन डान का सबसे नया चुटकुला:

आदम व हव्वा के बारे में *बाइबल* में पढ़कर तेरह साल के एक लड़के ने अपने पिता से पूछा, 'पापा, मुझे बताइए कि मैं कैसे पैदा हुआ?'

'देखो,' उसके पिता ने जवाब दिया, 'एक सारस ने तुम्हें सागर से उठाया, माँ के बिस्तर पर रखा और उनकी टाँग पर काटा, इतनी ज़ोर से कि उन्हें हफ़्ते भर बिस्तर पर रहना पड़ा।'

इस जवाब से पूरी तरह संतुष्ट न होने पर लड़का अपनी माँ के पास गया और पूछा, 'माँ, मुझे बताइए कि आप कैसे पैदा हुईं और मैं कैसे पैदा हुआ?'

उसकी माँ ने भी उसे वही कहानी सुनाई। आख़िरकार सही बात सुनने की उम्मीद में वह अपने नाना के पास गया, 'नानाजी, मुझे बताइए कि आप कैसे पैदा हुए और आपकी बेटी कैसे पैदा हुई?' तीसरी बार उसे वही कहानी सुनाई गई।

रात को उसने अपनी डायरी में लिखा, 'काफ़ी छानबीन के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि हमारे परिवार में पिछली तीन पीढ़ियों से कोई यौन संसर्ग नहीं हुआ!'

मुझे अब भी काफ़ी काम करना है; तीन बज चुके हैं।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। मेरे ख़याल से मैंने तुम्हें एक नई सफ़ाई कर्मचारी के बारे में बताया है। मैं यह बताना चाहती हूँ कि वे शादीशुदा हैं, साठ साल की हैं और उन्हें ऊँचा सुनाई देता है। यह इस लिहाज़ से बहुत सुविधाजनक है कि छिपकर रहने वाले आठ लोग कितनी आवाज़ कर सकते हैं।

ओह, किट, इतना प्यारा मौसम है। काश, मैं बाहर जा पाती!

बुधवार, 10 मई, 1944

प्यारी किटी,

कल दोपहर में जब हम अटारी में बैठकर अपना फ्रेंच का काम कर रहे थे, तो अचानक मुझे अपने पीछे पानी छिड़कने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने पीटर से पूछा कि वह क्या हो सकता है। जवाब देने के लिए रुकने के बजाय वह ऊपर पहुँचा और मूशी को सही जगह पर धकेलने लगा, जो अपने गीले मलमूत्र के डिब्बे की बग़ल में बैठी हुई थी। उसके बाद चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगी और फिर मूशी, जो कि तब तक मूत्र त्याग कर चुकी थी, सीधे नीचे भाग गई। अपने डिब्बे जैसी किसी चीज़ की तलाश में मूशी को लकड़ी की छीलन का एक ढेर मिल गया, जो फ़र्श की दरार के ठीक ऊपर था। उसका वहाँ इकट्ठा हुआ मूत्र तुरंत अटारी पर टपकने लगा और क़िस्मत देखो कि आलू के पीपे की बग़ल में गिरा। छत टपक रही थी और क्योंकि अटारी के फ़र्श पर काफ़ी दरारें थीं, तो छोटी-छोटी पीली बूँदें छत से होकर खाने की मेज़ पर जमा चीज़ों व किताबों के बीच गिरने लगीं।

मैं हँसते-हँसते दोहरी हो गई, वह इतना मज़ेदार नज़ारा था। मूशी कुर्सी के नीचे दुबकी थी और पानी, ब्लीच पाउडर और कपड़ा लिए हुए पीटर था व मि. फ़ॉन डान सबको शांत करा रहे थे। कमरे को जल्दी ही ठीक कर लिया गया, लेकिन यह जाना-माना तथ्य है कि बिल्ली के मूत्र से भयंकर दुर्गंध आती है। आलुओं ने यही साबित किया और लकड़ी की छीलन ने भी। बाद में पापा ने छीलन को बाल्टी में भरा और उसे जलाने के लिए नीचे ले आए।

बेचारी मूशी! उसे कैसे पता कि उसके डिब्बे के लिए ईंधन लाना नामुमकिन है?

ऐन

बृहस्पतिवार, 11 मई, 1944

प्यारी किटी,

तुम्हें हँसाने के लिए एक नया चित्रण:

पीटर के बाल काटे जाने थे और हमेशा की तरह उसकी माँ को यह काम करना था। सात

बजकर पच्चीस मिनट पर पीटर अपने कमरे में घुस गया और फिर साढ़े सात बजे कमरे से बाहर निकला, उसने तैराकी के लिए पहने जाने वाला नीला जाँघिया और टेनिस खेलने के लिए पहने जाने वाले जूते पहने थे।

'क्या आप आ रही हैं?' उसने अपनी माँ ने पूछा।

'हाँ, मैं बस एक मिनट में आई, लेकिन मुझे कैंची नहीं मिल रही!'

पीटर ने तलाश में उनकी मदद की और उनकी प्रसाधन सामग्री के दराज़ को छान मारा। 'अब इतनी अव्यवस्था मत फैलाओ, पीटर,' उसकी माँ बड़बड़ाई।

मुझे पीटर का जवाब नहीं सुनाई दिया, लेकिन वह ज़रूर गुस्ताख़ी भरा होगा, क्योंकि उन्होंने पीटर की बाँह पर चोट मारी। उसने उसका जवाब वैसे ही दिया, उसकी माँ ने पूरी ताक़त लगाकर उसे मुक्का मारा और पीटर ने झूठमूठ के डर के भाव के साथ अपनी बाँह खींच ली। 'आ जाओ, लड़की!'

मिसेज़ फ़ॉन डान अपनी जगह पर खड़ी रह गईं। पीटर ने उनकी कलाइयाँ पकड़ी और उन्हें पूरे कमरे में घुमा दिया। वे हँसीं, रोईं, उसे डाँटा, हाथ-पैर चलाए, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। पीटर अपनी क़ैदी को अटारी की सीढ़ियों तक ले गया, जहाँ उसे उन्हें छोड़ना पड़ा। मिसेज़ फ़ॉन डी कमरे में वापस आईं और एक गहरी आह निकालकर कुर्सी पर बैठ गईं।

'माँ का अपहरण,' मैंने मज़ाक में कहा।

'हाँ, लेकिन उसने मुझे चोट पहुँचाई।'

मैंने उनके पास गई और उनकी गर्म, लाल कलाइयों को पानी से ठंडा किया। पीटर सीढ़ियों के पास था और फिर से अधीर हो रहा था, वह शेर को पालतू बनाने वाले की तरह बेल्ट अपने हाथ में लिए कमरे में आया। मिसेज़ फ़ॉन डी अपनी जगह से नहीं हिली और डेस्क के पास अपना रूमाल खोजती रहीं। 'तुम्हें पहले माफ़ी माँगनी होगी।'

'ठीक है, मैं माफ़ी माँगता हूँ, लेकिन इसका कारण यह है कि अगर मैंने माफ़ी नहीं माँगी, तो हम आधी रात तक यहीं रहेंगे।'

मिसेज़ फ़ॉन डी को भी हँसना पड़ा। वे उठकर दरवाज़े की तरफ़ गईं, जहाँ पर उन्हें लगा कि उन्हें हमें (यानी पापा, माँ और मुझे; हम लोग काम में व्यस्त थे।) 'यह घर पर ऐसा नहीं था,' उन्होंने कहा। 'मैं उसे इतनी ज़ोर से बेल्ट से मारती कि वह सीधे सीढ़ियों पर गिरता! वह कभी इतना ढीठ नहीं रहा। यह पहली बार नहीं है कि इसने सज़ा पाने का काम किया है। आधुनिक बच्चों की आधुनिक परवरिश का यही नतीजा होता है। मैं अपनी माँ को कभी इस तरह नहीं पकड़ सकती थी। मि. फ्रैंक, क्या आपने कभी अपनी माँ से ऐसा बर्ताव किया था?' वे बहुत नाराज़ थीं, आगे-पीछे घूमते हुए उनके मन में जो आ रहा था, वे कह रही थीं और वे तब तक ऊपर नहीं गई थीं। आख़िरकार वे बाहर निकलीं।

पाँच मिनट से भी कम समय में वे वापस आईं, उनके गाल फूले हुए थे और आकर उन्होंने

अपना ऐप्रन कुर्सी पर फेंक दिया। मैंने जब उनसे पूछा कि उनका काम हो गया, तो उनका कहना था कि वे नीचे जा रही हैं। वे तूफ़ान की तरह सीढ़ियों से उतरीं, शायद वे सीधे अपने पुत्ती की बाँहों में जाकर गिरीं।

आठ बजे तक वे ऊपर नहीं आईं, उसके बाद अपने पति के साथ आईं। पीटर को खींचकर निकाला गया, बेरहमी से डाँटा गया और उस पर गालियों की बौछार की गई: बदतमीज़ नाकारा बिगड़ा हुआ लड़का, ख़राब मिसाल, ऐन ऐसी है, मारगोट वैसी है, बाक़ी मैं सुन नहीं सकी।

आज फिर से सब कुछ शांत हो गया लगता है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। मंगलवार और बुधवार को हमारी प्रिय महारानी ने देश को संबोधित किया। वे छुट्टी पर जा रही हैं, ताकि नीदरलैंड लौटने पर उनकी सेहत अच्छी रहे। उन्होंने 'जल्दी ही जब मैं हॉलैंड लौटूँगी', 'तेज़ी से मुक्ति,' 'पराक्रम,' और 'भारी बोझ' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया।

उसके बाद प्रधानमंत्री शेरब्रूंडी का भाषण हुआ। उनकी आवाज़ किसी छोटे बच्चे की तरह है, जिसे सुनते ही माँ ने कहा, 'ऊह।' एक पादरी, जिन्होंने ज़रूर मि. ईडल से आवाज़ उधार ली होगी, ने बात समाप्त करते हुए कहा कि ईश्वर सभी यहूदियों की रक्षा करे, जो यातना शिविरों में, जेल में हैं और उन सबकी भी, जो जर्मनी में काम कर रहे हैं।

बृहस्पतिवार, 11 मई, 1944

प्यारी किटी,

मैंने अपने कबाड़ के डिब्बे को, जिसमें मेरा फ़ाउंटेन पेन भी शामिल है, ऊपर छोड़ दिया है और मुझे बड़े लोगों की झपकी (ढाई बजे तक) में रुकावट डालने की अनुमति नहीं है, इसलिए तुम्हें पेंसिल से लिखी चिट्ठी से काम चलाना पड़ेगा।

अब चाहे यह सुनकर तुम्हें कितना भी अजीब लगे, लेकिन इस पल मैं बहुत व्यस्त हूँ। मेरे पास अपने काम को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। क्या तुम्हें बताऊँ कि मेरे पास करने का क्या कुछ है? कल तक मुझे गैलीलियो गैलीलि की जीवनी का पहला खंड पूरा करना है, क्योंकि उसे पुस्तकालय को लौटाना है। मैंने कल उसे पढ़ना शुरू किया और 320 पन्नों में से मैं 220 तक पहुँच गई हूँ, तो मैं उसे पूरा कर ही लूँगी। अगले हफ़्ते मुझे *पैलेस्टाइन ऐट द क्रॉसरोड्स* और गैलीलि का दूसरा खंड पढ़ना है। उसके अलावा मैंने सम्राट चार्ल्स V की जीवनी के पहले खंड को कल पूरा पढ़ लिया था और अब भी मुझे अपने जमा किए गए कई वंशावली चार्ट्स व दर्ज की गई जानकारी पर काम करना है। मुझे अपनी कई किताबों से लिए गए विदेशी शब्दों के तीन पन्नों को लिखना, याद करना और उन्हें ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना है। फिर मुझे अपने बिखरे हुए फ़िल्मी सितारों को तरतीब से लगाना है, लेकिन क्योंकि उस काम में कई दिन लग सकते हैं और प्रोफ़ेसर ऐन तो काम के समंदर में गले तक डूबी हैं, तो उन्हें कुछ

और दिन बेतरतीबी में ही बिताने होंगे उसके बाद थिसॉइस, पीलियस, ऑफ़ियस, जेसन और हरक्यूलिस हैं, जो सुलझने का इंतज़ार कर रहे हैं, क्योंकि उनके कारनामे मेरे दिमाग़ में आड़े-तिरछे घूम रहे हैं, जैसे किसी पोशाक में कई रंग के धागों का ताना-बाना होता है। मायरॉन और फ़िडियस पर भी तुरंत ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है, वरना मैं पूरी तरह से भूल जाऊँगी कि पूरी तसवीर में वे कहाँ सही बैठते हैं। यही बात सेवन ईयर्स वॉर और नाइन ईयर्स वॉर पर भी लागू होती है। अब सब कुछ घालमेल हो रहा है। मेरी जैसी याददाश्त के साथ और क्या हो सकता है! ज़रा सोचो कि अस्सी साल की होने पर मैं कितनी भुलक्कड़ हो जाऊँगी!

एक और बात, *बाइबल* से जुड़ी। नहाती हुई सुज़ाना की कहानी तक पहुँचने में मुझे कितना समय लगेगा? इसके अलावा सोडॉम और गमोरा से उनका क्या मतलब है? कितना कुछ सीखने और जानने को है। इस बीच, मैंने शार्लोट और पैलेटिन को मुश्किल हालात में छोड़ दिया है।

तुम देख सकती हो, किटी कि मैं कितनी अधिक व्यस्त हूँ!

अब कुछ और। तुम तो काफ़ी समय से जानती हो कि मेरी सबसे बड़ी इच्छा पत्रकार बनने और बाद में एक मशहूर लेखिका बनने की है। हमें इंतज़ार करना होगा और देखना होगा कि ये भव्य भ्रम कभी सच होंगे भी या नहीं, लेकिन फ़िलहाल अब तक मेरे पास विषयों की कोई कमी नहीं है। वैसे भी युद्ध समाप्त हो जाने के बाद मैं *सीक्रेट अनेक्स* नामक एक किताब छपवाना चाहूँगी। यह देखना बाक़ी है कि मैं सफल होती हूँ या नहीं, लेकिन मेरी डायरी उसकी बुनियाद का काम करेगी।

मुझे 'केडी की ज़िंदगी' पूरी करनी है। मैंने कहानी का बाक़ी हिस्सा सोच लिया है। सैनेटोरियम में ठीक हो जाने के बाद केडी घर वापस जाती है और हान्स को लिखना जारी रखती है। 1941 का समय है और उसे यह पता लगाने में देर नहीं लगती कि हान्स नाज़ियों से सहानुभूति रखता है और चूँकि केडी यहूदियों और अपनी दोस्त मरियाना की हालत को लेकर बहुत चिंतित होती है, वे दोनों दूर होने लगते हैं। वे मिलते हैं और फिर साथ आ जाते हैं, लेकिन उनके बीच संबंध टूट जाता है, जब हान्स किसी और लड़की के साथ घुलने-मिलने लगता है। केडी बिखर जाती है, लेकिन अच्छी नौकरी की चाह रखने के कारण वह नर्सिंग की पढ़ाई करती है। पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने पिता के दोस्त के कहने पर वह स्विट्ज़रलैंड में एक टीबी सैनेटोरियम में नर्स के रूप में काम करने लगती है। अपनी पहली छुट्टी के दौरान वह लेक कोमो जाती है, जहाँ उसकी मुलाक़ात हान्स से होती है। वह उसे बताता है कि दो साल पहले उसने केडी के बाद ज़िंदगी में आई लड़की के साथ शादी कर ली, लेकिन विषाद में आकर उसकी पत्नी ने आत्महत्या कर ली। अब केडी को देखने के बाद उसे महसूस हो रहा है कि वह केडी को कितना चाहता है और एक बार फिर वह शादी का प्रस्ताव रखता है। केडी मना कर देती है, जबकि इतना कुछ होने के बावजूद वह उसे चाहती है। लेकिन उसका स्वाभिमान उसे रोक देता

है। हान्स चला जाता है और कई साल बाद केडी को पता चलता है कि वह इंग्लैंड में है, जहाँ वह अपनी बीमारी से लड़ रहा होता है।

सत्ताईस साल की उम्र में केडी एक संपन्न व्यक्ति साइमन से शादी करती है। वह उसे चाहने लगती है, लेकिन उतना नहीं, जितना कि वह हान्स को चाहती थी। उसकी दो बेटियाँ व एक बेटा है, लिलियन, ज्यूडिथ और निको। साइमन और वह एक साथ ख़ुश हैं, लेकिन उसके दिल-दिमाग़ में कहीं हान्स हमेशा मौजूद रहता है। एक रात वह उसका सपना देखती है और उसे हमेशा के लिए विदा कह देती है।

यह भावनात्मक बकवास नहीं है: यह पापा के जीवन पर आधारित है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 13 मई, 1944

मेरी प्यारी किटी,

कल पापा का जन्मदिन और मम्मी-पापा की शादी की उन्नीसवीं सालगिरह थी, महिला सफ़ाईकर्मी नहीं आई थी... सूरज ऐसे चमक रहा था, जैसे 1944 के साल में पहले कभी न चमका हो। हमारे चेस्टनट पेड़ पर बहार आई हुई है। वह पत्तियों से भरा है और पिछले साल के मुक़ाबले ज़्यादा ख़ूबसूरत लग रहा है।

पापा को मि. कुगलर से लिन्नैउस की जीवनी, मि. कुगलर से प्रकृति पर एक किताब, दुसे से ऐम्स्टर्डम की नहरों पर एक पुस्तक मिली। फ़ॉन डान परिवार ने उन्हें एक बड़ा सा बॉक्स दिया (उसे इतनी अच्छी तरह लपेटा गया था कि किसी पेशेवर इंसान का काम है), उसमें तीन अंडे, एक बियर की बोतल, योगर्ट का जार और एक हरे रंग की टाई थी। उसके मुक़ाबले हमारा शीरे का जार बहुत मामूली लग रहा था। मीप और बेप के कारनेशन्स के मुक़ाबले मेरे गुलाबों की ख़ुशबू बहुत अच्छी थी। उनके नाज़ -नखरे उठाए गए। सीमोन्स की बेकरी से पेटिफ़र (छोटे आकार के मिष्ठान्न) आए, बहुत स्वादिष्ट थे! पापा ने हमें स्पाइस केक खिलाया, पुरुषों को बियर मिली और महिलाओं को योगर्ट। सब कुछ बहुत शानदार था!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार 16 मई, 1944

मेरी प्यारी किटी, कुछ अलग करते हुए (कई दिनों से हमने ऐसा नहीं किया) मैं मि. और मिसेज़ फ़ॉन डी के बीच कल रात हुई छोटी सी बातचीत का वर्णन कर रही हूँ:

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'जर्मनों के पास अटलांटिक वॉल को मज़बूत करने के लिए काफ़ी वक़्त है

और वे ब्रिटिश को रोकने के लिए कुछ न कुछ ज़रूर करेंगे। ग़ज़ब की बात है कि जर्मन कितने ताक़तवर हैं!'

मि. फ़ॉन डी: 'हाँ, वह तो है!'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'हाँ है!'

मि. फ़ॉन डी: 'वे इतने शक्तिशाली हैं कि आख़िर में लड़ाई वही जीतेंगे, तुम यही कहना चाहती हो?'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'हो सकता है। मैं आश्वस्त नहीं हूँ कि वे नही जीतेंगे।'

मि. फ़ॉन डी: 'मैं तो उसका जवाब नहीं दूँगा।'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'तुम हमेशा आख़िर में ऐसा ही करते हो। हर बार भावनाओं में बह जाते हो।'

मि. फ़ॉन डी: 'नहीं, मैं ऐसा नहीं करता। मैं हमेशा अपने जवाबों को न्यूनतम रखता हूँ।'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'लेकिन तुम्हारे पास हमेशा जवाब होता है और तुम्हें हमेशा सही होना होता है! तुम्हारे पूर्वानुमान शायद ही कभी सच होते हों!'

मि. फ़ॉन डी: 'अब तक वे हुए हैं।'

मिसेज़ फ़ॉन डी: 'नहीं, बिलकुल नहीं हुए हैं। तुमने कहा था कि चढ़ाई पिछले साल शुरू हो जाएगी, फ़िनलैंड को तो अब तक युद्ध से बाहर हो जाना चाहिए था, इटली के अभियान को तो पिछली सर्दी में ख़त्म हो जाना चाहिए था और रूसियों को तो अब तक लेमबर्ग पर कब्ज़ा कर लेना चाहिए था। मुझे तुम्हारे पूर्वानुमानों से ज़्यादा उम्मीद नहीं रहती।'

मि. फ़ॉन डी (उछलकर खड़े होते हुए): 'तुम अपना मुँह बंद क्यों नहीं करतीं? मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि कौन सही है; किसी दिन तुम मुझे ताने मारते-मारते थक जाओगी। मैं अब एक मिनट और तुम्हारी शिकायतें बर्दाश्त नहीं कर सकता। देखना, एक दिन तुम्हें अपनी बातें वापस लेनी होंगी!'

(पहला अंक समाप्त।)

दरअसल, मैं अपनी हँसी नहीं रोक पाई। माँ भी नहीं और यहाँ तक कि पीटर भी अपनी हँसी रोकने के लिए अपने होंठ काट रहा था। ये बेवकूफ़ बड़े लोग। युवा पीढ़ी पर इतनी टिप्पणियाँ करने से पहले उन्हें कुछ चीज़ें ख़ुद सीखनी चाहिए!

शुक्रवार से हम अपनी खिड़कियाँ रात को फिर से खोलने लगे हैं।

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

हमारे अनेक्स परिवार की दिलचस्पी किसमें हैं

(पाठ्यक्रमों व पठन सामग्री से जुड़ा एक सुनियोजित सर्वेक्षण)

मि. फ़ॉन डान: कोई पाठ्यक्रम नहीं; नॉर एनसाइक्लोपीडिया और लेक्सिकॉन में कई चीज़ें खोजते हैं; जासूसी कहानियाँ, चिकित्सा किताबें, रोमांचक या घिसी-पिटी प्रेम कहानियाँ पढ़ना पसंद करते हैं।

मिसेज़ फ़ॉन डान: अंग्रेज़ी में पत्राचार पाठ्यक्रम; जीवनी पर आधारित उपन्यास और कभी-कभार अन्य प्रकार के उपन्यास पढ़ना पसंद करती हैं।

मि. फ्रैंक: अंग्रेज़ी (डिकन्स!) व थोड़ी लैटिन सीख रहे हैं; कभी उपन्यास नहीं पढ़े, लेकिन लोगों व जगहों के गंभीर, बल्कि शुष्क विवरण पसंद करते हैं।

मिसेज़ फ्रैंक: अंग्रेज़ी में पत्राचार पाठ्यक्रम; जासूसी कहानियों के अलावा सब कुछ पढ़ती हैं।

मि. दुसे: अंग्रेज़ी, स्पैनिश और डच सीख रहे हैं, लेकिन उसका कोई उल्लेखनीय नतीजा दिखाई नहीं देता; सब कुछ पढ़ते हैं; बहुसंख्यक लोगों की राय के साथ चलते हैं।

पीटर फ़ॉन डान: अंग्रेज़ी, फ्रेंच (पत्राचार पाठ्यक्रम) सीख रहा है, डच, अंग्रेज़ी व जर्मन में शॉर्टहैंड, अंग्रेज़ी में वाणिज्यिक पत्रचार, लकड़ी का काम, अर्थशास्त्र व कभी-कभार गणित; शायद ही कभी पढ़ता है, कभी-कभार भूगोल।

मारगोट फ्रैंक: अंग्रेज़ी, फ्रेंच व लैटिन में पत्राचार पाठ्यक्रम, अंग्रेज़ी, जर्मन व डच में शॉर्टहैंड, त्रिकोणिमिति, ज्यामिति, यांत्रिकी, भौतिकी, रसायन शास्त्र, बीजगणित, अंग्रेज़ी साहित्य, फ्रेंच साहित्य, जर्मन साहित्य, डच साहित्य, बहीखाता लिखना, भूगोल, आधुनिक इतिहास, जीव विज्ञान, अर्थशास्त्र; सब कुछ पढ़ती है, धर्म व चिकित्सा को प्राथमिकता देती है।

ऐन फ्रैंक: अंग्रेज़ी, जर्मन व डच में शॉर्टहैंड, ज्यामिति, बीजगणित, इतिहास, भूगोल, कला इतिहास, माइथॉलोजी, जीव विज्ञान, बाइबल इतिहास, डच साहित्य; इतिहास व जीवनी पढ़ना पसंद है, चाहे वे नीरस हों या फिर रोमांचक (कभी-कभार उपन्यास और हल्की-फुल्की किताबें)।

शुक्रवार, 19 मई, 1944

प्यारी किटी,

कल मुझे बहुत गंदा लगा। उल्टी (वह भी मुझे!), सिरदर्द, पेटदर्द और बाक़ी जिस चीज़ की भी तुम कल्पना कर सकती हो। आज मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ। मैं भूखी हूँ, लेकिन मेरे ख़याल से मैं रात के खाने के लिए तैयार ब्राउन बीन्स नहीं खाऊँगी।

मेरे व पीटर के बीच सब कुछ सही चल रहा है। बेचारे लड़के को मेरे मुक़ाबले कोमलता की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। रात का चुंबन पाते हुए वह अब भी शर्माता है और फिर एक बार और चाहता है। क्या मैंने बॉश की जगह ले ली है? मुझे फ़र्क़ नहीं पड़ता। वह यह जानकर ही बहुत

ख़ुश है कि कोई उसे प्यार करता है।

अपनी कठिन विजय के बाद मैंने ख़ुद को स्थिति से थोड़ा अलग कर लिया है, लेकिन तुम यह मत समझना कि मेरा प्यार ठंडा पड़ गया है। पीटर बहुत प्यारा है, लेकिन मैंने अपने अंदरूनी रूप का दरवाज़ा बंद कर दिया है; अगर कभी वह उस ताले का तोड़ना चाहे, तो उसे ज़्यादा कोशिश करनी होगी!

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

शनिवार, 20 मई, 1944

प्यारी किटी,

कल रात जब मैं अटारी से नीचे आई, तो मैंने गौर किया कि जैसे ही मैं कमरे में पहुँची, तो कारनेशन्स का गुलदान गिरा हुआ था। माँ नीचे झुककर अपने हाथों से पानी साफ़ कर रही थीं ओर मारगोट फ़र्श से मेरे काग़ज़ों को उठा रही थी। 'क्या हुआ?' मैंने अनिष्ट की आशंका में बेचैनी से पूछा और उनके जवाब देने से पहले मैंने कमरे में हुए नुक़सान का जायज़ा ले लिया। मेरा वंशवृक्ष का पूरा फ़ोल्डर, मेरी अभ्यास पुस्तिकाएँ, मेरी पाठ्यपुस्तकें, सब कुछ पानी में था। मैं रोने को हो आई और इतनी परेशान हो गई कि मैंने जर्मन में बोलना शुरू कर दिया। मुझे अब एक शब्द भी याद नहीं, लेकिन मारगोट के मुताबिक़ मैंने बेहिसाब नुक़सान, भयानक, अपूरणीय क्षति और कई अन्य शब्द कहें पापा की हँसी छूट गई और माँ व मारगोट भी उनके साथ शामिल हो गए, लेकिन मुझे रोने का मन हुआ क्योंकि मेरा पूरा काम व विस्तृत नोट्स बरबाद हो गए थे।

मैंने नज़दीक से देखा, तो पाया कि ख़ुशक़िस्मती से 'बेहिसाब नुक़सान' इतना बुरा नहीं था, जितनी कि मैंने अपेक्षा की थी। मैंने आपस में चिपके पन्नों को सावधानी से अलग किया और फिर उन्हें कपड़े सुखाने वाले तार पर सूखने के लिए टाँग दिया। वह नज़ारा इतना मज़ेदार था कि मुझे भी हँसना पड़ा। मारिया द मेदची, चार्ल्स V, ऑरेंज के विलियम और मेरी ऑन्तोयनेत एक साथ सूख रहे थे।

'यह जातिगत शुद्धता के विपरीत है,' मि. फ़ॉन डान ने मज़ाक किया।

अपने काग़ज़ पीटर को सौंपकर मैं वापस नीचे चली गई।

'कौन सी किताबें ख़राब हुई हैं,' मैंने मारगोट से पूछा जो, उन्हें देख रही थी। 'बीजगणित,' मारगोट ने कहा। लेकिन क़िस्मत देखो कि मेरी बीजगणित किताब पूरी तरह ख़राब नहीं हुई थी। मैं तो चाहती थी कि वह सीधे गुलदान में गिरे। मुझे कोई किताब कभी उतनी बुरी नहीं लगी, जितनी कि वह लगती थी। आवरण के अंदर के पन्ने पर कम से बीस लड़कियों के नाम लिखे थे, जिन्होंने मुझसे पहले यह किताब ली थी। वह पुरानी, पीली, विभिन्न लिखावटों से भरी थी, जिसमें शब्द काटे हुए थे और कई तरह के सुधार किए गए थे। अगली बार जब मैं बुरे

मूड में हुई तो मैं उसके टुकड़े कर दूँगी!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार, 22 मई, 1944

प्यारी किटी,

20 मई को पापा शर्त हार गए और उन्हें मिसेज़ फ़ॉन डान को योगर्ट के पाँच जार देने पड़े: हमला अब तक शुरू नहीं हुआ था। मैं यह कह सकती हूँ कि सारा ऐम्स्टर्डम, समूचा हॉलैंड, बल्कि यूरोप का पूरा पश्चिमी तट, स्पेन तक, सभी रोज़ हमले की बात, उस पर विवाद कर रहे थे, शर्त लगा रहे थे और... उम्मीद कर रहे थे।

यह असमंजस उत्तेजना के चरम पर पहुँच गया है; जिन्हें हम 'अच्छा' डच समझते हैं, ज़रूरी नहीं कि उन सबने ब्रिटिशों में अपना विश्वास बनाए रखा हो और न ही हर कोई यह जो यह ब्रिटिश दिखावा कोई कुशल कूटनीतिक कदम है। लोग महान कृत्यों की अपेक्षा करते हैं - महान, वीरतापूर्ण कार्य।

कोई भी बहुत दूर तक नहीं देख सकता, किसी ने भी इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि ब्रिटिश अपने देश के लिए लड़ रहे हैं; हर कोई सोचता है कि यह इंग्लैंड का फ़र्ज़ है कि वह जितनी जल्दी हो सके, हॉलैंड को बचाए। ब्रिटिश की हमारे प्रति क्या बाध्यता है? डच लोगों ने ऐसा क्या किया है कि वे किसी उदार सहायता की अपेक्षा कर रहे हैं? डच लोग ग़लत समझ रहे हैं। अपने दिखावे के बावजूद यह साफ़ है कि युद्ध के लिए ब्रिटिश को उन छोटे-बड़े देशों से अधिक दोषी नहीं माना जा सकता, जिन पर जर्मनी का कब्ज़ा है। ब्रिटिश भी अपनी तरफ़ से कोई सफ़ाई नहीं देने वाले; सच है कि जब जर्मनी ख़ुद को फिर से हथियारबंद कर रहा था, तो वे सो रहे थे, लेकिन उनके साथ-साथ जर्मनी की सीमा से लगे अन्य देश भी सो रहे थे। ब्रिटेन व बाक़ी दुनिया को पता चल चुका है कि शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर गाड़ने से काम नहीं होता, अब उनमें से हरेक, ख़ासकर इंग्लैंड को शुतुरमुर्ग की अपनी नीति का भारी ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ रहा है।

कोई भी देश अपने लोगों का बलिदान बिना किसी कारण नहीं करता और दूसरे के हित में तो बिलकुल भी नहीं और ब्रिटेन भी इसका अपवाद नहीं है। हमला होगा, मुक्ति व स्वतंत्रता भी किसी दिन आएगी; फिर भी कब्ज़े के क्षेत्र नहीं, बल्कि ब्रिटेन उस पल को चुनेगा।

यह बात सुनकर बहुत दुख व निराशा हुई है कि कई लोगों ने हम यहूदियों के प्रति अपना रवैया बदल दिया है। हमें बताया गया है कि कई ऐसी जगहों में यहूदी विरोधी भावना पनप गई है, जहाँ हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इस तथ्य ने हम सबको बहुत गहरे प्रभावित किया है। नफ़रत की वजह को समझा जा सकता है, हो सकता है कि यह इंसान से जुड़ी है, लेकिन

इससे यह सही नहीं हो जाती। ईसाइयों के मुताबिक, यहूदी अपने रहस्यों को जर्मनों को बता रहे हैं, अपने मददगारों को बदनाम कर रहे हैं और उनकी भयावह नियति और दंडों का कारण बन रहे हैं, जो कि कई लोगों को दिए जा चुके हैं। यह सब सही है। लेकिन जैसा कि हर चीज़ में होता है, उन्हें इस बात को दोनों पक्षों की ओर देखना चाहिए: अगर ईसाई हमारी जगह होते, तो क्या वे अलग ढंग से बर्ताव करते? जर्मन दबाव पड़ने पर क्या कोई भी, चाहे वह ईसाई हो या फिर यहूदी, ख़ामोश रह सकता है? हर कोई जानता है कि व्यावहारिक तौर पर यह असंभव है, तो फिर वे यहूदियों से नामुमकिन की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

भूमिगत दायरों में यह कहा जा रहा है कि जो जर्मन यहूदी युद्ध से पहले हॉलैंड चले गए थे और जिन्हें अब पोलैंड भेजा जा रहा है, उन्हें अब यहाँ वापस आने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उन्हें हॉलैंड में शरण का अधिकार दिया गया था, लेकिन हिटलर के जाने के बाद उन्हें वापस जर्मनी चले जाना चाहिए।

जब आप ऐसा कुछ सुनते हैं, तो आपको हैरानी होने लगती है कि वे इतनी लंबी और भयानक लड़ाई क्यों लड़ रहे हैं। हमें हमेशा यह बताया जाता है कि हम स्वतंत्रता, सत्य और न्याय के लिए लड़ रहे हैं! युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है और उससे पहले ही फूट पड़ चुकी है और यहूदियों को कमतर समझा जा रहा है। यह बहुत दुखद, बहुत ही दुखद है कि पुरानी कहावत की अनगिनत बार पुष्टि होती रही है: 'एक ईसाई जो करता है, वह उसका अपना दायित्व है, एक यहूदी जो करता है, वह सभी यहूदियों को दर्शाता है।'

ईमानदारी से कहूँ, तो मैं नहीं समझ पाती कि कैसे अच्छे, ईमानदार, सच्चे लोगों का राष्ट्र हमारे प्रति इस तरह की राय रखता है। हम, जो कि सबसे अधिक दमित, अभागे और दयनीय लोग हैं। मुझे सिर्फ़ एक उम्मीद है कि यह यहूदी विरोधी भावना क्षणिक है; कि डच अपने सच्चे रूप में आएँगे कि वे न्याय के रास्ते से कभी नहीं डिगेंगे, क्योंकि वह अन्याय होगा!

अगर वे इस भयावह धमकी को अमल में आएँगे, तो हॉलैंड में बचे-खुचे मुट्ठी भर यहूदियों को जाना होगा। हमें कंधों पर अपनी गठरी टाँगकर आगे बढ़ना होगा, इस ख़ूबसूरत देश से दूर जाना होगा, जिसने कभी हमें पनाह दी थी और जो अब हमसे मुँह मोड़ चुका है।

मुझे हॉलैंड से प्यार है। मुझे कभी उम्मीद थी कि यह मेरा वतन बनेगा, क्योंकि मैं अपना देश खो चुकी थी। मुझे अब भी वही आशा है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बृहस्पतिवार, 25 मई, 1944

प्यारी किटी,

बेप की सगाई हो गई है! यह ख़बर बहुत हैरान कर देने वाली नहीं है, हालाँकि हममें से कोई भी

इस बात से उतना ख़ुश नहीं है। हो सकता है कि बेरतुस एक अच्छा, गंभीर, मज़बूत नौजवान है, लेकिन बेप उसे प्यार नहीं करती और मेरे ख़याल से यह पर्याप्त कारण है उसे बेरतुस से शादी के ख़िलाफ़ सलाह देने का।

बेप दुनिया में आगे बढ़ना चाहती है और बेरतुस उसे पीछे खींच रहा है; वह एक श्रमिक है, जिसकी कुछ बड़ा करने की कोई ख़्वाहिश नहीं है और मुझे नहीं लगता कि इस बात से बेप ख़ुश होगी। अपने अनिर्णय को समाप्त करने की बेप की इच्छा को मैं समझ सकती हूँ; चार हफ़्ते पहले उसने बेरतुस को नकारने का फ़ैसला किया, लेकिन फिर उसे और भी बुरा लगा। इसलिए उसने एक चिट्ठी लिखी और अब उसकी सगाई हो गई है।

इसमें कई कारक शामिल हैं। पहला, बेप के बीमार पिता, जिन्हें बेरतुस बहुत पसंद है। दूसरे, वह वुश्कल परिवार की सबसे बड़ी लड़की है और उसकी माँ उसे अविवाहित होने का ताना देती है। तीसरे, वह अभी चौबीस साल की हुई है और बेप के लिए वह काफ़ी बड़ी बात है।

माँ का कहना था कि बेहतर होता अगर बेप का बेरतुस से प्रेम संबंध होता। पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे बेप के लिए अफ़सोस होता है और मैं उसके अकेलेपन को समझ सकती हूँ। ख़ैर जो भी हो, उनकी शादी तो युद्ध के बाद ही हो सकती है, क्योंकि बेरतुस छिपा हुआ है या फिर भूमिगत हो गया है। इसके अलावा उनके पास एक पैसा तक नहीं है और दुल्हन का कुछ भी सामान नहीं है। बेप के लिए बहुत अफ़सोसनाक स्थिति है, हमारी शुभकामनाएँ उसके साथ हैं। मैं सिर्फ़ इतनी उम्मीद कर सकती हूँ कि उसके प्रभाव में बेरतुस बेहतर बने या फिर बेप को कोई और लड़का मिल जाए, जो जानता हो कि उसे कैसे सराहा जाए!

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

उसी दिन

हर रोज़ कुछ न कुछ होता है। आज सुबह मि. फ़ॉन हूवन गिरफ़्तार हो गए। उन्होंने दो यहूदियों को अपने घर में छिपाया हुआ था। हमारे लिए यह बहुत बड़ा धक्का है, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वे बेचारी यहूदी फिर से नर्क के कगार पर हैं, बल्कि इसलिए भी यह मि. फ़ॉन हूवन के लिए भी बहुत भयावह है।

दुनिया पूरी तरह से उलट गई है। सबसे भद्र लोगों को यातना शिविरों, जेलों व एकांतवास में भेजा जा रहा है, जबकि घटिया से भी घटिया लोग जवान, बूढ़े, अमीर व ग़रीब लोगों पर राज कर रहे हैं। एक काला बाज़ारी के लिए पकड़ा जाता है, तो दूसरा यहूदियों या अन्य अभागे लोगों को पनाह देने के लिए। अगर आप नाज़ी नहीं हैं, तो आप नहीं जानते कि अगले दिन आपके साथ क्या होने वाला है।

मि. फ़ॉन हूवन हमारे लिए भी बहुत बड़ा नुक़सान हैं। बेप अकेले इतने सारे आलू यहाँ तक नहीं ला सकती, न ही उन्हें ऐसा करना चाहिए, तो ऐसे में अब हमारे पास यही एक रास्ता है कि

हम कम आलू से काम चलाएँ। मैं बताती हूँ कि मेरे दिमाग़ में क्या चल रहा है, लेकिन इससे यहाँ की ज़िंदगी बेहतर तो नहीं हो पाएगी। माँ का कहना है कि हम नाश्ता नहीं करेंगे, दिन के खाने में दलिया और डबलरोटी खाएँगे और तले हुए आलुओं को रात के खाने में खाएँगे और अगर मुमकिन हो तो हफ़्ते में एक या दो बार सब्ज़ियाँ या लेटस खाएँगे। बस, यही सब है। हम भूखे रहेंगे, लेकिन पकड़े जाने से बदतर तो कुछ भी नहीं है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 26 मई, 1944

मेरी प्यारी किटी,

आख़िरकार मैं खिड़की के फ्रेम की दरार के सामने अपनी मेज़ पर बैठ सकती हूँ और तुम्हें वह सब कुछ लिख सकती हूँ, जो मैं कहना चाहती हूँ।

मैं काफ़ी परेशान महसूस कर रही हूँ, जितना कि इतने महीनों में नहीं रही। सेंधमारी के बाद भी मैंने बाहर व भीतर से इतना टूटा हुआ महसूस नहीं किया था। एक तरफ़, मि. फ़ॉन हूवन की गिरफ़्तारी की ख़बर, यहूदी सवाल (घर में हर कोई इस पर बात करता है), हमला (जिसकी आशंका बहुत समय से है), ख़राब खाना, तकलीफ़देह माहौल, पीटर को लेकर मेरी निराशा है। दूसरी तरफ़, बेप की सगाई, व्हिट्सन रिसेप्शन, फूल, मि. कुगलर का जन्मदिन, केक, कैबरे, फ़िल्मों व संगीत-समारोहों की कहानियाँ हैं। वह फ़ासला, वह बड़ा-सा फ़ासला हमेशा रहता है। एक दिन हम छिपकर जीने के हास्यपूर्ण पक्ष पर हँस रहे होते हैं, तो अगले ही दिन (ऐसे दिन काफ़ी हैं) हम डरे हुए होते हैं और भय, तनाव व निराशा को हमारे चेहरों पर पढ़ा जा सकता है।

मीप व मि. कुगलर हमारा व छिपे हुए सभी लोगों का बोझ सबसे ज़्यादा सहन करते हैं। मीप हर काम करके उसे उठा रही हैं और मि. कुगलर हम आठों की ज़िम्मेदारी लेकर यह काम कर रहे हैं, कई बार यह सब इतना अधिक होता है कि दबे हुए तनाव और थकान से उनके लिए कुछ बोलना तक मुश्किल हो जाता है। मि. क्लेमन और बेप हमारा इतनी अच्छी तरह ध्यान भी रखते हैं, लेकिन वे चाहे कुछ घंटों या कुछ दिनों के लिए ही सही, लेकिन अनेक्स को अपने दिलो-दिमाग़ से हटा पाने में कामयाब होते हैं। उनकी अपनी चिंताएँ हैं, मि. क्लेमन की सेहत से जुड़ी और बेप की अपनी सगाई की, जो फ़िलहाल तो आशाजनक नहीं लगती। लेकिन घूमने भी जाते है, दोस्तों से मिलते हैं, सामान्य लोगों की तरह उनकी अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी है, इसलिए कभी-कभार उन्हें तनाव से राहत मिल जाती है, चाहे वह बहुत कम समय के लिए हो, जबकि हमें तनाव से कभी राहत नहीं मिलती, कभी नहीं मिली, दो साल के हमारे यहाँ रहने के दौरान तो एक बार भी नहीं मिली। यह बढ़ता दमन, न झेला जा सकने वाला बोझ हम पर कब तक रहेगा?

नालियाँ फिर से बंद हो गई हैं। हम पानी नहीं चला सकते, या अगर चलाना भी हो तो बस बूँद-बूँद; हम फ़्लश नहीं कर सकते, इसलिए हमें ब्रश का इस्तेमाल करना पड़ता है; हम अपना गंदा पानी एक बड़े से मिट्टी के मटके में रखते हैं। हम आज का काम तो चला सकते हैं, लेकिन अगर प्लम्बर उसे ठीक नहीं कर सकता, तो क्या होगा। मंगलवार तक नाली ठीक करने कोई नहीं आ सकेगा।

मीप ने हमें किशमिश डबलरोटी भेजी, जिस पर 'ख़ुश व्हिट्सन' लिखा था। ऐसा लगा जैसे कि वह हमारा मज़ाक उड़ा रही हो, क्योंकि हमारे मनोभाव और हमारी परेशानियाँ 'ख़ुशी' से काफ़ी दूर थीं।

फ़ॉन हूवन की घटना के बाद हम सभी काफ़ी डर गए हैं। एक बार फिर आप हर तरफ़ से 'श्श्श' सुन सकते हैं और हम सभी काम ख़ामोशी से कर रहे हैं। पुलिस ने वहाँ दरवाज़ा ज़बरदस्ती खोल लिया था, वह यहाँ भी आसानी से ऐसा कर सकती है! हम क्या करेंगे, अगर कभी... नहीं, मुझे वह सब नहीं लिखना चाहिए। लेकिन यह सवाल मेरे दिमाग़ से निकलने वाला नहीं है; बल्कि इसके उलट, कभी महसूस किए जाने वाले सभी डर आज भयावह रूप से मेरे सामने मँडरा रहे हैं।

आज आठ बजे मुझे नीचे शौचालय अकेले जाना पड़ा। वहाँ पर कोई नहीं था, क्योंकि सभी रेडियो सुन रहे थे। मैं बहादुर बनना चाहती थी, लेकिन वह काम मुश्किल था। मुझे हमेशा से उस बड़े, ख़ामोश से घर के बजाय ऊपर ज़्यादा सुरक्षित महसूस होता है; जब मैं ऊपर से आने वाली उन रहस्मय दबी आवाज़ों और सड़क पर बजने वाले हॉर्न की आवाज़ के साथ अकेली होती हूँ, मुझे जल्दी से काम करना होता है और काँपने से बचने के लिए ख़ुद को याद दिलाना पड़ता है कि मैं कहाँ पर हूँ।

पापा के साथ बातचीत के करके मीप का रवैया हमारी तरफ़ बहुत अच्छा हो गया है। लेकिन मैंने तो तुम्हें उसके बारे में अभी तक बताया ही नहीं। एक दोपहर मीप काफ़ी उत्तेजित होकर ऊपर आई और पापा से सीधे पूछा कि कहीं हमें तो नहीं लगता कि वे भी यहूदी विरोधी भावनाओं से ग्रस्त हैं। पापा भौंचक्के रह गए और तुरंत उसक मन से उस धारणा को निकाला, लेकिन मीप के मन में थोड़ा संदेह बना रहा। वे अब हमारे लिए पहले से ज़्यादा काम करते हैं और हमारी परेशानियों में पहले से ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं, हालाँकि हम नहीं चाहते कि उन्हें अपनी तकलीफ़ों से और परेशान करें। वे कितने अच्छे, कितने भले लोग हैं!

मैं ख़ुद से बार-बार यही पूछती हूँ कि क्या यह बेहतर होता कि हम छिपते नहीं, अब तक मर चुके होते और हमें इतनी परेशानियों से न गुज़रना पड़ता, बाक़ी लोग भी हमारे बोझ से बच जाते। लेकिन इस ख़याल से हम सब बचते हैं। हम अब भी ज़िंदगी से प्यार करते हैं, हम अब तक कुदरत की आवाज़ को नहीं भूले हैं और हम उम्मीद करते रहते हैं... सब कुछ की।

जल्दी कुछ हो जाए, चाहे हवाई हमला ही हो। इस बेचैनी से ज़्यादा हताशा भरा कुछ भी

नहीं है। अंत आ जाए, चाहे वह कितना ही क्रूर क्यों न हो; कम से कम हमें यह तो पता चल जाएगा कि हम विजयी हैं या फिर हार गए हैं।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बुधवार, 31 मई, 1944

प्यारी किटी,

शनिवार, रविवार, सोमवार और मंगलवार इतनी गर्मी थी कि मैं अपना फ़ाउंटेन पेन तक नहीं पकड़ पाई, इसी वजह से तुम्हें कुछ नहीं लिख सकी। शुक्रवार को नालियाँ बंद थीं, शनिवार को उन्हें ठीक किया गया। मिसेज़ क्लेमन दोपहर में हमसे मिलने आई और हमें योपी के बारे में बताया, वह और जैक फ़ॉन मार्सन एक ही हॉकी क्लब में हैं। रविवार को बेप हमसे मिलने आए, यह सुनिश्चित करने कि कोई सेंधमारी नहीं हुई है और नाश्ते के लिए रुके। व्हिट मन्डे यानी पवित्र आत्मा के सोमवार के दिन मि. गीज़ ने अनेक्स के पहरेदार की भूमिका निभाई और मंगलवार को हमें अंततः खिड़कियाँ खोलने की अनुमति मिली। हमने कभी-कभार ही ऐसा व्हिट सप्ताहांत देखा हो, जो इतना ख़ूबसूरत और गुनगुना हो। या फिर 'गर्म' बेहतर शब्द होगा। गर्म मौसम अनेक्स में भयावह होता है। अनगिनत शिकायतों की बानगी देने के लिए मैं संक्षेप में इन तपते दिनों का वर्णन करती हूँ:

शनिवार: 'बहुत बढ़िया, कितना अच्छा मौसम है,' हम सबने सुबह कहा। 'काश, इतनी गर्मी न होती,' दोपहर में हमारा ख़याल था, जब खिड़कियों को बंद करना पड़ा।

रविवार: 'गर्मी बर्दाश्त से बाहर है, मक्खन पिघल रहा है, घर में कोई भी ठंडी जगह नहीं है, डबलरोटी सूख रही है, दूध ख़राब हो रहा है, खिड़कियाँ नहीं खोली जा सकतीं। हम बेचारे बहिष्कृत लोग यहाँ घुटकर जी रहे हैं, जबकि बाक़ी सभी लोग अपनी व्हिट्सन छुट्टियों का मज़ा ले रहे हैं।' (मिसेज़ फ़ॉन डी के अनुसार।)

सोमवार: 'मेरे पैर दुख रहे हैं, मेरे पास कुछ ठंडा पहनने को नहीं है, मैं इस गर्मी में नहा नहीं सकती!' सुबह-सवेरे से लेकर देर रात तक यही भुनभुनाहट। वह बहुत बुरा था।

मुझसे गर्मी बर्दाश्त नहीं हो रही है। मुझे ख़ुशी है कि आज हवा चल रही है, लेकिन सूरज भी चमक रहा है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 2 जून, 1944

प्यारी किटी,

'अगर तुम अटारी पर जा रही हो, तो एक छतरी, हो सके तो एक बड़ी सी छतरी लेकर जाना!' इससे तुम 'घर से आने वाली बौछारों' से सुरक्षित रहोगी। एक डच कहावत है: 'पानी से बाहर, पूरी तरह से सुरक्षित', ज़ाहिर है यह युद्ध के समय (बंदूकें!) और छिपे हुए लोगों (कूड़ेदान!) पर लागू नहीं होता। मूशी को कुछ अख़बारों या फिर फ़र्श पर बनी दरारों पर मूत्रत्याग करने की आदत पड़ गई है, तो इसलिए छींटों और उससे भी बदतर गंध से डरने का हमारे पास पर्याप्त कारण है। गोदाम की नई मोर्तें को भी यही समस्या है। अगर किसी के पास कभी कोई ऐसी बिल्ली रही हो, जो प्रशिक्षित न हो, तो वह काली मिर्च व थाइम के अलावा किसी अन्य गंध की कल्पना कर सकती है, जो घर में फैली हुई है।

मेरे पास गोलीबारी से घबराने बचने का एक बिलकुल नया नुस्ख़ा है: जब आवाज़ तेज़ हो जाए, तो सबसे नज़दीकी लकड़ी की सीढ़ियों पर चले जाएँ। कुछ देर ऊपर-नीचे दौड़ें और यह सुनिश्चित करें कि कम से कम एक बार तो आप लड़खड़ाएँ। चर-चर की आवाज़ और दौड़ने व गिरने से होने वाली आवाज़ों से आप गोलीबारी की आवाज़ सुन तक नहीं पाएँगे, उससे चिंतित होना तो दूर की बात है। तुम्हारी अपनी दोस्त ने इस जादुई तरीक़े को कामयाबी के साथ अपनाया है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

सोमवार, 5 जून, 1944

प्यारी किटी,

अनेक्स में नई समस्याएँ हैं। दुसे और फ्रैंक परिवार के बीच मक्खन के बँटवारे को लेकर झगड़ा है। दुसे ने हार मान ली है। दुसे और मिसेज़ फ़ॉन डान के बीच दोस्ती, चुहलबाज़ियाँ, चुंबन और दोस्ताना मुस्कानें। दुसे को महिला साथी की चाहत होने लगी है।

फ़ॉन डान परिवार नहीं समझ पा रहा है कि हमें मि. कुगलर के जन्मदिन पर स्पाइस केक क्यों बनाना चाहिए, जबकि हम अपने लिए नहीं बना सकते। बहुत घटिया बात है। ऊपर का मूड: मिसेज़ फ़ॉन डी को जुकाम है। दुसे के पास यीस्ट की गोलियाँ मिलीं, जबकि हमारे पास नहीं हैं।

फ़िफ़्थ आर्मी ने रोम पर कब्ज़ा कर लिया है। शहर को न तो नष्ट किया गया है और न ही उस पर बमबारी की गई है। हिटलर के लिए एक बड़ा प्रचार।

आलू व सब्ज़ियाँ बहुत कम मात्र में बची हैं। डबलरोटी के एक टुकड़े पर फफूँद लगी थी।

शार्मिनकेल्ट्श (गोदाम की बिल्ली का नाम) काली मिर्च बर्दाश्त नहीं कर सकती। वह कूड़ेदान में सोती है और लकड़ी की छीलन पर अपना नित्यकर्म करती है। उसे रखना नामुमकिन है।

बुरा मौसम। पद कैले और फ्रांस के पश्चिमी तट पर लगातार बमबारी हो रही है। कोई डॉलर

नहीं ख़रीद रहा। सोने में भी दिलचस्पी कम हो गई है। हमारे काले धन के बक्से की भी तली दिखने लगी है। अगले महीने हमारा गुज़ारा कैसे होगा?

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार 6 जून, 1944

मेरी प्यारी किटी,

बारह बजे बीबीसी ने घोषणा की, 'यही ख़ास दिन है'। 'यही वह दिन है।' हमला शुरू हो गया है!

आज सुबह आठ बजे कैले, बुलन, लाव और शेर्बूर के साथ-साथ पद कैले पर (सामान्य की तरह) भारी बमबारी हुई। इसके अलावा कब्ज़े के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों, तट के बीस मील के दायरे के इलाक़े में रहने वालों के लिए ऐहतियाती क़दम के तौर पर बमबारी के लिए तैयार रहने की चेतावनी दी गई। जहाँ संभव हो, ब्रिटिश बमबारी से एक घंटा पहले पर्चे गिराएँगे।

जर्मन समाचारों के अनुसार, ब्रिटिश पैराटूपर फ्रांस के तट पर उतर गए हैं। 'ब्रिटिश लैंडिंग क्राफ़्ट जर्मन नौसेना इकाइयों से मुठभेड़ में लगे हैं,' बीबीसी ने ख़बर दी है।

सुबह नौ बजे नाश्ता करते हुए अनेक्स में इस नतीजे पर पहुँचा गया कि यह तो प्रयोग के तौर पर किया गया है, जैसा कि एक-दो साल पहले दिएप में हुआ था।

दस बजे जर्मन, डच, फ्रेंच और अन्य भाषाओं में बीबीसी प्रसारण: हमला शुरु हो गया है! तो यह 'वास्तविक' आक्रमण है। ग्यारह बजे जर्मन में बीबीसी का प्रसारण: सुप्रीम कमांडर जनरल ड्वाइट आइज़नहावर का भाषण।

अंग्रेज़ी में बीबीसी प्रसारण: 'यह डी-डे है।' जनरल आइज़नहावर ने फ्रासीसी लोगों से कहा: 'अब ज़ोरदार लड़ाई होगी, लेकिन इसके बाद विजय होगी। 1944 का साल संपूर्ण जीत का साल है। गुड लक!'

एक बजे अंग्रेज़ी में बीबीसी प्रसारण: 11,000 विमान आवाजाही कर रहे हैं या थल सेना की टुकड़ियों की सहायता के लिए खड़े हैं और दुश्मनों पर बमबारी कर रहे हैं; शेर्बूर और लाव के बीच के इलाके में 4,000 लैंडिंग क्राफ़्ट्स और छोटी नौकाएँ लगातार पहुँच रही हैं। इंग्लिश और अमेरिकी टुकड़ियाँ पहले ही ज़ोरदार मुठभेड़ में लगी हैं। ख़ेरब्रूंडी, बेल्जियम के प्रधानमंत्री, नॉर्वे के किंग हॉकोन, फ्रांस के द गॉल, इंग्लैंड के किंग और चर्चिल के भाषण।

अनेक्स में भारी खलबली मची है! क्या यह वाक़ई लंबे समय से प्रतीक्षित मुक्ति की शुरुआत है? जिस मुक्ति की हम बात करते रहे थे, जो अब भी काफ़ी अच्छी लगती है, जो काफ़ी कुछ परीकथा जैसी है, कभी सच होगी? क्या साल 1944 हमारे लिए जीत लेकर आएगा? हम अभी तक नहीं जानते। लेकिन जहाँ उम्मीद है, वहीं ज़िंदगी है। यह हमें नई हिम्मत

से भरती है और फिर से मज़बूत बनाती है। हमें इतना बहादुर बनना होगा कि हम उन डरों, मुश्किलों और तकलीफ़ों को झेल सकें, जो अभी सामने आनी बाक़ी हैं। अब यह शांत व अडिग रहने, दाँत पीसने और संयम रखने का मामला है! फ्रांस, रूस, इटली और यहाँ तक कि जर्मनी तक दुखी होकर रो सकते हैं, लेकिन हमें अभी तक यह अधिकार नहीं है!

ओह, किटी, इस हमले की सबसे अच्छी बात यह है कि मुझे यह लग रहा है कि हमारे दोस्त आने वाले हैं। इन भयानक जर्मनों ने हमें इतने लंबे समय तक दमित किया और डराया है कि दोस्तों व मुक्ति का सिर्फ़ ख़याल भी हमारे लिए सब कुछ है! अब यह सिर्फ़ यहूदियों का ही नहीं, बल्कि हॉलैंड और कब्ज़े वाले यूरोप का भी है। मारगोट कहती है कि हो सकता है मैं अक्टूबर या सितंबर में स्कूल जा सकूँ।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। मैं तुम्हें ताज़ातरीन ख़बरें बताती रहूँगी!

आज सुबह और कल रात फूस व रबड़ के पुतले जर्मन इलाक़ों में गिराए गए और ज़मीन पर आते ही उनमें विस्फोट हो गया। अँधेरे में दिखने से बचने के लिए चेहरे पर कालिख पोते हुए कई पैराट्रूपर भी नीचे आए। फ्रांसीसी तट पर रात को 5,500 बम गिराए गए और फिर सुबह छह बजे तट पर लैंडिंग क्राफ़्ट उतरा। आज 20,000 विमान हरकत में थे। जर्मन तटीय समूहों को वहाँ पहुँचने से पहले ही नष्ट कर दिया गया; एक छोटा मोर्चा पहले ही तैयार किया जा चुका है। ख़राब मौसम के बावजूद सब कुछ सही चल रहा है। फ़ौज व जनता का 'एक निश्चय और एक उम्मीद' है।

शुक्रवार, 9 जून, 1944

मेरी प्यारी किटी,

हमले की अच्छी ख़बर! मित्र राष्ट्रों ने फ्रांस के तट पर स्थित बेयू नामक एक गाँव पर कब्ज़ा कर लिया है और अब हम कॉन के लिए लड़ रहे हैं। वे साफ़ तौर पर प्रायद्वीप से संपर्क काटना चाहते हैं जहाँ पर शेर्बूर स्थित है। हर शाम युद्ध संवाददाता सेना की मुश्किलों, उनके साहस व जुझारू जज़्बे के बारे में ख़बर देते हैं। अपनी ख़बरें पाने के लिए वे हैरतअंगेज़ कारनामों को अंजाम देते हैं। इंग्लैंड पहुँच चुके कुछ घायल सैनिकों ने रेडियो पर बात की। तकलीफ़ देह मौसम के बावजूद विमानों की आवाजाही जारी है। हमने बीबीसी पर सुना कि चर्चिल डी-डे पर टुकड़ियों के साथ उतरना चाहते थे, लेकिन आइज़नहावर और बाक़ी जनरलों ने उन्हें ऐसा न करने के लिए मना लिया। ज़रा सोचो कि इतने बूढ़े आदमी में इतनी हिम्मत! वे कम से कम सत्तर साल के तो होंगे ही।

यहाँ उत्साह मंद पड़ गया है; हम सभी को उम्मीद है कि इस साल के अंत तक आख़िरकार

लड़ाई ख़त्म हो जाएगी। यह वक़्त की बात है! मिसेज़ फ़ॉन डान का लगातार शिकायती लहजा अब बर्दाश्त से बाहर हो गया है; अब वे हमें हमले की बात से पागल नहीं कर सकतीं, तो वे दिन भर ख़राब मौसम को लेकर अफ़सोस करती रहती हैं। काश, हम उन्हें ठंडे पानी की बाल्टी में पटक सकते!

मि. फ़ॉन डान और पीटर के अलावा अनेक्स में सबने संगीतकार, महान पियानो वादक और अद्भुत बाल प्रतिभा फ्रांज़ लिज़्ट की जीवनी *हंगेरियन रैप्सडी* पढ़ी है। यह बहुत दिलचस्प है, हालाँकि मुझे लगता है कि उसमें महिलाओं पर कुछ ज़्यादा ही ज़ोर दिया गया है; लिज़्ट न सिर्फ़ अपने समय के सबसे महान व सबसे मशहूर पियानो वादक थे, बल्कि वे सत्तर साल की उम्र में भी सबसे बड़े महिला प्रेमी थे। उनके काउंटेस मारी देगॉल, प्रिंसेस कैरोलिन सायन विंटेगश्टीन, नर्तकी लोला मोन्टेज़, पियानो वादक ऐग्नेस किंगवर्थ, सोफ़ी मेंटर, करकेशियन राजकुमारी ओल्या यनिना, बैरोनेस ओल्या माइंडॉर्फ़, अभिनेत्री लिला, वगैरह, वगैरह, इसका कोई अंत नहीं। संगीत व अन्य कलाओं से जुड़े किताब के हिस्से इस सबसे कहीं ज़्यादा दिलचस्प हैं। उनमें जिन लोगों का उल्लेख है, वे हैं: शुमान, क्लारा वीक, हेक्टर बर्लियोज़, योहानस ब्राम्स, बीथोवन, योहाक़िम, रिचर्ड वैगनर, हान्स फ़ॉन बिलो, आंटन रूबिनश्टाइन, फ़्रेडरिख़ शोपन, विक्टर ह्यूगो, ओनेए द बाल्ज़ाक, हिलर, उमेल, चेर्नी, रॉसिनी, केरुबीनि, पैगानीनि, मेंडलसोन, आदि, आदि।

लिज़्ट एक भले इंसान लगते हैं, बहुत उदार और विनम्र, हालाँकि असाधारण रूप से खोखले। उन्होंने लोगों की मदद की, कला को सबसे ऊपर रखा, कोनिऐक और महिलाओं को बहुत पसंद करते थे, आँसू बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, भद्र पुरुष थे, किसी की मदद से मना नहीं करते थे, पैसे में दिलचस्पी नहीं रखते थे और धार्मिक स्वतंत्रता और दुनिया की परवाह करते थे।

तुम्हारी, ऐन एम फ़्रैंक

मंगलवार 13 जून, 1944

मेरी प्यारी किटी,

एक और जन्मदिन चला गया और अब मैं पंद्रह की हो गई हूँ। मुझे कुछ उपहार मिले: स्प्रिंगर की पाँच खंडों वाली कला इतिहास की किताब, अंतर्वस्त्रें का जोड़ा, दो बेल्ट, एक रूमाल, योगर्ट के दो डिब्बे, जैम का एक डिब्बा, शहद के दो बिस्किट (छोटे), पापा व माँ से वनस्पतिशास्त्र की एक किताब, मारगोट से एक सोने का कंगन, फ़ॉन डान परिवार से एक स्टिकर एलबम, दुसे से बायोमॉल्ट और मटर, मीप से मिठाई, बेप से मिठाई व अभ्यास-पुस्तिकाएँ और सबसे बड़ी बात, मि. कुगलर से मरिया टेरिज़ा और फुल क्रीम चीज़ के तीन टुकड़े मिले। पीटर ने मुझे पियोनीज़ का एक बहुत प्यारा सा गुलदस्ता दिया; बेचारे लड़के को उपहार

खोजने में बहुत मेहनत करनी पड़ी, लेकिन कुछ हो नहीं पाया।

हमला अब भी ज़ोरदार ढंग से चल रहा है, जबकि मौसम काफ़ी बुरा है - बारिश, तूफ़ानी हवाओं और ज्वार।

कल चर्चिल, स्मट्स, आइज़नहावर और आर्नोल्ड ने उन फ़्रांसीसी गाँवों का दौरा किया, जिन्हें ब्रिटिशों ने अपने कब्ज़े में करके मुक्त कर दिया। चर्चिल टॉर्पीडो बोट में थे, जिसने तट पर गोले बरसाए थे। अधिकतर पुरुषों की तरह वे डर को नहीं जानते लगे - एक ईर्ष्यायोग्य गुण!

यहाँ अनेक्स के किले से डच मूड को भाँप पाना मुश्किल है। निस्संदेह कई लोग इस बात से ख़ुश हैं कि आलसी (!) ब्रिटिश आख़िरकार सक्रिय हुए और अपने काम में लग गए। जो दावा करते रहे हैं कि वे ब्रिटिश कब्ज़ा नहीं चाहते, वे नहीं जानते कि वे कितना बड़ा अन्याय कर रहे हैं। उनका तर्क यह है: ब्रिटेन को हॉलैंड व कब्ज़े वाले अन्य देशों को मुक्त करने के लिए लड़ाई, संघर्ष व बलिदान करने चाहिए। उसके बाद ब्रिटिश को हॉलैंड में नहीं रहना चाहिए: उन्हें सभी कब्ज़े वाले देशों से क्षमा माँगनी चाहिए, डच ईस्ट इंडीज़ को उसके असली स्वामी को सौंप देना चाहिए और फिर कमज़ोर व दरिद्र होकर ब्रिटेन लौट जाना चाहिए। कितने बेवकूफ़ हैं! और इसके बावजूद जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूँ, कई डच लोगों की गिनती इसमें की जा सकती है। हॉलैंड और उसके पड़ोसी देशों का क्या होता, अगर ब्रिटेन जर्मनी के साथ शांति समझौता कर लेता, जैसा कि उसके पास पर्याप्त मौक़ा था? हॉलैंड जर्मन बन जाता और फिर बस उसका ख़ात्मा हो जाता!

जो डच लोग अब भी ब्रिटिशों को नीचा देखते हैं, ब्रिटेन, उसकी सरकार और उसके बूढ़े कुलीनों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन्हें कायर कहते हैं, फिर भी जर्मनी से नफ़रत करते हैं, उन्हें अच्छी तरह हिलाया जाना चाहिए, जैसे कि तकिये में हवा भरते हैं। शायद उससे उनके बेतरतीब दिमाग़ थोड़े ठीक हो जाएँ!

मेरे सिर में इच्छाएँ, विचार, आरोप और झिड़कियाँ घूम रही हैं। मैं असल में उतनी अभिमानी नहीं हूँ, जितना कि बहुत से लोग सोचते हैं; मैं किसी अन्य की तुलना में अपनी कई कमियों व ख़ामियों को बेहतर ढंग से समझती हूँ, लेकिन एक अंतर है: मैं यह भी जानती हूँ कि मैं बदलना चाहती हूँ, बदलूँगी और पहले ही काफ़ी बदल चुकी हूँ!

मैं अक्सर ख़ुद से पूछती हूँ किर हर कोई अब भी ऐसा क्यों सोचता है कि मैं आक्रामक तौर पर महत्त्वाकांक्षी और सर्वज्ञ हूँ? क्या मैं वाक़ई इतनी घमंडी हूँ? क्या मैं ऐसी हूँ या फिर वे ही अभिमानी हैं? यह अजीब लगता है। मैं जानती हूँ, लेकिन मैं उस अंतिम वाक्य को नहीं काटने वाली हूँ, क्योंकि यह उतना पागलपन भरा नहीं है, जितना कि लगता है। मेरे दो प्रमुख सलाहकारों मिसेज़ फ़ॉन डान व दुसे को पूरी तरह से नासमझ के रूप में जाना जाता है और सामान्य शब्दों में कहूँ तो वे दोनों बस 'बेवकूफ़' हैं! मूर्ख लोग अक्सर इस बात को बर्दाश्त नहीं कर पाते कि बाक़ी लोग उनसे बेहतर काम करें; इसकी बेहतरीन मिसाल वे दोनों काठ के उल्लू

हैं। मिसेज़ फ़ॉन डान व दुसे। मिसेज़ फ़ॉन डान को लगता है कि मैं बेवकूफ़ हूँ, क्योंकि मुझे यह बीमारी उनके जितनी नहीं है, वे सोचती हैं कि मैं आक्रामक हूँ, क्योंकि वे मुझसे ज़्यादा हैं, वे सोचती हैं कि मेरी पोशाकें बहुत छोटी हैं, क्योंकि उनकी तो मुझसे भी छोटी हैं और उन्हें लगता है कि मैं इतना कुछ जानती हूँ, क्योंकि वे ख़ुद उन विषयों पर दोगुना बोलती हैं, जिनके बारे में वे कुछ नहीं जानती। यही बात दुसे पर भी लागू होती है। लेकिन मेरी पसंदीदा कहावतों में से एक है: 'जहाँ धुआँ होता है, वहाँ आग भी होती है,' मैं यह स्वीकार करती हूँ कि मैं सब कुछ जानती हूँ।

मेरे व्यक्तित्व के बारे में मुश्किल बात यह है कि मैं किसी और के मुक़ाबले ख़ुद को बहुत ज़्यादा डाँटती व कोसती हूँ; अगर माँ अपनी सलाह भी जोड़ दें तो उपदेशों का ढेर इतना बड़ा हो जाता है कि मुझे लगता है कि मैं कभी उससे निकल भी पाऊँगी या नहीं। फिर मैं पलट कर जवाब देती हूँ और तब तक हर किसी का इतना विरोध करती रहती हूँ, जब तक कि पुरानी ऐन फिर से सामने न आ जाए। 'मुझे कोई भी नहीं समझता!'

यह वाक्यांश मेरा हिस्सा है और चाहे कितना भी असामान्य लगे, लेकिन इसमें सच्चाई का तत्व है। कई बार मैं आत्म-निंदा के बोझ के नीचे इतना दब जाती हूँ कि मुझे दिलासे के बोल की ज़रूरत होती है, ताकि मैं ख़ुद को बाहर निकाल सकूँ। काश! मेरे पास कोई होता, जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से ले सकता। अफ़सोस कि मुझे अब तक कोई ऐसा इंसान नहीं मिला, इसलिए खोज जारी रहेगी।

मैं जानती हूँ कि तुम पीटर के बारे में सोच रही होगी, है न, किट? यह सच है कि पीटर मुझसे प्यार करता है, गर्लफ्रेंड की तरह नहीं, बल्कि सिर्फ़ एक दोस्त की तरह। उसका स्नेह दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन कोई रहस्यमय ताक़त हमें रोके हुए है और मुझे नहीं पता कि वह क्या है।

कई बार मैं सोचती हूँ कि उसके लिए मेरी चाहत थोड़ी अतिशयोक्ति थी। लेकिन वह सच नहीं है, क्योंकि मैं अगर उसके कमरे में एक या दो दिन न जा पाऊँ, तो मैं उसके लिए तड़पने लगती हूँ, जैसा कि हमेशा होता है। पीटर दयालु व अच्छा है और फिर भी मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि उसने कई मामलों में मुझे बहुत निराश किया है। मुझे धर्म के मामले में उसकी नापसंद, खाने व बाक़ी कई चीज़ों को लेकर उसकी बातचीत से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। फिर भी मैं इस बात को लेकर आश्वस्त हूँ कि हम अपने इस समझौते पर टिके रहेंगे कि हम कभी झगड़ा नहीं करेंगे। पीटर शांतिप्रिय, सहनशील और मस्तमौला क़िस्म का लड़का है। वह मुझे बहुत सी ऐसी बातें कहने देता है, जिन्हें वह अपनी माँ से बिलकुल नहीं सुन सकता। वह अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश कर रहा है कि वह कोई ऐसा काम न करे, जिससे उसकी इज़्ज़त कम हो और वह अपने मामलों को चुस्त-दुरुस्त कर रहा है। इसके बावजूद वह अपने सबसे भीतरी स्वरूप को छिपाकर क्यों रखता है और क्यों मुझे वहाँ तक पहुँचने नहीं देता? यह ज़रूर है कि

वह मुझसे ज़्यादा बंद है, लेकिन मैं (हालाँकि मुझे लगातार सिद्धांत के रूप में, व्यवहार में नहीं जो भी जानने योग्य है, उसकी जानकारी रखने का दोषी ठहराया जाता है) अपने तजुर्बे से कह सकती हूँ कि समय के साथ ऐसा वाला इंसान भी बदलता है, जो मिलनसार न हो और वह भी चाहता है कि वह किसी से अपनी बातें कह सके।

पीटर और मैंने अपने विचारशील वर्ष अनेक्स में बिताए हैं। हम अक्सर भविष्य, अतीत और वर्तमान पर बातचीत करते हैं, लेकिन जैसा कि मैं पहले ही बता चुकी हूँ, मुझे वास्तविक चीज़ की कमी खलती है और फिर भी मैं जानती हूँ कि उसका अस्तित्व है!

मैं इतने लंबे समय से बाहर नहीं गई हूँ और क्या यही वजह है कि मैं प्रकृति को लेकर इतनी जुनूनी हो गई हूँ? मुझे ऐसा समय याद है, जब नीला आसमान, चहचहाते पक्षी, चाँदनी और फूटती कोंपलें मुझे इतना मंत्रमुग्ध नहीं करते थे। मेरे यहाँ आने के बाद से हालात बदल गए हैं। उदाहरण के लिए, व्हिट्सन के दौरान एक रात जब बहुत गर्मी थी, मुझे साढ़े ग्यारह बजे तक अपनी आँखें खुली रखने की कोशिश करने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी, ताकि मैं चाँद को अपने आप देख सकूँ। लेकिन मेरी यह कुर्बानी बेकार गई, क्योंकि बहुत तेज़ चमक होने के कारण मैं खिड़की खोलने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। कुछ महीने पहले एक रात मैं ऊपर थी और खिड़की खुली थी। मैं तब तक नीचे नहीं गई, जब तक कि उसे बंद करने का समय नहीं आया। अँधेरी, बारिश की शाम, हवा, भागते बादलों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया; तब डेढ़ साल में पहली बार मैंने रात को आमने-सामने देखा था। उस रात को फिर से देखने की मेरी इच्छा मेरे चोरों के, चूहों से भरे अँधेरे घर या लूटपाट के डर से कहीं ज़्यादा बड़ी थी। मैं अकेले नीचे गई और रसोई व प्राइवेट ऑफ़िस की खिड़कियों से बाहर देखा। बहुत से लोग सोचते हैं कि कुदरत ख़ूबसूरत है, कई लोग कभी-कभार सितारों भरे आसमान के नीचे सोते हैं और अस्पतालों व जेलों में कई लोग ऐसे दिन की राह देखते हैं, जब वे प्रकृति का आनंद ले सकेंगे। लेकिन बहुत कम लोग हैं, जो प्रकृति के आनंद से हमारी तरह एकाकी और कटे हुए होते हैं, जिस आनंद को अमीर-ग़रीब सब ले सकते हैं।

यह सिर्फ़ मेरी कल्पना ही नहीं है, आसमान, बादल, चाँद व तारे मुझे सचमुच शांत करते हैं और उम्मीद बनाए रखते हैं। यह वेलिरियान या ब्रोमाइड से काफ़ी बेहतर दवा है। प्रकृति मुझे विनम्र महसूस करवाती है और मैं हर वार का सामना हिम्मत से कर सकती हूँ!

लेकिन बदक़िस्मती से मैं बहुत कम मौक़ों पर ही कुदरत का नज़ारा देख पाती हूँ; इससे निहारने का मज़ा ख़त्म हो जाता है। प्रकृति की जगह कोई नहीं ले सकता!

मुझे अक्सर परेशान करने वाले कई सवालों में से एक यह है कि औरतों को पुरुषों से कमतर क्यों समझा जाता रहा है और अब भी समझा जाता है। यह कहना आसान है कि यह अन्यायपूर्ण है, लेकिन मेरे लिए यह काफ़ी नहीं है; मैं इस घोर अन्याय का कारण जानना चाहूँगी।

हो सकता है कि शुरु से पुरुषों ने महिलाओं पर अपना वर्चस्व इसलिए बनाए रखा, क्योंकि वे शारीरिक रूप से ज़्यादा ताक़तवर हैं; पुरुष जीविका कमाते हैं, बच्चों के जनक होते हैं और अपनी मर्ज़ी से काम करते हैं... हाल तक महिलाएँ चुपचाप यह सब सहन करती रहीं, जो कि बेवकूफ़ाना बात थी, क्योंकि जितनी देर तक उसे क़ायम रखा जाएगा, वह उतनी ही गहरी जड़ें जमाता रहेगा।

ख़ुशक़िस्मती से शिक्षा, कामकाज और प्रगति ने महिलाओं की आँखें खोल दी हैं। कई देशों में उन्हें बराबर के अधिकार दिए गए हैं; कई लोग, मुख्य तौर पर महिलाएँ और पुरुष भी अब यह महसूस कर रहे हैं कि इतने लंबे समय तक इस तरह की बातों को सहन करना कितना ग़लत था। आधुनिक महिलाएँ पूरी तरह स्वतंत्र होने का अधिकार चाहती हैं।

लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं है। महिलाओं की इज़्ज़त भी की जानी चाहिए! सामान्य तौर पर दुनिया के सभी हिस्सों में पुरुषों को बहुत सम्मान दिया जाता है, तो महिलाओं को उनका हिस्सा क्यों न मिले? सैनिकों व युद्धवीरों का सम्मान व गुणगान किया जाता है, अन्वेषकों हमेशा के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं, शहीदों को पूजा जाता है, लेकिन कितने लोग हैं, जो औरतों को भी सैनिकों की तरह देखते हैं?

मेन अगेन्स्ट डेथ पढ़ते हुए मुझे इस बात ने बहुत प्रभावित किया कि सिर्फ़ बच्चे को जन्म देने में महिलाओं को किसी साहसी योद्धा के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा दर्द, अस्वस्थता और तकलीफ़ का सामना करना पड़ता है। यह सब सहन करने का उसे क्या इनाम मिलता है? जब बच्चे को जन्म देने के बाद उसकी देहयष्टि ख़राब हो जाती है, तो उसे एक तरफ़ धकेल दिया जाता है, उसके बच्चे चले जाते हैं, उसकी सुंदरता चली जाती है। मानव जाति के सिलसिले को बनाए रखने में औरतें संघर्ष करती हैं, दर्द सहती हैं, वे सभी बड़बोले स्वतंत्रता सेनानियों से कहीं ज़्यादा सख़्तजान और हिम्मतवाली होती हैं!

मेरा यह आशय नहीं कि महिलाओं को बच्चे पैदा नहीं करने चाहिए; बल्कि इसके उलट मैं तो कहूँगी कि कुदरत ने उन्हें इसके लिए बनाया है और ऐसा ही रहना चाहिए। मैं हमारे मूल्यों व पुरुषों की भर्त्सना करती हूँ, जो इस बात को नहीं मानते कि समाज में इस ख़ूबसूरत महिलाओं का योगदान कितना बड़ा व कठिन है।

मैं इस किताब के लेखक पॉल दे केराफ़ से पूरी तरह सहमत हूँ, जब वे कहते हैं कि पुरुषों को यह समझना होगा कि दुनिया के जिन हिस्सों को हम सभ्य समझते हैं, वहाँ जन्म को अटल और अपरिहार्य नहीं माना जाता। पुरुषों के लिए बात करना आसान है, उन्हें कभी वह सब सहन नहीं करना होगा, जो महिलाएँ झेलती हैं!

मुझे यक़ीन है कि अगली सदी तक इस धारणा में बदलाव आएगा कि बच्चों को जन्म देना स्त्री का कर्तव्य है और सभी महिलाओं के लिए सम्मान व सराहना के रास्ते खुलेंगे, जो बिना किसी शिकवे-शिकायत या आडंबरपूर्ण शब्दों के अपने बोझ को ढोती हैं!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 16 जून, 1944

प्यारी किटी,

नई समस्याएँ: मिसेज़ फ़ॉन डी बहुत परेशान हैं। वे गोली लगने, जेल में डालने, फाँसी चढ़ाए जाने और ख़ुदकुशी की बातें कर रही हैं। वे जलती हैं कि पीटर मुझे अपनी बातें बताता है, उन्हें नहीं, उन्हें बुरा लगता है कि उनकी चुहलबाज़ी पर दुसे कोई प्रतिक्रिया नहीं देते और डर है कि उनके पति उनके फ़र कोट से मिलने वाले पैसे को तम्बाकू पर उड़ा देंगे। वे लड़ती-झगड़ती, गालियाँ देती, चीख़ती-चिल्लाती हैं, अपने लिए अफ़सोस करती हैं, हँसती हैं और फिर से पूरा दौर चलता है।

इंसानियत के ऐसे बेवकूफ़ और रिरियाते रहने वाले नमूने का आप क्या कर सकते हैं? उन्हें कोई भी गंभीरता से नहीं लेता, उनका चरित्र बिलकुल भी मज़बूत नहीं है, वे सबसे शिकायत करती हैं और उन्हें देखना चाहिए कि वे कैसी लगती हैं, जैसे कि अपनी उम्र से कम दिखना चाहती हों। इससे भी बदतर बात यह है कि पीटर ढीठ होता जा रहा है, मि. फ़ॉन डी चिड़चिड़े और माँ मीनमेख निकालने वालीं। हर कोई देखने लायक़ है! बस, एक नियम याद रखने की ज़रूरत है: हर चीज़ पर हँसो और बाक़ी लोगों को भूल जाओ! यह बहुत अहंवादी लगता है, लेकिन आत्मदया के शिकार लोगों का दरअसल यही एकमात्र इलाज है।

मि. कुगलर को काम के लिए चार हफ़्ते के लिए अल्कमार जाना है। वे डॉक्टर के सर्टिफ़िकेट और ओपेक्टा के पत्र की मदद से इससे बचना चाहते हैं। मि. क्लेमन को उम्मीद है कि जल्दी ही उनके पेट का ऑपरेशन होगा। कल रात से सभी प्राइवेट फ़ोनों का संपर्क काट दिया गया है।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 23 जून, 1944

मेरी प्यारी किटी,

यहाँ कुछ ख़ास नहीं हो रहा है। ब्रिटेन ने शेर्बूर पर जी-जान से हमला शुरु कर दिया है। पिम और मि. फ़ॉन डान के मुताबिक 10 अक्टूबर से पहले हम निश्चित तौर पर आज़ाद हो जाएँगे। रूसी अभियान में हिस्सा ले रहे हैं; कल उन्होंने विटेब्स्क के पास हमला शुरु किया, ठीक तीन साल पहले इसी दिन जर्मनी ने रूस पर चढ़ाई की थी।

बेप का हौसला काफ़ी कम हो गया है। हमारे पास आलू बस ख़त्म होने को हैं; अब हमें

हर इंसान के लिए आलुओं की गिनती शुरू करनी होगी, फिर हर कोई जैसे चाहे, वैसे उसका इस्तेमाल करे। सोमवार से मीप हफ़्ते भर की छुट्टी ले रही हैं। मि. क्लेमन के डॉक्टरों को उनके एक्स-रे में कुछ भी नहीं मिला है। वे ऑपरेशन करवाने और हालात को समय पर छोड़ने के बीच फँसे हैं।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

बृहस्पतिवार, 27 जून, 1944

मेरी प्यारी किटी,

मूड बदल गया है, अब सब कुछ अच्छा चल रहा है। शेर्बूर, विटेब्स्क और ज़लोबिन ने आज समर्पण कर दिया। उन्होंने ज़रूर बहुत से आदमियों व साज़-सामान पर कब्ज़ा किया होगा। शेर्बूर के नज़दीक पाँच जर्मन जनरल मारे गए और दो को बंदी बना लिया गया। अब ब्रिटिश बंदरगाह होने के कारण वे जो चाहें, तट पर ला सकते हैं। समूचा कॉन्तेनतिन प्रायद्वीप हमले के बस तीन हफ़्ते बाद कब्ज़े में आ गया है! क्या कमाल है!

डी-डे के बाद के तीन सप्ताहों में यहाँ या फ्रांस में कोई दिन ऐसा नहीं बीता, जब बारिश न हुई हो या तूफ़ान न आया हो, लेकिन इसके बावजूद ब्रिटिश व अमेरिकी फौजें अपनी ताक़त दिखा रही हैं। वह भी कैसे! जर्मनी ने अपने वंडर वेपन यानी ख़ास हथियार का इस्तेमाल किया, लेकिन उस तरह के छोटे से पटाखे से कुछ ख़ास नहीं हुआ, बस इंग्लैंड में बहुत थोड़ा सा नुक़सान और जेरी यानी जर्मन अख़बारों में बड़ी सुर्ख़ियाँ। ख़ैर, जब 'जेरीलैंड' यानी जर्मनी में पता चलेगा कि बोलशेविक वाक़ई नज़दीक आ रहे हैं, तो वे पत्ते की तरह काँपने लगेंगे।

सेना के लिए काम न करने वाली महिलाओं को उनके बच्चों के साथ तटीय क्षेत्रों से ग्रोनिनेन, फ्रीज़ लैंड और गेल्डरलैंड प्रांतों में ले जाया जा रहा है। मुशरेट ने घोषणा की है कि अगर आक्रमणकारी हॉलैंड तक पहुँच गए, तो वे सूची बनाएँगे। क्या वह मोटा सूअर लड़ने की योजना बना रहा है? उसे काफ़ी समय पहले रूस में ऐसा कर लेना चाहिए था। कुछ समय पहले फ़िनलैंड ने शांति प्रस्ताव ठुकरा दिया था और अब बातचीत फिर टूट गई है। वे बेवकूफ़, अब पछताएँगे!

तुम्हारे ख़याल से 27 जुलाई तक हम कितनी दूर होंगे?

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 30 जून, 1944

प्यारी किटी,

एक से *तीस जून तक ख़राब मौसम का सिलसिला लगातार बना हुआ है।*

मैंने कितनी अच्छी तरह यह लिखा, है न? मैं अब थोड़ी अंग्रेज़ी जानती हूँ; इसे साबित करने के लिए तुम्हें बताऊँ कि मैं *ऐन आइडियल हज़्बेंड* शब्दकोश की मदद से पढ़ रही हूँ। हम बहुत अच्छी तरह आगे बढ़ रहे हैं: बॉबरुस्क, मॉगिलेव और ओशा ने आत्मसमर्पण कर दिया है, बहुत से लोग बंदी बनाए गए हैं।

यहाँ सब कुछ ठीक है। हमारे हौसले पहले से बेहतर हैं, हमारे अतिआशावादी बहुत ख़ुश हैं, फ़ॉन डान परिवार चीनी ग़ायब कर रहा है, बेप ने अपना हेयरस्टाइल बदला है और मीप ने एक सप्ताह की छुट्टी ली है। यही सबसे नई ख़बर है!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

पुनःश्च। बासेल बर्न्ड का समाचार मिला, उसने *मिना फ़ॉन बार्नहेल्म* में सराय वाले की भूमिका निभाई थी। माँ कहती हैं, उसका 'कलात्मक झुकाव' है।

बृहस्पतिवार 6 जुलाई,1944

प्यारी किटी,

पीटर जब अपराधी बनने या फिर सट्टेबाज़बनने की बात करता है, तो मैं बहुत डर जाती हूँ, ज़ाहिर है कि वह मज़ाक करता है, लेकिन मुझे अब भी लगता है कि वह अपनी कमज़ोरी से डरता है। मारगोट और पीटर हमेशा मुझसे कहते हैं, 'अगर मुझमें तुम्हारे जैसी हिम्मत व ताक़त होती, अगर तुम्हारे जैसा उत्साह और अथक ऊर्जा होती तो मैं भी...'

क्या यह वाक़ई इतनी तारीफ़ करने लायक़ ख़ासियत है कि मुझे बाक़ी लोगों से प्रभावित नहीं होना चाहिए? क्या अपने विवेक के अनुसार चलकर मैं सही कर रही हूँ?

ईमानदारी से कहूँ, तो मैं इस बात की कल्पना नहीं कर सकती कि कोई यह कहे कि 'मैं कमज़ोर हूँ' और फिर वैसा ही बना रहे। अगर आप अपने बारे में यह बात जानते हैं, तो उसके लिए लड़ते क्यों नहीं, अपने चरित्र का विकास नहीं करते? उनका जवाब हमेशा से यही रहा है: 'क्योंकि ऐसा न करना ज़्यादा आसान है!' इस जवाब से मैं हतोत्साहित महसूस करती हूँ। आसान? क्या इसका मतलब है कि कपट और कामचोरी भी आसान है? नहीं, यह सच नहीं हो सकता। यह सच नहीं हो सकता कि लोग आराम और... पैसे से इतनी तत्परता से ललचा जाते हैं। मेरा जवाब क्या होना चाहिए इस पर मैंने काफ़ी विचार किया है, मैं कैसे पीटर को ख़ुद में विश्वास करने के लिए मना सकती हूँ और सबसे बड़ी बात यह कि उसे बेहतर के लिए बदल सकती हूँ। मैं नहीं जानती कि मैं सही रास्ते पर हूँ या नहीं।

मैंने अक्सर कल्पना की है कि कितना अच्छा हो कि कोई मुझे अपना राज़दार बनाए। अब

उस जगह पर पहुँचने के बाद मैं महसूस कर रही हूँ कि ख़ुद को किसी और की स्थिति में रखना और फिर *सही* जवाब पाना कितना मुश्किल है। ख़ासकर इसलिए कि 'आसान' और 'पैसा' मेरे लिए बिलकुल नई व पूरी तरह से अजनबी अवधारणाएँ हैं।

पीटर मुझ पर निर्भर रहने लगा है और मैं किसी भी हालत में वैसा नहीं चाहती। अपने दो पैरों पर खड़े हो पाना ही काफ़ी मुश्किल है, अगर आपको अपने चरित्र, अपनी आत्मा के प्रति सच्चा रहना हो, तो यह और भी मुश्किल है।

मैं अथाह सागर में हूँ, 'आसान' जैसे भयावह शब्द का कोई असरदार उपाय ढूँढ़ रही हूँ। मैं उसे यह कैसे स्पष्ट करूँ कि यह बहुत आसान व बढ़िया लग सकता है, लेकिन उसे वह ऐसी गहराइयों में ले जाएगा, जहाँ उसे दोस्त, कोई सहारा या ख़ूबसूरती नहीं मिलेगी, वह इतना नीचे चला जाएगा कि वह शायद फिर से सतह पर वापस न आ सके।

हम सभी ज़िंदा हैं, लेकिन हम यह नहीं जानते कि क्यों या फिर किसके लिए; हम सभी ख़ुशी की तलाश में हैं; हम सभी ऐसी ज़िंदगियाँ जी रहे हैं, जो अलग हैं और फिर भी एक जैसी हैं। हम तीनों की परवरिश अच्छे परिवारों में हुई है, हमें शिक्षा पाने और कुछ करने का अवसर मिला। ख़ुशी की उम्मीद करने के हमारे पास कई कारण हैं, लेकिन... हमें उसे अर्जित करना होगा। वह कुछ ऐसा है, जिसे आप आसान रास्ता अपनाकर नहीं पा सकते। ख़ुशी पाने का मतलब है अच्छा करना और काम करना, न कि अंदाज़े लगाना और आलसी होना। आलस्य भले ही बहुत लुभावना *लगे*, लेकिन केवल काम ही *सच्ची* संतुष्टि दे सकता है।

मैं ऐसे लोगों को नहीं समझ सकती, जो काम करना पसंद नहीं करते, लेकिन पीटर की समस्या वह भी नहीं है। बस, उसके पास कोई लक्ष्य नहीं है और उसके अलावा वह सोचता है कि वह इतना मूर्ख और बाक़ी लोगों से कमतर है कि वह कभी कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। बेचारा लड़का, उसने कभी यह जाना ही नहीं कि किसी और को ख़ुश करने से कैसा महसूस होता है और मैं उसे यह नहीं सिखा सकती। वह धार्मिक नहीं है, वह ईसा मसीह का उपहास करता है और ईश्वर के नाम को व्यर्थ समझता है, हालाँकि मैं भी कट्टर नहीं हूँ, फिर भी उसे उतना अकेला, उतना नफ़रत से भरा और दुखी देखकर मुझे बुरा लगता है।

जो लोग धार्मिक होते हैं, उन्हें ख़ुश होना चाहिए, क्योंकि हर किसी में अपने से ऊँची ताक़त में विश्वास रखने की क़ाबिलियत नहीं होती। आपको शाश्वत दंड के डर में नहीं जीना होता; पाप की शुद्ध, स्वर्ग-नर्क जैसी अवधारणाओं को स्वीकार करना कई लोगों के लिए मुश्किल हो सकता है, फिर भी धर्म स्वयं, कोई भी धर्म इंसान को सही रास्ते पर रखता है। ईश्वर को डर से नहीं, बल्कि गौरव की अपनी समझ को बनाए रखना चाहिए और अपने विवेक के अनुसार चलना चाहिए। अगर दिन के ख़त्म होने पर हर कोई अपने बर्ताव की समीक्षा करे और अपनी सही-ग़लत बातों का आकलन करे, तो सभी लोग कितने अच्छे व महान बन जाएँगे। हर नए दिन पर वे स्वतः ही बेहतर करने की कोशिश करेंगे और कुछ समय बाद निश्चित तौर पर काफ़ी

कुछ हासिल कर लेंगे। इस नुस्ख़े को अपनाने के लिए हर किसी का स्वागत है; इसमें कोई लागत नहीं और यह काफ़ी उपयोगी है। जो नहीं जानते, उन्हें अपने अनुभव से यह पता लगाना होगा, 'मौन विवेक आपको ताक़त देता है!'

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 8 जुलाई, 1944

प्यारी किटी,

मि. ब्रोक्स बेवरवेक में थे और कृषि उत्पादन की नीलामी से वे हमारे लिए स्ट्रॉबेरी लाने में कामयाब रहे। हमारे पास जो स्ट्रॉबेरी पहुँची, वह काफ़ी धूल व रेत भरी थी। ऑफ़िस और हमारे लिए चौबीस पेटियाँ आईं। उसी शाम हमने पहले छह जार डिब्बाबंद किए और जैम के आठ जार बनाए। अगली सुबह मीप ने ऑफ़िस के लिए जैम बनाना शुरू किया।

साढ़े बारह बजे बाहर के दरवाज़े पर ताला लगा दिया गया, पीटर, पापा और मि. फ़ॉन डान सीढ़ियों पर से पेटियों को घसीटकर रसोईघर में लाए। ऐन को वॉटर हीटर से गर्म पानी मिला, मारगोट बाल्टी लाई, सभी लोग काम पर जुट गए! एक अजीब से एहसास के साथ मैं भीड़ भरी रसोई में घुसी। मीप, बेप, मि. क्लेमन, यान, पापा, पीटर: अनेक्स की टुकड़ी और आपूर्ति दल सभी एक साथ जुटे थे और वह भी दिन दहाड़े! खिड़कियाँ, परदे खुले थे, ऊँची आवाज़ें थीं, दरवाज़े भड़भड़ाए जा रहे थे - मैं उत्तेजना से काँप रही थी। मैं सोचती जा रही थी, 'क्या हम सचमुच छिपे हुए हैं?' ज़रूर ऐसा ही महसूस होता होगा, जब आप आख़िरकार दुनिया में बाहर निकलें। कड़ाही भरी थी, मैं ऊपर गई, जहाँ पर परिवार के बाक़ी लोग रसोई की मेज़ पर जमा होकर स्ट्रॉबेरी छील रहे थे। कम से कम उन्हें यही करना था, लेकिन बाल्टी में जाने के बजाय ज़्यादा स्ट्रॉबेरी उनके मुँह में जा रही थी। उन्हें जल्दी ही दूसरी बाल्टी की ज़रूरत थी। पीटर नीचे गया, लेकिन फिर दरवाज़े की घंटी दो बार बजी। बाल्टी को वहीं पर छोड़कर पीटर ऊपर की तरफ़ भागा और अपने पीछे किताबों की अलमारी को बंद किया। हम बेचैनी से इंतज़ार करते रहे; स्ट्रॉबेरी धुलने के इंतज़ार में थीं, लेकिन हमने घर के नियम का पालन किया: 'नीचे अजनबियों के होने की स्थिति में पानी न चलाया जाए - वे नालियों की आवाज़ सुन सकते हैं।'

यान हमें बताने ऊपर आए कि डाकिया आया था, पीटर तेज़ी से फिर से नीचे गया। डिंग-डॉन्ग... दरवाज़े की घंटी, वह फिर से पलटा। मैं सुनने लगी कि कोई आ तो नहीं रहा, पहले किताबों की अलमारी के पास और फिर सीढ़ियों पर ऊपर खड़ी हो गई। आख़िरकार पीटर और मैं रेलिंग के सहारे खड़े हो गए और नीचे से आने वाली आवाज़ों पर ध्यान लगाने लगे। कोई अपरिचित आवाज़ें नहीं। पीटर पंजों के बल सीढ़ियों पर आधी दूरी तक गया और आवाज़ लगाई, 'बेप!' एक बार और: 'बेप!' उसकी आवाज़ रसोई के शोर-शराबे में डूब गई। इसलिए

वह रसोईघर की तरफ़ भागा, जबकि मैं घबराते हुए ऊपर से पहरेदारी करती रही। 'तुरंत ऊपर जाओ, पीटर, यहाँ पर अकाउंटेंट है, तुम्हें जाना होगा!' वह मि. कुगलर की आवाज़ थी। आह भर कर पीटर ऊपर आया और किताबों की अलमारी बंद कर दी।

मि. कुगलर अंततः डेढ़ बजे ऊपर आए। 'हे भगवान, पूरी दुनिया स्ट्रॉबेरी में डूब गई है। मैंने नाश्ते में स्ट्रॉबेरी खाई, यान दोपहर के खाने में उसे ले रहे हैं, क्लेमन नाश्ते के तौर पर स्ट्रॉबेरी खा रहे हैं, मीप उन्हें उबाल रही है, बेप उन्हें छील रही है और मैं जहाँ भी जाऊँ, मुझे स्ट्रॉबेरी की ख़ुशबू आ रही है। उस लाल चीज़ से बचने के लिए मैं ऊपर आया और यहाँ क्या देखता हूँ? लोग स्ट्रॉबेरी धो रहे हैं!'

बची हुई स्ट्रॉबेरी को डिब्बाबंद कर दिया गया। उस शाम दो जारों की सील खुल गई और पापा ने तुरंत उसे जैम में बदल दिया। अगली सुबह दो और ढक्कन खुल गए और दोपहर में चार। मि. फ़ॉन डान ने रोगाणुओं मारने की प्रक्रिया में जारों को पर्याप्त गर्म नहीं किया, इसलिए पापा को हर शाम जैम बनाना पड़ा। हमने स्ट्रॉबेरी के साथ दलिया खाया, छाछ के साथ स्ट्रॉबेरी ली, डबलरोटी के साथ उसे खाया, मीठे में स्ट्रॉबेरी खाई, चीनी के साथ स्ट्रॉबेरी खाई और रेत के साथ भी। दो दिन तक स्ट्रॉबेरी के सिवा कुछ नहीं था, स्ट्रॉबेरी, स्ट्रॉबेरी और फिर उसके बाद हमारी आपूर्ति या तो ख़त्म हो गई या फिर वह डिब्बों में बंद हो गई।

'ऐन,' एक दिन मुझे मारगोट ने पुकारा, 'मिसेज़ फ़ॉन हूवन ने हमारे लिए मटर भेजे हैं, बीस पाउंड मटर!'

'बहुत अच्छा किया, उन्होंने,' मेरा जवाब था। सचमुच अच्छी बात थी, लेकिन काम बहुत था... उफ़!

'शनिवार को आप सबको मटर छीलने होंगे,' माँ ने मेज़ पर घोषणा की।

आज सुबह नाश्ते के बाद हमारा सबसे बड़ा बरतन मेज़ पर था, जिसमें मटर भरे थे। अगर तुम्हें लगता है कि मटर छीलना उबाऊ काम है, तो तुम्हें उसकी अंदर की परत को हटाने का काम करना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि कई लोग यह नहीं जान पाते कि जब आप परत निकालते हैं, तो फलियाँ कोमल, स्वादिष्ट और विटामिनों से भरपूर होती हैं। इससे भी बड़ा फ़ायदा यह है कि जब आप सिर्फ़ मटर खाते हैं, तो आपको उसका तीन गुना मिलता है।

फली खोलना बहुत सूक्ष्म और कुशलता भरा काम है, जो किसी रूढ़िवादी दंतचिकित्सक या फिर नुक्ताचीनी करने वाले मसाला विशेषज्ञ के लिए मुनासिब हो सकता है, लेकिन एक मेरे जैसी किसी उतावली किशोरी के लिए यह भयानक है। हमने साढ़े नौ बजे काम शुरू किया; साढ़े दस बजे मैं बैठी, फिर से ग्यारह बजे उठी, साढ़े ग्यारह बजे फिर से बैठ गई। मेरे कानों में यह सब गूँज रहा था: किनारे को तोड़ो, फली खोलो, लड़ी को खींचो, फली बरतन में, किनारे को तोड़ो, फली खोलो, लड़ी को खींचो, फली बरतन में, वगैरह, वगैरह। मेरी आँखों के आगे यही नज़ारा था: हरी, हरी, कीड़ा, लड़ी, सड़ी हुई फली, हरी, हरी। नीरसता से जूझने और कुछ

करने के लिए मैं सारी सुबह बकबक करती रही, जो भी मेरे मन में आया, बोलती रही और हर किसी को हँसाती रही। एकरसता मुझे मार रही थी। हर बार मटर छीलते हुए मेरे मन में यह निश्चय और दृढ़ होता जा रहा था कि मैं कभी भी सिर्फ़ एक गृहिणी नहीं बनना चाहूँगी!

बारह बजे आख़िरकार हमने नाश्ता किया, लेकिन साढ़े बारह बजे से सवा एक बजे तक हमें फिर से मटर छीलने पड़े। रुकने पर मुझे थोड़े चक्कर आने लगे, बाक़ी लोगों को भी ऐसा ही लगा। मैंने चार बजे तक झपकी ली, फिर भी मटर की वजह से अजीब सा महसूस कर रही थी।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शनिवार, 15 जुलाई, 1944

प्यारी किटी,

हमें पुस्तकालय से *व्हाट डु यू थिंक ऑफ़ द मॉडर्न यंग गर्ल?* शीर्षक से एक चुनौतीपूर्ण किताब मिली है। मैं इस विषय पर आज बातचीत करूँगी।

लेखिका 'आज के युवा' की हर तरह से आलोचना करती है, हालाँकि वह उन्हें निकम्मा मानकर उसे पूरी तरह ख़ारिज नहीं करती। इसके उलट, उसका मानना है कि युवा ज़्यादा बड़ी, बेहतर और ज़्यादा ख़ूबसूरत दुनिया बनाने की ताक़त रखते हैं, लेकिन वे छिछली चीज़ों में व्यस्त रहते हैं और असली सुंदरता पर ध्यान नहीं देते। कई जगहों पर मुझे लगा कि लेखिका का इशारा मेरी तरफ़ है, इसीलिए मैं अंततः ख़ुद को तुम्हारे सामने पूरी तरह खोलकर रख रही हूँ और इस हमले के ख़िलाफ़ अपना बचाव कर रही हूँ।

मुझे जानने वाले मेरे चरित्र की एक अनोखी ख़ासियत से वाकिफ़ हैं: मुझमें बहुत आत्मज्ञान है। मैं जो कुछ करती हूँ, उसमें ख़ुद को ऐसे देख सकती हूँ, जैसे कि मैं अजनबी हूँ। मैं रोज़मर्रा की ऐन से दूर खड़े होकर उसे बिना किसी पक्षपात या बहाने के देख सकती हूँ, उसके अच्छे या बुरे पक्ष को देख सकती हूँ। आत्मचेतना मुझसे कभी दूर नहीं होती और हर बार जब मैं अपना मुँह खोलती हूँ, तो सोचती हूँ, 'तुम्हें उस बात को अलग तरह से कहना चाहिए था' या 'वह जैसा है, ठीक है।' मैं अपनी भर्त्सना इतने तरीक़ों से करती हूँ कि मैं पापा की इस कहावत को समझने लगी हूँ: 'हर बच्चे को ख़ुद ही ऊँचा उठना होता है।' माँ-बाप अपने बच्चों को बस सलाह ही दे सकते हैं या फिर उन्हें सही दिशा दिखा सकते हैं। आख़िरकार लोगों को अपने चरित्र का विकास ख़ुद ही करना होता है। इसके अलावा, मैं ज़िंदगी का सामना असाधारण साहस के साथ करती हूँ। मैं काफ़ी ताक़तवर महसूस करती हूँ और बोझ को उठाने के क़ाबिल हूँ, छोटी हूँ और आज़ाद हूँ! जब मुझे पहली बार यह महसूस हुआ, तो मैं ख़ुश थी, क्योंकि इसका मतलब है कि मैं ज़िंदगी के झटकों का सामना ज़्यादा आसानी से कर सकती हूँ।

मैंने इन चीज़ों पर अक्सर बात की है। अब मैं 'पापा और माँ मुझे नहीं समझते,' इस

अध्याय पर लौटना चाहूँगी। मेरे माँ-बाप ने मुझे बहुत लाड़-प्यार दिया, मुझसे रहमदिली से पेश आए, फ़ॉन डान परिवार के ख़िलाफ़ मेरा बचाव किया और वह सब किया, जो माता-पिता कर सकते हैं। इसके बावजूद काफ़ी लंबे समय से मैंने ख़ुद को बहुत अकेला, उपेक्षित पाया है और मुझे ग़लत समझा गया है। पापा ने मेरी क्रांतिकारी प्रकृति को क़ाबू करने की पूरी कोशिश की, लेकिन उससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मैंने अपने बर्ताव का विश्लेषण किया और देखा कि मैं क्या ग़लत कर रही थी।

पापा ने इस संघर्ष में मेरी मदद क्यों नहीं की? मेरी तरफ़ मदद का हाथ बढ़ाने की कोशिश में उनकी तरफ़ से क्या कमी रह गई? जवाब यह है कि उन्होंने ग़लत तरीक़ों का इस्तेमाल किया। वे मुझसे हमेशा ऐसे बातें करते थे, जैसे कि मैं कोई बच्चा हूँ, जो मुश्किल हालात से गुज़र रहा है। यह अजीब लगता है, लेकिन पापा ही हैं, जिन्होंने मुझे आत्मविश्वास की समझ दी और मुझे ऐसा महसूस करवाया कि मैं समझदार इंसान हूँ। लेकिन उन्होंने एक चीज़ नज़रअंदाज़ कर दी: वे यह देखने में नाकाम रहे कि मेरे लिए मुश्किलों पर जीत पाने का मेरा संघर्ष किसी भी चीज़ से ज़्यादा अहम था। मैं 'किशोरां की आम समस्याओ' या 'बाक़ी लड़कियां' या 'तुम इससे निकल आओगी,' जैसा कुछ नहीं सुनना चाहती थी। मैं बाक़ी लड़कियों के जैसा बर्ताव नहीं चाहती थी, बल्कि मैं तो ऐन जैसा समझा जाना चाहती थी और पिम उस बात को नहीं समझ सके। इसके अलावा मैं किसी को तब तक अपना राज़दार नहीं बना सकती, जब तक कि वह मुझे अपने बारे में काफ़ी कुछ न बताए और क्योंकि मैं पापा के बारे में बहुत कम जानती हूँ, तो मैं उनसे नज़दीकी नहीं बना सकी। पिम ने हमेशा बुज़ुर्ग पिता के जैसा बर्ताव किया, जो ख़ुद भी कभी उन आवेगों से गुज़रे थे, लेकिन जो अब मुझसे एक दोस्त की तरह नहीं जुड़ पाते, चाहे वे कितनी भी कोशिशें कर लें। नतीजतन, मैंने कभी ज़िंदगी के प्रति अपने नज़रिये या सोचे-विचारे सिद्धांतों को किसी के साथ नहीं, बल्कि अपनी डायरी के साथ साझा किया और कभी-कभार मारगोट के साथ उन्हें बाँटा। मैंने अपने से जुड़ी हर बात को पापा से छिपाया, अपने आदर्श उनके साथ कभी साझा नहीं किए, जानबूझकर उन्हें अपने से दूर करके पराया कर दिया।

यह और किसी तरीक़े से मुमकिन नहीं था। मैंने ख़ुद को पूरी तरह से अपनी भावनाओं के मुताबिक़ चलने दिया। यह अहंवादी बात थी, लेकिन मैंने वही किया जो मेरी मानसिक शांति के लिए सबसे सही था। अगर मुझे आलोचना का सामना करना पड़ता, तो मैं उस शांति को खो देती और उसके साथ ही आत्मविश्वास को भी, जिसे मैंने कड़ी मेहनत से पाया था। यह थोड़ा कठोरता भरा लग सकता है, लेकिन मैं पिम से भी आलोचना बर्दाश्त नहीं कर सकती, क्योंकि मैंने न केवल कभी उनके साथ अपनी सबसे अंदरूनी भावनाएँ नहीं बाँटीं, बल्कि अपने चिड़चिड़ेपन से उन्हें अपने से और भी दूर कर दिया।

इस बात पर मैं अक्सर विचार करती हूँ: कई बार ऐसा क्यों होता है कि पिम मुझे इतना चिढ़ा देते हैं? मैं उनका पढ़ाना मुश्किल से बर्दाश्त कर पाती हूँ और उनका स्नेह मुझे थोपा हुआ

लगता है। मैं अकेले छोड़ दिया जाना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि वे तब तक मुझ पर ध्यान न दें, जब तक कि मैं ख़ुद को लेकर आश्वस्त न हो जाऊँ! मुझे अब तक उस घटिया सी चिट्ठी को लिखने का अपराधबोध है, जो मैंने परेशान होकर उन्हें लिखी थी। हर तरह से मज़बूत और हिम्मतवाला होना बहुत मुश्किल काम है!

फिर भी वह मेरी सबसे बड़ी मायूसी नहीं है। नहीं, मैं पापा से ज़्यादा पीटर के बारे में सोचती हूँ। मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ कि वह मेरी जीत था, मैं उसकी नहीं। मैंने अपने दिमाग़ में उसकी एक छवि बना ली थी, उसकी कल्पना एक शांत, प्यारे, संवेदनशील लड़के के रूप में की थी, जिसे दोस्ती व प्यार की बहुत ज़रूरत थी! मैं किसी जीते-जागते इंसान के सामने अपना दिल खोलकर रखना चाहती थी। मैं एक ऐसा दोस्त चाहती थी, जो मुझे मेरा रास्ता फिर से पाने में मेरी मदद करे। मैं जो पाने निकली थी, उसे मैंने हासिल कर लिया, मैंने धीरे-धीरे लेकिन यक़ीनन उसे अपनी तरफ़ खींच लिया। जब मैंने उसे दोस्त बनाने में कामयाबी पा ली, तो वह सहज ही अंतरंगता में बदल गई, अब सोचने पर वह मुझे घृणित लगती है। हमने बहुत निजी चीज़ों पर बात की, लेकिन फिर भी उन चीज़ों पर बात नहीं कर पाए, जो मेरे दिल के सबसे क़रीब थीं। मैं कभी पीटर को नहीं समझ पाई। क्या वह बनावटी है या फिर उसका शर्मीलापन उसे रोकता है, मेरे साथ भी? लेकिन उस सबको एक तरफ़ रख भी दूँ, तो मैंने एक ग़लती की: मैंने अंतरंगता का इस्तेमाल उसके नज़दीक जाने के लिए किया और ऐसा करते हुए दोस्ती के बाक़ी स्वरूपों को अलग कर दिया। वह प्यार की चाह रखता है और मैं देख सकती हूँ कि दिन ब दिन वह मुझे ज़्यादा पसंद करने लगा है। साथ गुज़रे हमारे वक़्त से वह तृप्त महसूस करता है, लेकिन मेरे अंदर फिर से शुरुआत करने की इच्छा जागती है। जिन विषयों को खुले में लाना चाहती हूँ, उन पर मैं कभी चर्चा नहीं करती। मैंने पीटर को मजबूर किया कि वह मेरे क़रीब आए, और अब वह जीजान से लगा है। ईमानदारी से कहूँ तो मुझे ऐसा कोई तरीक़ा नहीं दिख रहा कि मैं उसे अपने से दूर झटक सकूँ और उसे उसके अपने पैरों पर खड़ा कर सकूँ। मुझे जल्दी ही महसूस हो गया था कि वह कभी भी आत्मीय नहीं बन सकता, लेकिन फिर भी मैंने उसे उसकी सँकरी दुनिया से निकालने और उसके युवा क्षितिज का विस्तार करने की कोशिश की।

‘कहीं गहरे में युवा बूढ़ों से कहीं ज़्यादा अकेले हैं।’ मैंने किसी किताब में पढ़ा था और यह बात मेरे दिमाग़ में अटकी रही। मेरे हिसाब से यह सच है।

अगर तुम सोच रही हो कि यहाँ बड़ों के लिए बच्चों से ज़्यादा मुश्किल है, तो जवाब है, नहीं, निश्चित तौर पर नहीं। बड़े लोगों की हर चीज़ को लेकर एक राय होती है और वे ख़ुद को लेकर व अपनी गतिविधियों को लेकर काफ़ी आश्वस्त होते हैं। हम बच्चों के लिए यह दोगुना मुश्किल होता है कि हम ऐसे समय में अपनी राय पर क़ायम रहें, जब आदर्श चकनाचूर हो रहे हों, नष्ट हो रहे हों, जब मानव स्वभाव का सबसे बुरा पक्ष हावी होता है, जब हर कोई सत्य, न्याय और ईश्वर पर संदेह करने लगता है।

जो भी यह दावा करता है कि यहाँ अनेक्स में बड़े लोगों को ज़्यादा मुश्किल हो रही है, वह यह नहीं समझता कि समस्याओं का हम पर ज़्यादा बड़ा असर पड़ता है। इन समस्याओं से निपटने के लिहाज़ से हम बहुत छोटे हैं, लेकिन वे हम पर पड़ती जाती हैं और तब तक हम पर हावी रहती हैं, जब तक कि हम कोई हल निकालने के लिए मजबूर न हो जाएँ, हालाँकि अधिकतर समय हमारे समाधान तथ्यों के बोझ तले चूर हो जाते हैं। ऐसे समय में बहुत मुश्किल है, जब आदर्श, सपने और उम्मीदें हमारे भीतर उठती हैं, लेकिन कठोर सच से वे कुचली जाती हैं। यह आश्चर्य ही है कि मैंने अपने सभी आदर्शों को अब तक नहीं छोड़ा है, जबकि वे बहुत निरर्थक और अव्यावहारिक लगते हैं।

मेरे लिए यह सरासर नामुमकिन है कि मैं अव्यवस्था, तकलीफ़ और मौत की नींव पर अपनी ज़िंदगी की इमारत बनाऊँ। मैं देख रही हूँ कि दुनिया धीरे-धीरे निर्जन होती जा रही है, मैं आने वाले तूफ़ान को सुन सकती हूँ और एक दिन वह हम सबको ख़त्म कर देगा, मैं लाखों की तकलीफ़ को महसूस कर सकती हूँ। फिर भी मैं जब आसमान की तरफ़ देखती हूँ, तो मुझे पता नहीं क्यों महसूस होता है कि सब कुछ बेहतरी के लिए बदलेगा कि यह निर्दयता भी समाप्त होगी कि शांति व सुकून एक बार फिर लौटेगा। इस बीच, मुझे अपने आदर्शों पर टिके रहना होगा। शायद एक दिन आएगा, जब मैं उन्हें साकार कर पाऊँगी!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

शुक्रवार, 21 जुलाई, 1944

प्यारी किटी,

मैं अंततः आशावादी हो रही हूँ। अब आख़िरकार हालात अच्छे हैं! सचमुच अच्छे हैं! बढ़िया ख़बर है! हिटलर को मारने की कोशिश हुई है और यह कोशिश यहूदी साम्यवादियों या अंग्रेज़ पूँजीवादियों द्वारा नहीं की गई, बल्कि एक जर्मन जनरल ने ऐसा किया, जो ख़ुद एक कुलीन और युवा है। फ़्यूहर की जान ईश्वर ने बचाई: बदक़िस्मती से वे बच गए और उन्हें बस जलने से थोड़ी चोट लगी व खरोंचें आईं। उनके नज़दीक मौजूद कई अफ़सर व जनरल मारे से गए या फिर घायल हो गए। मुख्य षड्यंत्रकारी को गोली मार दी गई।

यह इस बात का बेहतरीन सबूत है कि किस तरह से कई अफ़सर व जनरल युद्ध से उकता गए हैं और चाहते हैं कि हिटलर एक अथाह गर्त में गिर जाए, ताकि वे सैन्य तानाशाही स्थापित कर सकें, मित्र राष्ट्रों के साथ समझौता कर लें, फिर से हथियारबंद हों और कुछ दशक बाद नई लड़ाई शुरू कर सकें। शायद ईश्वर हिटलर को जानबूझकर मोहलत दे रहा है, क्योंकि मित्र राष्ट्रों के लिहाज़ से यह ज़्यादा आसान व सस्ता है कि जर्मन आपस में लड़ मरें। इससे रूसियों व ब्रिटिश के लिए काम कम हो जाएगा और वे जल्द से जल्द अपने शहरों का पुनर्निर्माण कर सकेंगे। लेकिन अभी हम उस बिंदु तक नहीं पहुँचे हैं और मैं उस गौरवशाली घटना का पूर्वानुमान करना पसंद नहीं करती। फिर भी तुमने ज़रूर ग़ौर किया होगा कि मैं बस सच बता

रही हूँ, केवल सच और सच के सिवाय कुछ भी नहीं। इस समय मैं ऊँचे आदर्शों की दुहाई नहीं दे रही हूँ।

हिटलर इतने दयालु हैं कि अपने निष्ठावान, समर्पित लोगों के लिए घोषणा कर रहे हैं कि आज की स्थिति में सभी सैनिक गेस्टापो के तहत हैं और जिस भी सैनिक को पता हो कि उसका कोई वरिष्ठ अधिकारी फ़्यूहर को मारने की कायराना कोशिश में शामिल था, तो वह देखते ही उसे गोली मार सकता है!

अजीब सी स्थिति हो जाएगी। लंबी दूरी तक चलने के बाद एक सिपाही के पैर तकलीफ़ में हैं और उसका कमान अधिकारी उस पर चिल्लाता है, सिपाही अपनी राइफ़ल उठाकर चीख़ता है, 'तुमने, तुमने फ़्यूहर को मारने की कोशिश की। अब यह लो!' एक गोली में उसे डाँटने की हिमाकत करने वाला घमंडी अफ़सर हमेशा के लिए मौत की नींद सो जाता है। अंततः हर बार जब कोई अफ़सर किसी सैनिक को देखता है या फिर उसे कोई आदेश देता है, तो उसकी घिग्घी बँध जाती है, क्योंकि सिपाही के पास उससे ज़्यादा ताक़त है।

क्या तुमने यह ग़ौर किया कि मैं फिर से एक विषय से दूसरे विषय पर आ-जा रही हूँ? मैं कुछ नहीं कर सकती, अक्टूबर में फिर से स्कूल जा पाने की संभावना से मैं इतनी ख़ुश हूँ कि व्यवस्थित ढंग से सोच भी नहीं पा रही हूँ! मेरी प्रिय, क्या मैंने अभी तुम्हें नहीं बताया कि मैं घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं लगाना चाहती? मुझे माफ़ करना, किटी, मुझे विरोधाभासों की पोटली ऐसे ही नहीं कहा जाता!

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

मंगलवार 1 अगस्त, 1944

प्यारी किटी,

पिछली चिट्ठी के आख़िर में मैंने 'विरोधाभासों की पोटली' लिखा था और इसकी शुरुआत भी मैं उसी से कर रही हूँ। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि आख़िर इसका मतलब क्या होता है? 'विरोधाभास' का क्या अर्थ है? बहुत से शब्दों की तरह इसकी व्याख्या भी दो तरह से की जा सकती है: एक विरोधाभास, जो बाहर से लगाया गया हो और एक जो भीतर से हो। पहले वाले का मतलब है कि अन्य लोगों की राय को स्वीकार न करना, सबसे अच्छी तरह जानना, अपनी बात ऊपर रखना; संक्षेप में, वे सभी अप्रिय विशेषताएँ, जिनके लिए मैं जानी जाती हूँ। दूसरे के लिए मैं नहीं जानी जाती और वही मेरा रहस्य है।

जैसा कि मैं तुम्हें कई बार बता चुकी हूँ कि मैं दो हिस्सों में बँटी हुई हूँ। एक हिस्से में मेरा अपार उत्साह है, मेरा हल्कापन, ज़िंदगी की मेरी ख़ुशी और सबसे अहम हालात के उजले आयाम को देखना। उससे मेरा मतलब है कि मुझे चुहलबाज़ियों, चुंबन, गले लगने, गुस्ताख़

किस्म के चुटकुलों में कोई ख़राबी नहीं दिखती। मेरा यह पहलू अक्सर दूसरे पक्ष पर हमला करने की ताक में रहता है, जो अधिक निष्कपट, गहरा और शिष्ट है। ऐन के बेहतर पहलू को कोई नहीं जानता और यही वजह है कि अधिकतर लोग मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैं किसी दोपहर मज़ेदार जोकर हो सकती हूँ, लेकिन उसके बाद लोगों के लिए काफ़ी हो जाता है। दरअसल, मैं वैसी ही हूँ, जैसे किसी गंभीर विचारक के लिए कोई रोमांटिक फ़िल्म होती है - मात्र एक विषयांतर, एक हास्यप्रद अंतराल, कुछ ऐसा जिसे जल्दी ही भुला दिया जाएगा: बुरा नहीं, लेकिन ख़ास अच्छा भी नहीं। मुझे तुम्हें यह बताना अच्छा नहीं लगता, लेकिन मुझे यह क्यों नहीं स्वीकार करना चाहिए, जबकि मैं जानती हूँ कि यह सच है? मेरा हल्का, सतही पहलू हमेशा मेरे गहरे पक्ष से आगे बढ़ेगा और इसलिए हमेशा जीत जाएगा। तुम नहीं जानती कि मैं इस ऐन को कितना धक्का देने की कोशिश करती हूँ, जो कि जानी-पहचानी ऐन का सिर्फ़ आधा ही हिस्सा है, उसे हराना, छिपाना चाहती हूँ। लेकिन यह कारगर नहीं होता और मैं जानती हूँ कि क्यों।

मैं डरती हूँ कि मुझे मेरे सामान्य स्वरूप में जानने वाले लोग मेरे बेहतर व शिष्ट पक्ष को जान लेंगे। मुझे डर है कि वे मेरा मज़ाक उड़ाएँगे, सोचेंगे कि मैं अजीब व भावुक हूँ और वे मुझे गंभीरता से नहीं लेंगे। मुझे आदत है कि लोग मुझे गंभीरता से न लें, बस सिर्फ़ हल्के-फुल्के मिज़ाज का समझें। ऐन को इसकी आदत है और वह उसे बर्दाश्त कर लेगी; ज़्यादा 'गहरी' ऐन बहुत कमज़ोर है। अगर मैंने अच्छी ऐन को पंद्रह मिनट भी सबके सामने खड़ा कर दिया, तो उसे जैसे ही बोलने के लिए बुलाया जाएगा, वह सीपी की तरह बंद हो जाएगी और बात करने का काम पहली वाली ऐन करेगी। मेरे जानने-बूझने से पहले ही वह ग़ायब हो जाएगी।

अच्छी ऐन कभी साथ नहीं दिखाई देती। वह कभी सामने नहीं आती, हालाँकि जब मैं अकेली होती हूँ, तो वह अहम जगह ले लेती है। मैं जानती हूँ कि मैं कैसी बनना चाहती हूँ, मैं अंदर से... कैसी हूँ। लेकिन बदक़िस्मती से मैं अपने साथ ही बस वैसी हूँ। शायद यही वजह है, शायद नहीं, पक्के तौर पर यही वजह है कि मैं अंदर से ख़ुश महसूस करती हूँ और बाक़ी लोग सोचते हैं कि मैं बाहर से ख़ुश हूँ। अंदर की निर्मल ऐन मुझे राह दिखाती है, लेकिन बाहर से मैं एक छोटी ज़िंदादिल बकरी की तरह हूँ, जो अपनी रस्सी को झटका देती रहती है।

जैसा कि मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि जो मैं कहती हूँ, उसे महसूस नहीं करती, इसलिए मेरी छवि लड़कों का पीछा करने वाली, चुहलबाज़, होशियार और रोमांटिक कहानियाँ पढ़ने वाली लड़की की है। यह निश्चिंत क़िस्म की ऐन हँसती है, छिछोरे जवाब देती है, कंधे उचकाती है और दिखाती है जैसे कि उसे किसी चीज़ की कोई परवाह नहीं। ख़ामोश ऐन ठीक उसके उलट करती है। अगर मैं पूरी ईमानदारी बरतते हुए कहूँ, तो मुझे यह मानना पड़ेगा कि मुझे इस बात से फ़र्क़ पड़ता है, मैं ख़ुद को बदलने की काफ़ी कोशिश कर रही हूँ और यह कि मैं हमेशा ज़्यादा ताक़तवर दुश्मन से जूझती हूँ।

मेरे भीतर कोई आवाज़ सुबक रही है। 'देखो, तुम्हारा क्या हाल हो गया है। तुम नकारात्मक राय, निराशाजनक दृष्टियों और मज़ाक उड़ाते चेहरों, लोगों से घिरी हो, जो तुम्हें नापसंद करते हैं और सिर्फ़ इसलिए क्योंकि तुम अपने दूसरे बेहतर पक्ष की सलाह नहीं सुनती।' यक़ीन करो, मैं सुनना चाहती हूँ, लेकिन वह काम नहीं करता, क्योंकि मेरे ख़ामोश व गंभीर रहने पर सबको लगता है कि मैं कोई नया नाटक कर रही हूँ और फिर मुझे ख़ुद को बचाने के लिए किसी चुटकुले का सहारा लेना पड़ता है, मैं अपने परिवार की बात तक नहीं कर रही, जो मान लेते हैं कि मैं ज़रूर बीमार हूँ, वे ऐस्प्रिन और दर्दनाशक दवाइयाँ ठूँस देते हैं, मेरी गर्दन व माथे को छूकर देखते हैं कि मुझे बुख़ार तो नहीं, मेरे शौच के बारे में पूछते हैं और ख़राब मूड में होने के कारण मुझे फटकारते हैं, यह तब तक होता है, जब तक कि मैं परेशान नहीं हो जाती, सब के सब मेरे चारों ओर मँडराने लगते हैं, तो मैं चिढ़ जाती हूँ, फिर दुखी हो जाती हूँ और आख़िरकार अपने दिल को पूरी तरह से उलट देती हूँ, बुरे हिस्से को बाहर व अच्छे हिस्से को अंदर कर देती हूँ और वह तरीक़ा खोजने की कोशिश करती हूँ, जिससे वैसी बन सकूँ जैसा कि मैं चाहती हूँ और जैसी मैं हो सकती हूँ... अगर दुनिया में और लोग न हों।

तुम्हारी, ऐन एम फ्रैंक

(ऐन की डायरीं यहाँ समाप्त हो जाती है।)

---

*उन लोगों के आद्याक्षर दिए गए हैं, जो गुमनाम रहने के इच्छुक थे।

उपसंहार

4 अगस्त, 1944 को सुबह दस व साढ़े दस बजे के बीच 263 प्रिंसग्राफ़्त में एक कार रुकती है। कई आकृतियाँ सामने आती हैं: वर्दी में एक एसएस सार्जेंट कार्ल योज़फ़ सिल्बरबावर और सुरक्षा पुलिस के कम से कम तीन डच सदस्य, सशस्त्र लेकिन सादे वेश में। किसी ने ज़रूर उन्हें ख़बर दी होगी।

उन्होंने अनेक्स में छिपे आठ लोगों और उनके दो मददगारों विक्टर कुगलर और योहान्स क्लेमन को गिरफ़्तार कर लिया, हालाँकि मीप गीज़ और एलिज़ाबेथ (बेप) वुश्कल को नहीं पकड़ा गया। अनेक्स में बरामद सभी क़ीमती चीज़ों व नक़दी को भी ले लिया गया।

गिरफ़्तारी के बाद कुगलर और क्लेमन को ऐम्स्टर्डम की एक जेल में ले जाया गया। 11 सितंबर, 1944 को उन्हें बिना किसी सुनवाई के आमर्शफ़ूर्त (हॉलैंड) के एक शिविर में भेज दिया गया। ख़राब सेहत के कारण क्लेमन को 18 सितंबर, 1944 को रिहा कर दिया गया। वे 1959 में अपनी मृत्यु तक ऐम्स्टर्डम में रहे।

28 मार्च, 1945 को कुगलर जेल की सज़ा से बचने में कामयाब रहे, जब उन्हें व उनके साथी क़ैदियों को जबरन मज़दूरी कराने के लिए जर्मनी भेजा जा रहा था। वे 1955 में कनाडा चले गए और 1989 में टोरंटो में उनकी मृत्यु हुई।

एलिज़ाबेथ (बेप) वुश्कल की मृत्यु 1983 में ऐम्स्टर्डम में हुई।

मीप संत्रोशिट्ज़ गीज़ की मृत्यु 2010 में हुई। उनके पति यान का निधन 1993 में हुआ।

गिरफ़्तारी के बाद अनेक्स के आठों निवासियों को पहले ऐम्स्टर्डम की जेल में लाया गया और फिर उन्हें उत्तरी हॉलैंड में यहूदियों के लिए बने वेस्टरबोर्क के शरणार्थी शिविर में भेज दिया गया। 3 सितंबर, 1944 को वेस्टरबोर्क से जाने वाली आख़िरी सवारी में उन्हें रवाना किया गया और वे तीन दिन बाद ऑशवित्ज़ (पोलैंड) पहुँचे।

ऑटो फ्रैंक के कथन के अनुसार, हेमन फ़ॉन पेल्स (फ़ॉन डान) को अक्टूबर या नवंबर 1944 में ऑशवित्ज़ में विषैली गैस से मार दिया गया, इसके कुछ ही दिन बाद इन गैस चेम्बर्स को तोड़

दिया गया था।

ऑगुस्ते फ़ॉन पेल्स (पेट्रोनेला फ़ॉन डान) को ऑशवित्ज़ से बेर्गन-बेल्सन ले जाया गया, फिर वहाँ से बूख़नवाल्ड और फिर 9 अप्रैल, 1945 को थरिज़ियनश्टाइट ले जाया गया और शायद उसके बाद किसी और बंदी शिविर में उन्हें ले जाया गया। यह निश्चित है कि वे ज़िंदा नहीं बचीं, हालाँकि उनकी मौत क तारीख़ के बारे में जानकारी नहीं है।

पीटर फ़ॉन पेल्स (फ़ॉन डान) को 16 जनवरी, 1945 को ऑशवित्ज़ से माउटहाउज़न तक 'मौत की परेड' में हिस्सा लेने को विवश किया गया, जहाँ शिविर को मुक्त करवाए जाने के सिर्फ़ तीन दिन पहले 5 मई, 1945 को उसकी मौत हो गई।

फ़्रित्ज़ फ़ेफ़र (ऐल्बर्ट दुसे) की नोयनगामे के बंदी शिविर में 20 दिसंबर, 1944 को मृत्यु हो गई, जहाँ उन्हें बूख़नवाइल्ड या ज़ैक्सनहाउज़न से ले जाया गया था।

6 जनवरी, 1945 को ऑशवित्ज़-बियकनाउ में भूख व थकावट से एडिथ फ़्रैंक की मौत हो गई।

मारगोट व ऐन फ़्रैंक को अक्टूबर के अंत में ऑशवित्ज़ से हनोफ़र (जर्मनी) के निकट बेर्गन-बेल्सन बंदी शिविर में ले जाया गया। 1944-45 की सर्दियों में भयानक गंदगी के कारण टाइफ़स की महामारी फैल गई, जिससे हज़ारों बंदी मारे गए, उनमें मारगोट भी थी, उसके कुछ दिन बाद ऐन की भी मौत हो गई। फ़रवरी के आख़िर में या फिर मार्च की शुरुआत में उसकी मृत्यु हुई होगी। दोनों लड़कियों के शव को संभवतः बेर्गन-बेल्सन की सामूहिक कब्रों में दफ़नाया गया होगा। इस शिविर को ब्रिटिश टुकड़ियों द्वारा 12 अप्रैल, 1945 को मुक्त कराया गया।

उन आठ लोगों में से ऑटो फ़्रैंक ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जो बंदी शिविरों से जीवित बच पाए। ऑशवित्ज़ के शिविर को रूसी सेना द्वारा मुक्त कराए जाने के बाद उन्हें ओडेसा और मार्से होते हुए ऐम्स्टर्डम भेज दिया गया। 3 जून, 1945 को वे ऐम्स्टर्डम पहुँचे, 1953 तक वहाँ रहे और फिर वे बासल (स्विट्ज़रलैंड) चले गए, जहाँ उनकी बहन व उसका परिवार था और बाद में उनका भाई भी वहाँ रहने लगा। उन्होंने एल्फ़्रीडा मार्कोवित्स गायरिना से शादी की, जो मूलतः वियेना की थीं और ऑश्वित्ज़ से जीवित बची थीं और उनका पति व बेटा माउटहाउज़न में मारे गए थे। 19 अगस्त, 1980 में मृत्यु होने तक ऑटो फ़्रैंक बासल के बाहर बिर्सफ़ेडन में रहे, जहाँ अपनी बेटी की डायरी के संदेश को समूची दुनिया से साझा करने के काम के प्रति उन्होंने ख़ुद को समर्पित कर दिया।